राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेषत राजस्थान-प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक
जितेन्द्रकुमार जैन
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थांक १३३

महाराजा मानसिंहजी री ख्यात

प्रकाशक
राजस्थान-राज्य-संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राज.)

मुद्रक पंकज प्रिन्टर्स आनन्द सिनेमा के पास, गुरुद्वारा, जोधपुर

वि सं २०३६ भारत राष्ट्रीय शकाब्द १९०१

प्रधान सम्पादकीय

प्रस्तुत ग्रथ 'राजस्थान पुरातन ग्रथमाला' के अन्तर्गत 133 वें पुष्प रूप मे विद्वानो के हाथो मे सौंपते हुए हमे बडी प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

भारतीय मध्यकालीन ऐतिह्य सामग्री मे जहा फारसी के इतिहास-लेखको को स्थान प्राप्त है, वहा राजस्थान की ख्यात, वात, वशावली, पीढियावली पट्टावली, विगत, हकीकत, हाल, याद, वचनिका, एव दवावैत ग्रादि के लेखको की भी अनदेखी नही की जा सकती । इन दोनो ही प्रकार के इतिहास-लेखको की सामग्री प्रकाशित रूप मे आज हमे उपलब्ध होती है । जहाँ तक घटित घटनाओ की प्रामाणिकता का प्रश्न है वहा दोनो ही लेखको की कलम ने अपने-अपने आश्रयदाता के गुणगान करने मे कोई कसर नही छोडी । फिर भी हमे काफी सीमा तक ऐतिहासिक घटना-क्रम को एक दूसरे की सामग्री के तुलनात्मक अध्ययन से तथ्यात्मक विवरण उपलब्ध हो सकता है ।

राजपूत राजाओ की रियासतो मे 'ख्यात' लेखन की परम्परा 17 वी शताब्दी से 19 वी शताब्दी तक मिलती है ।

प्रस्तुत ख्यात मे जहा जोधपुर के महाराजा मानसिह के कार्यकाल मे प्रशासनिक अव्यवस्था, राजनैतिक उथल-पुथल, नाथ-सम्प्रदाय का बलात् विस्तार, नाथो द्वारा राज्य-कार्य मे हस्तक्षेप करना, टोंक के नवाब मीर खा पिण्डारी आदि की लूट पाट से राज्य की आर्थिक स्थिति डावांडोल रहती थी वही इस राज्य में मानसिह द्वारा कवियो, लेखको, शिल्पियो, चित्रकारी एव सगीतज्ञो को भी अच्छा प्रोत्साहन मिला ।

मानसिह स्वय भी एक अच्छे कवि थे जिन्होने नाथो की भक्ति से ओत-प्रोत होकर अनेक रचनाए की । इनकी कवित्व-शक्ति का एक उदाहरण देखिए —

कविराजा बाकीदास जो महाराजा मानसिह के राज्याश्रित प्रतिभाशाली एव विलक्षण कवि थे, के देहावसान पर मातमपुर्सी के लिए स्वय मानसिह उनकी हवेली पर पहुचे थे और वहा स्वर्गीय बाकीदास के लिए मरसिये कहे थे ।

सद्विद्या बहु साज । बाकी थी बाका वसू ।।
कर सूधी कवराज । आज कठी गो, आसिया ।।
विद्या कुळ विख्यात । राज-काज हर रहसी री ।।
बाका ! तो विण बात । किण आगळ मन री कहा ।।

भावार्थ है—विभिन्न साजो वाली उत्तम विद्या बाकीदास के जीवित रहते ही बाकी (निराली) थी । हे आसिया ! हे कविराज ! उसे सीधा करके (बकिम विहीन) करके तू कहा चला गया ?

कुल प्रसिद्ध विद्या सम्बन्धी, राज्य-कार्य सम्बन्धी, लालसा सम्बन्धी तथा आनन्द देने वाली मन की बातें आज तेरे बिना किसके समक्ष कहे ?

'ख्यात' मे मानसिंह के राज्य-सिंहासनारूढ से प्रारम्भ होकर उनकी मृत्यु पर्यन्त राज्य सचालन की गतिविधियो, सामाजिक, आर्थिक स्थितियाँ हत्याए, लूट-पाट राज्याश्रित जागीरदारो के पक्ष-विपक्ष में विभिन्न खेमे, नाथों व ओसवाल मुत्सद्दियों का प्रभुत्व, रनिवास मे रानियों आदि के विभिन्न दल, अंग्रेजो द्वारा पुनर्गठित राजव्यवस्था, युवराज छत्रसिंह की हत्या के बाद मानसिंह की दुरवस्था, तत्कालीन पडौसी राज्यो मे सम्बन्ध आदि का रोचक एव विस्तृत वर्णन मिलता है ।

प्रस्तुत ख्यात का अविकल पाठ विभिन्न पाठों के ताल-मेल के साथ प्रथम बार प्रकाशित किया जा रहा है । इसमे राजस्थानी भाषा के साथ-साथ तत्कालीन खडी बोली का भी प्रयोग हुआ है ।

जहा यह ग्रंथ ऐतिहासिक सामग्री का विश्लेषण करने वाले शोध विद्वानों के लिए उपादेय होगा वहीं तत्कालीन सामाजिक व आर्थिक ढांचा भी अनुसन्धित्सुओं के लिए महत्व का होगा ।

कुछ वर्षों पहले इसी प्रतिष्ठान द्वारा 'मारवाड रा परगना री विगत' जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ का सम्पादन राजस्थानी भाषा के विद्वान् डा० नारायणसिंह भाटी द्वारा करवाकर प्रकाशित किया गया था । उसका इतिहास-जगत् मे अच्छा स्वागत हुआ और देश के उच्च कोटि के इतिहासविदो ने इस ग्रन्थ की सम्पादन-पद्धति की भी सराहना की, और, तत्कालीन निदेशक महोदय ने डा० भाटी से आग्रह किया कि वे प्रतिष्ठान के लिए 'महाराजा मानसिंह की ख्यात' का भी सम्पादन कर दें । डा. भाटी ने उक्त अनुरोध पर यह सम्पादन-कार्य उन्ही दिनो पूरा कर दिया था पर, प्रतिष्ठान की कुछ कठिनाइयों के कारण तब उसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका । अब यह महत्वपूर्ण ग्रंथ अनुसन्धित्सुओं के उपयोग के लिए उनके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है ।

यह ग्रन्थ शोधकर्ताओं के लिए अधिक उपयोगी हो सके इसके लिये सम्पादक महोदय ने अपनी विस्तृत भूमिका के अलावा ग्रन्थ के अन्त मे नामानुक्रमणिकाए तथा उस समय के कुछ महत्वपूर्ण पत्र भी जोड दिये हैं जो अब तक अप्रकाशित थे और जिनसे उस समय के मारवाड की कई आन्तरिक हलचलों का पता चलता है । प्रतिष्ठान के कनिष्ठ तकनीकी सहायक श्री गिरधरवल्लभ दाधीच जिन्होंने प्रूफ-शोधन आदि मे उल्लेखनीय सहयोग दिया है, धन्यवाद के पात्र हैं । वैसा ही सहयोग विभाग को पकज प्रिन्टर्स, के श्री पुखराज जांगिड से मिला, जिसके लिए इन्हे भी धन्यवाद देना चाहूगा ।

जे. के. जैन

सम्पादकीय

महाराजा मानसिंह का प्रादुर्भाव उस समय हुआ जब केन्द्र मे मुगल-सत्ता के अवसान के साथ ब्रिटिश कम्पनी का राज्य काफी जम चुका था और वे राजस्थान के रजवाडो को अपने वश मे करने को प्रयत्नशील थे। शताब्दियो से मुगलो के साथ सघर्ष और आपसी झगडो के कारण राजस्थान के रजवाडे अब काफी क्षीण हो चुके थे। मरहठो की लूटपाट और पिंडारियो के उत्पात के कारण यह रजवाडे आर्थिक दृष्टि से भी बहुत टूट चुके थे। ऐसी स्थिति मे अग्रेजो को यहा पर अपना वर्चस्व कायम करने मे बहुत अधिक समय नही लगा।

महाराजा मानसिंह की गद्दीनशीनी (वि स १८६०) के समय तो मारवाड की हालत और भी बदतर थी क्योकि यहा के जागीरदार भी दो खेमो मे बटे हुए थे। बहुत से जागीरदार पोकरन ठाकुर सवाईसिंह के प्रभाव के कारण स्वर्गीय महाराजा भीमसिंह की गर्भवती रानी के होने वाले पुत्र को जोधपुर की गद्दी का हकदार बनाना चाहते थे तो दूसरी ओर इन्द्रराज सिंघवी के प्रभाव से कुछ जागीरदारो ने मिलकर (जो महाराजा मानसिंह को ही गद्दी का हकदार समझते थे) महाराजा मानसिंह को जालोर से लाकर सवाईसिंह की इच्छा के विपरीत जोधपुर की गद्दी पर ला बठाया।

इस ख्यात मे जालोर के घेरे से लेकर मानसिंह की गद्दीनशीनी तक का ब्योरा काफी विस्तार से दिया गया है जिससे मारवाड के आन्तरिक विघटन आदि का ठीक से अनुमान लगाया जा सकता है।

मानसिंह के गद्दी पर बैठने से लेकर उसकी मृत्यु तक मारवाड मे कभी पूर्ण शाति नही रही न ही मानसिंह ने चैन की सास ली। इन सब परिस्थितियो का वर्णन जहा इस ख्यात मे विस्तार के साथ किया गया है वहा मारवाड के तत्कालीन पडोसी राज्यो से सम्बन्ध, मरहठों और पिंडारियों का दखल तथा अग्रेजो के साथ सन्धि एव उनका राज्य-कार्य मे हस्तक्षेप आदि का ब्योरा भी बहुत विस्तार के साथ दिया गया है। इसके अतिरिक्त उस समय के राजनैतिक दाव-पेच, सैन्य-संचालन, मुत्सद्दियो की कारगुजारी, विभिन्न ओहदेदारो के जिम्मे

कार्य एव उनकी कार्य-पद्धति तथा जागीरदारो की खेमापरस्ती आदि का बड़ा ही सजीव चित्रण इसमे मिलता है। मानसिंह की नाथ-सम्प्रदाय मे गहरी आस्था थी क्योंकि जालोर के घेरे के समय देवनाथ के वचन से ही वे जालोर के किले मे रुके रहे जिसके फलस्वरूप भीमसिंह की अचानक मृत्यु के बाद जोधपुर की राज्यगद्दी उन्हे प्राप्त हुई इसलिये वे आजीवन नाथो के परम भक्त बने रहे और उनके लिये न केवल महामन्दिर एवं उदयमन्दिर मे बड़ी ईमारतें बनवाई बल्कि प्रत्येक परगने मे उनके लिये धार्मिक स्थान स्थापित किये। इसके अतिरिक्त राज्य का बहुत सा द्रव्य भी उनके लिये निरन्तर खर्च किया जाता था। नाथो की आज्ञा उनके लिये सदा शिरोधार्य रही जिससे राज्य-कार्य और राजनीति मे भी उनका दखल दिनो-दिन बढ़ता रहा। महाराजा मानसिंह स्वयं कवि थे और उन्होने चारणो को बहुत प्रश्रय दिया था। उनके समय मे बाकीदास आसिया, उदयराम, मन्छाराम और उत्तमचद भडारी जैसे श्रेष्ठ कवि हुए जिनका राजस्थानी साहित्य व इतिहास मे बड़ा महत्व है। यद्यपि उस समय मारवाड की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी, परन्तु फिर भी मानसिंह ने चारणों को ६१ सांसण[1] प्रदान किये और लाखो रुपये पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये। ये लोग समय असमय का ध्यान रखे बिना ही राजा से निरन्तर धन प्राप्ति के लिये प्रयास करते रहते थे और इसी गरज से वे नाथजी के भी भक्त बने रहते थे तथा उनके मारफत द्रव्य एवं जागीरें आदि भी हासिल करते थे इन सब तथ्यो का ख्यात मे यथा स्थान बड़ा रोचक वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

अब हम इस ख्यात में वर्णित कुछ मुख्य घटनाओ का उल्लेख करेंगे जिन पर ख्यात मे विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है।

जालोर के किले का घेराव—

जोधपुर के महाराजा विजयसिंह की मृत्यु के पश्चात् सवत् १८४८ मे महाराजा भीमसिंह गद्दी पर बैठा। उस समय जालोर विजयसिंह की पासवान गुलाबराय के पट्टे मे थी और मानसिंह (जिस पर उस पासवान की विशेष कृपा थी) को उसने भीमसिंह के चगुल से बचाने के लिये जालोर के किले मे भेज दिया। विजयसिंह के जीते-जी शेरसिंह को उन्होने युवराज पदवी दी थी, परन्तु भीमसिंह ने उसे छल द्वारा मरवा दिया और वह अब मानसिंह को समाप्त करना चाहता था इसलिये उसने जालोर के किले के घेरा डाल दिया तथा सिंघवी इन्द्रराज एव गगाराम भंडारी के जिम्मे यह कार्य सौपा गया। लम्बी

---

1. 'इगसठ सासण अप्पिया माने गुमनाणी'

अवधि तक मानसिंह को जालोर के किले के घेरे मे रहना पडा और इस दौरान मे उन्हें अनेक कष्ट सहन करने पडे । उनके कई जागीरदार इस समय उनका साथ छोड कर चले गये, पर आहोर ठाकुर जैसे कई स्वामिभक्त सरदार उनकी ओर बने रहे और उनका उत्साह बनाये रखा । इस समय का एक दोहा बहुत प्रसिद्ध है—

सिर तूटे घड लडथडे, कटे बखतरो कोर ।
बोटी बोटी कट पड़ै, जद छूटे जाळोर ।।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि मानसिंह को कविता का बहुत शौक था और वे स्वय भी अच्छी कविता करते थे अतः कहते हैं कि उस समय विकट परिस्थिति मे भी १७ चारण कवि उनके वहा मौजूद रहे । इस सम्बन्ध मे चारण समाज मे एक दोहा प्रचलित है—

ठौड ठौड त्रबक त्रहत्रहिया, भड थहिया के छोड भव ।
वाली लाज तजै के बहिया, सतरै तद रहिया सुकव ।।

रसद की कमी, इन्द्रराजसिंघवी का विशेष दबाव, साथियो की निरतर होती हुई कमी के कारण जब गढ छोडने के अलावा कोई चारा मानसिंह के पास नही रहा और वे गढ छोडने का विचार कर रहे थे उस समय आयस देवनाथ जो जलंधरनाथ की सेवा करता था के कहने से ही वे गढ मे कुछ दिन और रुके रहे और इतने मे महाराजा भीमसिंह की अचानक मृत्यु हो गई । बदलती हुई परिस्थितियो मे इन्द्रराज सिंघवी तथा गगाराम ने अविलम्ब परिस्थितियो को समझकर मानसिंह को ही जोधपुर की गद्दी पर बैठाने का विचार कर लिया और उसके लिये मानसिंह तैयार भी हो गये ।[1] इस अचानक उलट-फेर के कारण जहा मारवाड की राजनीति मे बडा परिवर्तन हुआ वहा अनेक राजवर्गीय अधिकारियो और जागीरदारो के भाग्य ने भी पलटा खाया तथा राज्य मे पुराने अधिकारियो की जगह अनेक नये अधिकारियो की नियुक्ति की गई ।

भीमसिंह की देरावर रानी के पुत्र उत्पन्न होने की अफवाह और सवाईसिंह का उसका पक्ष लेना—

मानसिंह जब गद्दी पर बैठे थे तो उन्होने सवाईसिंह से यह वादा किया था कि यदि भीमसिंह की रानी देरावर जी जो कि गर्भवती हैं उसके पुत्र पैदा

1 ख्यात पृ. 5

हो गया तो वे राजगद्दी उसे सौंप देंगे और वे स्वय पुनः जालोर चले जायेंगे। सुरक्षा की दृष्टि से चौपासनी ग्राम मे गुसाईं जी विट्ठलदास जी के सरक्षण में रानी को रखा गया था और बाद मे उन्हे तलहटी के महलो मे रखा गया। वही पर देरावर रानी के पुत्र होने की खबर फैलाई गई और फिर रानी को खेतडी पहुँचा दिया गया।[1] इसके उपरात सवाईसिंह नवजात कुंवर धौंकलसिंह का पक्ष लेकर मानसिंह को अपदस्थ करने के लिए प्रयत्नशील हो गया और उसका यह प्रयन्न तब तक चलता रहा जब तक मानसिंह ने उसका सफाया मीरखा के हाथो नही करवा दिया।

उदयपुर की राजकुमारी कृष्णाकुमारी के साथ विवाह के प्रश्न को लेकर झगड़ा—

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि सवाईसिंह धौंकलसिंह का पक्ष लेकर मानसिंह को अपदस्थ करने का अवसर ढूढने लगा था, इस सम्बन्ध मे उसने एक घटना का सहारा लिया। जोधपुर के महाराजा भीमसिंह की सगाई उदयपुर के महाराणा भीमसिंह की लडकी कृष्णा कुमारी के साथ हुई थी, किन्तु महाराजा भीमसिंह की अचानक मृत्यु हो जाने से उनकी शादी नही हो सकी। तब उदयपुर वालो ने कृष्णा कुमारी का टीका जयपुर के राजा जगतसिंह को भेजने का निश्चय किया। इस पर सवाई-सिंह ने मानसिंह को उकसाया कि राठौडो की माग आपके रहते हुए कछवाहों को कैसे दी जा सकती है। परम्परागत विचारो के वशीभूत मानसिंह ने इस पर राजनैतिक गहराई से विचार नही किया और कृष्णाकुमारी से स्वय विवाह करने को तैयार हो गया। मानसिंह ने अपनी फौज सहित कूच कर दिया और सिरोही और शेखावाटी मे जो फौजें गई थी उनको भी अपने साथ होने के लिए सूचना भेजी। जसवतराव होल्कर को इस आशय का पत्र लिखा की मेवाड़ वाले कृष्णा कुमारी का टीका जयपुर ले जा रहे थे उसे सिंघवी इन्द्रराज ने बलात् लौट जाने को मजबूर किया, इससे युद्ध की परिस्थिति बन गई है सो वह सहायतार्थ ससैन्य आवे। सिंघवी इन्द्रराज ने इस प्रश्न से होने वाली हानि को समझ लिया था अत उसने जयपुर के दीवान रायचद से मिलकर उस समय उस परिस्थिति को शात कर दिया और यह तय हुआ कि दोनो ही राजा कृष्णा कुमारी से शादी नही करेगे और मेल-मिलाप कर उन्होने परस्पर यह निश्चय किया कि महाराजा जगतसिंह की बहिन की शादी मानसिंह से की जायेगी और मानसिंह की लडकी की शादी जगतसिंह से की जायेगी तथा इस आशय के टीके भी भेज दिये गये, परन्तु सवाईसिंह कब शांत रहने वाला था उसने जगतसिंह को पुन उकसाया कि उदयपुर से आपके जो टीका आ रहा था

---

1 ख्यात पृ 9, 21

उसे मानसिंह ने जिस प्रकार जवरन लौटाने को मजबूर किया इससे दुनिया मे आपकी बहुत हल्की लगी है। इस पर जगतसिंह पुन शादी के लिए तैयार हो गया। । मानसिंह को जब यह समाचार मिला तो उसने भी उदयपुर की ओर प्रस्थान करने की तैयारी की। सवाईसिंह के प्रयासो से बीकानेर का राजा सूरतसिंह भी जगतसिंह की ओर मिल गया। मीरखा और मानसिंह के बीच पहले मित्रता थी, परन्तु सवाईसिंह ने उसे भी अपनी ओर मिला लिया। इस प्रकार एक लाख के करीब फौज जयपुर वालो के साथ थी और मारोठ मे डेरे लिये। इसके अलावा सवाईसिंह ने जगतसिंह को आश्वासन दिया था कि जो अन्य कई राठौड सरदार मानसिंह के साथ हैं वे भी युद्ध के समय अपनी ओर आ जायेंगे। जगतसिंह आदि तो मरोठ मे ठहरे रहे और सवाईसिंह फौज लेकर गीगोली की ओर आया जहा मानसिंह की फौज भी युद्ध मे प्रविष्ट होने के लिये तैयार हुई। महाराजा स्वय भी घोडे पर सवार हुआ, पर इसी समय हरसोलाव ठाकुर जालमसिंह तथा रास ठाकुर जवानसिंह ने यह कहकर मानसिंह को रोकना चाहा कि जयपुर वालो की सख्या अधिक है और हम उनका मुकाबला नही कर सकेंगे। फिर भी मानसिंह माना नही और जब तोपे छूटने लगी तो उसने देखा कि ठाकुर जालमसिंह अपने १५०० घुडसवारो सहित जयपुर की सेना मे मिलने को जा रहा है और मेडतिया महेशदान तथा गौडाटी के जागीरदार भी उससे जा मिले हैं तब आउवा, आसोप, नीबाज, कुचामन खेजडला आदि खेरख्वाह ठाकुर उनके साथ थे, उनके बहुत समझाने बुझाने पर महाराजा मानसिंह ने युद्ध से पलायन करना ही उचित समझा और जैसे तैसे, जोधपुर का दुर्ग पकडा ।

परन्तु इतने से ही सवाईसिंह पीछा छोडने वाला नही था उसका उद्देश्य तो धौंकलसिंह को जोधपुर की गद्दी दिलाना था अतः वह जयपुर तथा बीकानेर के राजाओ को फौज सहित जोधपुर ले आया और जोधपुर शहर के घेरा डाल दिया और जगतसिंह से कहा कि धौंकलसिंह को जोधपुर की गद्दी पर बैठाने के बाद आपकी शादी उदयपुर करना देंगे, पहले यह काम आवश्यक है। जोधपुर शहर का घेरा डाल देने से जोधपुर शहर की जनता को बडा कष्ट सहना पडा और मानसिंह भी बडी अनिश्चित परिस्थितियो मे घिर गया, पर मानसिह ने आत्मविश्वास नही खोया और उसे यह युक्ति सूझी कि मैंने लोगो के कहने से इद्रराज तथा गगाराम जैसे योग्य व्यक्तियो को कैद मे डाल रखा है वे इस समय वड़ी कारगुजारी कर सकते हैं। अतः मानसिंह ने ससम्मान उनको कैद से बाहर निकाला और इस परिस्थिति से निपटने के लिये आग्रह किया। इद्रराज ने पहले सवाईसिंह से बात करना उचित समझा कि शायद यह मामला बात-चीत करने से सुलझ जाय लेकिन सवाईसिंह ने उससे कहा कि "रिणमना रा थापिया रा राजा हुवै महाजना रा थापिया राजा हुवै नही।" स्थिति सुलझती

हुई नही देख कर उनके परामर्श पर शहर तो जयपुर वालो को सौंप दिया, परन्तु मानसिंह किले में ससैन्य रहे। इस समय पंचोळी गोपालदास ने अपनी सूझबूझ से शहर को लूटने से बचा लिया और वह शहर मे से रुपये इकट्ठे करके जयपुर की फौज को देता रहा। इन्द्रराज कुचामन, आउवा, आसोप आदि ठाकुरों के घोड़े लेकर नींबाज की तरफ गया और मीरखा को लालच देकर उससे साठगाठ की तथा उसकी सहायता से जयपुर की तरफ कूच किया तथा जयपुर के बक्सी शिवलाल को फागी नामक स्थान पर परास्त किया। तत्पश्चात् मीरखा तथा ठाकुर शिवनाथसिंह घुघरोट को लूटते हुए जयपुर पहुँच गये। ऐसी स्थिति देखकर जगतसिंह बडा चिंतित हुआ और सवत् १८६४ मे जोधपुर का घेरा उठाकर वह जयपुर की ओर कूच कर गया। बीकानेर का सूरतसिंह भी बीकानेर की ओर कूच कर गया और मानसिंह ने चैन की सास ली। घेरा उठ जाने के कारण बडी खुशीया मनाई गई। मीरखा तथा इन्द्रराज का महाराज ने बड़ा सम्मान किया। और जिन लोगो ने स्वामिधर्म निभाया उन्हें भी लाभान्वित किया गया।[1] इन्द्रराज को दीवान का पद सौंप दिया गया और मानसिंह ने उसकी प्रशसा मे एक दोहा कहा जो बहुत प्रसिद्ध है—

पडता घेरो जोधपुर, आता दळा असंभ।
आभ डिगता ई दड़ा, थे दीधौ भुजथभ॥

अपने सेवक के लिये ऐसे महत्वपूर्ण शब्दो मे शायद ही किसी शासक ने ऐसे उद्गार व्यक्त किये हो।

उक्त घटना से जहा उस समय की परम्परागत मान्यताओ और राजनीतिक हलचलो का पता लगता है वहा जागीरदारो की अनिश्चित मनोदशा और राजस्थान के राजाओ की अदूरदर्शिता के उदाहरण भी सामने आते हैं तथा मरहठो की शक्ति किस प्रकार यहा की राजनीति मे दखल देकर धन बटोरती थी उसके प्रमाण भी सामने आते हैं। यहा यह भी उल्लेखनीय हे कि राज्य के खजाने मे इतना जमा धन नही होता था कि वह उन्हे दिया जा सकता। ऐसी स्थिति मे यह धन जनता मे ही वसूल किया जाता था और धनवान आसामियो को तग किया जाता था। कई गावो से दड स्वरूप भी रुपये वसूल किये जाते थे। ऐसे अवसर पर मुत्सद्दी लोग महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे उनकी सूझबूझ वटी कारगुजार होती थी।

---

1 ख्यात पृ 40-72

मीरखां द्वारा सवाईसिंह का मारा जाना—

अब मानसिंह की स्थिति काफी सुदृढ हो गई थी फिर भी वह भली-भांति जानता था कि सवाईसिंह जैसे शक्तिशाली कूटनीतिज्ञ दुश्मन के रहते वह निश्चित होकर राज्य नहीं कर सकेगा। अत उसने मीरखां को पूर्ण विश्वास मे लेकर उसे कहा कि जैसे भी हो इस व्यक्ति का सफाया करना बहुत जरूरी है। मीरखा ने इसके लिये महाराजा को आश्वासन दिया और उसने महाराजा से बनावटी मनमुटाव का स्वांग जाहिर करने के लिये मारवाड के कई गाव लूटे तथा सवत् १८६४ मे फौज खर्ची के लिये भारी तकाजा किया। उस समय सवाईसिंह धौकलसिंह को नागोर का अधिकारी बनाकर वही रहता था. उसने जब उपर्युक्त घटना सुनी तो उसने मीरखा को अपनी ओर मिलाने का यह ठीक अवसर समझकर उससे कहलवाया कि खर्ची हम देंगे, तुम मानसिंह को अपदस्थ करने मे हमारी मदद करो। मीरखा ने ऐसा करने का वादा किया पर इससे पहले उसने सवाईसिंह से मिलने की इच्छा व्यक्त की और वे नागोर तारकीनजी की दरगाह मे मिले और धर्म कर्म ओढ कर सहायता करने का वादा किया साथ ही उसने सवाईसिंह को निमन्त्रण दिया कि वह मूडवे आवे जहा उसकी महमानी की जायेगी तथा इस प्रकार बात और पक्की करली जायेगी।

इस पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार दो हजार व्यक्तियो सहित सवाईसिंह मीरखा के यहा मूंडवा पहुंचा और जब ये लोग एक बडे शामियाने के नीचे बैठकर मीरखा की फौज के लिये खर्ची देने बाबत उसके लोगो से बात-चीत कर रहे थे उस समय मीरखां वहां से
इशारा पाते ही चारो तरफ खडे लोगो ने
उधर तोपे छोडी गई जिससे लोग उसके नी
बाकी के इधर उधर भाग गये। इनमे
गया और उसने सवाईसिंह तथा तीन अन्य
ऊट पर जोधपुर भिजवाये। महाराजा इन
उनके सिरो से सिरे बाजार गेंद खेलने का
इसे अनुचित बताकर ऐसा करने से रोक दि
कि उस समय किस प्रकार के षड्यत्र चला
हीन व्यक्ति का सहयोग लेने के लिये राजा
कर लिया करते थे। सवाईसिंह बडा जबर्द

---

1 ख्यात 75-78

गलत चाल मे आ जाने से ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्ति का जीवन यों ही समाप्त हो गया। इसकी महत्ता को प्रकट करने वाला एक दोहा इस प्रकार है—

मुरधर होगी मोडली, धर पर पडती धीग।
सरगा लोगो सेहरो, सेर सवाईसींग ॥

अखैचंद और इन्द्रराज के बीच द्वेष के कारण राजनीति में बदलाव—

मुहता अखैचन्द और सिंघवी इन्द्रराज दोनो बराबरी के व्यक्ति थे। अत: सिंघवी इन्द्रराज के पास दीवान का पद और महाराजा की मरजी देखकर अखैचन्द बहुत जलता था और कोई चारा न देखकर वह महाराजा के गुरु देवनाथ जी के शरण मे रहने लगा तथा वही से राजनैतिक चाले चलने लगा। इन्द्रराज सिंघवी जो कि बहुत अच्छा कार्यकर्त्ता था अपने काम मे किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही चाहता था अत: उसने महाराजा से अर्ज की कि अखैचन्द वगेरह कार्य बिगाड़ने की नियत से हस्तक्षेप करते हैं, आपका जैसा आदेश हो वैसा किया जाय। इस पर महाराजा ने स्पष्ट कर दिया कि तुम्हारे कार्य मे अन्य कोई हस्तक्षेप नही कर सकेगा और सारा कार्य मेरे आदेशो से ही चलेगा। इधर पिंडारी मेमदखा और मीरखा क्रमशः उनालू एव सावणू फसल पर गाव लूटते हुए खर्ची प्राप्त करने के लिये हर साल आ जाया करते थे। सवत् १८७२ मे जब मीरखा खर्ची के लिए आया और उसे एकाएक रुपये नही दिये जा सके तब अखैचन्द ने यह ठीक अवसर देख कर मीरखा के कान भरे कि इन्द्रराज और देवनाथजी ही राज्य का कार्य देखते हैं और वे रुपया देने मे आगा पीछा करते हैं, इसमे महाराजा की तरफ से कोई रुकावट नही है, अत. आप दोनो का सफाया करें तो हमेशा के लिये यह काटे दूर हो जावें। मीरखां के यह बात जंच गई और उसने अपने २७ चुने हुए झगडालू सिपाहियो को आवश्यक निर्देश देकर किले पर भेजा। उन्होने इन्द्रराज व देवनाथ (जो ख्वाबगाह के महल मे बैठे हुए थे) का काम तमाम कर दिया। मानसिंह इस घटना पर बडे कुपित हुये और उन्होंने आज्ञा दी कि इन पठानो को जीवित नही जाने दिया जाय, परन्तु मीरखा जो फौज लिये खडा था उसने धमको दी कि अगर पठानो को मारा गया तो वह शहर लूट लेगा।

इन दोनो लोगो के मरते ही अखैचन्द की पूछ हो गई तथा उसने राजाराम और श्रीकिसन के साथ मिलकर मीरखां को खर्ची के रुपये देने का वादा किया। अब राजकाज मुहता अखैचन्द को सौंपा गया, और वह दीवान बना। लेकिन जब महाराजा को यह मालूम हुआ कि इंद्रराज एव देवनाथ को मरवाने का षड्यत्र अखैचन्द का ही था

तो वे उससे नाराज़ रहने लगे। ऐसी परिस्थिति देख कर गुलराज सिंघवी ने अर्ज करवाई कि इन्द्रराज वगैरह आपके आदेश से मारे गये हों तो मुझे कुछ नही कहना है और यदि यह कार्य अखैचद ने करवाया है तो मैं उसे दण्डित करने मे सक्षम हूँ। महाराजा का इशारा पाकर वह दो हजार घोडो सहित जोधपुर पहुचा और दूसरे दिन गढ मे हाजिर हुआ तो महाराजा ने राज्य-कार्य उसे सौप दिया। गुलराज और फतैराज राज्य का कार्य करने लगे। अखैचन्द भयभीत होकर आत्मारामजी की समाधी में जा छिपा। अब उसने भीमनाथजी से मेल-मिलाप बढाया तथा इधर राजकुमार छत्रसिंह की माता चावंडी रानी से यह कहलवाया कि देवनाथजी की इस प्रकार मृत्यु हो जाने पर महाराजा का मन राज्य-कार्य से विरक्त हो गया है। अतः यदि आप सहायता करें तो छत्रसिंह को युवराज पदवी दिलवाकर राज्य-कार्य उन्हें सौंपा जा सकता है और श्री हुजूर तो मालिक हैं ही सो वे महलों में आराम करते रहेगे। इस व्यवस्था के हामी कई चाकर भी अखैचंद के कहने मे आ गये थे। महाराजा की इच्छा न होते हुए भी उनके गुरु भीमनाथजी के कहने पर उन्होने छत्रसिह को युवराज पदवी देने की स्वीकृति प्रदान करदी, परन्तु वे मन ही मन बड़े दुखी हुए। यह परिवर्तन होते ही अखैचद ने जब गुलराज किले मे आया तो उसकी हत्या करवा दी।[1]

इन घटनाओ के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि उस समय राजवर्गीय लोग राजकोय सत्ता की लोलुपता मे कितने विकल हो जाते थे और इसमे राजा की अकर्मण्यता के कारण राज्य-व्यवस्था एक खेल बन कर रह जाती थी। और तो और राजघराने के जिम्मेदार लोग भी इस नाटक के पात्र बनकर रह जाते थे।

छत्रसिह की युवराज पदवी एवं राज्य-व्यवस्था में भारी परिवर्तन—

युवराज छत्रसिंह अनुभवहीन एव अपरिपक्व युवक था और सदा मनचले लोगो से घिरा रहता था महाराज की उदासीनता के कारण उसे मनमानी करने का खुला अवसर मिल गया अत: वह राज्य-कार्य मे अधिक रुचि न लेकर मदिरा-पान तथा वैश्याओ मे रुचि रखने लगा। अधिकांश समय खेल तमाशो और आमोद प्रमोद मे व्यतीत करने लगा जिससे कई लोग दुखी रहने लगे और कई व्यक्ति उससे अनुचित लाभ भी उठा रहे थे। जोशी शम्भुदत्त ने जो स्वामिभक्त और समझदार व्यक्ति था, महाराज कुमार को शिक्षा देने की कोशिश की पर उसका परिणाम उल्टा निकला और वह दण्डित हुआ। इसी बीच ठीक

1 ख्यात पृ. 99-110

अवसर देखकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी सरकार ने एक समझौते के अहदनामे पर व्यास विसनराम, अभैराम केमार्फत छत्रसिह को स्वीकृति प्राप्त करली। इस अहदनामे की १० कलमे थी।

राजनीतिक उलटफेर के अलावा एक वात और हुई, महाराजा जहां नाथो के अनन्य भक्त थे वहाँ छत्रसिह ने वैष्णव धर्म मे अपनी आस्था प्रकट की जिससे नाथो का दवदवा कम हो गया। अपने वदचलन के कारण अशक्त होकर सवत् १८७४ मे छत्रसिह का देहान्त हो गया। मानसिह को गद्दी के प्रति उदासीनता अभी वैसी ही वनी हुई थी। अतः स्वार्थी लोगो ने किसी तरह छत्रसिह की मृत्यु को गोपनीय रखकर किसी दूसरे व्यक्ति को गद्दी पर वैठाने का विचार किया, पर ऐसा सभव नही हो सका। ईडर से किसी को गोद लाने की युक्ति भी पार नही पड़ी। रानियो के प्रयत्न करने पर भी महाराजा ने अपनी उदासीनता नही तोड़ी और न ही उनका अविश्वास दूर हुआ।[1]

उपर्युक्त घटनाए जहां वडा कारुणिक प्रसग प्रस्तुत करती हैं वही राज्य-कर्मचारियो की पदलोलुपता का हृदयहीन चित्र भी सामने आता है, यहा तक कि निर्दोष लोग भी इस वहाव मे वह जाते हैं। इन परिस्थितियो मे सामान्य प्रजा-जन की क्या हालत रही होगी यह भी कल्पनाजन्य अनुभूति का विषय है।

अग्रेजों के प्रतिनिधि वरकतअली के आश्वासन पर उदासीनता छोड़ कर महाराज का पुन राज्यकार्य सम्भालना—

पहले पहल जव वरकत अली महाराजा से मिला तो महाराजा ने उससे कोई वात नही की क्यो कि उसके साथ कई सरदार भी थे। परन्तु, दूसरे दिन जव वह अकेला महाराजा से मिला तो उस वातावरण के पीछे जो भी राजनैतिक गतिविधियाँ थी उन पर खुल कर महाराज ने चर्चा की। इस पर वरकतअली ने आश्वासन दिया कि वे राज्य-कार्य सभालें, कम्पनी सरकार उनकी पूरी मदद करेगी और षड्यत्रकारियो को सजा देने मे उनकी सहायक रहेगी। तव महाराजा ने राजकीय वस्त्र धारण कर पुन राज्य-कार्य सभाला। राज्य-कार्य अव भी अखैचन्द ही करता था और पोकरन ठाकुर सालमसिह प्रधान था। महाराजा ने प्रारम्भ मे सवके साथ अच्छा व्यवहार किया और सामान्य तौर से राज्य-कार्य चलने लगा। एक वार जव अखैचन्द मडोर से लौट रहा था तव जिनसी लोगो ने खर्ची का तकाजा कर अखैचन्द को घेर लिया और इधर

---

1 ख्यात पृ 111-122

किले में अनेक राज-कर्मचारियों को कैद करने का हुक्म हुआ जो षड्यन्त्र मे अखैचन्द और छत्रसिह के साथ थे। अनेक लोगो को जहर के प्याले दिये गये और कई लोगो को मोत के घाट उतार दिया गया, जिनमे मुहता अखैचन्द भी शामिल था, यद्यपि उसने कहा कि मुझे जीवन-दान देदो तो मैं २५ लाख रुपये दे दू गा। बिहारीदास खीची जो भाग कर खेजडला ठाकुर की शरण मे चला गया था का भी पीछा किया गया और उस झगडे मे भाटी शक्तिदान घायल हुआ। उधर नीबाज ठाकुर सुरताणसिह की हवेली पर फौज भेजी गई तथा सुरताणसिह लडकर काम आया। सुरताण की मृत्यु का समाचार सुन कर पोकरन व आसोप ठाकुर भी जोधपुर का परित्याग कर चले गये। रोईट का पट्टा भी खालसा कर दिया गया। सवत् १८८५ मे मुहता अखैचन्द का घर भी लूटा गया और वहा से रु १२९००० प्राप्त किये गये। नीबाज आदि कई ठिकानो पर भी फौज भेजी गई। इस प्रकार जिन कर्मचारियो को मरवाया गया उनकी जगह नई नियुक्तिया की गई और उन सब लोगो से बदला लिया गया जो छत्रसिह को युवराज बनाने के पक्ष मे थे या युवराज बनने के बाद जिनका व्यवहार मानसिह की दृष्टि मे अच्छा नही था।[1]

इस प्रकार हम देखते हैं कि मानसिह के घराने का मुत्सद्दियो के दाव-पेच और नाथो के अनुचित हस्तक्षेप के कारण विघटन हो गया था तथा उसके एकाएक राजकुमार की भी बडी दुखद मृत्यु हुई। इस उलटफेर मे जहा अनेक राज्य-कर्मचारियो की असलियत सामने आई वहा अखैचद तीसरे दीवान थे जो कि मारे गये। इस प्रसग मे एक कवि का कहा हुआ दोहा आज भी प्रचलित है—

अखा मत कर ओरतो, जीती गयो न कोय।
ई दो तो इद्रपोळी उतरै, (अर) गुलो गड़ो मे जाय॥

इसके बाद राजकीय पदो मे फिर से परिवर्तन किया गया और मुख्य पदों पर महाराजा ने अपने विश्वासपात्र व्यक्तियों को नियुक्त किया। दीवान का पद अब फतैराज सिंघवी को दिया गया। मानसिह ने कुपित होकर आउवा, आसोप, नीबाज आदि ठिकाने जब्त कर लिये थे। उन ठाकुरो ने अजमेर जाकर पोलिटिकल एजेन्ट से अपने ठिकाने बहाल कराने का उज्र पेश किया जिसकी पैरवी काफी समय तक चली और यह ठिकाने बहाल कर दिये गये।

इधर राज्य-कार्य मे नाथो का दखल फिर से बढने लगा और

---

1. ख्यात पृ- 122-139

लाडूनाथजी की आज्ञा से कई राज्य-कार्य होने लगे। लाडूनाथ जब संवत् १८८५ मे गिरनार की यात्रा पर गये तब लौटते समय उनकी मृत्यु हो गई। इसी दौरान जोशी शंभुदत्त पर महाराजा की विशेष कृपा रही, इसने कई महत्वपूर्ण काव्य बनाकर महाराजा का सम्मान भी प्राप्त किया।

महाराजा मानसिंह पर अंग्रेजों की काफी रकम चढ़ गई थी और इधर उसने नागपुर के शासक को भी शरण दी थी इसका जवाब भी मानसिंह से तलब किया गया।[1] इसी समय संवत् १८८८ मे अजमेर स्थित पोलीटिकल एजेन्ट ने राजस्थान के सभी राजाओं का दरबार बुलाया जिसमें उदयपुर, भरतपुर, टोंक, कोटा के शासक शामिल हुए पर मानसिंह उसमे नहीं गया।

सवत् १८९१ मे मालाणी के जमीदारों एवं भोमियों ने गुजरात आदि क्षेत्रो मे लूटपाट प्रारम्भ करदी थी तब अंग्रेजी सरकार के आदेशानुसार लाडनू ठाकुर और जालोर के हाकिम आदि को इन्हें दबाने के लिये भेजा और अंत में बाडमेर मे इन बाकी लोगो को पकड़ कर कैद कर लिया गया।[2]

संवत् १८९२ में महामारी का बड़ा प्रकोप हुआ जिसमें हजारो व्यक्ति मारे गये और इस समय गेहु १ रु० का २० सेर बिकने लगा।[3] महाराजा ने जब अग्रेजों की बकाया राशि नही दी तो उन्होने उसके एवज मे सांभर और नांवा आदि के जरीबे जब्त कर लिये।[4] इसी दौरान साथीण ठाकुर शक्तिदान की अध्यक्षता मे पोकरण आउवा, रास, नींवाज आदि अनेक ठाकुर अजमेर पहुंचे और सदरलैण्ड से मिले तथा उससे अनुरोध किया कि हमारी जागीरें पुन दिलावें और नाथो का उपद्रव बढ़ रहा है, अतः महाराजा को समझावें वरना इससे मारवाड को हानि होगी। इस पर सदरलैण्ड व कैप्टीन लडलो जोधपुर पहुंचे।

जब मानसिंह ने उनसे मुलाकात की तो इन सरदारो के ठिकाने बहाल करवा दिये गये, परन्तु जब सदरलैण्ड ने नाथो का हस्तक्षेप राज्य से हटा देने की बात की तो मानसिंह ने ध्यान नही दिया इस पर वे अजमेर के लिये प्रस्थान कर गये। महाराजा का वकील राव रिखमल साहब को मनाने गया परन्तु उसने कोई गौर नही किया। इसी दौरान अग्रेजों की सहायता से आसोप का घेराव भी उठा दिया गया और स्थिति की नाजुकता को देखते हुए महाराजा ने चढी हुई रकम के पेटे अनेक स्वर्ण-आभूषण आदि अजमेर भेजे।[5]

---

1 ख्यात पृ 152 2 ख्यात पृ. 159 3 ख्यात पृ 162 ख्यात पृ 162
5 ख्यात पृ. 164-168

महाराजा मानसिंह अपने राज्य से नाथो का हस्तक्षेप बन्द नही करना चाहते थे और अंग्रेजी सरकार के आदेशो की अवहेलना बराबर करते रहते थे जिसके फलस्वरूप सदरलैण्ड ने जोधपुर पर चढाई हेतु वहा स्थित जागीरदारो से सलाह की। तब सभी जागीरदारो ने सहयोग देने का आश्वासन दिया, परन्तु भाटी शक्तिदान ने साहब से कहा कि हम आपकी चढाई मे तो साथ देगे, किन्तु जो भी असली राजपूत होगा वह महाराजा की निजी सुरक्षा का अवश्य ख्याल रखेगा। इसके बाद ही सवत् १८९६ मे भाटी शक्तिदान का वही देहान्त हो गया।

इसके उपरान्त राजस्थान के सभी रजवाडो को अजमेर से सूचना दी गई कि महाराजा मानसिंह अहदनामे के अनुसार बरताव नही करता है, और न चढी-हुई रकम का भुगतान ही करता है, ऐसी स्थिति मे हम उस पर चढाई करेगे और जनता को भी आश्वस्त किया गया कि चढाई के समय उनको अनावश्यक रूप से परेशान नही किया जायेगा। अंग्रेजो की फौज जब चढ कर बनाड तक आई तो मानसिंह स्वयं अपने वकील एव मुत्सद्दियो सहित सामने गया और सूचना भिजवाई कि उनका वकील सदरलैण्ड से मिलना चाहता है। इसके उपरान्त सदरलैण्ड से महाराज की भेट हुई। उन्होने कहा कि उनका इरादा अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध लडाई करने का नही है और जैसा वे लोग चाहें बदोबस्त के बारे मे सब बाते मान्य होगी। इस पर वातावरण शात हो गया और महाराजा ने किला खाली करके अंग्रेजो को सौंप दिया। अंग्रेजों की स्वीकृति से केवल १०० कर्मचारी महाराजा के पास रहे। इसके बाद अंग्रेजो और मानसिंह के बीच पुन कौलनामे की लिखावट हुई।[1]

अब राज्य की व्यवस्था मे अंग्रेजो का वर्चस्व बढ गया था अतः जागीरदारो के पट्टो के बारे मे जो भी असतोष था उस पर गौर किया गया और पट्टो मे आवश्यक दुरस्ती की गई तथा राज्य की आमदनी व खर्च की सही जानकारी भी राज्य के रेकार्ड से पोलीटिकल ऐजेण्ट ने प्राप्त की। साथ ही जिन सिपाही लोगो की नौकरी की रकम चढी हुई थी उसका हिसाब भी मागा गया। जब कर्नल सदरलैण्ड वहा की व्यवस्था से सतुष्ट हुआ तब वह अजमेर लौट गया तथा वहा से जब वह कलकत्ता गया तब उसने महाराजा को किला वापस सौंपने का हुक्म भिजवा दिया, जिसके फलस्वरूप किला महाराजा को मिल गया और अंग्रेजी हुकूमत का दफ्तर सूरसागर मे लगने लगा।[2]

यद्यपि अंग्रेजो के हस्तक्षेप से जागीरदार सतुष्ट हो गये थे और राज्य-कार्य भी व्यवस्थित ढंग से चलने लगा था लेकिन नाथो का दखल अब

---

1. ख्यात पृ 169-185 2 ख्यात पृ 186-213

भी बना हुआ था। कप्तान लडलो ने नाथो के प्रति कड़ा रुख अपनाया और उनके पास जो बधारे मे जागीरें थी वे जब्त करली गईं। इसी दौरान पोलिटिकल एजेण्ट का भी पत्र आया कि नाथो का दखल राज्य-कार्य मे समाप्त किया जाय और नाथो के पास केवल ३ लाख रु. की जागीर रहने दी जाय। व्यवस्था सुधारने की दृष्टि से केपटिन लडलो ने कई नाथो को कैद किया और दो नाथो को अजमेर भेज दिया।

जब मानसिंह ने अपना वर्चस्व समाप्त होते देखा और नाथों की यह गति होती देखी तो उन्हें बडी ठेस लगी और वह खिन्न-चित्त होकर राज्य-कार्य से उदासीन हो गये। उन्होने योगियो की तरह भगवा वस्त्र धारण कर लिये और गिरनार जाने का विचार किया तथा जोधपुर के निकट पाल ग्राम मे डेरा किया। इस पर पोलिटिकल एजेण्ट पाल मे महाराजा से मिला और उन्हें समझाया कि वे जोधपुर नही छोडें वरना उनकी मृत्यु के बाद उनका उत्तराधिकारी धोकलसिंह हो सकता है, जिसे मानसिंह बिल्कुल नहीं चाहते थे। इस पर मानसिंह पाल से पुन: राईकाबाग आ गये और एजेण्ट के सामने अपने पश्चात् अहमदनगर से तखतसिंह को लाकर गद्दीनशीन करने की इच्छा प्रकट की। पोलिटिकल ऐजेण्ट ने उन्हें आश्वस्त किया कि यह सब उनकी इच्छा के अनुसार कर दिया जायेगा। इसके पश्चात् महाराजा वहां से मडोर आ गये और सवत् १९०० भादवा सुद ११ को वही उनका देहान्त हो गया।

महाराजा के पीछे महारानी देवड़ीजी तथा कई पड़दायतें आदि सतिया हुई। इसके पश्चात् पोलिटिकल एजेण्ट तथा रानियो की इच्छा के अनुसार तखतसिंह को खलीते एव पत्र लिखे गये और तखतसिंह को अहमदनगर से लाकर सवत् १९०० मिगसर सुदि १० को जोधपुर के राज्य का राजतिलक दिया गया। इसी समय धोकलसिंह ने भी राजगद्दी के लिये अंग्रेजी सरकार के पास अपना दावा पेश किया, परन्तु उसका दावा निरस्त कर दिया गया और तखतसिंह ही जोधपुर की गद्दी पर बैठा।[1]

इन सब घटनाओ से इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि मानसिंह का काल शाति का काल नही रहा और उस समय आर्थिक और राजनैतिक संकट भी बराबर बना रहा। जागीरदार भी सतुष्ट नही थे। इन सब परिस्थितियो का अंग्रेजो ने पूरा लाभ उठाया और उनका प्रभाव राज्य-कार्य मे बराबर बढता रहा। अंग्रेजो द्वारा नाथों का प्रभुत्व कम करने का प्रयास और कानूनी व्यवस्था कायम करने की ओर ध्यान देने के कारण उन्होने जागीरदारो व जनता का भी विश्वास अर्जित किया।

---

2. ख्यात पृ 214-239.

उपर्युक्त घटनाओ से यह भी प्रतीत होता है कि राज्य-व्यवस्था मे जो गिरावट आई उसका मुख्य कारण नाथ, चारण व मुत्सद्दी लोग थे। मुत्सद्दियो को राजनैतिक परिस्थितियाँ बदलने पर दण्ड मिल जाता था, परन्तु चारण व पुरोहितों का अनुचित दखल बराबर बना रहता था और राज्य-कोष का बहुत सा द्रव्य उन पर खर्च होता रहता था जिससे जनता बडी परेशान थी। एक कवि ने अपने दोहे मे तत्कालीन परिस्थितियो पर जन-भावना के अनुकूल बडी ही मार्मिक टिप्पणी की है.-

चारण मरसी मुलक रा, पुरोहित पडसी पार।
निरवश जासी नाथडा, जद होसी निस्तार॥

जब हम मानसिह के व्यक्तित्व और उसकी कार्य-पद्धति पर इस ख्यात के आधार पर विचार करते हैं तो पता चलता है कि मानसिह विकट परि—स्थितियो मे बडा धैर्य रखने वाला, अपने व्यक्तित्व से लोगो को प्रभावित करने वाला और सकट की घडी मे साहस से काम लेने वाला व्यक्ति था। वह इति–हास, साहित्य तथा सगीत आदि ललित कलाओ का अच्छा जानकार था। कर्नल टॉड उससे मिला था और उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उसने यह सम्मति व्यक्त की थी —

"The biography of Man Singh would afford a remarkable picture of human patience, fortitude and constancy, never surpassed in any age or country I received the most Convincing proofs of his intelligence and minute knowledge of the past history, not of his own country alone, but of India in general He was remarkably well read, and at this and other visits he afforded me much instruction. He had copies made for me of the chief histories of his family, which are now deposited in the library of the Royal Asiatic Society"[1]

यह हम पहले कह आये है कि महाराजा कवियो का बडा कद्रदां था और उसने कवियो को खूब प्रोत्साहित एव सम्मानित किया जिसके फलस्वरूप राजस्थानी काव्य की उसके जीवन काल मे खूब श्रीवृद्धि हुई और परम्परागत काव्य-धाराएं एक बार चरम सीमा पर पहुँच गई। महाराजा स्वय अच्छा कवि था और वह पिंगल व राजस्थानी दोनो मे कविता करता था। उसके रचे हुए

---

1 Lieut Col James Tod· Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol. I, P. 561-62, (1914 A. D)

ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं।[1] इसमें कोई सन्देह नहीं कि परम्परागत राजस्थानी शैली और रागरागिनियों में गीत लिखने में वह अपने समसामयिक कवियों में अन्य कवियों की तुलना में कई दृष्टियों से श्रेष्ठ कवि कहा जा सकता है।

मानसिंह के भजन एवं अनेक पद आज भी जन-जीवन में प्रचलित हैं और साखियों की तरह अनवरत गाए भी जाते हैं। उसने अपने इसी साहित्य प्रेम के फलस्वरूप संस्कृत, हिन्दी व डिंगल भाषाओं में ग्रंथों का महत्वपूर्ण संग्रह करवाया था जो 'पुस्तक प्रकाश' के नाम से प्रसिद्ध है।[2]

मानसिंह चित्रकला का भी बड़ा प्रेमी था। उसने ढोला मारू रा दूहा, पंचतन्त्र तथा शिवरहस्य, रामायण आदि के आधार पर अनेक चित्र बनवाये जिनका राजपूत शैली में बड़ा महत्व है। वह भवन-निर्माण-कला का भी प्रेमी था। उसने महामन्दिर तथा उदय मन्दिर में भव्य इमारतें बनवाईं और जोधपुर के किले मे जयपोल का निर्माण करवाया तथा कुछ महलों मे परिवर्तन भी किये।[3]

मानसिंह मुख्य रूप से कवि-हृदय था और उसका दृष्टिकोण धन सम्पदा को सदा कलाओं पर खर्च करने का रहा, जिससे वह राज्य के आर्थिक विकास मे योगदान नहीं दे सका। फिर भी राजस्थान के समसामयिक राजाओं मे उसका बडा प्रभाव था और अवसर आने पर वह [illegible] के सामने झुका नहीं। अपनी काव्य-कला से वह लोगो को प्रभावित करना भी खूब जानता था और इस कारण से ऐसी परिस्थितियो मे भी उसने जो मारवाड की जनता का सम्मान अर्जित किया वैसा यहा के बहुत कम शासक कर पाये।

महाराजा मानसिंह ने लगभग ४० वर्ष तक राज्य किया अतः करीब अर्धशताब्दी का वृतान्त इस ख्यात मे उपलब्ध होता है जो निश्चय ही उस काल को समझने मे एक प्रामाणिक आधारभूत सामग्री का काम देता है।

---

1. द्रष्टव्य—रसीले राज रा गीत, (परम्परा) सम्पादक डा नारायणसिह भाटी, राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी जोधपुर।

2 यह संग्रह अब जोधपुर महाराजा द्वारा किले मे सस्थापित 'महाराजा मानसिह पुस्तक प्रकाश" के रूप मे अवस्थित है और इसे एक व्यवस्थित शोध सस्थान का स्वरूप दे दिया है जिसमे ऐतिहासिक महत्व की अनेक बहिए व कागजात भी शामिल कर दिये गये है तथा महत्वपूर्ण ग्रंथो के प्रकाशन एव कैटलोगिग का कार्य भी चल रहा है।

3 द्रष्टव्य—मारवाड रा परगना री विगत, भाग 1, परिशिष्ट (कमठ री विगत) सम्पादक डा नारायणसिह भाटी, प्रकाशक-राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर।

इस ख्यात का सम्पादन हमनें तीन प्रतियो के आधार पर किया है जिनका परिचय निम्न प्रकार है :—

क रा शो स ग्रन्थाक १०६०६, पत्र स २१२, आकार ४० ६×२६ से मी
ख रा शो स ग्रन्थाक १०६१०, पत्र स १२७, आकार ६६ ५×२५ से मी (बही नुमा)
ग[1] रा प्रा वि प्र ग्रन्थाक २०१३०, पत्र स ५०४, आकार ५७×२१ से मी (बही नुमा)

उपर्युक्त प्रतियो मे से 'क' प्रति (सवत् १६३१) को आधार मानकर अन्य दो प्रतियो का उपयोग पाठान्तर के रूप मे किया गया है । ग्रन्थ मूलत साहित्यिक न होकर ऐतिहासिक है । अतः तथ्यगत पाठ-भेद भी ग्रहण किया गया है और यही सभव भी था क्योकि प्रत्येक ख्यात की लिखावट मे थोडा बहुत अन्तर तो लिपिकर्त्ता की असावधानी से भी आ जाता है या कही कही उसी बात को कहने मे शब्दो का उलटफेर कर दिया जाता है, पर तथ्य गत बात वही है जो मूल-प्रति मे है । अत पाठान्तर के लिये ही पाठान्तर ग्रहण करने की प्रणाली अपनाकर ग्रन्थ का अनावश्यक कलेवर बढाना समीचीन नही समझा गया । परन्तु, किसी महत्वपूर्ण तथ्य को छोडा भी नही गया है । अन्य प्रतियो के अतिरिक्त तथ्यो के अव्यवस्थित वर्णन को कही कही सार रूप मे भी पाद टिप्पणी मे देना पडा है क्योकि वे तथ्य इस प्रकार अस्पष्ट व बिखरे हुए रूप मे थे कि उनको उसी रूप मे ग्रहण करना न सम्भव था न उपादेय ही, पर ऐसे स्थल गिने चुने ही है।

उपर्युक्त प्रतिया जिन सस्थानो से उपयोग हेतु मुझे उपलब्ध हुई उनका मे आभारी हू ।

इस ख्यात का सम्पादन-कार्य कई वर्ष पहले जब डा फतहसिह प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के निदेशक थे, उनके आग्रह पर हाथ मे लिया गया था । सम्पादन करने के पश्चात् भी अर्थाभाव के कारण प्रतिष्ठान की ओर से इसका प्रकाशन-कार्य प्रारम्भ नही किया जा सका । इस प्रकार एक लम्बी अवधि के बाद यह ग्रन्थ प्रकाश मे आया है और मुझे आशा है कि इस ग्रन्थ से न केवल इतिहास अपितु समाज शास्त्र, साहित्य एव अन्यान्य क्षेत्रो के शोधकर्त्ता भी लाभ उठा सकेंगे ।

इस ग्रन्थ के सम्पादन मे जहा अन्य प्रतियो के महत्वपूर्ण पाठभेद दिये गये हैं वहा आवश्यक शब्दार्थ भी लगा दिये गये हैं तथा परिशिष्ट मे उस समय के कुछ महत्व पूर्ण पत्र भी प्रकाशित कर दिये गये हैं जिससे इस ग्रन्थ के

1 इसमे आदिनारायण से महाराजा मानसिंह तक राठौड शासको का विस्तृत विवरण दिया गया है ।

समूचे महत्व को ग्रहण करने मे पाठकों को सुविधा होगी और इस राज्य की स्थानीय हलचलों को जानने हेतु यह सामग्री उपयोगी रहेगी। ये पत्र पोकरण हाउस जोधपुर के सौजन्य से प्राप्त हुए है, जिसके लिए हम पोकरण ठाकुर साहिब के अत्यत आभारी है ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन मे प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के निदेशक श्री जितेन्द्र-कुमार जैन तथा उपनिदेशक डा पद्मधर पाठक का सहृदयता पूर्ण सहयोग मिला तथा प्रकाशन विभाग के श्री गिरधरवल्लभ दाधीच कनिष्ठ तकनीकी सहायक ने प्रूफ सशोधन मे सहयोग दिया एव मेरे अनुज श्री हुकमसिंह भाटी ने इसकी नामानुक्रमणिकाए बनाने का श्रम किया है जिसके लिये मै इन सभी महानुभावो को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

नारायणसिंह भाटी

विषय-सूची

महाराजा मांनसिंह री ख्यात

॥ श्री जाळधरनाथजी ॥

माहाराज श्री मानसिंघजी समतें १८३९ रा मिती माहा सुद ११ दुतीक गुरुवार रौ जनम नै समत १८६० रा मिगसर वद ७ जोधपुर गढ दाखल हुवा। समत १९०० रा भादवा सुद्र ११ सोमवार नै पाछली रात पोहोर एक रया[१] मडोवर मे देवलोक हुवा[1]।

माहाराज श्री विजैसिघजी रै माहाराज कवार फतैसिघजी पाटवी हा[2] सो चलिया पछै पासवानजी अरज कर नै कवरजी सेरसिघजी नू जुगराज[3] पदवी दिराई थी। नै पासवानजी रा वाभा तेजसिघजी चल गया तरै मानसिघजी नै पासवानजी आपरै खोळै ज्यू राखीया था[4]। सो सेरसिघजी मानसिघजी दोनू पासवानजी कनै माहलैबाग रहना था।

समत १८४८ रा वेसाख मे भीवसिघजी मतै मालक वणीया[5] जिण समै पासवानजी सेरसिघजी ने मानसिघजी नै[२] जाळोर मेल दीना,[6] जाळोर पासवानजी रै पटै थी। पछै सेरसिघजी तो जालोर सू परा आया,[३] जिणा नै भीवसिघजी चूक करायौ[४] नै मानसिघजी जाळोर हीज रह्या।

जालोर गढ के महाराजा भीवसिहजी द्वारा घेरा डालना

माहाराज श्री मानसिघजी जाळोर रा गढ मे, नै वारै घेरौ माहाराज श्री भीवसिघजी रौ। जिण फौज मे मुसायव सिघवी इदरराजजी अर भडारी गगाराम, इदरराज रो मामो नै इदरराज रौ छोटो भाई वनराज थौ। सो सैर जाळोर भिळियौ[7] जद काम आयौ,[५] सो विगत इण हीज बही पोथी मैं मडी छै।

---

१ ग पोहर लारली मडोवर रा वाग मे देवलोक हुवा। २ ग पासवानजी (अधिक)।
३ ग 1846 रा उरा आया था। ४ ग सवत 1851 मे (अधिक)।
५ ग सो छतरी जाळोर रै वारै कराई (अधिक)

---

1 मृत्यु हुई। 2 गद्दी के अधिकारी थे। 3 युवराज। 4 गोद के पुत्र की तरह रखा था। 5 अपने आप गद्दी के मालिक बन गये। 6 जालोर भेज दिया था। 7 शहर मे फौज ने प्रवेश किया।

पछै जाळौर फौज रा मोरचा साकडा[1]। माहाराज मांनसिंघजी पूरा तग, खरच रसत री पूरी अडचल[2]। तरै इदरराज सू वात ठहराई कै म्हे गढ खाली कर देसा नै राजलोकां सुधा[3] नीचै उतर जासा। सो आ वात समत १८६० रा आसोज सुदी १ री है। तरै सिंघवी इदरराजी, भडारी गगाराम मालम कराई कै ठीक है, आप फुरमावसो ज्यू करसा।

पिण माहाराज श्री भीवसिंघजी री पूरी तकरार है सो आप दिना रौ करार पको फुरमाय दिरावै नो तोपखानौ वदूक गोळी वद कर देवा। जद आप दीवाळी रौ वचन दियौ। जद इणा वात मान लीवी। हमे साफ गढ छोडण रौ वीचारीयौ। दीवाळी नैडी आई। पछै श्री जाळधरनाथजी रौ मिदर जाळोर रा गढ सू नजदीक है जठै माहाराज कदे-कदे दरसण करण नू पधारै हा[4] सो आयस देवनाथजी जाळधरनाथजी री सेवा करता जिणा नै श्री जाळधरनाथजी री रात रा आग्या हुई कै माहाराज श्री मानसिंघजी गढ छोडै है सो काती सुद ६ ताई गढ नही छोडै तो कदेई माहाराज श्री मानसिंघजी सू गढ छूटै नही। नै जोधपुर रो राज इणा नै मिळै। सो आ आग्या हूई जद आयस देवनाथजो आय मालम कराई। जद आयसजी नू रुवरू बुलाया, अर फुरमायौ—ठीक है कै औ गढ जाळौर रौ म्हा सू नही छुटै नै जोधपुर रौ राज म्हानु मिळ जावै तो म्हारा राज मे थांरो सीर धणौ रहसी।[5] नै थारी आग्या सू राज रौ काम होसी। इणताछ[6] पकावट कर दीवी।

पछै दीवाळी नैडी आई तरै इदरराज फेर मालम कराई कै गढ खाली कराईजे। जद आप फुरमायौ—के काती सुद ६ ताई फेर सुस्ता रहौ, पछै दिन काढसा नही। जिण री फेर पकावट कर दीवी।

महाराजा भींवसिंहजी की अचानक मृत्यु और स्थिति में परिवर्तन

पछै काती सुद ४ समत १८६० रा माहाराज श्री भीवसिंघजी जोधपुर मे देवलोक हुयगया। तरै धाय भाई सिभूदान, भडारी सिवचद, मोहणोत ग्यानमल वगेरै सारा जिणां मनसोवो कर[7] सिंघवी इदरराजजी नू लिखीयौ—श्रीजी माहाराज तौ धाम पधार गया[8] नै लारै राजलोका रै आसा है[9] अर सवाईसिंघजी पोकरण है जिणा नै वादै कासीद मेलीया[10] है सो थे हाल घेरो उठे

---

1. मोरचे नजदीक लगे। 2 तकलीफ। 3 राज्य कर्मचारियो तथा कुटुम्ब सहित। 4 दर्शन करने को पधारते थे। 5 मेरे राज्य मे तुम्हारा (नाथो का) खूब वोलवाला रहेगा। 6 इस प्रकार। 7 मनसूवा करके। 8 स्वर्गवासी हो गये। 9 रानी गर्भवती है। 10 पत्रवाहक भेजा है।

है ज्यू हीज राखजो, सो सवाईसिंघजी आया फेर अठासू लिखा ज्यू कीजो। सो औ समाचार इदरराज, गगाराम वानै काती सुद ५ पोता[1] तरै घणी फिकर कीवी। पछै पाणीवाडै गया,[2] भदर हुवा,[3] सारौ लोक भदर हुवा। गढ मे पिण मालम हुय गई। मन मे राजी तो हुवा पिण जाणै हमे काई हुसी देखी जासी।

पछै पाणीवाडै गया सु इदरराज गगाराम पाछा डेरै आया। अर मामा भाणेज सला करी कै हमे आपा नू काई कीयौ जोईजै ? जोधपुर वाळा तो लिखै हाल घेरो है ज्यू हीज राखजो नै पछै म्है लिखा ज्यू कीजो सो आपा किसा उणा रा तावेदार छा[4]। आपा तौ सिरकार रा चाकर छा अर जोधपुर वाळा लिखै है कै आसा है, सो देखी जासी, आंपा तो ईकवीस वरस रौ राजा माहाराज मानसिघजी छै अर माहाराज विजैसिंघजी रा पोतरा छै[5] सो हमे हक राज रौ इणा रौ हीज छै। सो आपा तौ इणा हीज सू मिळौ अर जोधपुर ले हालौ। आज ताई भीवराजजी[6] रा हराम खोराई री दिस्ट लगाई नही। लूण री सरीगत[7] थी जितरै आपा इणा सू लडीया। हमे तो औ धणी नै आपा चाकर, श्रीजी सारा थोक आछा करसी।

आ वात पकी विचार, ललवाणी अमरचद इणा कनै रहतौ थौ तिण नू गढ ऊपर माहाराज श्री मानसिघजी कनै मेल मालम कराई–माहाराज श्री भीवसिंघजी धाम पधारीया, इदरराज गगाराम मालम करावै है। तरै आप फिकर कीवी अर दोना नू रूवरू बुलाया सो इणो मुजरौ निजर निछरा-वळ[8] कर अरज करी कै आप जोधपुर पधारीजे। जद आप फुरमायौ कै था दोय जणा रीज भला है कै सारा री है। जद इणा अरज करी कै जोधपुर मे है जिणा री तौ सला दूजी है पिण म्हा दोना री सला आहीज है। आप ताकीद कर फौज दाखल हुईजै अर दर कूचा[9] जोधपुर पधारीजै हमे जेज करणज्यू है नही,[10] सारी वात ठिकाणै आय जासी,[11] किण री सला रो वटसी नही[12] म्है फकत सामधरमा री अरज करा छा। आप मुलक मारवाड रा धणी छौ नै म्है चाकर छा सो म्हारी वदगी खाद देखीजै[13]। ताकीद करावै अर सारा नै खातरी

---

1 पहुचे। 2 शोक की रस्म पूरी की। 3 वाल मुडवाये। 4 हम कौनसे उनके अधीनस्थ हैं। 5 पौत्र। 6 भीवराज के वशजो ने कभी स्वामी से धोखा नही किया। 7 नमक मे हमारा हिस्सा था। 8 भेंट न्यौछावर आदि किया। 9 विना कही ठहरे। 10 अव विलम्ब करने की स्थिति नही है। 11 सव परिस्थिति अनुकूल हो जाएगी। 12 किसी दूसरे की सलाह कारगुजार नही होगी। 13 आप स्वामी हमारी सेवाओ की परीक्षा कीजिए।

ग खास रुका लिखाईजै । जिण ऊपर आप इणा नु खातरी घणी फुरमाई क थे पीढीया रा सामधरमी चाकर छौ ज्यू ही थारी वदगी आज ताई चली आई है । अर था जिसा जोधपुर रै घर मे दूजा नही छै[1] । इण ताछ पूरी दिलासा खातर कीवी नै खास रुको लिख दीयो । तिण री नकल—

> सिघवी इदरराज गुलराज मेघराज कुमलराज मुखराज कस्य सुप्रसाद वाचजो तथा थे श्री वावाजी रा नै वाभेजो रा स्याम धरमी चाकर हौ सो हमार म्हानै जाळौर रा किला सू सैर पधराया, जोधपुर रौ राज सारौ म्हानै करायौ सो आ वदगी थारी कदे भूलसा नही । म्हारो सदा था निरतर मरजी रहसी । थारी वगसीगिरी नै सोजत सिवाणा री हाकमी नै गात्र वीजवो, वणाड नै सुरायता पटै है जिण मे म्हे कदेई तफावत पाडा नही[2] । नै म्हारा वसत रौ[3] हुसी नु थासू तथा थारा वसत रा सू तफावत करै तौ तथा म्हे थानै कदेई कैद करा तौ श्री जळधरनाथजी इस्टदेव धरम करम विचै छै ।

औ रुको निवाजस रै राहा तावापत्र ज्यू इनायत कियौ है । थै श्री वडा माहाराज नै श्री वाभैजी रा स्यामधरमी नै हमे मन वचन काया करमा रा स्यामधरमीज रहो[4] । म्हे इण रुका मै लिखियो है जिण माफक आखर रौ हो और तरै जाणौ तौ अै विचे लिखिया इष्टदेव लगायत एक वार नही सौ वार है । ये घणी खुसी खातर राख जौ ।

इण ताछ पूरो दिलासा कीवी । पछै खास रुका जोधपुर रै गढ मे था जिणा वगेरा नु लिखिया । धायभाई सिभुदान वगेरै खास पासवान अर मुतसदीया सारा नु । जिणा नै लिखियौ कै श्री वडा माहाराज श्री विजैसिघजी अर श्री वाभाजी रा सारा चाकर हौ अर थानै वणाया है जिणी तरै थानै वणोया राखसा,[5] किणी वात रौ फिकर जांणजौ मती । सारां नू वरावर दरजे मुजव वरतसा । विना कसूर किणी नै विगाडसा नही[6] । इदरराज नै वगसी अर सोजत री हाकमी, वीजवो गाव अर दासीवास अै म्हे राज करा जितरै थारै ईज रहसी । वगेरै घणी खातरी लिखी ।

---

1 जोधपुर राजघराने मे कार्य करने वाले दूसरे नही हैं । 2 इसमे कोई हेर फेर नहीं करेंगे । 3 मेरे वश का । 4 मन वचन कर्म से स्वामीधर्म का निर्वाह करने वाले रहो । 5. जिस स्थिति मे हो उसी स्थिति मे बनाए रखेंगे । 6 किसी को हानि नही पहुचाएंगे ।

भडारी गगाराम नू खास रूकौ जिण में लिखियौ कै सिवाणा री हाकमी नै गाव वगांड पटै वगैरै खातर लिखी ।

ग्रर जाळोर री फौज मे सिरदार वडोडा तौ हाजिर हा नही ।[1] नै चादावत बाहादरसिघ डावडा रा, चादावत ग्रमरसिंघ नोखेडा रौ, दुरजनसाल नोदनसिघोत नै रुघनाथसिघोत[2] मेडतिया वगेरै ग्रासामी थी । तिण नु पिण खातरी रा रुका लिखाया ।

पछै इतरी वात कर इदरराजजी कागद लिख कासीदा री जोडिया जोधपुर चलाई, तिण मे थें सभी समाचार लिखिया । कागद थारा ग्राया ग्रर था सला लिखी सो ठीक पिण माहाराज मानसिघजी ईकीस वरस रा धणी माहाराज श्री विजैसिघजी रा पोतरा बैठा[3] दूजी सला विचारौ सो ग्रा वात ठीक नही । महाराज श्री भीवसिघजी विराजिया जितरै तौ उणारै लूण री सरीगत सू इण सू लडिया ग्रर हमे तौ म्हासु दूजी वात हुवै नही[4] ग्रर कदास[5] थें मन मे डर लावौ सो माहाराज श्री भीवसिघजी गढ मे विराजिया तौ श्री वडा माहाराज विजैसिघजी रा चाकरा नै किणी नै विगाडिया नही सो ऐ माहाराज ही किणी नै विगाडसी नही[6] । तिण रैं वचन रा खास रुका इण कागदा मे मेलीया है सो पौंतसी । सो किणी वात रौ ग्रदेसौ[7] जाणजो मती नै था लिखीयो कै सवाईसिघजी पोहोकरण छे सो तौ ग्रावैला हीज पिण ग्रापा मुसदी खास पासवान हा जिणा नै तो खालसाही वरतण राखणी[8] ।

इण ताछ रा कागद लिख जोधपुर मेलीया । श्री माहाराज मानसिंघजी नु तळेटी[9] कचेड़ी रा मैला दाखल कीया । सारी वात री त्यारी कराई । फौज रा डेरा सिरायचा खडा कराया । श्रीजी नै फौज मे डेरा दाखल पधराया नै जोधपुर कागद इदरराज गगाराम रा पोंता, सो पाछौ जवाब ग्रायौ । समाचार वाचीया, धायभाइ सिभुदान, रामकिसन मोहोणोत ग्यानमल सिघवी ग्यानमल भडारी सिवचद वगेरै मुसतदी नै दीवाणजी सिघवी जोधराज रा बेटा विजैराज नै काम करता मू ढा ग्रागे पचोळी गोपाळदास वगेरै सारा जणा विचारी कै ग्रापा तौ लिखण मे पाछ राखी नही थी[10] पिण करा काई,

---

1 वडे सरदारो मे से कोई नहीं था । 2 रघुनाथसिंह मेडतिया के वशज । 3. मौजूद होते हुए । 4 ग्रन्य कोई ग्रनुचित वात मुझसे तो होती नही । 5 कदाचित 6 किसी को हानि ग्रादि नही पहुचाएँगे । 7 ग्रदेशा । 8 ऐसा मानकर चलना चाहिए कि भीवसिहजी की मृत्यु के वाद गद्दी रिक्त हो गई । 9. किलें के नीचे । 10 हम ने तो लिखने मे कोई कमी रखी नही ।

फौज उणा रै हाथ नै मारवाड रा उमराव आउवो, आसोप, रास, चडावळ, लावीया वगेरै छाडीयोडा[1] जिणा नू इदरराजजी घाटै उतार दिया था सो ऊवै कोटे वैठा है। सवाईसिंघजी पिण अठै नही मो जोर आपणो क्यु ही लागै नही।

तरै हार खाय[2] पाछी लिखावट इदरराजजी गगारामजी नू इणा जोधपुर सू कीवी कै म्हारौ विचार वरियौ रह्यौ अर थारै तुली ज्यू थे करी पिण वचन कथन तौ हमे पका लीजौ सो महाराज श्री भीवसिंघजी रा किणी चाकरा नू विगाडै नही नै माहाराज श्री भीवसिंघजी रै खोळै तिलक विराजण री ठेराईजौ।[3]

पछै सवाईसिंघजी पिण पौकरण सू आया। इदरराज गगाराम री सला पिण दाय[4] आई नही। पिण जोर किहूँई लागै नाही।[5] अर मन मे आ जाणै के राज दोय वणीया राखणा।[6]

महाराजा मानसिंह का जालोर से कूच कर जोधपुर आना

पछै माहाराज श्री मानसिंघजी रौ कूच जाळोर सू हुवौ सो दरकूवा गाव सालावास पधारीया। छोटा-मोटा सिरदार नजीक था तिणा नू खास तथा हुकम रा कागद पोता, सौ तौ सारा हाजर हुवा। नै आगी दूर रा सिरदार छाडीयोडा कोई था जिणा नू खास रुका पोता सु वहीर हुवा।[7]

सिंघवी इदरराजजी भडारी गगारामजी मुख-मुसायव[8] सारै काम री मुकत्यारी थी अर भडारी घीरजमल परबतसर री तरफ फौज लीया थौ सो पिण फौज ले आय हाजर हुवौ। अर कोटे सिरदार था सो सारा आय हाजर हुवा ने जोधपुर सू ठाकुर सवाईसिंघजी पोहोकरण नै सिवनाथसिंघजी वगेरै सिरदार नै मुसतदी खास पासवान वगेरै सारा गाव सालावास आय हाजिर हुवा। सारा नू इदरराजजी मुजरा कराया नै खातर न्यारा-न्यारा नू दरजे मुजव कराई। महाराज सिगळा री ओळखाण पूछी।[9] पछै उठा सु कूच हुवौ नै सैर नजीक आयौ तरै हजूर हाथी विराजिया नै लारै छवर करण नू पोहोकरण रा ठाकर सवाईसिघजी वैठा। समत १८६० रा मिगसर

1 राज्य छोडकर वाहर चले गये। 2 मजबूर होकर। 3 ऐसा निश्चय करना कि मानसिंहजी भीवसिंहजी के गोद गद्दी पर वैठें। 4 पसन्द। 5 कुछ भी जोर नही लगता। 6. राज्य के दो टुकडे करवा देना। 7 रवाना हुए। 8 प्रमुख मुसाहिव। 9 महाराजा ने सब का परिचय पूछा।

वदी ७ जोधपुर रै गढ दाखल हुवा। अर सवाईसिंघजी पोहोकरण सु आवता ही माहाराज श्री भीवसिंघजी रा राजलोक देरावरजी, तुवरजी[1] मू अरज कराय मीखाय-भखाय[2] कुबद कर[3] चौपासणी मेल दीया था। माहाराज श्री मानसिंघजी पधारीया पैहेला हीज।

माहाराज गढ दाखल हुवा पछै सारा सिरदार छाडीयोडा तथा घरै बैठा था सो सारा जोधपुर आय हाजर हुवा।

भींवसिंहजी की रानियों का चौपासनी से लौटकर तलेटी के महलो मे आना

सारा जिणा मालम करी[4] कै माहाराज श्री भीवसिवजी रा राजलोक चौपासणी परा गया है सो पराया राजसथान मे[5] आपणे राज री बेढब दीसै[6] सो पाछा गढ दाखल कराईजै।[7] तरै हजुर फुरमायौ कै म्है तौ चौपासणी मेलिया नही, पैला परा गया।[8] सो थे सारा उमराव समजास करनै[9] लावौ। अर थे कहौ ज्यू म्है खातर तसली कर देवा। तरै सवाईसिंघजी वगेरा अरज करी कै देरावरजीसा रै आसा रौ केवै छै सो कदास कवर हो जाय तौ किण तरै करणौ ? तरै माहाराज लिखत कर चौपासणी रा गुसाईजी विठलरायजी नू सूप दीनौ कै भीवसिघजी रै कवर हो जाय तौ राज उणा रौ नै म्है जाळोर पधार जासा।[10] नै बाई[11] हुई तौ जैपर उदैपुर परणाय देवा।[12]

पछै चौपासणी सू जनाना नू लाया सो सवाईसिंघजी चांपावत कुबद फेर सीखाई तिण सू परआरा तळेटी रा मैला परा गया। सो माहाराज नू आ वात मन मा आछी लागी नही पिण गम खाय गया। पछै ऊठै चौकी-पोरा रौ बदोबस्त कराय दीयौ। नाजर गगादास रौ चेलौ रामदास रेहतो। फेर ही जनाना माह सु वडारणीया वगैरे नु कनै राख दीवी।

सवाईसिंघ सटपट[13] घालमेल[14] हरामखोरो मन मे पूरौ विचार लीयौ। नै मूढा सू केवै कै इदरराज गगाराम दोय जिणा रौ हीज कीयौ राजा किण तरै हुसी, ऊमराव थापसी[15] तिकौ राजा हुसी।

---

1 देरावर और तुवर जाति की रानिया। 2 वहकाकर। 3 चालबाजी। 4 अर्ज की। 5 अन्य रजवाडो मे। 6 अपने राज्य की प्रतिष्ठा कम होती है। 7 रानियो को वापिस गढ मे बुलवा लीजिये। 8 मेरे आने से पहले ही चले गये। 9 समझा बुझा कर। 10. हम जालोर लौट जायेंगे। 11 लडकी। 12 शादी कर देंगे। 13 साजिश। 14 इधर-उधर के गुप्त प्रयास। 15 स्थापित करेंगे।

पछै मळ लाग गयौ[1] तिण सूं राजतिलक माहाराज मानसिंघजी माहा सुद ५ नूं वीराजीया। तरै सिलामती मे मानसिंघ गुमानसिंघोत केहण री हुकम फुरमायौ।[2]

माहाराज जाळोर सुं पधारीया तरै राजलोक

१ वडा भटियाणीजी जैसलमेर रा रावळोंना री बेटी तिणां रै बाई सिरेकवरजी।

१ चावडीजी तिणा रै कवर छतरसिंघजी री जनम समत १८५७ री।

माहाराज राजतिलक विराजीया पछै ओहोदा दीया जिणरी विगत[१]

१ परधानगी री सिरपाव अर हाथी चापावत सवाईसिंघ सबळसिंघोत नूं, पटै पोहकरण

१ दिवाणगी भडारी गगाराम नै सिरपाव हुवौ

१ वगसी सिंघवी मेगराज अखैराजोत नूं सिरपाव हुवौ

१ सिंघवी इदरराजजी मुसायब सो दिवाणगी बगसी री काम करै, जिणा नै सिरपाव

१ सिंघवी गुलराज भडारी धीरजमल नूं फौजवखी रौ सिरपाव दे मेडतै कानी बिदा किया[२]

१ सिंघवी कुसलराज वनराज रा वेटा रै जाळोर[३] री हाकमी

१ सिंघवी सुखराज वनराज रा वेटा रै सोजत री हाकमी

१ खानसामाई भडारी भानीराम दीपावत रै

१ नागोर री हाकमी सिंघवी जीतमल जोरावरमलोत तालकै

---

१ ग खिजमत दिया रीं विगत तफसीलवार।

२ ख फौजबन्दी मे था। (अधिक)

३ ग सोजत। (अधिक)

---

1 मल महीने के अशुभ दिन आ गये। 2 तात्पर्य यह कि भीमसिंहजी के गोद की तरह गद्दी पर नहीं बैठे।

१ व्यास पदवी प्रोहित चुतरभुज नै[1]

सिंघवी जोरावरमल रा बेटा हजूर कना सू जाळोर थका छोड माहाराज श्री भीवसिंघजी कनै उरा आया था सो जीतमल सुरजमल नै बुलाया सो तौ कदमा हाजिर होय गया अर[2] फतैमल सिभूमल नै बुलाया सो डरता आया नही। सिभूमल तो सीरौही री फौज मे थौ सो ऊठो कानी रय्यौ नै फतैमल आऊवै रयौ।

श्री हजूर गढ दाखल हुवा जद सिरदारां री आसांमीयां जोधपुर हाजर हा तिणां री विगत

खांप चांपावत —

१ सवाईसिघ सबळसिघोत पोहोकरण
१ ग्यानसिघ नवलसिघोत पाली
१ इदरसिघ किलाणसिघोत[3] रोहट
१ जालमसिघ गिरधारीसिघोत हरसोळाव
१ माधौसिघ ....[4] सथलाणो
१ भारथसिघ इदरसिघोत थावळौ
१ माधौसिघ सिवसिघोत आऊवौ
—
७

खाप कूंपावत —

१ केसरीसिघ रतनसिघोत आसोप
१ बाघसिघ सिवसिघोत गजसीपुरो
१ विसनसिघ हरीसिघोत चंडावळ
१ सिभूसिघ कुसलसिघोत कटाल्यौ
—
४

---

१ ख मादळिये रा पुरोहित जाळोर रा घेरा मे था
२ ख सूरजमल (अधिक)।
३ ख आईदानोत (अधिक)।
४ ख कलाणसिघोत (अधिक)।

खांप जैतावत —

१ केसरीसिंघ ..... बगड़ी
१ भानसिंघ[1] ... खोखरो
—
२

खांप करणोत —

१ करणीदांन फतैकरणोत कांणांणा
१ पेमकरण घणसरामोत वागावस
१ वादरसिंघ .. समदड़ी
—
३

खांप मेड़तिया माधोदासोत —

१ विडदसिंघ वखतावरसिंघोत रीयां
१ भारथसिंघ फकीरदासोत[2] आलण्यास
१ इदरसिंघ[3] वीजाथळ
—
३

चांदावत —

१ वाहादरसिंघ देवसिंघोत अलकपुरो
१ सिवसिंघ फतैसिंघोत बळू दो
—
२

रायमलोतां मे[4] —

१ मालमसिंघ लालसिंघोत राहण रा विसनदासोता मे —
१ गोपालसिंघ वदनसिंघोत बोरू दो

---

१ ग भांनीसिंघ। २. ख कल्याणसिंहोत। (अधिक)
३ ख कल्याणसिंहोत। (अधिक) ४ ग रायपालोत।

गोयनदासोत रुघनाथसघोता री खांप —

१ महेसदांन सालमसिंघोत मारोठ
१ दुरजनसाल नोदनसिंघोत मारोठ
१ सिवनाथसिंघ सूरजमलोत कुचांमण
१ जवानसिंघ रिडमलसिंघोत मीठडी
१ भैरूसिंघ सुजांणसिंघोत पाचवा
१ विसनसिंघ बाघसिंघोत पाचोतो
१ सपतसिंघ बखतावरसिंघोत लूणवो
१ नोदनसिंघ मोतीसिंघोत नावा
१ जोरावरसिंघ माधोसिंघोत सरगोट

६

केसोदासोत —

१ अजीतसिंघ सुरतांणसिंघोत बडू
१ मगळसिंघ बखतावरसिंघोत बोरावड
१ अमांनसिंघ बुधसिंघोत बूडसू
१ नारसिंघ........मनाणो
१ कलाणसिंघ[1]........तोसीणो

५

सुरताणोत —

१ मालमसिंघ देवकरणोत गूलर
१ ठाकुर........जावला
१ मगळसिंघ नरसिंघोत भखरी

३

परतापसिंघोत —

१ दुरजणसिंघ वीरमदेवोत घाणेराव

१ केवल ख प्रति मे ।

१ विसनसिंघ सिवसिंघोत चाणोद
१ कल्याणसिंघ[1] ...... नारलाई
—
२

खाप ऊदावत —

१ ऊरजणसिंघ फतैसिंघोत रायपुर
१ अमरसिंघ जैतसिंघोत छीपियो
१ सुरताणसिंघ सिभूसिंघोत नीवाज
१ जवानसिंघ वनेसिंघोत राम
१ भानसिंघ चादसिंघोत लावीया
—
५

खांप करमसोत —

१ परतापसिंघ ... खीवसर
१ वेरीसाल पाचोड़ी
१ ठाकुर ... वेराई
—
३

खाप भाटी ऊरजनोत तथा जैसा —
ऊरजनोत —

१ खेजडला रा जसवतसिंघजी
१ रामपुरा रा ठाकुर ...
१ जैसा लवेरा रा ठाकुर
—
३

खांप चहुवाण —

१ छतरसिंघ ... किलाणपुर रा राव पदवी माहाराज भीव-सिंघजी री रजवाड मे दुरजणसिंघजी छाड परौ गयौ तरै राव

१ केवल ख प्रति मे।

पदवी छतरसिंघ नै दीवी

१ सिभुदान " " "सखवास रौ

—

२

खांप जोधा

१ इदरसिंघ भीवसिंघोत खेरवो
१ पदमसिंघ सिवदानसिंघोत लाडणू
१ जालसिंघ ऊमेदसिंघोत[1] भाद्राजूण
१ ठाकुर दुगोली

—

४

डाडी रा गांव अजमेरा रा जठै दरबार रौ हाकम रैतौ—

अजमेरामे जगमालोत मेडतीया तथा जोधा

१ भिणायत रा ऊदैमाणजी खाप जोधा
१ देवळीयारा अजीतसिंघजी जोधा
१ खरवे रा देवीसिंघजी जोधा
१ मसूदै भेरूंसिंघजो मेडतीया जगमालोत

—

४

मुसायब मुतसदी

खांप सिंघवी —

१ इदरराज भीवराजोत मुख मुसायब
१ मेगराज अखैराजोत वगसी
१ विजैराज जोधराजोत
१ ग्यानमल फतैचंदोत
१ जीतमल जोरावरमलोत[2]
१ सूरजमल जोरावरमलोत
१ अमरचद खूबचदोत

---

१ ग उदैभाणोत। २. ग सूरजमलोत।

१ चैनमल फतैचद रो पोतो
१ तेजमल सुमेरमल[1] रो बाप
—
६

खांप भंडारी

१ भंडारी गंगाराम दिवाण
१ भानीराम दीपावत खानसामा
१ भांनीदास रै आगै दीवांणगी थी
१ सिवचद मोभाचदोत
१ चतरभुज सुखरामोत
१ धीरजमल
—
६

खांप मोणोत—

१ ग्यांनमल सुरतरांमोत
१ भानीराम सवाईरांमोत
१ .. ..
—
३

खांप पंचोली—

२ जैतकरण, फतैकरण, रांमकरण रा बेटा
१ गोपाळदास हठीमलोत
२ सतावराय सिवकरण
—
५
१ खांप मुहता बागरेचो बांकीदास

खांप पोहोकरणा ब्रामण—

१ व्यास भाऊजी, मनरूपजी, दोलजी वगेरै
१ प्रोहित चुत्रभुज नु व्यास पदवी दीवी

---

१. म. सूरजमलोत ।

१ जोसी[1] वाळू री बेटौ रांमदत
१ पणियो सिरीराम[2]
२ नाथावत व्यास सेरजी, कुसलजी ।
२ फेर··· ·· ···
—
८

खाप आसोपा

१ आसोपा फतैराम
१ आसोपा सुरजमल
१ आसोपा जसकरण
—
३

खांप खास पासवांन--

१ खीचो व्यारीदास
१ धाधल ऊदेरांम
१ पडीयार भेरौ
१ पड़ीयार सिभू
१ गैहलोत बिजयराज[3]
१ सौभावत दोढीदार भगांनदास
—
६

श्री हजूर सायबां साथे जाळोर सुं सिरदार आया

१ आहोर रौ ठाकुर चांपावत अनाडसिंघजी री चाकरी घणी तिणा नै पटौ वधारौ दीयौ ।[1]

१ ग. चावटिया (अधिक) ।
२ ख आईदानोत दोढी री चाकरी मे रहै (अधिक) ।
३ केवल ख प्रति मे ।

1. पटे मे गाँव बढाये ।

२ दासपा रौ ठाकुर, वाकरा रौ ठाकुर ।
—
२

मुतसदी पैला तो जोरावरमलोत सिंघवी रा बेटा जीतमल, फतैमल, सिभूमल, सूरजमल कनै जाळोर था पछै सिंघवी जोधपुर माहाराज भींवसिंघजी कनै आय गया था तरै इणा रा तालकदार पट नै लारै वदगी मे रया जिणा री सारा री ईजत आजीवगा वधाई ।

वडा महाराज श्री विजैसिंघजी री वखत मैं पासवानजी री तरफ सू ओहदेदार जाळोर में था उणा री विगत

१ पीपाड़ री चौधरी सवाईराम, पीपाड पासवानजी रै पटै थी जद चाकर रयौ । जिण नू जाळोर री कारकूनी दिराई थी, जिणरा बेटा मूतो साथवचद, माणकचद¹ वगैरै भाया नू वधाया । मुसायवी रै सिके कर दिया ।[1]

१ नागोर रा छागांणी पोहोकरणा ब्रामण । पनालाल, हीरालाल, छागाणी कचरदास रौ वाप² काका पासवांनजी री सेवा मैं गवईया था जिणा रै जाळोर री फौतदारी पासवानजी दिराई थी सो कचरदासजी रै व्यास पदवी समत १८७६ मे हुई, नै मुसायवी सरवोसरव[2] कीवी ।³

१ लोढो किलाणमल साहामल रौ ।

१ मुंहतो सुरजमल रै काकौ ।

१ सिंघवी जीतमल कनै छोटे दरजै थौ, तिण नूं वधाय दिवाणगी रौ काम करायौ ।

१ मुंहतो अखैचद आहोर रा ठाकुर अनाडसिंघजी रौ कामदार थौ सो जाळोर थका रुपियो पइसो वगैरै री वदगी पोतौ ।[3] जोरावरमलोत सिंघवी जाळोर सूं जोधपुर आया पछै घेरा मे खरचो पुगाई वगैरै सला इणा री रही पछै जोधपुर आय अनाडसिंघजी नू वधारो दीनो तरै अखैचद री वसी कढाय दीवी । मुलक मे वोरगत[4] लाखा रुपीयारी मामलता कीवी । मरजी पूरी रही । पछै समत १८७४ मे वेटा लिखमीचद रै नावे दिवाणगी हुई, महाराजकवार छतरसिंघजी कनै लीवी ।

---

१ ख ग. वखतावरचद (अधिक) । २ ग. बाबा । ३ ग 1890 ताई कीवी ।

---

1. मुसाहिबो के बराबर स्तर कर दिया । 2 पूरी तरह मुसाहिबी का कार्य किया । 3 रुपये पैसे की व्यवस्था करने की सेवा की । 4 रुपये का देन लेन ।

१ सिंघवी वखतावरमल हिंदूमल री बेटो ।

१ खीची चैनजी, जाळोर री क़िलेदारी ।

१ छागाणी गोरधन, सनेई, सिवदत गवईया मे था सो इणा नै पिण वधाया[१]

१ दोढीदार नथकरण राहणां रो चाकर थो, सिंघवी जीतमल कनै छोटै दरजै थो, जिणा नै दोढी री दरोगाई दीवी ।

१ सोड सरूप री काको सिंघवी जोतमल[२] कनै घोडा मे दरोगो थो तिण नू सिवाणा रै गढ री किलादारी नै गाव पटै दीयो ।

१ प्रोहित चुतरभुज जैचंदोत सिंघवी जोतमल, फतैमल कनै छोटे दरजै थो । जिण नू वधायो सो व्यास पदवी दीवी नै मुसायवी कीवी, मरजी घणी रही । वंदगी घेरा री सू ।[1]

१ भाटी जसोड गंजसिंघ री बडो भाई सुरतो जाळोर में सिलेपोसा मे थो सो घेरा में सुरतसिंघ वगैरै घर रा चार काम आया।[2] जिण वंदगी सू मुसायवी कराई । आजीवगा गाव पटो नै समत १८७७ मे गोरधनजी धांधल जोधपुर रा गढ री किलादारी रो काम कीयो ।[3]

१ देवराजोत नथकरण रो बाप पदमो पासवानजी कनै विरादरी मे दरोगो थो सो वदगी सू समत १८६५ रा मे किलादारी जोधपुर री दीवी सी समत १८७६ ताई तो रही पछै माहाराजकवार छतरसिंघजी री घालमेल मे रह्यो[3] तिण सू समत १८७६ मे मरायो ।

१ धायभाई देवो सुरता रो, कोटेचो खीयो ऐ माहाराज श्री गुमानसिंघजी रा वावड था सो धायभाई री पदवी तो पैला हीज दीवी थी पछै समत १८७७ मे मुसायवी रैतौर आजीवगा दोवी, । पछै समत १८९५ मे जोधपुर रा गढ री किलादारी दीवी ।[४]

---

१ ख तिणारा वेटा मूळ आसू वीरमदत्त, वुधनाल हरू वगेरा (अधिक) ।
२. ख जोरावर मल (अधिक) । ३ ख गाव गोवा पटै, सला भाजघड मे रेता (अधिक)।
४. ख सो 1901 ताई रही ।

---

1 जालोर के घेरे मे सेवा की इसलिये । 2 घर के 4 आदमी काम आये ।
3 षडयन्त्र मे शामिल हो गया ।

पछै संभत १९०० मे माहाराज श्री तखतसिंघजी कैद कर रुपीया वालाख लीया १२५०००) ने जनानी दोढी री दरोगाई खीया रै रही।

१ धायल जीवराज, दानो, मूळो वगेरै जाळोर में था तिणा नू संमत रसोडो मागळीया सु छुडाय नै दीयौ। पछै समत १८७४ मे माहाराज कंवार कनै रया तरै १८७६ मे सजावार कीया[1,1]

१ नाजर सिंभुदास जाळोर मे थौ जिण री चेलौ डमरतराम जाट गाव सालावास रौ थौ तिण नू समत १८७७ मे जनानी दोढी री दरोगाई नै मुसायवी दीवी।[2]

१ नाई मयाराम, हेमो, सिंघवी जीतमल कनै रैता तिणा नूं वधाया नै अ गोळीया पदवी दीवी। आगला अंगोळिया हरराम किरतो रा बेटा समत १८६४[3] मे बेमरजी रा होय गया[2] तरै अगोळीया पदवी इणा नै दी।

१ दरजी चेलो, नांनग, मोती जाळोर री चाकरी, नै भूरे दरजी रा बेटा संमत १८६३ रा घेरा मे हाजर नह रया तरां बेमरजी रही, तरै बागा रा कोठार री दरोगाई दरजी चेला नै दीवी। चेलो संमत १८७४ में महाराजकंवार कनै रयो तिण मुदे बेमरजी हुई। तरै कोठार री दरोगाई दरजी नानग मोती नूं समत १८७६ मे हुई।

१ रावत वारीदार माहाराज भीवसिंघजी थकां री हाँ सो संवत १८६३ रा घेरा में हाजर नह रयौ। तरै जाळोर री वदगी सूं वारीदारां री दरोगाई काना नै दीवी। पछै कांनो माहाराजकवार कनै रयौ, तरै बेमरजी रही। तरै रामसा रावत नू वारीदारा री दरोगाई दीवो। समत १८७६ मे हुई, मरजी घणी रही।

१ भारावरदार माळी लखौ। केताक अवदार अंगोलीया मांगळीया दरजी वगेरै आगला सावत रया तिके संमत १८६३ रा घेरा मे हाजर नह रया तरै जाळोर री चाकरी वाळा नूं ओहदा दीया।

---

१ ख मरादिया, घर लूटाया (अधिक)।

२ ख स 1882 कैद हुवा रु. एक लाख दिया (अधिक)।

३ ख स 1863।

---

1. सजा दी गई। 2. कृपापात्र नहीं रहे।

१ राजगुरु प्रोहित ………नू जाळोर री बदगी सू प्रोहित पदवी नै गांव तिंवरी पटै दीवी ।

१ वारठ पदवी आगै मुंदीआड रा ………रै थी सो सावत थी ज्यु हीं राखी ।

१ वणसूर जुगतो जाळोर रा घेरा मे थो तिणानू लाखपसाव दियौ ।-पछै भैरा[1] सू मरजी वधी तरै सटदरण रौ न्याव भोळायौ[1] । गाव पारलाऊ तावापत्र दीयौ । श्री हजूर राजतिलक विराजिया जिण वखत वणसूर जुगतै गुमानसिंघ विजैसिंघोत कै नै आसीस भरी,[2] पैला सिरदारा अरज करी थी जिणसु भीवसिंघजी रा नाव सू आसीस भणीजती[3] ।

सवाई सिंह पर महाराजा की कृपा कम होना तथा देरावर रानी के पुत्र होने की अफवाह फैलना

चापावत सवाईसिंघ रा मन मे हरामखोराई री रातदिन घाट घड वणी रहै तिण सू श्री हजूर री मरजी तर-तर खचती गई ।[4] तळेटी रा मला में माहाराज श्री भीवसिंघजी रा राजलोक रहै[5] सो देरावरजी रै कवर हुवा रौ फितूर खडौ कर देरावरजी रौ भाई भतीजो भाटी छतरसिंघजी रै खेतडी मेल दीयौ कै भीवसिंघजी रै कवर जनमीयौ है । तिण नू डरता खेतडी लेगया है ।

पछै चापावत सवाईसिंघ किरीया कर[6] चडावळ रा ठाकुर कूपावत बिसनसिंघ नू सिखाय-भखाय माहाराज श्री मानसिंघजी सूं मालम कराई कै तळेटी रा मैला मे भाटी छतरसिंघ फितूर रौ तोफौ खडौ कर नै खेतडी लेगयौ है । चौफेर चौकी बैठी, कठै ही मारग नही तिण फितूर री वात खडी करी ।

---

१ ख वडा वडा काम भैरजी रा हाथ सू हुया । महाराज री खास खेळी मे रैता । कोठै भाई वात मालम करता । हजूर घणा राजी रैना । मुसायव सारसतै बरतता । भैरुदान पछै चैनदान माथै मरजी वधी । भैरुदान रा बेटा जादूदान नै दूजै राजस्थान री बातां मुखजबानी याद थी । तखतसिंहजी री मरजी पूरण (अधिक) ।

---

1. आशिश पढी । 2 बोली जाती थी । 3 पट् दर्शन का न्याय उसके हवाले किया ।
4 महाराजा की कृपा शने शने कम होती गई । 5 रानियं रहती हैं ।
6 वात बना कर ।

पछै तर-तर सवाईसिंघजी सूं मरजी हजूर री खेंचती गई। अर सवाईसिंघजी कुवदा[1] चलावतौ रयौ। पछै सवाईसिंघजी पोहकरण जावण री सीख री अरज कराई तरै हजूर खातरी फुरमाई पिण मांनी नहीं। पछै श्री हजूर मांहलैबाग दाखल थका सवाईसिंघजी भाई पाली जिलारा आदमी पाचसौ सातसौ ले कमरा बंदियोडा सीख रौ मुजरो करण आया[2] सो विना मरजी सीख रौ मुजरो कर पोहकरण नूं चढ गया।[1]

कामकरता तौ भंडारी गंगाराम सिंघवी इंदरराज मोणोत ग्यानमल मुंहतो अखैचंद सूं पूरी मरजी सलाह इणामृ घणी।

पछै चैत रै महीने हुलकर[2] फिरंगिया सूं झगडो कर गस्त खाय गयौ।[3] पछै कूच कर मारवाड ऊपर आयौ। अजमेर रै गांव हरमाडे डेरा हुवा। तरै लोढा किलाणमल नै उकील मेलीयौ, वात ठहरी। श्री हजूर रै नै हुलकर रै भाईचारौ ठैरीयौ। हुलकर रा कबीला चैनपुरै राखीया नै जमृतरायजी रौ पाछौ कूच करायौ। फौज आई थी तरै सांमां सिंघवी गुलराज भंडारी धीरजमल नूं विदा किया था मेडतीया री आसामीया साथे वळूदा रा ठाकर सिवसिंघजी नूं पिण साथे विदा कियौ थौ जिण नूं दुसालो इनायत हुवौ थौ।

सिंघवी जोधराज रो बेटो विजैराज नास[4] वगडी जाय बैठौ नै जोधराज री खवास वामणी री बेटौ सिवराज नूं नै सिवराज री वहू नै[3] ढूंढीया नैं ढुंढणी कराय दिया तरै सिवराज नास हरसोळाव परौ गयौ।

पचोळी गोपाळदास उण री कामेती थौ तिण नूं कैद कर रुपिया ५००००) पचास हजार री कवूलायत कराई,[5] तिण मे रुपिया वाईस हजार[४] भराय साभर री कारनूनी दीवी ॥[५]

---

१ ख सो पोकरण मे वेठा कुवधा सरू करी। कागद दुवाई तथा आपरा भला आदमी राजस्थान मे तथा सरदारा उमरावा मुसद्दियां कनै मेल मेल धोकलसिंघ फितूर रौ पथ अगाडी चलावण रौ उदगळ खडो कियो। चवडै आग हराम खोराई महाराजा मानसिंघजी रौ मोड वाधियो। खटनटी-सरदारा सूं फाडातोडा करणा सरु किया (अधिक)।
२ ख. जसवत राय (अधिक)। ३ ग मायो मू डाय (अधिक)। ४ ख.-25 हजार।
५ नै फुरमायो इण नै विगाडणौ नहीं कारण कै सवत 1863 मे जोधपुर मिळगयौ थौ नै धोकलसिंघ रै फितूर मे जोधपुर रो डंड उगायौ नै सवाईसिंघजी नै खरची पुगाई नै गढ मे हजूर मे रसत पुगई (अधिक)।

---

1. अनीतिपूर्ण कार्य। 2 विदा होते समय नमस्कार करने आये।
3 शिकश्त खा गया। 4 भागकर 5 रुपये देने कवूल करवाये।

माहाराज श्री भीवसिघजी रै राज मे खरच जादे थौ सु घटाय कमती कीयौ ।

जसुतराय री फौज रौ कूच अठी नूं हुवौ थौ तरै श्री हजूर माहत्रा रा डेरा मेडतीया दरवाजा बारै कीधा था । संमत १८६० रा चैत मास में ।

देवनाथजी ने जाळोर में जलंधरनाथ जी का वरदान पहुंचाया था जिससे नाथो को मान्यता देना ।

आयसजी श्री देवनाथजी जलंधरनाथजी री आग्यासूं समाचार जाळोर मे घेरा थकां मालम कीया था जिण ही मुजब जालोर रौ घेरौ ऊठ गयौ अर जोधपुर रौ राज मिळ गयौ जिण सूं असवारी लेण नूं घणे इतमाम सूं[1] सोड-सरूप नूं मेलीयो । गांव कायथा मे आयसां रा घर सावठा सासण जठै इणारा ही घर । देवनाथजी, हरनाथजी सुरतनाथजी अै तो वडा भाई नै ओपनाथजी, भीवनाथजी छोटा, अै पांचूं भाई मेहेसनाथजो रा बेटा नै केसरनाथजी रा पोतरा सो पांचूं भाई जोधपुर आया जिणा रै सामी असवारी श्री हजूर माय-ष री कोस अेक सांमा पधारीया ।[2]

सामेळो कर[3] आयस देवनाथजी नूं सांमा बैसाणीया[4] नै दूजा भायां नै पालखीयां मे बैसाण ले आया । सूरसागर डेरा दिया । देवनाथजी नूं गुरु कीया । घणी मुरातबो वधायौ ।[5] गुलाबसागर ऊपर नाथजी री निज मिंदर करायौ । तिणरी सेवा सुरतनाथजी नूं भोळाई । नै नागोरी दरवाजा बारै माहामिंदर री नीव दिराई, कमठो[6] सुरु करायौ । इणोरो खरच सामठौ सरु हुवौ नै मुलक रा काम री सला पिण सरू हुई ।

माहाराज श्री विजैसिघजी रा कवर सेरसिंघजी, सूरसिंघजी नूं माहा-राज श्री भीवसिघजी गढ में चूक करायौ तरै खास पासवान चूक मे हाजर था तिणा नूं कैद कर पछै मराया, माहाराज श्री मानसिघजी ।

---

१ ख साथूनी तरफ (अधिक) ।
२ ग इणा सूं (अधिक) ।

---

1 खूब अच्छे बन्दोबस्त के साथ । 2 एक कोस तक महाराजा उनके सामने गये ।
3. सम्मान स्वागत कर 4 अपने सामने हाथी पर बैठाया ।
5. उनको खूब इज्जत दी । 6. इमारतें बनने का कार्य ।

विगत—

१ अहीर नगौ, तिण रै माथा मे खीला ठरकाय[1] मरायौ।

१ ·······नू हाथी रा पग रै वाद घीसाय[2] मरायौ।

पछै समत १८६१ मे इतरा जणा नु कैद कीया। विगत—

१ भडारी सिवचद सोभाचदोत

२ धायभाई सिंभूदान जगजी रौ नै रामकिसन

१ सिंघवी ग्यांनमल फतैचद रो वेटो।

छोटा-मोटा फेर माहाराज भीवसिंघजी रा चाकर मरजी मे था-व्यास सेरजी, कुसळजी, सो कितराक नू तौ कैद किया केईक नास गया। इदरराजजी गगारामजी वचन दिराय। था सु मन मे सकीया।[3]

मोहोणोत ग्यानमल, मुहतो अखैचद हस्तै मालम कराय मला मे भिळिओ।[4] पछै इदरराज गगाराम नू कैद तौ हुई नही और ओहदा सावत रया वगसी मेगराजजी रै नै सोजत री हाकमी इदरराजजी रै नै सिवाणा री हाकमी भडारी गगाराम रै, पिण घणुँ विसेस[१] हवेलीया मे हीज बैठा रहै।[5]

पछै दिवाणगी रौ दुपटौ मोहोणोत ग्यानमल नू मूता अखैचदजी री अरज सूं हुवौ समत १८६० रा जैठ सुद········मेड़तीया दरवाजा रै डेरा।

मूता सायवचद नू फौज देनै मारोठ री तरफ विदा कीयौ। मारोठ रा महेसदान री वेटी री सगाई खेतडी अर्वैसिंघ रा बेटा सु कीवी। व्याव ठेरायौ जद श्री हजूर फुरमायौ के खेतडी व्याव मत करौ, अै खेतडी वाळा फितूर[6] री सटपट घालमेल मे है, सो सगपण छौडदौ।[7]

तिण ऊपर महेसदानजी कयौ कै सगपण तौ सगा है सो छोड् नही नै सवाय घालमेल राखू नही।[8] सो आ वात मरजी मे आई नही, तरै महेसदान गाव नू चढ गयौ सु मारोठ घरे जाय वैठौ।

---

१ ग घणुँ विसत रहै।

---

1 कील ठोक कर। 2 घसीट कर। 3 मन मे शंकित हुए। 4 उनकी सलाह के शामिल मिल गया। 5. परन्तु ये लोग प्राय अपनी हवेलियो मे ही बैठे रहते हैं। 6 बनावटी हकदार धोकलसिंह 7 सम्बन्ध त्याग दो। 8 और किसी षडयत्र मे शामिल नही होऊगा।

पछै मुंहतो सायबचद फौज लै गोडाटी[1] ऊपर गयौ तरै महेसदान साफी कर लीवी[2] नै कह्यो हाल बगाव खेतडी नही करणौ ।

पछै पाचवा कनै तथा छोटा मोटा दूजा ठिकाणा कनै रूपिया भराय ढूंढाड री गाव खाचरागास लाडखान्या रै जठै फौज लेजाय रुपीया ५०००) पाच हजार लीना ।

पछै तैसील कर सायबचद मुहतो पाछौ आयौ । पचपदरा री खिजमत सायबचद रै नावे हुई ।

पछै कितरा सिरदार माहाराज श्री भीवसिंघजी री वखत मे[१] छांडीआ था[3] जिणां नूं पाछा बुलाया । पटा निवाजसां दीवी, तिण री इण भांत विगत

१ आऊवो चापावत माधोसिंघजी नूं लिख दीयौ ।[२] आऊवो पैली माहाराज श्री भीवसिंघजी चिरपटीया रा ठाकुर चापावत सूरजमलोता रै आगै थौ सो पाछौ उणानै लिख दियो थौ सो चिरपटिया वाळा सू जब्त कर माहाराज मानसिंघजी पाछौ माधोसिंघजी नू लिख दीयौ । नै बालोतरो खालसै करीयौ थौ माहाराज भीवसिंघजी सो पाछौ लिख दीयौ । फेर भाईपा जिला रा गाव लिख दीया नै आऊवा रौ कोट सातरौ[4] करावण नू रुपीया २०००० बीस हजार दीना नै हाथी दीनौ ।[3]

१ आसोप ठाकुर केसरीसिंघजी छाड नै गया था तरै माहाराज श्री भीवसिंघजो—आसोप गाव गजसिंघपुरा रा ठाकुर भारथसिंघ नू लिख दीवी थी सो पाछी केसरीसिंघजी नू लिख दीवी नै हाथी दीयौ ।

१ रास ठाकुर जवानसिंघजी ऊदावत छाडीयौ तरै रास लोटोती रा जोधा जालमसिंघ नू लिख दीवी थी सो पाछी जवानसिंघजी नू लिख दीवी, वधारा मे गाव केकीदडौ दीयौ अर सिरपाव मे हाथी दीयौ ।

---

१ ग 1859 (अधिक) । २. ख परधानगी देवण री वचन थौ पणहाल सवाईसिंघजी रा मुलायजा सू दीवी नही । भीवसिंघजी चिरपटिया रा ठाकुर नू आउवो दियौ थो पाछो लियौ । ३ ख निवाजस चोखी हुई । कुरब मुलायजो परधांन सरसतै हुवौ खातर तसल्ली हुई । (अधिक) ।

---

1 गौडो की जागीरें । 2 अपनी सफाई पेश कर दी । 3 मारवाड छोड कर चले गये थे । 4. मजबूत ।

१ नीबाज ठाकुर सिभूसिंघजी रै माहाराज श्री भीवसिंघजी फौज लगाय गढ कोट पाड नाखीयो थौ ।[1] पछै संमत १८६० मे भंडारी वीरजमल हस्तै वात ठैर सुरतांणसिंघजी नू नीबाज, वराठीयो, सोगास[१] भीवसिंघजी दीना था तिणा सुरतांणसिंघजी नू गाव पटौ २००००) वीस हजार री फेर दीयो नै रुपीया ५०००) पांच हजार रै रढ कराय दीयौ । पीपाड खागटौ दीया । खवासपुरो वधारा मे लिख दीयो । नै हाथी सिरपाव दीयौ ।

१ लावीया खालसै हुय गई थी सो पाछी[२] लिख दीवी ।

१ रोहट खालसै थौ सो पाछौ[3] लिख दीयौ ।

१ चडावळ जवत थी सो पाछी लिख दीवी नै गाव अटवडौ ववारा मे दीयौ ।

फेर ही छोटा मोटा सिरदार छाडाणे मे था जिणा रा गाव जवत था सो पाछा लिख दीया ।

१ आहोर ठाकर अनाडसिंघजी नू गाव काळू[४] लिख दीयो नै फेर ही मोटा-मोटा गाव लाख १०००००) अेक लाख ऊपजता रा[2] दीया, नवो ठिकाणो वादीयो,[3] जाळोर री वदगी सू ।

१ आसीया चारण वांकीदासजी[५] नू लाखपसाव दीयौ, गाव भाडीयावास रा वासी नै, फेर अेक दोय चारणा नै कडा मोती दिरीजीया ।

१ कुसलचदोत भंडारी ऊनमचंद कवना नै समजतो, सो श्रीनाथजी माहाराज री नाथचद्रिका वणाई, सो मरजी मे आई[1] तिण नू आजीवका दीवी ।

---

१ ख सोगासणी ।
२ ख मोनसिंघ (अधिक) ।
३ ख इन्दरसिंघजी (अधिक) ।
४ ख. मेडता रौ (अधिक) ।
५. ख फतेदान रौ (अधिक) ।

---

1 गढ ध्वस्त कर दिया था । 2. पैदावार वाले । 3. ठिकाना कायम कर दिया ।
4. पसन्द आई ।

१ मेडतीयो रतनसिंघ पाद्दसिघोत श्रीहजूर री बदगी जाळोर मे कीवी तिण नै परबतसर रौ गाव पीपळाद, स्यामपुरो नै सुदवाड लिख दीया। पटो १५००० हजार पनरै री दीयौ।

१ चहूवाण स्यामसिघ श्रीहजूर रै मामा जिणा नै गोढवाड री गाव जोजावर सोलख्या री थी सो लिख दीयौ। पछे फेर केई दिनां पछै सिवांणा रौ गाव राखी लिख दीवी। ठिकाणो वादीयो समत १८६० मे।

१ दासपां, वाकरो वगेरै नै अेक-अेक गाव फेर दीयौ। प्रगनै मेडता रौ गाव नथावडो तौ वाकरा रा ठाकुर नै दीयौ वडगाव दासपा रा ठाकुर न दीयौ।

१ ऊहड जैतमाल नू जाळोर री बदगी मे गाव कोरणो ईदा कना सू छुडाय ठिकाणा वाद दीयौ। समत १८६० मे।

१ मोकळसर रा वाला नै वधारा मे गाव.........सिणली वगेरै दीयौ।

१ खेजडला रा भाटी जसवतसिघजी माहाराज श्री भीवसिघजी रा राज में सिरदारा सामल छाडीया था जिण सू पटो जवत हुय गयौ थौ। सो पाछौ लिखीजियौ नै जसू तसिघ रै छोटो भाई जोधसिंघ जाळोर रा घेरा मे वदगी मे थौ नै साकदडा रा झगडा[1] मे श्रीहजूर रा मूढा आगै काम आयौ।[1] तिण रै वेटो सगतीदान रै जाळोर रो गाव दूवडियौ तौ आगे थौईज नै हजूर गढ दाखल हुवा नरै समत १८६० मे गाव सायीण लिख दीवी। ठिकाणो वाद दीनो। पटो १५०००) पनरै हजार री नै नगारो निसाण ईनायत हूवौ।

राणियो के पट्टो की विगत

समत १८६० मे श्रीहजूर सायवा रौ ब्याव बीकानेर ईलाका रो गाव लखासर रा तुवर वखतावरसिघ री वेटी रौ डोळौ आयौ, मुहुओ। नै तुवरजीसां रै पटौ १००००) दसहजार री हुवौ। श्री वडा भटियाणीजी रै पटौ पनरैहजार री हुवौ गाव लावो, वालो, लीखीजिया। नै कामदारो ठेट्टू[2] तो

---

१ ख सिघवी चैनकरण भीवसिघजी री फौज लेय साकडदै पौतो (अधिक)।

---

1 महाराजा की नजरो के सामने युद्ध कर, काम आया। शुरुआत मे।

साथै प्रोहित कनीराम रै, भाटीयां री गुर थौ, पिण काम में समझै नहीं तरै पोहोकरण छागाणी रूपराम राधाकिसन कनीराम रा साळा था सो कामदारा री काम इणा नू भोळायौ। पिण नात्रो तो कामदारां री कनीराम री नै पचोळी गुलाबराय आगै माहाराज भीवसिंवजी रा राज मे जनानी चाकर थौ जिण नै पिण रूपराम राधाकिसन रै सामल राखीयो।[१]

राणीजी चावडीजी नू पटो कंवरजी छतरसिंधजी सूवौ,[1] पटो हजार २००००) वीस हजार री दीयौ। कामदार पचोळी सुरजभाण।

माहाराज सेरसिंघजी रा राजलोक १ चवाणजी १ भटियाणीजी नै वाया २ था तिणा नै माहाराज भीवसिघजी सलेमकोट मे राखीया था सो श्री हजूर गढ दाखल हुवा तरै जनाना मे पधराया।[2] चहुवाणजी श्रीहजूर रै मासीजी पिण लागता जिणा नै मासीजी पदवी दीवी नै पटो १००००) दस हजार री दीयी नै भटियाणीजी नू पटो ५,०००) पाच हजार री दीयौ कामदारी[3] मुहता बछराज रै।[२]

नाथजी के पट्टो आदि की विगत

श्री देवनाथजी माहाराज रै पटो लिखिजीयो गांव चौपडी वगैरे हजार १००००) दस री। सुरतनाथजी ओपनाथजी हरनाथजी वगैरै मारा रै पटा लिखीजीया गुर पदवी नै खेड़ै दीठ[4] रुपियो कर दीयो। उदामी[३] हुई।

श्री हजूर री असवारी सूरसागर देवनाथजी कनै पधारै कदे-कदे देवनाथजी गढ ऊपर पधारै। निज मिंदर तो समत १८६० मे त्यार होय गयौ सो सुरतनाथजी नू दीनौ अर महामदिर री कमठौ सावठौ[5] सो मारोमार घणी ताकीद सूं त्यार हुवौ। तळाव मानसागर खुदीजणौ सरु हुवौ। और हरनाथजी

---

१ ख पछै भटियांणीजी ऊपर मरजी वधी तरै रूपराम राधाकिसन री तौर वधियौ। जनानी दोढी नाजर री हुकम इणा पर नही। पछै सिरैकवर बाईजी नु जयपुर समत 1870 मे परणाया तरै रूपराम व्यास फौजीराम नु दायजा मे दिया(अधिक)।

२ ख. चवाणजी री कामदारी (अधिक)।

३. ग उदामी।

---

1 कुवर छतरसिंह सहित। 2 जनाने महलो मे लाकर रखा। 3 कामगार का कार्य। 4 प्रत्येक गाव के अनुसार। 5 विशाल।

सारा भायां में मोटा जिण रै जाळोर मे मिरै मिंदर री सेवा भोळाई नै आयस रा घर आगै जाळोर सैर रै बारै था जठै नवौ कमठौ करायौ। जाळोर रा परगना में खेडा दीठ रुपियौ हुवौ। नै ओपनाथजी नै जाळोर री गाव गोळ पटै दीयौ। सिरकारां न्यारी न्यारी वंदी नै भोवनाथजी देवनाथजी रै भेळा हीज हा पछै समत १८७८ मे उदैमिंदर जुदौ ठिकाणौ बदायौ[1] नै सैर वसायौ। महेसनाथजी रा वंस मे[2] सारां नू आजीवगा दे ठिकाणा बाद दीना।

वल्लभ कुल सम्प्रदाय की स्थिति

श्री वल्लभ कुळ रा मिंदर माहाराज श्री अभैसिंघजी रा राज में सेवा चौपासणी पधराई। माहाराज श्री विजैसिंघजी रा राज मे सहर मे सेवा इतरी ठौड़ पधराई थी। श्री बालकिसनजी सामजी रै पटै आजीवगा। श्री नटवरजी रौ मिंदर श्री गोपाळजी री सेवा। श्री मदनमोहनजी री सेवा। श्री आचारजजी माहा प्रभूजी री सेवा।

श्री हजूर गढ दाखल हुवां पछै सारा मिंदरां दरसण करण पधारै। समां उछव हुवै।[1] तरै समत १८६० रा वरस मे नौ ही जिण मुजब रया गयौ नै दरसण नै सारा मिंदरां असवारी पधारती। अेक दिन मदनमोहनजी रै मिंदर दरसण नू पधारीया सो श्री हजूर रै जोगेस्वरा रौ[2] इस्टभाव सो भभूत री टीकी श्रीजी साहबा रै थी सो गोस्वामीजी माहाराज कयौ कै तुम माहाराज विजैसिघजी रा पोता होय कर भभूत की टीको देवी सो हमारा ठाकुर तो बालक है सो भभूत की टीकी से हमारे मिंदर मे नही आवणा।[3] सो ऊण दिन सूं श्रीहजूर मिंदरां रा दरसण करण नूं गया नही नै किताक गाव मिंदरा रै पटै रा था सो जवत कीया। बालकिसनजी रा मिंदर रा गाव वौयल ही सो जवत हुई। नै रोजीनो उगेरे था[4] सो जवत हुआ।

श्री मदनमोहनजी री सेवा ले नै गुसाईजी श्री व्रज नू गया ने गीद रा ठाकुरजी वीराजिया रया। सायर सू रोजीनो कर दीया ५) पाच रुपिया और पटो जवत हुवौ।

---

१ ख खेडे दीठ रुपियो कर दीयौ (अधिक)।

२ ख पांच भाया रा पाच ठिकाणा बवाय दिया।

---

1 उस समय उत्सव होते हैं। 2 नाथो का। 3 'वभूती (भस्मी) की टीकी लगाकर हमारे मन्दिर मे नहीं आना। 4. रोकड रुपये वसूल करते थे।

चाकर, इणा दोन् जणां नै फौजां सांवठी दे[1] विदा किया, संमत १८६० रा। जिणां साथे फौज मे सिरदार ग्रासोप, नीवाज,[१]रास,[२] लावीयां,[३] रीया, वळूंदी रांहण, वगेरै सिरदार। लारै तोपखांनो नगदी रो लोक पलटणां दस हजार फौज जोधपुर सूं सीरोही ऊपर विदा हुई। खरची खजानै पोतै थी सु वेहवू दी थी। माहाराज श्री भीवसियजो थका सिघवी जोधराज मोकळी रुपीयो पैदास करीयो थौ।

फौज ले दरकूचा सीरोही री धरती मे गया सो भोमीया, मैणा, भील भाखर चढ गया।[2] फौज रा लोका सू तथा[४] मारग व्हे तिणा सू रोजीना चौट-फेट करौ पिण फौज सूं सामा आय, झगडौ करै जिसी आसग[3] सीरोही वाळां री नही। सीरोही रा उमराव गाव पाडीव, कालद्री वुवाडो वगेरै इणां सू झगड़ौ हुवौ नै उणां ऊपर रुपीयो ठेरीयो।[3] पछै फौज थेट सीरोही गई। तीन[५] दिन लडिया। पछै हलौ हुवौ, सिरोही भिळ गई, समत १८६१ मे[६]। साथै सिरदार हा जिणां मे ठावा सिरदारा रै तौ लागी नही नै डेरा मे वेली[4] हा जिणां मे किणी रै अेक-अेक दोय-दोय रै लागी, काम आया। रसाला रा लोक रै लागी, काम आया। घायल हुवा। नै सीरोही लूटीजो। राव उदैभाण भाग नै भीतरोट रा गांवां मे गयौ।[७]

सिरोही भिळी रा समाचार जोधपुर आया तरै खुसी हुई। झगड़ा में लागी तिणा री खबर लिरीजी। निवाजसा इनाम री लिखिजीयौ। जाळोर रा चाकरा मे पेहली मूता सूरजमल रा हाथ सु काम सिध हुवो जिणरी श्रीहजूर मे खुसी हुई।

घाणेराव फौज दे मुहता साहवचद नू, विदा कियौ। साथे फौज मे सामीया री जमात मेवाड मांह सू बुलाय चाकर राखीया। पालणपुर कानी

१ ख सुरताणसिंह (अधिक)।
२ ख जवानसिंह अधिक)।
३ ख भवानीसिंह (अधिक)।
४ ख व्यौपारी लोग (अधिक)।
५ ख ११ दिन लडिया।
६. ख काती मे (अधिक)।
७ ग भीतरोट रा भाखरा आवूजी री तळैटी गयौ।

1 वडी फौज देकर। 2. पहाड पर चढ गये। 3. हौंसला, शक्ति। 4 रुपया वसूल करना निश्चित हुआ। 5. साथ के लोग।

सूं आरवा नै बुलाय चाकर राखीया । फेर दूजो लोक सावठौ अर छोटा-मोटा सिरदार साथे । फौज चोखी वणी । घाणेराव फौज लागी । सोरोही कायम हुई ।[1] नै घाणेराव फौज लीया मूतो सायबचद लडतौ हौ नै घाणेराव रौ ठाकुर दुरजणसिंघजी तौ चल गया नै टावर कवीला नै ले अजीतसिंघजी मेवाड मे हा । कितोक लोक ऊ चो ढाणा[2] मे हौ नै नाळ रौ बदोवस्त उणारै हाथ थौ सु मगरा सू आय फौज री कई[3] वगैरै चढै जिणा सू झगडौ करै । नै घाणेराव मे ठाकुर रै काको खवासणियौ[4] वीरमदे लडियौ, सो घणौ आछौ[5] लडियौ । श्री हजूर री फौज मे खरची री वेबूदी घणी रही । सामीयारी जमीयत हमगीर होय हल्लो कीयौ सो पाछौ पड गयौ । तरै लोका नू हमगीर कर फेर हल्लो कीयौ । सो दोनू ही हल्ला पेस चढिआ नही ।[6] पिण मुलक रा घणी सू पडपै[7] जितरो ठिकाणा रौ दरजौ नही सो मोरचा साकडा लागा । नित झगडा हुवै, गोळा वहै । नै मोटोडा सिरदारा री आसामीयां तौ सीरोही कानी री फौज मे थी नै चादावत जैतसिंघ[१] वगसीरामोत नोखा रा ठाकुरा रौ छोटौ भाई[२] रै गोळी लागी सो मास अेक पछै चलीयौ ।[8] नै पीडीया रौ चादावत हणवतसिंघ रै गोळौ लागौ ओर सामीया री जमात रौ लोक घासण मोकळौ आयौ । घेरौ मास रयौ । माह सेमान खूट गयौ । धान मिळै नही, तरै गुळ गू द नै अजमो[9] खाय नै दिन १७ सतरै तौ काढीया ।[10] बारै सु रसत वडण देवै नही ।[11] तरै वात कर वारै नीसरीया सो मेवाड मे गया, टावर कवीला हा जठै । नै घाणेराव मे श्री दरवार रौ हुकम हुवौ । कोट पडाय नाखीयौ ।

समत १८५२ मे माहाराज भीवसिंघजी भडारी सोभाचद नै फौज दै घाणेराव ऊपर मेलीयो थौ । महीनो दोढ ताई लडिया[12] पिण घाणेराव भिळियौ नही, सो कायम कीयौ ।[13] जिण मे श्री हजूर मे घणी खुसी हुई । चाणोद, नारलाई पैला हीज छूट गया था सो तीनू ठिकाणा खालसै हुवा । नै मुता साहवचद रौ छोटौ भाई माणकचद वाहाली हाकम रैहतौ जिण नै घाणेराव राखियौ ।

१ ग जैताराम ।

२ ग सो हमार इया ।

1. सिरोही म महाराजा का आधिपत्य हो गया । 2 पहाड पर का सुरक्षित स्थान । 3 फौज की टुकडिया । 4. खवास का लडका 5. खूब बहादुरी से । 6 कारगुजार नही हुए । 7 मुकाबला करें । 8 मरा । 9 अजवायन । 10 17 दिन तो निकाले । 11 अन्दर नही आने देते । 12 डेढ महीने तक लडे थे । 13. उस पर अब अधिकार हो गया ।

श्री महाप्रभुजी री सेवा रे भट वरीग रवा। गोद रा ठाकुरजी विराजिया रया नै मायर सूं रोलीनो कर दीयौ। गोपाळजी री सेवा गुसाईंजी ले वहीर हुआ लारै सेवा रही नही। सिंघवी मेगराजजी री हवेली है अठै रे वा विराजती, श्री नटवरजी री सेवा ले गुसांईजी गया। लारै सेवा चौपासणी रा गुसांईजी रै नेडा लागता सो ज्वे सेवा राखै। पटौ जवत हुवौ। श्री बाल-किसनजी सामजी री सेवा अठै विराजिया। वोहूजी माराज व्रजावीसजी परदेस पधारीया गाव मालायस, वाकलीया, लाड़वो, तौ पटै रया नै दूजा गाव हा मु उतरीया।[1] चौपासणी सेवा विराजी रही। विठलरायजी माहाराज चौपासणी विराजीया रया। श्रीहजूर वडा माहाराज विजैसिंघजी थका चौपासणी गुरदुवारो, सो नाव मुणीया था, सो सूरपुरौ, चौपासणी, चोखा बुड़खीयो तौ राखीया नै वधारा रौ पटौ ऊतार लीयौ। चौपासणी असवारी पाच सात वार पधारी। मदनमोहनजी रा मिंदर मे चटक हुवा पछै[2] नह पधारीया। श्री जोगेस्वरा रो भाव रुदाय मे वधियो नही जरा पेली ऊजन माफक सारा रौ भाव थौ।

सिरोही के राव पर नाराजगी

श्रीहजूर साहव जाळोर था तरै जाळोर माहाराज भीवसिंघजी रौ घरौ थौ तरै सीरोही रौ राव उदैभाणजी नू माहाराज श्री मानसिंघजी केवायौ कै म्हारा राजलोका नू थे कहौ तौ हाल केई दिन रै वास्तै[3] रैवास नूं उठे मेला, सो राव नट गयो[4] कै माहाराज भीवसिंघजी म्हासू बेराजी हुय जावै। तिण दिन मू राव ऊपर वेराजीपौ थौ। पछै राजलोक तौ सीरोही रौ गाव अरटवाड़ रया तथा मेवाड रौ गाव पदराडे गया नै सीरोही राव उपर वेराजीपौ द्याप नै रयौ।[5]

जसवतराय का वृत्तांत

जसवतराय दिखणी फौज लै मारवाड मे समत १८६० मे आयौ सो महाराज सू भाईचारौ वादीयौ नै अगरेजा सू डरतौ कवीला अठै चैनपुरै राख गयौ। जसूतराय कनै फौज अेक लाख आसरै थी। जसूतराय अरज कराई कै खिरणी रा रुपया मीधीये वादर नू देता सौ हुलकर कह्यो मत दौ।

---

1 वारो के गाव जब्त हुए। 2 अप्रिय घटना होने के पश्चात। 3 कुछ समय के लिय। 4 राव ने अस्वीकार कर दिया। 5 खूब नाराजगी रही।

माहाराज साहव री राज बरकरार सिरदार सारा मरजी मे अेक मवाईसिंघजी पोहकरण बेठो वोटा घड[1] बाकी सिरदार सारा मेडतीया दरवाजा बारै डेरा। श्री हजूर साहा रा जठै[1] हाजर।

जयपुर के राजा जगतसिंह तथा उदयपुर के राणा भीमसिंह के लिये गद्दी का टीका

जपुर रा राजा प्रतापसिंघजी[2] पेला भादवा मे धाम पधारेया ने टीके जगतसिंघजी बैठा। नै जोधपुर सु टीको नही मेलीजीयौ थी सु पचोळी मताब्राय नै टीको दे जैपुर मेलीयौ नै जैपुर सूं टीको ले हळदिग्रो जोधपुर ग्रायौ। सदामद रा[2] दसतूर मुजब घोडा हाथो वगेरै टीका रौ लवाजमो जोधपुर स्ं गयौ नै जैपुर सूं ग्रायौ। माहोमाव दोनू राजावा रै ईतफाक हूवौ।[3]

उदैपुर रा राणा भीवसिंघजी पाट बैठा तिणा रै पिण टीकौ नहीं मेलीजीयौ थौ सौ पचोळी फतैकरण नै टीको दे मेलीयौ नै ऊदैपुर सू टीको लेने ग्राया ग्रौर बीकानेर किसनगढ सू पिण टीका ग्राया।[3] दिखणी दोलतराव रो टीको ग्रायौ नै ऊकील ग्रासोपो जसकरण थौ।[4]

घाणेराव के ठाकुर तथा सिरोही के राव पर चढाई

घाणेराव ठाकुर मेडतीया दुरजणसिंघ जाळोर थका हुकम मांनीयौ नही जिण सूं बेमरजी सू फौज मेली कै घाणेराव विगाड देणौ। सीरोही नै घाणेराव दोनू ठिकाणा ऊपर बेमरजी मु फौजा मेलण री वाटघड[4] श्रीहजूर रै रोजीना रहैवौ करै। सु मोणोत ग्यानमल मूतौ ग्रखैचद सो अे हाल दोनूं मुख मुसायब सो डणा री सला मूं दोनू जगा फौजा मेलणी ठैहरी। सो सीरोहो तो ग्यानमल रौ बेटौ नवलमल मोहोणोत नै मूतौ सूरजमल जाळोरी

---

१ ग मरजी रा ठाकर (ग्रधिक)।

२ ख स 1861 भादवा मे [ग्रधिक]।

३ ख सो तीनू रजवाडा जोधपुर जैपुर उदयपुर मे मुख वरतै।

४ ख उकीलायत रा काम ऊपर ग्रादी-किसनकरण गयो।

---

1 बुरी बातें विचारता रहता है। 2 परम्परा के ग्रनुसार। 3. सम्पर्क बढा।

4 विचारो की उधेडबुन।

आहोर ठाकुर अनाडसिंघजी री हवेली आगे अठै नहीं थी नै आहोर रौ ठिकाणो ओछे दरजै थी नै अेक छोटी जायगा आऊवा रोयट री हवेलिया कनै नजीक थी जिण मे आहोर ठाकुरा री लारली पीढिया मे कदेक डेरो हो सो उण टौड लारला वरसा मे श्री हजूर जाळोर विराजिया था नै थो भीव-सिंघजी री रजवाड[1] मे पोहकरणा ब्रामण चताणी व्यास अेक दोय जगा पटा कराय हवेलीया कराय लीवी। ऊण जायगावा रौ इलजाम लगाय नै वीस पचीस घर चताणी-व्यासा रा जवरदस्ती सू पाड नै हवेली री नीव दिराय दीवी। चताणी व्यासा धरणा-धापा दिया[2] पिण अनाडसिंघजी रा मुलायजा सू सुणवाई हुई नही[1]

जोधपुर से अंग्रेजो के पास वकील भेजना दिल्ली

समत १८६० मे दौलतराव कना सू अगरेजा दिल्ली लीवी[2] नै पातसा अलीगैवर नू दिखणी खावण नै देता[3] जिण विचै अगरेजा जादा रोजीनो कर दीयौ।[4] जोधपुर सु आसोपा फतेराम नै अगरेजा कनै दिली उकील मेलियौ।[5]

समत १८६० रा भादरवा मे जैपुर रा राजा परतापसिंघजी चल गया नै महाराज जगतसिंघजी राजतिलक विराजीया। ऊदैपुर राणो भींव-सिंघजी राज करै, वीकानेर महाराजा सुरतसिंघजी राज करै, किसनगढ महाराज किल्याणसिंघजी राज करै, जैसलमेर मे रावळ मूलराजजी था।

जोधपुर मे महाराजा मानसिंह गद्दी पर बैठे उस समय परगनों पर अधिकार तथा अधिकारी

समत १८६० मे श्री हजूर गढ दाखल हुवा तरै इतरा परगनो मे

---

१ ख प्रति मे (पृष्ठ 12-B) लिखा है कि अनाडसिंह के अहसान से राजा दवा हुआ था, अत चताणी व्यासो ने जव अरज कराई तो कहा कि अनाडसिंह यदि किले मे हवेली बनवादे तो भी उसको मैं कुछ नही कह सकता।

२ ख प्रति मे (पृष्ठ 12-B) लिखा है कि अंग्रेजो ने भरतपुर जीतना चाहा पर सफलता न मिलती देख पहले दिल्ली पर अधिकार करने की वात सोची और दौलतराव मे 15 लाख रुपये दाम मे दिल्ली खालसा करवाली। होलकर उनकी वातो मे नहीं आया।

---

1 राज्यकाल 2 धरने वगैरा दिये। 3 खर्च के लिये रुपये देते थे। 4. अंग्रेजो ने उससे अधिक देना मजूर कर लिया। 5. वकील वना कर भेजा।

अमल थो नै इतरी खिजमता दीवी [1] जोधपुर पैली भडारी भानीराम, गगाराम रा बेटा रै थी नै ग्यानमल रै दीवाणगी हुई। तरै पछै हाकमी मोणोत भानीराम सवाईराम रा रै हुई। सिवाणै हाकम भडारी गगाराम तालकै। नै पचपदरा री हाकमी मुहता साहबचद रै तालक। पाली हाकम ......। बीलाडे हाकमसिघवी चैनमल। नागौर सिघवी जीतमल तालकै। कोलियो ऊपादीया रामदान तालकै। मेडतो, हरमोर, भेरू दो परगना तीना मे हाकम रहै। अेक हाकम रहै, सो पैली भडारी धीरजमल तालकै रही। पछै मोणोत ग्यानमल तालकै हुई।

परवतसर, तोसीणो, ववाळ, वाहाल, चारू परगना हाकम ललवाणी अमरचद तालकै। मारोठ साभर ऊपादीया रामब्रगस तालकै। दौलतपुरो पचोळी जैतकरण तालकै। डीडवाणो, जैतारण, नावो, सोजत, सिघवी सुखराज रै नावै, इदरराजजी तालकै नै हाकमी रौ काम गुलराजजी करै।

गोढवाड रौ परगनौ .....। जालोर सूराचद साचोर, सिंघवी इदराजजी तालकै, नावै कुसळराजजी रै नै कामकरता भडारी प्रथीराज।

परगनो फळोधी, सिवाणो, कोटडो, ऊमरकोट, परगनो डाडीयाणो हाकम मुहतो सागरमल। विगत-मसूदो सुमेल, केकडी, खरवो, भिणाय रा गाव २६ वटारा।

जैपुर इलाका रो गांव नेवाई सु आयस चोरगीपावजी नै अठै बुलाया नै डेरौ तळेटी रा मैला दिरायौ नै कुरब देवनाथजी सरसतै, नै पटौ पाच हजार रौ दियौ।

समत १८६१ मे हजूर रा डेरा मेडतीये दरवाजा बारै। मेह पेला थोडा हुआ[2], जमानो कम हुवो।[3] धान रौ भाव रुपिया १) रो १२) आसरै विकियौ।

पछै समत १८६१ में हजूर रा डेरा तौ मेडतीयै दरवाजे बार नै हजूर माहलेवाग दाखल रहै। घोडा फेरै, खाखर वावै। भडारी गगाराम सिघवी इदरराजजी आपरी हवेळीया मे कुदताई सू [4] बैठा रहै। दोढी चोथै पाचनें आय जावै ने काम सारौ मूता अखेचद री सला सू हुवै। अखैचद ओदो

1 इस प्रकार लोगो को ओहदे आदि दिये।

2 प्रारभ मे वर्षा कम हुई। 3. फसलें कम हुई 4 मन मे कुढ होकर, कुठित होकर।

खिजमत लेवै नही, वोरगत सारी मारवाड मे वधाई । मुंतौ मायवचंद थांगे-राव फतैकर नै आयौ सु हजुर री मरजी सायवचद नू वगसी देण री सो मू तै अखैचद अरज करी कै सवाईसिंध तौ वेराजी हुवोडा घरे वैठा हीज है नै वगसी गिरि सिंधिया सु जव्रत हुवा सू इ दरराज गगाराम वेराजी हुय जासी सो हाल सुस्ताईजै ।[1]

व्यास चुतरभुज सू निरतर मरजी । दोढी रो दरोगो तौ सोभावत भगानदास पिण काम सारौ असायच नथकरण करै । भाटी गर्जसिंघ, सोड-सरूप सू निरतर मरजी । इणा तालके तवेला नै सिलैपोस ।

सिरोही के राव का उपद्रव

सीरोही रो राव ऊदैभाण भीतरोट रा गावां में वैठो मुलक लूटै । मैणा, भील विगाड करै । मुलक आवादान हूवै नही[2] अपूठौ[3] खरच लागै जाळोरी मे विगाड करै सो नित कूका आवै[4] अठी नै घाणेराव, चाणोद, नारलाई अै तीनू सरदार वारै मगरा मे वैठा सौ गोडवाड वसण देवै[5] नही । सिरोही घाणेराव री नित फौज सू लिखावटा आवै,[6] जिणसु श्री हजूर पूरो विचार । तरै दोढीदार नथकरण अरज कीवी कै श्री खाविंदो री तपस्या सू जाळोर रा चाकरा रा हाथ सू अै दोय ठिकाणा कायम हुवा । पिण हमे सुधरियोडो काम विगडण रौ सरूप है ।[7] सो सिंघवी ईदरराजजी, भडारी गगाराम पीढिया रा सामधरमी चाकर है नै वरतीयौडा है[8] सो अै दोनू परगना ईदरराज गगाराम तालकै कराईजै तौ ठीक है । सो आ अरज श्री हजूर रै मरजी मे आई ।[9] तरै सीरोही तौ सिंघवी गुलराज नै भडारी गगाराम नै मेलीया नै घाणेराव सिंघवी ईदरराजजी रा वेटा फतैराज रै नावै हाकमी दीवी । भडारी मानमल वखतावरमल दोनू भाई फतैराजजी रै साथै मेलीया नै सुरजमल मू ता नै मोणोत नवलमल अै सीरोही री फौज सू जोधपुर आया । भडारी गगाराम सिंघवी गुलराज जाय थाणा घालण ज्यू था जठै घालीया ।[10] सिरोही री धरती मे अेक दोय ठौड झगडा मे मैणा ने सजा दीवी नै रावजी रा लोक सू चापटो हुवो[11] जठै दात सीरोया रा खाटा हुवा[12] चादावत बादरसिंघ साथै, सो नित

---

1 थोड़ा विलब करें । 2 मुल्क मे लोक बसते नही । 3 उल्टा 4 रोज फरियादें आती हैं । 5 आवाद नही होने देते । 6 रोज लिखित सूचनाए आती हैं । 7 बिगडने की सूरत हो गई हैं । 8 आजमाये हुए हैं । 9, उचित जची । 10 जहा थाने स्थापित किये जा सकते थे वहा थाने कायम किये । 11 सामना हुआ । 12 सिरोही वालों के दात खट्टे हो गये ।

झगडा हुवै । कितराक सिरदार आसोप, नीबाज, रास, नै सीख हुई ने रीया, बळू दो, वगैरे मेडतीया उठे रया ।

कितरोक लोक मेल दीयौ । जमा खरच बरोबर कर सीरोही रो-बदो-बस्त कीयौ । राहण री ठाकुर मालमसिंघ चलियौ । घागेराव बखतावरमल प्रतापमल, मानमल थाणै गया । नै सांवठा घोडा राख बदोबस्त कीयौ ।

सोजत री हाकमी ईदरराजजी तालकै सो मगरा रा मेर[1] विगाड घणी करै । गाव मुरडावो[1] छांगावी कचरदासजी तालकै हौ सौ विगाड हुवौ । तरै मालम हुई तरै ईदरराजजी नै हुकम हुवौ सो गाव केलवाद थांणौ वलाय पचोळी अखैमल नूं राखीयौ सो बदोबस्त कीयौ । मूता सुरजमल रा काका रौ बेटो भाई बाहादरमल झगड़ौ हुवे जठे काम आयौ ।

समत १८६१ रा मिती सांवण सुद तीज ३ लोडी तीज[2] नूं श्री हजूर फुसी कीवी । सिरदारा नू तथा खवास पासवान वगैरे मुतसदीया सारा गुनाव्यां पोमाखा इनायत कीवी । गिरदीकोट मैं घोडा दौडाया ।

आऊवा रा ठाकुर माघोसिंघजी चलियां री खबर आई ।[२] सिघवी जोरावरमल रा बेटा जाळोर सू भीवसिंघजी कनै आय गया था फतैमल सुरज-मल तौ जौधपुर माहाराज भीवसिंघजी कनै आय गया था नै जीतमलजी नीबाज जाय बैठो थौ ।

महाराज श्री मांनसिंघजी गढ दाखल हुवां पछै याद फुरमाया सौ जीतमल सूरजमल तौ हाजर हुवा नै फतैमल आऊवै रयौ, आयौ नही । सिंभूमल आयौ नही । तरै विसवास ऊपजावण सारू जीतमल नै नागौर री हाकमी दीवी । सौ समय १८६१ रा माहा मे जीतमल आपरा बेटा ईदरमल रौ व्याव नागौर घाडीवालो[३] रै कीयौ । तरै श्री हजूर सायबा जाणियौ कै व्याव ऊपर सारा भेळा हूय जाती सौ कैद करणा । तरै धाधम ऊदेराम नूं घोडा ५० दे न मूंडवा रै मेळा रौ जावतौ करण रौ बोहनौ कर नै नागौर मेलीयौ सो सिंभूमल

१. ग मूंडवो २ ख माघोसिंघजी रा बेटा वखतावरसिंघजी नु खातर तसल्ली आछी तरै फरमाई कै मोसर आछी तरे कीजो । ३ ग. घारीवाळा ।

1. मेर जाति के आदिवासी लोग । 2 छोटी तीज ।

फतैमल तो व्याव मे आया नही नै वेटो गंभीरमल नै धीरजमल नै लुगाया[1] आई। सिरकार रा सारा व्याव मे आया भेळा हूवा। धाधल ऊदेराम ही जान मे गयौ सो वीद परणीज नै बारै आयौ[2] नरै ऊदेराम सारा नै पकड लीया। सो लुगाया टावरा नू तो नागौर रा किला मे राखीया नै जीतमल, सूरजमल, ईदरमल नू जोधपुर नाये सलेमकोट मे जड दीयो। रुपया ६०००) पचोळी तखतमल रै ठैरीया नै रुपिया ४०००) चार हजार सिरीचद रै ठैरीया। ने रुपीया २०००) दोय हजार जेटमल रै ठैरीया नै रुपीया ७०००) सात हजार सिघवी दौलतराम रै ठेरीया सो इणा नू देवनाथजी छुडाया। इणा तालकदारा नू तो रुपीया ठैहराय छोड दीया नै जीतमल ऊपर वेमरजो जिणसू रुपीया मांगीया नहीं वैठो राखीयौ।

समत १८६१ रा माहा मै सिरै मिंदर नाथजी रा दरसण करण नु जाळोर पधारण मुदै श्री हजूर साहवा रा डेरा वखतसागर हुवा।

महामदिर की प्रतिष्ठा

सवत १८६१ रा माहा सुद ५ नू माहामिंदर री प्रतसटा हुई। सेवा पधरीजी। देवनाथजी रौ माहामिंदर मे रैवास हूवौ। पछै देवनाथजी कनै नाव सुणावण रौ सिरदार मुतसदी खास पासवान वगैरे हाजर था ज्या नै श्री हजूर फूरमायौ। तरै सारा जणा नाव सुणीया नै भेटा कीवी[3]। दुपटा दिरिजिया नै चडावळ रा ठाकुर¹ विसनसिघजी अरज कीवी कै म्हैं तो श्री गुसाईजी महाराज रा नाव सुणीया है सौ दूजा ना कानाव मे सुणू नही। तरै हजूर विसेस फुरमायौ जरा[4] सुण तो लीना पिण डेरै आय सीतग ऊठायौ[5] नै कटारी गळे घाली।[6] अर चडावळ परा गया। नै विसनसिघजी सू मरजी खच गई। नै विसनसिघजी रौ छोटो भाई वगसीराम ऊपर मरजी वधती गई। सो चडावळ रा ठिकाणा मे मालकी[7] वगसीराम री हुय गई। विसनसिघजी नै सीतग ऊठण सु कटारी गळे घाली।²

---

१ ग कू पात्रत (अधिक) २ ख मिनखआय पोता। कटारी खोस लीवी। धाव केई दिना सू मिळ गयौ। पिण वात सीतगरी किया जावै, सेवा मे वेमै सो मन आवै जणा ऊठै। घर रै काम री भाजदड छोड दीवी रा समाचार श्री हजूर नै मालूम हुवा तरै आप हजूर वगसीराम विसनसिघ रा छोटा भाई नु बुलाय फुरमायौ कै ठाकुर विसनसिघजी तो जाण नै सितग उठाय वैठा है सो जाणी जितै उतर पडउतर थारै जिमे है।" · · मालकी सारे कांम री वगसीराम रै हुयगी। (अधिक)

---

1 औरतें। 2 दूल्हा शादी कर के वाहर निकला। 3 भेंट चढाई। 4 विशेष तौर से आज्ञा दी तव। 5 पागलों सा व्यवहार किया विक्षिप्तता प्रकट की। 6. कटारी गले में भौंकी। 7 अधिकार का चलन।

देवनाथजी रा बाप महैसनाथजी रौ भंडारौ हुवौ[1] सु सारा मुलक रा जोगी भेळा हुआ। जणै दीठ[2] रुपिआ २) दोय दिखणा[3] रा दीया। सारा परगना में श्री नाथजी रा मिंदर करावण रौ हुकम हुवौ। सोमवार रा सोमवार श्री हजूर असवारी कर माहामिंदर दरसण नूं पधारै।

धौकलसिंह के नाम से शेखावतों का उपद्रव

समत १८६१ रा असाढ मैं खेतडी, झुंणूंझ, नोनगढ, सीकर, वगैरे सारा सेखावतां नूं साथै ले भाटी छैतरसिंघ, तुंवर मदनसिंघ श्रीकलसिंघजी रा नाव सूं डीडवांय जाव अमल कर लीयौ। सेखावत वगैरे चार हजार पाच हजार ५००० भेळा हुवा था सो डीडवांणो सैर लूंट लीनौ। नै डीडवांणा रौ हाकम नास नै दौलतपुरै परौ गयौ। अ खबर जोधपुर आई तरै दीवांण मोणोत ग्यानमल ताकीद सूं फौज ले चढियौ। सारा सिरदारा हाकमी नै डीडवाणे जावण रौ हुकम पोतौ।

कुचामण, मीठडी, मारोठ, वगैरे सारा फौज सामल हुवा। बूडस रा अखैसिंघोत हमगीर रया। फौज नजीक पूगी तरै फिसादी डीडवाणो छोड नाम गया, सो महाराज री फौज वाळा ऊणां री बहीर लूंटी। घोडा, ऊंठ खोसलिया। माहारोठ परबतसर वगैरे चारूं पाचूं हाकम जाय डीडवाणा मे अमल कीयौ। पछै ग्यानमलजी दीवांण डीडवाणे पोतौ। आठूं मिसलां रा सरदार उमराव ऊठै भेळा हुवा। अर फौज हजार तीस ३०००० भेळी हुई। शेखावता रौ गाव साहापुरो[1] महाराज श्री अभैसिंघजी परणीया था नै झाडोद रा गाव दयालपुरौ, मावौ, साहापुरा वाळा नूं पटै दीया था, सो सीकर रो राव लिछमणसिंघजी साहापुरो छुडाय लीयौ थौ नै साहापुरै वाळो मोवणसिंघजी अठै बंदगी मे रहतौ थौ[4] सो दीवाण ग्यानमल नूं हुकम पोहोतौ कै साहपुरौ सीकर वाळा कना सूं छुडाय मोहणसिंघजी नै दिराय दीजो। तरै डीडवाणा सू फौज साहापुरै जाय लागी। दिन दस लडाई हुई। पछै हलौ कर भेळ दीयौ। माय अेक भुरज सोर री थी सो बास्ते[5] पड गयौ जिणसूं भुरज उड गयौ जिण सूं फौज रौ लोक घणो घायल हुवो नै मूवा[6]। साहापुरा मे अमल मोहणसिंघ रौ कराय दीयो[२]।

१ ग. स्यामपुरो। २ ख सीकर वाळा न्हास सीकर गया। असबाव भेजावण दीनौ नही। ग्यानमल री फौजआळो रै हाथ आयौ तथा मोहणसिंघ रै रयौ।

1 उत्तर क्रिया की। 2. प्रत्येक को। 3 दक्षिणा। 4 यहा नौकरी मे रहता था। 5, आग। 6 मरे।

महाराज का जालोर नाथजी के दर्शनार्थ जाना

समत १८६२ रा भादवा मे श्री जलधरनाथजी रा दरसण करण जाळोर पधारीया। साथै हरसोलाव रा ठाकुर जालमसिंघजी नै जाळोर रा मिग्दार। नै मुतसदीया मे सिंघवी इदरराजजी था, हाजार च्यार लोक[1] सूं जाळोर पधारीया। दरसण कर भादवा सुद १४ पाछा जोधपुर गढ दाखल हुआ।

ठा० सवाईसिंघ का षडयंत्र और कृष्णाकुमारी के टीके को लेकर बखेड़ा खड़ा करवाना

पछै जैपुर वाळा सूं सवाईसिंघजी घालमेल लगाई नै बीकानेर सूं न्यारी लगाई। दूजा बिताक ठिकाणा पिण सवाईसिंघजी आदमी मेलीया। जैपुर मे चापावत उमेदसिंघ म्यामसिंघोत गीजगढ रा सवाईसिंघजी रा भाई ऊठै हाईज नै माहाराज जगतसिंघजी सूं सवाईसिंघजी री पोतरी सालमसिंघजी री बेटी री सगाई कीवी थी। व्याव डोळो मेल जैपुर करणी ठेरीयो। तरै जैपुर मे उकील पचोळी सतावराय थौ तिण जोधपुर लिख मालम कराई। तरै पोहकरण रा कांमेती हाजर था तिणानूं फुरमायौ कै ठाकुर नै लिखो कै ठिकाणा रौ डोळो ऊठे गयौ नही चाहिजै[1]। पोहोकरण जान बुलाय परणावौ। तरै सवाईसिंघजी पाछी अरज कराई खानाजाद नै फुरमायौ सौ तो ठीक पिण म्हारो तौ आधो चार जैपुर है। ऊमेदसिंघ रौ रैवास जैपुर हवेली मे है सो व्याव हवेली मे करसी। पिण माहाराज श्री भीवसिंघजी री सगाई ऊदैपुर कीवी सो ऊव। सगाई हमे जैपुर महाराज जगतसिंघजी सूं करै है जिण री खावद निगै फुरमाईजे[2]। तरै माहाराज सारा चाकरा नै पूछियौ आ बात किण तरै ? चाकरा अरज करी कै माहाराजा श्री भीवसिंघजी री सगाई ऊदैपुर करण री ठेराई थी पिण टीको आयौ नही नै भीवसिंघजी देवलोक हुय गया। तरै जैपुर पचोळी सतावराय उकील थौ तिण नूं लिखीयौ कै ऊठे परउतर[3] करजै नै ऊदेपुर केवायौ के आगे सगपण रौ अठै कैवीजीयौ है नै औ सगपण थे जैपुर करण तरै करौ हौ ? पिण उदैपुर वाळा केवणो मानीयो

---

१ ख चढियौ पाळो लोक २-३ हजार आसरै था।

---

1 ठिकाने की तरफ से डोला वहा नहीं जाना चाहिए। 2 जरा इस बात की तरफ भी ध्यान दें। 3 सवाल जवाब।

नही[1] नै टीको जेपुर नू वहीर कर दीयौ। अै समाचार अठै हजूर मे मालम हुवा, तरै सला मसलत ती की हुई करी नही नै ताकीद कर समत १८६२ रा माहावद ७ छडी असवारी[1] सू अजाणचूक[2] कूच कीयौ सु आठ तथा दस पोर मे मेडतै दाखल हुवा। मोणोत ग्यानमल दीवाण फौज लीया सेखावटी मे हौ जिण नू लिखीयौ कै फौज ले जळदी सू आवजे। नै सीरोही फौज थी तिण नू हुकम पोतौ[3] के सीरोही रा राव नू हाल बैठाण दीजौ नै फौज ले जळदी आवजौ। हूलकर जसवतराय नै खलीतो दीयौ कै म्हारै मावोमाव[4] मे किस्सौ है नै थासू म्हारै दोस्ती है सो जळदी आवजो।

मारवाड मे छोटा-मोटा जमीदार सारां नू हुकम पोतो अर घोडा प्यादला रा नावा सजणा अरू हुग्रा। दिन १५ मे पचास साठ हजार[2] लोक फौज भेळी हुई। मेडतै उदैपुर सू टीकौ वहीर हुवौ नै अजमेरा रा खारीढावा रा गावा मेडेरा हुवा री हजूर मे मालम हूई। तरै पिंडा चढण नै त्यार हुवा तरै सिंघवी ईदरराजजी मालम करी कै टीका रा लोक ऊपर खावद कूच नही कीजै, चाकर ने हुकम दिराईजे, तरै सारा काम री सू पना[5] ईदरराजजी नै हुई। सिंघवी ईदरराजजी मुहतो सूरजमलजी वगैरे आऊवा आसोप रा वगैरे सिरदार फौज हजार वीस विदा हुई, सो खारी रा ढावा रा गाव धनोप डेरा हुवा। उदैपुर रा टीका साथै लोक हजार अेक थी सो भाज नै सीसोदीया री गाव साहापुरा मे वड गया। तरै ईदरराजजी साहापुरा ऊपर कूच कीयौ तरै साहापुरा वाळा[3] कह्यो—टीकौ पाछौ ऊदैपुर परौ जासी[6], जैपुर जावै नही। सो साहापुरै वाळा जामनी[7] रौ रूकौ लिख दीयौ। तरै ऊदैपुर टीके वाळा पाछा परा गया। ईदरराजजी पाछा हजूर आया। छोटा-मोटा जमींदार रोजीनदार नै परदेसी मोमनअली, मैंमदखा, जीवणसेख, हीदालखा री गोळ रसाला पलटण कर अेक लाख आसरै फौज भेळी हुई।

---

१ ख प्रति (पृ 15-) पर लिखा है कि यह सब षडयन्त्र पोकरण ठाकुर सवाईसिंह का था, वह अन्य राजाओ को मानसिंह के खिलाफ करना चाहता था और उसे अपदस्थ कर धोकलसिंह को गद्दी दिलवाना चाहता था। उसने जब अपनी लडकी का डोला जयपुर महाराजा को भेजने की बात की तो महाराजा मानसिंह ने इस कार्य को अनुचित कहा तब सवाईसिंह ने उत्तर दिया कि मेरा तो भाई जयपुर मे रहता है सो उसकी हवेली मे शादी करूगा परन्तु राठौडो की माग उदयपुर वाले कछवाहो को दे रहे हैं यह शर्म की बात है। इस पर बात बढ गई। २ ख 10-15 हजार फौज। ३ ख साहापुरा रै डेरौ लगायौ। साहापुरा वाळा कनै तोपा थी नही सो सिटगया (अधिक)।

---

1 बिना फौज को साथ लिये। 2 अचानक ही। 3 हुकम गया। 4 आपस मे। 5 सारा कार्य-भार सौंपा। 6 टीका पुन उदयपुर को लौट जाएगा। 7 जमानत।

हूलकर जसुतराय री फौज मे लोढो किलाणमल उकील हो जिण हस्ती जसुतराय रा समाचार आया कै हू आयो, जेज जांणमी नही ।[1]

ईदरराजजी टीका नै पाछो घेर दीयो नै माहाराज मेडतै डेरा कीया । जिणसू जैपुर रा माहाराज जगतसिंघजी पिण जैपुर रै बारै डेरा खड़ा कीया नै लोक भेळो कीयो । तरै जैपुर रै दीवाण रायचंद अरज करी कै राठौडा री फौज घणी है नै जसुतराय पिण राठौडा रै सामल हुमो सो आपा पडपा नही ।[2] जिण सू माहाराज जगतसिंघजी आगो कूच कियो नही ।

महाराजा मानसिंह व जगतसिंह मे संधी का प्रयास

संमत १८६२ रा चैत मैं माहाराज श्री मानसिंघजी मेडता सूं कूच कर डेरा गाव आलण्यावास कीया । पोहोकरण रा सवाईसिंघजी तो आया नहीं नै छोटा वेटा हिमतसिंघजी नूं मेलीयो । सिंघवी ईदरराजजी अरज कर लल-वाणी अमरचंद नू जैपुर मेलीयो सो जैपुर जाय दीवाण रायचंदजी सूं वात कीवी कै आपा राठौड कछवावा मावोमाव क्यू मरा हा, सीसोदीया तो आपा सू सदाई न्यारा रया है । आपां अेक होय नीठ पातसाहो गाळी[3] है, फेर ही अेक रहसा तो तुरक दिखणी फिरंगीया वगैरा नू जवाव देसा । तरै दीवाण रायचंद कह्यो–आपस मे ईकळास[4] रहै तो घणी आछी वात है । तरै अमरचंद अरज लिखी, तिण ऊपर हजूर फुरमायो कै अेक किण तरै हुवा । माहाराज भीवसिंघजी री माग जैपुर वाळा नू परणीजण देवां नही अै समाचार ईदर-राजजी अमरचंद नूं लिखिया । तरै अमरचंद रायचंद दीवाण सूं वात कर आ वात कर आ सला ठैराई कै ऊदैपुर री माग दोनूं राजावा माय सू कोई परणै नही नै जैपुर रा माहाराज जगतसिंघजी री वैन री सगाई तो माहाराज श्री मानसिंघजी सूं करणी नै माहाराज श्री मानसिंघजी रै वाई सिरेकवर वाईसा री सगाई माहाराज श्री जगतसिंघजी सूं करणी । सो आ वात माहाराज सायवा री मरजी मैं आई । दुतरफा खलीता लिखीजिया नै अठा सूं टीको लै व्यास चुतरभुज नै आऊवा आसोप नीवाज रा सिरदार जैपुर गया । नै जैपुर सु टीको ले हळदीयो चुतरभुज नै सिरदार आया । दुतरफा सगाया रा टीका दिरीजिया अेकानगी हुई । फौज रो खरच सावठो लागो जिणसु मूलक मे दोय रुपिया घर वाव घाली । मुहता अखैचद री सना सु मेड़ता रा माजना कने रुपिया अेक

1. मैं आया इस मे विलव मत समझना । 2 अपन उनका मुकावला नही कर सकेंगे । 3. मुगल वादशाही को वड़ी कठिनाई से समाप्त किया । 4. एकता ।

लाख लीया जिणदिन सू मेडता माह सु पैतीस ३५[1] लखेसरी[1] हा सो निसरीया ।[2]

जसवंतराय होल्कर के डेरे पर मानसिंहजी का मिलने जाना

हूलकर जसु वतराय आयौ । गाव नादरे नाके डेरो हुवो । जसु वतराय रै सामा पधारण री नै बराबर बैठण री ना फुरमायी । पिण जसु तराय तौ कह्यौ म्हारै तौ माहाराज मालक है । छडा घोडा सु माहाराज रै डेरै उरौ आयौ । पिण मन मे बेराजी । नवाब मीरखा नू कुरब देण रौ ना फुरमायौ सु ऊही बेराजी हुवौ । दुतरफा सिरपाव मिजमानिया मेलीजी । माहाराज जलूसी असवारी कर हूलकर रै डेरै पधारीया । हाथी रै हौदे बिराजिया । लारै खवासी मैं नीवाज रा ठाकुर सुरतांणसिघजी बैस छवर कीवी । नै जीवणी बाजू वगली हाथी ऊपर रीया आऊवा रा ठाकुर वखतावरसिघजी बैठ छवर कीयो डावी बाजू वगळी हाथी ऊपर रा ठाकुर विडदसिंघजी बैठ छवर कीयौ । सारा सिरदारां रै सिलै कीयोडी थी ।[3] जसु तराय राठौडा री फौज देख राजी हुवौ । माहाराज सु अरज करी कै ऊदैपुर परणीजण री मरजी हुवै तौ कूच कराईजे सु ऊदैपुर परणाय लाऊ ने जैपुर लेण री मरजी हुवै तौ कूच कराईजे सो जैपुर खाली कराय लेवा । तरै हजूर फुरमायौ-सोबेदार थारो भरोसो इसौईज है, पिण दुतरफी दुरस्ती होय गई[4], फेर काम पडसी तौ थे किसा अळगा हौ[5] तरै जसु तराय कह्यो-आप रौ रूको आवसी जिण वखत आयौरै सू । पछै जसू तराय केई दिन ऊठे रहै, दिखण री तरफ कूच कीयौ । श्री हजूर रा डेरा गाव नोद हीज रह्या ।

अठासु ई दरराजजी नै ऊठी नै दीवाण रायचद दोनू कारदा अकल वद था सो सारी वात दुतरफी अवेर लीवी, सालोकै लगाय दीवी ।[6] जैपुर पैला उकील पचोळी सतोवराय थौ जिण नू तौ माहाराज भीवसिघजी रा फूलां साथे गगाजी मेलीयौ ।[7] नै अमरचद ललवाणी जैपुर रह्यौ । अमरचद माथे जैपुर माहाराज जगतसिघजी री निरतर मरजी, अमरचंद आदमी हुसियार सो जगतसिघजी नू हाथ कर लीया ।[8] अमरचद तौ ईदरराजजी नै लिखबो करै कै माहाराज श्री जगतसिघजी सु अरज करसा ज्यू मजूर कर लेसी । मूणोत

१ ख 27 आसामी ।

1 लखपती । 2 वहा से अन्य स्थान पर चले गये । 3 वस्तर आदि पहने हुऐ थे । 4 दोनों ओर से सुलह हो गई है । 5 तुम कौन से दूर हो । 6 वात को ठीक रास्ते पर लगा दी । 7 भीवसिहजी की अस्थियो को लेकर गगाजी भेजा । 8 अपने वश में कर लिया, अपने अनुकूल कर लिया ।

ग्यानमल री तरफ मु मोदी दीनानाथ जैपुर रहै सो ऊणारी झूठी निवावटां रा समाचार[1] ग्यानमलजी मालम करवो करै, जिणमुं माहाराज मानसिंघजी। जैपुर माहाराज री तरफ रौ चुस्तो पडियो।[2]

सिंघवी इन्दरराज पर परदेसी द्वारा तलवार का प्रहार

सिंघवी ईंदरराज रै अेक परदेसी तरवार काड वावण लागी, ईंदरराजजी डेरा मु निसर नाडौ खोलता था सो आदम्या पकड लीनो। तरवार वाही सो छिलती[3] कान रै लागी। इदरराज रा वेली परदेसी ऊपर तरवार मारता हा सो इदरराजजी मारण दीयौ नही। पकड़ाय लीयो। पछै अे समाचार श्री हजूर मे मालम हुवा सो श्री हजूर मुख पूछण[4] इदरराज रै डेरे पधारीया, असवारी कर नै। पाटी बदायौ।[5] परदेसी नुं घणो ही पूछियो, ऊंचो-नीचो लीयौ।[6] पिण साच बोलियौ नही, आ कहो के म्हारा मन सु हीज वाही।[7] तरै श्री हजूर मु तकरार घणी फुरमाई तरै इदरराज अरज कर परदेसी नू सीख दिराई।

सवाईसिंह को बुलाने के लिये नथकरण को भेजना

दोढीदार आसायच नथकरण नूं सवाईसिंघजी नै लेण सारू पोहोकरण मेलीयो सो सवाईसिंघजी तौ आया नही नै ऊणा रै रजवाडा सुं खेवटा ने घोडा रजपूता री साजत[8] देखी[१] नै ऊणा सुं वात कीवी। सो नथकरण पाछौ आय अरज करी कै सवाईसिंघजी नै आप ज्यूं हुवै ज्युं लगाय लीजै,[9] अेक सवाईसिंघजी लाग जाय नै इदरराज गगाराम काम करवो करै तौ आप विचारी जितरी ही वात हुय सकै है। जद मु हुते अखैचद मोणोत ग्यानमल अरज करी कै नथकरण तौ सवाईसिंघजी सु मिळियोडो है[10] तरै दोढीदार नथकरण नू कैद कर दीयौ।

१ ग घोडा वेली री साजा देखी।

1. असत्य खबरें। 2 वहम हो गया 3 सटती हुई, छूती हुई। 4. स्वास्थ्य की जानकारी करने के लिये। 5. मरहम पट्टी करवाई। 6 अनेक प्रकार से सच बुलवाने का प्रयत्न किया। 7 मैंने अपनी ही इच्छा से वार किया। 8 रजवाडो से ताल्लुक व राजपूतो तथा घोडो की फौज की सुन्दर व्यवस्या। 9 अपनी तरफ कर लीजिए। 10 मिला हुआ है।

संमत १८६२ जमांनो फोरो हुवो।[1] नै संमत १८६३ लागो सोई जमांनो फोरौ हुवौ। सावण में मेह री खच[2] रही, फौज री खरज घणी जिण सूं मुलक मे बाब घाली[3] नै सेहरां मे डड नांखीयौ।[4] जोधपुर मे सिंघवी बाहादरमल डड ऊगावै सो सैर मैं पुरी नवाई बोती। जोधपुर रा गढ रा जाबता सारू खीचो चैनो नै आहोर ठाकुर अनाडसिंघ राजसिंघोत था।

कृष्णाकुमारी की सगाई को लेकर सवाईसिंघ का पुनः षड्यंत्र

चांपावत सवाईसिंघजी पोहोकरण बैठा कागद दुवाई कर वडलू रा ठाकुर कूंपावत साद्रूळसिंघ नै फाडीयौ[5] नै रास रा ठाकुर ऊदावत जवानसिंघजी नै फाडीया। साद्रूळसिंघ रै बीकानेर राजा सूरतसिंघजी सु ढब थी।[6] सो साद्रूळसिंघजी हस्तै बीकानेर रा राजाजी सु पकावट कीवी। नै गीजगढ रा चांपावत उमेदसिंघजी हस्ते जैपुर रा राजा जगतसिंघजी नै कैवायौ कै आपरै ऊदैपुर सू टीको आवतौ सु माहाराज मानसिंघजी पाछौ फिराय दीयो, जिणसु जिहान मैं आपरी घणी हळकी लागी है सो म्हे कहा ज्यू आप करौ तौ आपरौ आटौ[7] म्हैं लिराय देवां। तरै माहाराज जगतसिंघजी कही-ठीक है, ठाकुर सवाईसिंघजी अठै आवै नै धरम-करम देवै[8] तौ ठाकुर कैसी ज्यूं म्हाकी गोविंदजी करलेसी।[१]

मानसिंह का जोधपुर को कूच और इन्द्रराज आदि को कैद

मोणोत ग्यांनमल रै दीवाणगी मुहता अखैचद री सला भेळी। सला भूता सुरजमल री नै सायबचद पिण सरफराज। सो इणा कामेतीया अरज करी कै जैपुर फौज मेली हुई थी सो तौ बिखर गई नै आपस मे सगपण होय सफाई होय गई। नै हूलकर[9] आंपणे हाथ मे है[२] हमैं हकनाख[10] अठै बैठा खरच

१ ख अर ठाकुरा सवाईसिंघजी मजूर कर लीवी कै हू जयपुर जाय हाजर होसू अर सारी बात री पकावट कर देसूं, सो वेगो ही हाजर हो सूं।

२ ख गीत पती जोधाण सु हूत जैपुर पती, अडी मत आणो रोळै।
वींद विन रही वर विन बीनणी, भूप सू भूप अडै मत भोळै॥

मान श्री कृस्ण अवतार मन मांनजै, कैसी जगत मन खना- खासी।
पैदला हैदला हांय विन दुलहणी, आया सिसपाल जिम आप आसी॥

अडी नव कोट रो नाथ आयो अडर, आमेर करै वात अनडी।
सेवरा बीच कोई उपदरो पेरसो, वेलमो रात रा हाय वनडी॥

कूरमा छात कहोला किणी कह्योनी, धजाबद मान सू पिरथी धूजै।
परण गढ लावसी करे पदमणी, जयनगर जावसो जनम दूजै॥

1 फसले अच्छी नहीं हुई। 2 वर्षा की कमी। 3 अनिवार्य कर लगाया। 4 दड के रुपये वसूल किये। 5. अपनी ओर मिला लिया। 6 मेल मुलाकात थी। 7 वैर। 8 धर्म-कर्म की कसम लें। 9 जसवतराय होल्कर। 10 व्यर्थ मे।

क्यू खावौ सो पाछौ कूच कराइजै । तरै गाव नाद सू पाछौ कूच हुवौ सो संमत १८६३ रा आसोज वद मे मेडतै डेरा हुवा । मुलक मे वाव डड ऊगाय नै खाय गया । खरची री तगाई आई । रोजीनदार लोक नै सीख दीवी । सिरदार पिण घणा महिना हुवा तिणसू खरच सू तग हुवा सु घोडा रजपूत कनै कम रैया । पेहला घाणेराव चाणोद नारलाई रा मेडतीया मेवाड मे हा सु आय पाली लूटी । तरै मुहतो सायवचद नै फौज दे फोज सु विदा कीयो । वगडी रा ठाकुर केसरीसिंघजी, चडावळ वगसीरांमजी, पाली ग्यानसिंघजी वगैरे सिरदार हजार दस फौज सामीयां री जमात साथे दीवी । सोजत पाली गोढवाड रौ वदोवस्त कीयौ । वागेठीआ[1] पाछा घाटै चढगया । मोहोणोत ग्यांनमल[१] मूतो अखैचद वगैरै जाळोरी चाकरां[2] री सला सु सिघवी इदरराज भडारी गगाराम नूं मेडता रै डेरा कैद हुई । इतरां नू कैद कीया—

सिघवी इदरराजजी वेटो फतैराजजी, गुलराजजी, भडारी गगारांमजी, नै उण रै वेटो भानीराम, भडारी मांनमल, वखतावरमल, भडारी पिरथीराज, धीरजमल, पचोळी छोगमल, सावतराम, ग्यानमल, वगैरे तालकदारा सुधा कैद कीयां । इदरराजजी गगारामजी वगैरा नू तो जोधपुर मेलीया सो सलेमकोट मे वैसाणीया नै गुलराजजी रौ डील वेआराम[3] हो सु जोधपुर हवेली मे राखीया । दोळी चौकी वैढी ।[4] कितराक तालकदारा नै मेड़ता री कचेडी मे कैद कीया ।

इदरराजजी नू कैद कीया सुणिया तरै चांदावत वहादरसिंघजी जैपुर परा गया नै पोहोकरण ठाकुर सवाईसिंघजी, इदरराजजी, गगारांमजी, नू कैद हुई सुणी तरै हँस नै कह्यौ-इणा वाणिया दोनू जणा[5] म्हारी सला विना जाळोर सू माहाराज नै ले आया जिण रौ फळ वेगो हीज[6] मिळ गयौ ।

पोकरण ठा. सवाईसिंह का जयपुर जाना और युद्ध की तैयारियां

सवाईसिंघजी ऊ ठ अेक सौ १०० नै घोडा अेक सो १०० लेनै वादै[7] जैपुर गया, पोहोकरण सू चढ नै सवाईसिंघजी वडलू रा सादूळसिंघजी वीकानेर तिणा था नू लिखियो सु वीकानेर रा राजा सुरतसिंघजी सु अरज कर डेरा वारै

१ ग ग्यानचद ।

1 वागी लुटेरे । 2 जालोर के समय के नौकर, जालोर इलाके के । 3 अस्वस्थ । 4 पोहरा वैठा दिया । 5. इन दोनो वनियो ने । 6 शीघ्रही । 7. वादे के अनुसार ।

करीया नै खेतडी सु सेखावत अभैसिंघजी सांवठो लोक[1] लेने जैपुर आयौ, जगतसिंघजी रा डेरा वारै हुवा सो जैपुर इदरराजजी री तरफ सूं ऊकील ललवाणी अमरचंद हौ सो तो इंदरराजजी नूं कैद हुई, जिका दिनां चल गयो थौ ।[2] नै दिवाण मोहोणोत ग्यानमल री तरफ सूं मोदी दीनानाथ जैपुर ऊकील हौ जिण सवाईसिंघजी पोहोकरण सूं जैपुर आया जिण री नै माहाराज जगतसिंघजी वारै डेरा किया जिण री खबर लिखी । तरै माहाराज मेडता सुं दरकुचां परवतसर पधारीया । सिरदार किताक घरां हा[3] जिणां नै बुलाया । नै रोजीनदार राखणा सरू कीया ।[4] हूलकर जसूंतराय नूं पिण खलीतो[5] दियौ कै हमे काम री बखत है सो ताकीद सुं आवजो । लोढो किलांणमल हूलकर कनै ऊकील थो जिण नूं लिखियो सोबेदार नू ले बेगो आवजै ।

मुहतै अखैचद अरज करी कै इंदरराज गगारांम नु कैद कीया जिण री घाल मेल[6] सु पाछो ऊदगल खडो हुवौ है, सवाईसिंघजी री नै इंणा री सला भेळी है । तरै हजूर रीस कर नै फुरमायो कै इणा नू मार नांखौ । सो औ हुकम जोधपुर पोतौ ।[7] तरै आहोर रौ ठाकुर अनाडसिंघजी किला मे थौ जिण पाछी अरज लिखी कै चाकरां रा मावो-माव[8] रा खेदा[9] सूं आप नै झूठी-झूठी मालम कर कैद कराया नै फेर मारण रौ हुकम देरायौ, सो अनदाताजी औ चाकर आपनू जाळोर सुं लाय जोधपुर पधराया[10] तिके है । इणां रै सवाईसिंघजी सु घालमेल हुती तौ आप नै जाळोर सुं जोधपुर नहीं पधरावता । सो इणा नै कैद किया सो तो जाणेै पिण मरावणौ सला नही छै । अैड़ा चाकर पाछा वणसी नही[11] अनाडसिंघजी पाछी अरज खाच नै लिखी[12] तिण सुं मराया नही ।[१]

परवतसर रा डेरां सारा जमीदार भेळा हुवा । रोजीनदार राखीया ।

---

१ ख हुणहार तीनूं चारू रजवाड़ा रो खराब हूण रो आय गयौ सो सवाईसिंघ चांपावत री सला मे जैपुर बीकानेर ऊदैपुर आय पक्ष नै मारवाड़ रा उमराव मुसदी खवास पासवान वगेरा सारा नु बेकाय दिया सु हूणहार तावै सारा जणा सवाईसिंघजी री सल्ला मान लीवी । जैपुर रा राजाजी तु मालम आय दरवार मे करी (सवाईसिंघ) अपने आपरै मुतलब वास्ते ले जावै छै सो स्हेज की वात नही छै ।

---

1. काफी योद्धाओं आदि के साथ । 2. मर गया था । 3. अपने-अपने ठिकाने पर थे । 4 युद्ध के लिये नौकर रखने प्रारंभ किये । 5. पत्र विशेष । 6 राजनैतिक चाल 7 जोधपुर पहुंचा । 8. अन्दरूनी, आपसी । 9 द्वेष भाव । 10 जोधपुर की गद्दी पर बैठाया । 11 फिर प्राप्त नहीं होंगे । 12 विशेष जोर देकर लिखी ।

किसनगढ सू बूंदी सु पिण लोक आयो । फौज पाछी त्रण गई । जैपुर मे सारा कछवाहा भेळा हुवा नै बीकानेर रा राजा सुरतसिंघजी जगतसिंघजी सामल हुवा । माहापुरा रो राजा जैपुर आयो । माहाराज जगतसिंघजी आपरा खजाना सु रुपिया २५०००००) पचीसलाख काढीआ । और कितराक राठौडा नू सवाईसिंघजी फाडीया[1] नै केवायो[2] कूच कर अठै डरा आवो । तरै रास रै ठाकुर जवानसिंघजी केवायो ऊठे आय नै काई करा[3] अठे हा सो ऊठे ज्यु हीज जाणजो ।[4] आऊवो आसोप अठै है पिण माहाराज नै झगडो करण देसा नही, ले निसर सा ।[5] ने झगडा री वखत कितराक सिरदार था सामिल आय हुय जासी । आ तजवीज वाधी । सारा ठिकाणा रा आदमी जाय सवाईसिंघजी ने धरम-करम दे-दे नै आवै । जाळोरी रा सिरदारा विना[6] कितराक मारा सिरदार मिळियोडा ।[7] सवाईसिंघजी सू वळूदा रा ठाकुर सिवसिंघजी कनै सवाईसिंघजी रौ आदमी आयौ । तरै पचोळी जोरावरमल कयौ म्है तौ दोढी रा चाकर हा नै ठाकुरा सु इरादो है सो आगलो है ईज । सिवसिंघजी कनै पचोळी सिरदारमल री नै कोठारी रुगनाथ री सला सो अखावत वगसीराम नै सवाईसिंघजी कनै मेलीयो सो ललोपतो कर आयौ ।[8]

मीरखां का सवाईसिंह की तरफ मिल जाना

हूलकर जसुवंतराय री फौज मे मीरखा फौज हजार २०००० बीस सू थौ जिण नै फाट नै सवाईसिंघजी बुलायौ । माहाराज मांनसिंघजी रै जसूवंतराय सू मिळाप हूवौ जठै मीरखा नै कुरब देणं री ना फुरमायौ थौ जिस सु मीरखा वेराजी थौ[9] सु[1] सवाईसिंघजी री खेवट[10] सु मीरखा जैपुर वाळां सामल हुवौ । जसुवंतराय कूच कर आयौ सो किसनगढ रौ गाव तिहोद डरा किया । नै माहाराज मानसिंघजी नु केवायौ कै खरची ताकीद सु मेलावौ[2] फौज भूखा मरती है । सो खरची री माहाराज रै ही तगाई । तरै मोहोणोत ग्यानमल नै मेलीयौ सौ जोधपुर आय ठाकुरजी श्री वालकिसनजी रै मिंदर माह सु गेणौ

---

१ ख सु उण दिन री खटक थी । २ ख अलल हिसाब रुपिया दो लाख मेलावो ।

---

1 अपनी ओर मिलाया । 2 कहलवाया । 3 वहाँ आकर क्या करेंगे । 4 यहा पर होते हुए भी आप हमे अपने साथ ही समझें । 5 युद्ध से पलायन करवा देंगे । 6. जालोरी इलाके के सरदारों को छोडकर । 7 दूसरे पक्ष से मिले हुए । 8 ज्यों-त्यों बातो से खुश कर आया । 9 नाराज था । 10 प्रयत्न ।

जवाहर री रकमा लीवी[1] नै माहाराजं श्री विजेसिंघजी रा करायोडा सेवा मे वासरण[2] सोना रूपा[3] रा था सो भगाया नै रुपिया पडाया[4] नै सैहर मे छतीस पूरण[5] ऊपर डड लीयौ। मोरणोत ग्यानमल रौ पोतो मर गयौ सो लोका कही— मिंदर रौ गेरणौ जवरी सू[6] लीयौ जिरण सू ग्यानमल मे श्रा हुई। पछै खरची रा रुपिया लै पाछौ फौज मे श्रायौ।

सवाईसिंघजी जसू तराय नै जगतसिंघजी कना सु रुपिया दोय तीन लाख दिराया ने कह्यो—ना तो थे माहाराज मानसिंघजी सामल रहौ नै ना जगत-सिंघजी सामल रहौ। पाछौ कूच कर जावौ।

मूता अखैचद नै खरची दे नै जसु तराय कनै मेलीयौ सो हूलकर जसू-तराय कह्यौ— इतरी खरची सु काई हुवै। तरै अखैचद पाछी अरज कराई। तरै गीगोली रा डेरा सु माहाराज असवारी कर पधारीया पिरण जसु तराय श्रायौ नही। पाछौ दिखरण री तरफ कूच कीयौ।[१] माहाराज रै कनै सिरदार था जिरणा कितराक रा मन चल विचल[7] हुवा सवाईसिंघजी सु मीठी करता गया[8]।

जैपुर माहाराज जगतसिंघजी वीकानेर महाराज सुरतसिंघजी कूच कर डेरा मारोठ कीया। चढीया पाळा लोक लाख अेक रै श्रासरै थौ। माहा-राज जगतसिंघजी सवाईसिंघजी नु वार-वार कहै—ठाकुरा श्रापरणी फौज मे कितराक तौ परदेसी है नै कितराक पिडारा[9] है, लूटेरा है। ने ऊठी नै सारा राठौड छै सो सारा पिंडा छै। सो श्रापा झगडौ जीनसा नही। तरै सवाई-सिंघजी कह्यौ—सारा राठौड म्हासू मिळियोडा है। कितराक सिरदारा रा कागद था सु वचाया[10] नै कयौ श्राप तौ फुरमावता हा कै हूलकर राठौडा सु फटै नही,[11] तिरण नू ही म्है फाट दीयौ। सो राठौड तौ म्है सागे अेक हा, म्है किसा श्राप नू मारवाड ऊपर ले जावा छा[12] म्हा राठोडा नै माहाराज मानसिंघजी

---

१ सवाईसिंघजी २ लाख रो वूतो दियो, थे भला ही थारै देस जावो। मीरखा जैपुर वाळा री तरफ रह्यो।

---

1 गहने तथा जवाहरात श्रादि लिये। 2 सेवा मे रखे हुए वर्तन। 3 चादी। 4 वरतन तुडवा कर रुपये ढलवाये। 5 छत्तीस कौम से। 6 जवरदस्ती से। 7 विचलित हो गये। 8. सवाईसिंह को खुश करने के प्रयास करने लगे। 9 पिंडारी। 10 पढवाये। 11 अलग नही होगा। 12 हम कौनसे श्रापको मारवाड पर चढा कर लेजा रहे हैं।

पळेटीया नही ।[1] तरै म्है इनरी कीवी छै । माहाराज कनै सिरदार छै जिणा री नै म्हारी मला अेक छै, सो झगडो करै नही । फौज मुहमेळ हुसी[2] नै अेक तोप छुटसी नै अठी रा घोडा देखसी जितरा वडी कितराक सिरदार चढी अणी[3] अठी नु उरा आवसी । नै किताक माहाराज कनै रैवसी तिके अरज करसी कै मारा उठी सु मिळियोडा है । नै उठी कानी लोक सावठो है । झगडो कीया पडपसा नही.[4] यु कहै झगडो करण देसी नही नै माहाराज नू जाळोर लेजावसी । तरै ओकलसिंघजी नु जोधपुर गढ मे वैठाय देसा । इण सल्लाह रा कागद हरसोळाव रा ठाकुर[1] जालमसिंघजी रा नै रास रा ठाकुर जवानसिंघजी रा आया था सो सवाईसिंघजी माहाराज जगतसिंघजी नै वचाया । तौ पिण[5] जगतसिंघजी रा मन मे अभरोसो कै कदास[6] राठौडा म्हा सू दगौ कीयौ हुवै । तरै सवाईसिंघजी अरज करी कै आपरौ अभरोसो नही मिटै तौ आपरा डेरा माहारोठ हीज रखावौ नै हू फौज लेनै जासू ।[2] तरै माहाराज जगतसिंघजी फुरमायौ कै ठीक है ।

सवाईसिंह का मानसिंह से युद्ध के लिये प्रस्थान

माहाराज जगतसिंघजी नै बीकानेर माहाराज सुरतसिंघजी तौ मारोठ हीज रया नै मीरखां वगेरे फौज लेनै सवाईसिंघजी चढिया सो नाहरगढ रै नाकै होय गीगोली आया । नै फौज आवण री हलकारा खवर दीवी । तरै अठीसु ही फौज चढी । डेरा डेरा नकीव फिरिया । श्री हजूर घोडै अस्वार हुवा । कितरीक फौज तौ चढ आई । केईक चडे छै, पेलोडी फोज री तोपखानौ आयौ नै अठी री तोपो री अेक अेक अवाज हुई । नै हरसोळाव रा ठाकुर चापावत

---

१. ग चापावत (अधिक) ।

२ सो कदास आपरै मन मे म्हारी जवान रो साच नहीं आवै तौ आप तौ डेरा अठै हीज रखावौ नै हू अगाडी लोक तोपखानो ले जावू छू सो अगाडी री लडाई हू कर सू जिण रा समाचार आप सुण लेसी पछै लारा सू आप पधार जासी सु सवाईसिंघजी तोपखानो उपर काजू फौज रो सामान लेय चढिया । हैदरावादिया री फौज 10 हजार, मीरखा री फौज 10-15 हजार घी वगेरे 20-25 हजार फौज लेय सवाईसिंघजी चढिया ।

---

1. अपनाया नहीं । 2 फौज एक दूसरी के समीप आएगी । 3 फौजी तैयारी के साथ, उसी हालत मे । 4. युद्ध मे उनका मुकावला नही कर सकेंगे । 5 तदुपरान्त भी । 6 कदाचित ।

जालमसिंघ, सथलांणो, धाधीओ, चवा, सवराड, वगैरै जिला सुदा[1] घोडा १५०० पनरै सो सू चढी अणोया गीगोली री घाटी सामो कर दीया । श्री हजूर सू मालम हुई कै जालमसिंघजी तौ पैली फोज मैं परागया । जितरेक मारोठ रा महेसदानजी वगैरे मेडतीया घोडा १००० एक हजार सू चढी अणी पैली फौज मे परा गया । गोडाटी चौरासी[2] रा सिरदार पिण चढी अणिया परा गया ।[1] पैलोडी फोज रा घोडा पाळा रा गाव रुणोजा कानी गोट रा गोट भेळा हुवै नै अठी हजूर कनै आऊवा रौ चापावत वखतावरसिंघजी नै आसोप कूपावत केसरीसिंघजी, नीबाज रा ऊदावत सुरताणसिंघजी, रास रा ऊदावत जवानसिंघजी, लावीया ऊदावत भानीसिंघजी, कुचामण रा मेडतीया सिवनाथ-सिंघजी, वूडसु मेडतीया प्रतापसिंघजी, खेजडले भाटी जसुतसिंघजी इतरा सिरदार हजूर कनै रया, सो हजूर फुरमायौ कै घोडा उठावौ तरै रास रा जवानसिंघजी अरज करी कै सिरदार कितराक तौ उठी परा गया नै फेर जावै हीज है । नै उठी री फौज घणी है भगडो कीया पडपा नही । फैर काई सवाय मे हुसी[3] सो घोडा पाछा मारवाड मे खडाईजै[4] हजूर रा घोडा री वाग[5] पकड घोडो पाछो फेरीयो । हजूर घोडा उठावण सारु हट कीयौ नं तरवार खाची[2] [6] सो वाधल ऊदेराम पकडे लोनो सो ऊदैराम रे हात रै चोरी आयौ ।

महाराज मानसिंह का युद्ध से पलायन

सेवट अै सिरदार[3] हजूर नू ले नीसरीया नै किणी मे हिम्मत ही सु तो आप री डेरौ असवाव ले निसरीया सो अजमेरै किसनगढ तया मेडता रा गावा मे गया । नै वाकी सारो असवाव लूटीज गयो तोपखानो खजानो फीलेखानो[7] फरासखानो वगैरै सारा कारखानो लू टीज गया । डेरा बाळ दीया[8] चोखळा रा ।[9] गाव खोखर, अडाणी, स्यामपुरो, गीगोली लूट लीना वाळ नाखीया, परवतसर लूट लीयौ । परवतसर किलेदार पडियार थौ सु सामो जाय[10]

---

१ सिलाम कर कह्यौ म्हेतो सवाईसिंघजी तरफ जावा छा आप कनै देवनाथजी छै सो लड लेमी । महाराज फुरमायो हमे ठाकुरा घोडा उठावो ।

२ ख कह्यौ अठैही मरसा-मारसा । ३ ख हिन्दालखा वगेरे (अधिक)

---

1 साथी योद्धाओ सहित । 2. गौडो के इलाके के सरदार । 3 कोई ओर वडा अहित होगा । 4 मारवाड की ओर रवाने कीजिये । 5 लगाम । 6 तलवार म्यान से वाहर निकाली । 7 हाथियो का सामान । 8 जला दिये । 9 चारो तरफ के । 10 स्वय सामने जाकर ।

कूचीया सू प दीवी । मारोठ पैला होज लूट लीयौ थौ । महाराज री फौज माह सु सिरदार गया जिका रुपनगर डेरा कीया । पछै सवाईसिंघजी सामल हुवा ।

इतरा सिरदार फौज माह सूं वदळ¹ नै गया, तिणां री विगत—

खांव चांपावत—

१ हरसोळाव जालमसिंघ गीरदरदासोत ।
१ सेनणी सवळसिंघ गिरदरदासोत ।
१ पूंदलु दौलतसिंघ गिरदरदासोत ।
१ सथलाणो माधोसिंघ सिवसिंघोत ।
१ वाधीया
१ चवा खुमाणसिंघ
१ सवराड जालमसिंघ ।
१ पाली ग्यानसिंघ नवलसिंघोत गोढवाड कानी[1] मुहता सायबचंद कनै फौज मे थौ सो सोभत मै आय अमल कर लीयौ ।
—
८

खांप कूंपावत

१ गजसिंघपुरौ भारथसिंघ जगरामोत ।
१ माढे रा ठाकुर ।
१ चडावळ वगसीराम² हरीसिंघोत ।
१ मुहता साहबचंद कनै थौ सो सोजत मे अमल करलीयौ ।
—
२

खाप जैतावत—

१ केसरीसिंघ हिंदूसिंघोत बगडी, साहबचंद कनै फौज मे थौ सोजत अमल करण मे सामल हुवौ लीयौ ।

१ ग विसवासघात कर नै, राठौडा रो राम निकळियौ, नै पगा घर दे परा गया ।
२ ग चडावळ ठाकुर विसनसिंघ ।

1 गोढवाड इलाके की तरफ ।

फिटवडी पोछती कीवी ।[१] राम रा जवानसिघजी मारग मे सीख करी कै हूं घरै जाय टावर कबीला काढ नै आऊं छू ।[1] सो गया पिण पाछा आया नहीं, सवाईसिघजी सामल गया । नै नीवाज सुरतारणसिघजी नै लांबीया भवानीसिघजी नू राम रा जवानसिघजी कैता गया[2] कै हजूर जाळोर जावै जरा तो पोछाय नै उरा आवजो नै जोधपुर पधारै तो हाजर रहजी सु लिखा ज्यू कीजो ।[२]

पछै हजूर जोधपुर पधारीया । फागुण सुद नै फुरमायो कै म्हे तो जाळोर पधार जासा । म्हानू जाळोर रा किला री पूरो भरोसो आवै छै । जिण ऊपर ठाकुर सिवनाथसिघजी कुचामण नै हीदालखा मालम करी कै आप जाळोर मती पधारो, जोधपुर गढ दाखल हुईजे । जाळोर पधार जासो तो जोधपुर आपरै रहसी नहीं । तरै जोधपुर रै गढ दाखल हुवा ।[3]

महाराजा मानसिंह का जोधपुर गढ मे प्रवेश व सुरक्षा की तैयारी और विपक्षियो की चढाई

गढ री मजबूती कीवी ।[४] नै सेमान नही थो सो ताकीद सु चढाणो । नै सेहरपना री पिण मजबूती कीवी । पछै लारली फौज मे सवाईसिघजी परवतसर रा डेरा सू करमसोत परतापसिघजी, खीवसर वाळा नू नै वळदे सिंदसिघजी नै कह्यो–नागोर जावो । आगै नागोर मे चापावत अनाडसिंह आहोर वाळा रो काको केसरीसिघ नै सोडसरूप पचोळी अंतकरण ऐ तीनु मालक हा । अर करमसोता रो लोक पिण थो सो करमसोत मिळ गया सो अजाणचक[3] औ गया सो तळाव समसरी नहर-नहर होय सैहर मे वड गया फागुण सुद १५ पुनम नू नागोर होळी रै दिन मिळ गयो[4] फितूर वाळा[5] रो अमल हुय गयो । माहला लडिया पछै बारला किला रै सुरग लगाई सो सफीळ[6]

१ ख सो हरनाथ री तो हाजरी सजी नै मेडता री रैं तरी-ओर हाजरी हुई, जदसू मेडता री रैत ऊपर श्री हजूर री पूरी वेमरजी रही ।सु मेडतो खराब हुय गयो । " मेडता री ठावी-ठावी आसामिया उण मिती सू अजमेर वगेरे गया ।

२ ख आप सवाईसिघ सू जाय मिलियो । 3 ख समत 1862 सांवण सुद मे ।

३ ख काजू मिनखा ने गढ में राखियां । लडाई री तैयारी करवाई । सैर में गाडा-गूडो लाग गयो अर नासा-भाग लाग गई सो सैर रा लोका नू घरो जेरियो नहीं ।

1 सुरक्षित स्थान के लिये विदा करके आता हू । 2 निर्देश देते गये । 3 अचानक । 4 विपक्षियो द्वारा जीत लिया गया । 5. धोकलसिंह के पक्षधर । 6. किले की दीवार का ऊपरी भाग ।

पडी । तरै चापावत केसरीसिंघ सोडसरुप, पचोळी, जेनकरणअे वात कर बारै नीसरिया, नै किला मे बारला रो अमल हुय गयौ ।

सोजत मै सिंघवी जोधराज रो बेटो विजैराज हौ जिण वगडी सू लोक भेळौ कर सोजत मे आय अमल कीयौ । सोजत री हाकमी इदरराज नै कैद हुई तरे पचोळी गोपालदास रै हुई थी, सो विजैराज आय सीख दीवी । साभर, नावो, डीडवाणो, नागोर, मेडतो, कोलीयो, सोजत, जेतारण इतरी ठौड बारला रो अमल हुय गयौ ।

परवतसर रा डेरा जैपुर माहाराज जगतसिंघजी सू दीवाण रायचद अरज कीवी कै माहाराज आपाणी मोकळी सज गई है[1] सो अठा सु [1] कूच कर पर चारा ऊदैपुर पधारौ व्याव कर जैपुर दाखल हुईज । हमे आपा नू सवाईसिंघजी लारै जोधपुर जावण री सला है नही तरे अै समाचार माहाराज जगतसिंघजी चापावत सवाईसिंघजी नै फुरमाया कै रायचंद इण तरै अरज करै छै । जिण ऊपर सवाईसिंघजी अरज करी कै हमार ऊदैपुर मती पधारौ पैली जोधपुर पधारौ सु माहाराज मानसिंघजी तो जनाना[2] लै जाळोर पधार जासी नै धोकलसिंघजी नै गादी बैसाण दो, सौ आपने पकौ जस आय जावै । पछे भलाई ऊदैपुर परणीजण नू पधारजो ।[2] सु उठा सू व्याव कर नै गाजा बाजा सू जैपुर पधार जासी । इण मे आपरी वडौ नामून राजपथाना मे हुसी ।[3] इण ताछ अरज[4] करी नै फेर अरज करी कै म्है राठोडा दिसा आप सू पैला अरज करी थी । कै सरवथा लडसी नही[5], इण तरै लारली वाता सरब मिळी है[6] तौ आही वात मिळ जासी । आप ताकीद सू जोधपुर पधारीजै । सो रायचंद दीवाण अरज करी थी सो सवाईसिंघजी मजूर हूण दी नही ।

तरै माहाराज जगतसिंघजी सवाईसिंघजी नू कह्यो ठाकुरा ठीक छै थे तौ हैदराबादी वगेरै लोक लेनै आगै नै जोधपुर सामो कूच करो[7] अर लार

---

१. ख परबारा । २ ख आप पेली जोधपुर पधारो अर धोकलसिंघ भीवसिंघोत नु जोधपुर रै गढ चढाय राज दिरावो सो मारवाड 2 पाती री मे तो आपरा तेज परताप सू अमल होय गयो है फगत जोधपुर रै गढ महाराज मानसिंहजी आडा दरवाजा जड़ सी आप फौज ले पदारसो जद जोधपुर सू जनाना ले जालोर परा जासी ।

---

1 अपनी बात अच्छी निभ गई है । 2 रानियें आदि । 3 सभी रजवाडो मे आपका बड़ा नाम होगा । 4 इस के उपरान्त । 5. राठौड कभी भी अपने खिलाफ़ लड़ेंगे नही । 6 सभी बातें सच्ची होती रही है । 7 जोधपुर की ओर हमारे से आगे प्रस्थान करो ।

का लार[1] दर कूचा म्हे भी आवा छा। जद अणाई सायत[2] सवाईसिंघजी सांवठी[3] फौज ले कूच कीयौ सो मेरतै पीपाड होय जोधपुर आया। आग मारग मैं गाव लूटता बाळता आया नै मोटा गाव था तिणा मे पागती रा गावा री आसामीया भेळी हुई। जिण गावा मैं रुपिआ ठैर-ठैर जामदारीया बैठती गई।[4] नै मुलक घणा गांव खराब कीया। जोधपुर समत १८६३ रा चैत वद ७ मानम. मील सातम रै दिन[5] सवाईसिंघजी आय घेरौ दीयौ। मंडोवर रै आस पास डेरौ कीयौ नै लारा सू माहाराज जगतसिंघजी सुरतसिंघजी वगैरे राजा राव सिरदार सावठी फौज सु भखरी, रीया, काळू, वळूदे रे मारग होय मुलक लूटता जोधपुर चैतसुद १ " " 'आया।

म्हैर दोळा[6] मोरचा सवाईसिंघजी पिंडा[7] सार्थ फिर-फिर नै दिराया। फौज मे तीन लाख लोग री अफवा थी।२

सिंघवी जोरावरमल रा बेटा जीतमल सुरजमल कैद मे हा सो हजूर पिंडा सलेमगढ मे पधार वारै काढीया। दिवाणगी दीवी नै फुरमायौ कै चाकरी रो वखत है सो किसीक बदगी करौ हो। सुरजमल जीतमल दिन ७ मान म्हैर मे लडीया। पछै सवाईसिंवजी सु विसटाळो कर[8] बारली फौज मैं परा गया। वाय भाई सिंभूदान नै छोडीयौ थौ सोई बारली फौज मे परौ गयौ। तरै हजूर विचारीयौ कै जोरावरमलोत तो जाळोर सू हो भीवसिंधजी कनै उरा आया था नै भीवराजोता रौ घर तीन पीढी सु सामधर्मी[9] चाकर है सो इणा नै वारै कांढा तौ ठीक है।

सिंघवी इन्द्रराज तथा भंडारी गगाराम को कैद से निकालना

तरै सिंघवी इदरराजजी भंडारी गगारांमजी सलेम कोट मे था,

१ ग चैत-सुद ७।
२ ख गाव विगड गया। रैत री कोई धणी नही। पराया राज री फौजा सु फिकर किणी नू नही, इण तरै री अधरा तफरी मारवाड मे हुई। 20-25 कोस ताई फौजा री कही रा घोडा चारो तरफ चढै सो लूट खोस धकै आवै ज्यू कर लेवै।

1 पीछे के पीछे। 2 उसी समय। 3 बडी। 4 रुपये भरवाने की जमानतें पक्की होती गई। 5 शीतला पर्व के दिन। 6 चारो तरफ। 7, स्वय। 8 बातचीत करके। 9 स्वामी-धर्म का निर्वाह करने वाले।

जिणा नै श्री हजुर केवायो[1] कै म्है थाने लैण नै ... । तरै इणा अरज कराई कै आप अठे पधारसो तो म्है बारे आवाला नही नै म्हानै छोडाईजै[1] भो म्हारा स्वामी[2] सो वदगी करसा । नै दोढीदार नथकरण नू विना मुदे[3] कैद कीयौ है सो छोडाईजै । तरै इदरराज गगारांम नथकरण नू कैद माहसू बारै काढीया । इदरराजजी गगारामजी सेखावता रा वचन ले सवाईसिघजी सू कागे[4] जाय मिळिया । वात कीवी, सौ सवाईसिघजी जोर मैं आयोडा था सौ करडा जबाब[5] कया कै थे म्हा विना जाळोर सू राजा नै लाया सो थे केडोक सुख-पायौ ? रिडमला रा थापिया राजा हूवै है ।[6] माहाजना रा थापिया राजा नही हूवै । मानसिघजी नै केवौ सो जाळोर परा जावै । जोधपुर मे राज भीवसिघजी रो वेटौ करसी नै म्है तो ईतरा कवाडा[7] थारै वासते कीया है जैपुर रै राजा रा रुपिया बाईस लाख खरच पडीया है तरै थे कैद सू छूटा हो । तरै इदरराजजी गगारामजी कयौ कै गढ तो माहाराज श्री मानसिघजी छोडै नही नै सेहर तौ म्है थानू सू पाय देसा ।[8] नै आसोप, नीबाज कुचामण वगेरै सिरदार माय है जिका नै म्हाने म्है कहा जठा ताई म्हानू पोछाय देण रौ वचन सेखावता रा दिराय देवौ । तरै सवाईसिघजी कयौ-ठीक है । पछै इदरराज गगाराम पाछा हजूर मैं आय अरज करी कै सेहर तौ सभै नही[9] सो लू टीज जासी सो सेहर तौ वारला नू सू प देवा नै लडायतो लोक[10] किला मे रखाईजै नै राजलोका[11] नै जाळोर नही मेलाईजै । जोधपुर रौ गढ जाळोर ज्यू ही मजवूत छै । सो आप तौ किला मे लडौ नै म्है बारै जावा सो घेरो उठावण रौ उपाव करसा ।[12] तरै श्री हजूर फुरमायौ कै थारै तुलै ज्यू करौ[13] तरै इदरराजजी आपरा वेटा

---

१ स किसी सबब सू इकतरफी सुण थानू कैद किया जिण मिती सू म्हारा जीव नै पण सुख रह्यौ नही । थामे फोडा पडिया जिणरो थे और तरै समझो मती । जाळोर थका हिमत बादरी कर कांम थे दोनू जणा कर इण गढ थे चढीया था ज्यूं ही फेर हिमत बादरी तजवीज करै । म्हानू था दोनूं जणां रौ पक्कौ इतबार छै । सो किही फुरमावण ज्यू नही .... इण ताछ हद सू ज्यादे खातर दिलासी इन्दरराज गगाराम सू हजूर कीवी थी ।

---

1 हमे मुक्त कीजिये । 2 जैसी हमारे से बन पडेगी । 3 विना किसी कारण के । 4 जोधपुर और मडोर के बीच एक स्थान । 5. कटु उत्तर दिया । 6 राव रिडमलजी (जोधा के पिता) के वश जो के स्थापित किये हुये राजा होते हैं । 7 झझट, अटकलबाजी । 8 शहर तुम्हारे कब्जे मे करवा देंगे । 9 हिफाजत नही की जा सकती । 10 लडने वाले लोग । 11 राज परिवार । 12 घेरा उठाने का उपाय करेंगे । 13 तुम्हे ठीक लगे वैसे करो ।

फतैराजजी नै भडारी गगाराम ग्रापरा बेटा भांनीरांम नै तौ गढ मैं राखीया नै इदरराज गगाराम तळेटी ग्राया ।[1] सु चैत सुद नु सहर वारला नु सूंप दीयौ नै इदरराजजी गगारामजी नै ग्रासोप केसरीसिवजी नै ग्राऊवै बखतावरसिंघजो नीवाज सुरताणसिंघजी कुचामण सिवनाथसिंघजी, बूडसू परतापसिंघजो लाम्बीया भानसिंघजी नै राज रौ रसालो नै भडारी चुतरभुज ऊपादीयौ रामदास वगैरै छोटा मोटा चाकरा नै ले सेखावता रा वचन सु सिंघवी इदरराजजी भोवराजोत वारै डेरा कीया । नै सेहर मैं ग्राण दुवाई धोकलसिंघजो री फिरी । तु वर मदनसिंघ कोटवाळ ग्रायौ ।

गढ मे इतरा जणा हाजर, तिणां री विगत-[१]

१ करणोत ठाकुर इंदरकरणजी गाव समदडी वाळा रौ मौरचो चावडा माताजी रै थांन ।

१ जसोल रौ ठाकुर महेचो जसूतसिंघ डेरौ नगारखाना नीचली साळ मे ।

२ महेचो मोहकमसिंघ पेमसिंघ दोनू भाई गाव सेरडा रा ठाकुर रा काका ।

१ मेडतीयो रतनसिंघ पहाडसिंघोत कुचामण रा भायपा मे सो हाजर ।

१ भाटी उरजनोत खेजडलो तथा साथीण वगेरे मौरचो फतैपोळ ।

१ ग्राहोर रा ठाकुर ग्रनाडसिंघजी राजसिंघोत ।

१ दासपा रा ठाकुर उदैराजजी[२] ।

१ भेसवाडा रा चापावत ।

२ जोधौ विजैसिंघ ग्रनाडसिंघ ग्रै दोनू भाई गाव साई रा ।

१ जैतावत सालमसिंघ गाव खोखरा रो मौरचो राणीसर नै रुपीया ७००[3] सातसौ निजर कीया ।

२ ग्रायस देवनाथजी, रु रतननाथजी ।

---

१. ख गढ मे ग्रादमी 5000 ग्रामरै तिणारा भी ख्या जुदा-जुदा ।
२ ग उदैसिंघजी । ३ ग रु 800)

---

1 किले से नीचे ग्राये ।

मुतसदी—

२ व्यास चुतरभुज, लोढो किलाणमल गढ मे हा जिणा नू वारै मेलीया ।

१ मोहोणोत ग्यानमल सुरतरामोत पिंडांगढ मे नै टावर भादराजण ।

१ मुहतो अखैचद ने साळो मोतीचंद हुकमचदोत ।

१ मोहोणोत जीतमल ।

३ मुहतो सवाईराम साहबचद, परतापमल कबीला सुधा[1] गढ मे डेरौ लखणा पोळ ।

२ मुहतो सुरजमल जीतमल दोनू भाई डेरौ फतैपोळ ।

१ चडवाणी जोसी सिंभूदत सिवकिसनोत ।

१ राजगुर प्रोहित गुमानसिंघ धाधजा री जायगा मे डेरौ ।

१ प्रोहित वालचद कबीलां सुधो ।[2] सौ खासो रसोवडो हाथ सूं करतौ ।

२ प्रोहित सालगराम बोड़ो सवाईराम ।

१ मोणोत जालमसेण[१] ।

४ पचोळी काळूराम नै दूजौ फैर काळूराम, अखेचद मुहता रौ कामैती[3] ।

१ छागाणी कचरदास हीरालाल रौ ।

३ छागाणी सिवदत्त, गोरधन, सनैही औ तीनू सगा भाई ।

१ भडारी बागमल सिवचदोत दीपावत

१ मुंहतो अमरचद गुमानचदोत पीपाड रौ ।

१ लोढो चैनमल तौ गढ मे नै भाई किलाणमल कनै ।

---

१ ग जालमसिंघ ।

---

1. परिवार सहित, 2. विशिष्ट लोगों के लिये भोजन अपने हाथ से बनाता था। 3 कामदार, कार्यकर्त्ता ।

१ व्यास नवलराय विदियावर रौ सो श्री ग्रातमारांमजी री सेवा तालकै ।[1]

३ पचोळी इदरभाण, मुसरफ गाढमल, मगनीरांम, जुमलै जणा तीन ।

१ मूतो तखतमल भाटी सगतीदान री कांमेती ।

२ ग्राद वगसी वोरो रामनाथ नै व्यास सरूपरांम जुमलै दोय ।

२ मोणोत प्रेमचद व्यास सिरदारमल ।

१ पारख भगवानदास पाली रौ ।

१ मुनसी पचोळी जीतमल साभर रौ ।

२ वेद मूतो जैचद भाई सेवो पालणपुर रा सो मीरखां कनै हुकम सूं जुमलै दोय ।

इतरा जणा पछै ग्रायां, विगत—

१ दोढीदार परिणयो सिरीराम मास अेक पछै ग्रायौ ।

२ छांगाणी सिवलाल जोधराज पनालालोत । पनालाल गीगोली काम ग्रायौ।[2]

१ भडारी सिरीरांम भवानीरामोत दीपावत कवीला सुधौ ।

२ भडारी हिंदूमल, सुराणो जेठमल दिन २० वीस पछै ।

२ सुराणो फतैमल, मोहोणोत कैंसरीचद दिन १५ पनरैं पछै ।

इतरा जणां गढ[१] मे ग्रटकीयोड़ा हाजर—

१ सिघवी ग्यानमल फतैचदोत । घेरा पछै छूटौ ।

२ भडारी सिवचद नै वेटो ग्रगरचद ।

२ सिघवी फतैराज, भडारी भानीराम । अै इदरराजजी गगाराम रा वेटा सो इदरराज गगाराम नू काम रै मुदै तळेटी ऊतारीया

१ ग पाट ।

1 महाराज विजयसिंहजी के गुरु ग्रात्मारामजी की समाधी की सेवा के लिये नियुक्त । 2 गीगोली की घाटी मे युद्ध हुग्रा था, वहा काम ग्राया ।

तरै ईणां नू गढ में चापावत अनाडसिंघजी कनै राखीया ।

१ धाय भाई रामकिसन भीवसिंघजी रा चाकर ।

—

६

खवास पासवांन—

१ देवराजोत नथराज पदमावत ।

२ भाटी मगराज, गेहलोत फतो ।

४ खीची चैनो, वनो, सेरो, भीवो, हरीदास रा बेटा ।

६ धाधल उदैराम, वभुतदास, भानो, सेरजो छाजो, सुखो, रुगो, गांव साळवा वगेरै रा ।

२ सोडसरुप, रतनो, अे भारमलोत ।

३ दरजी चेलो, नानग, मोतीराम ।

२ अगोळीयो मयाराम, हेमो, जाळोर रा ।

१ पडीयार जालो[1] सिभू भैरुदासोत ।

४ माहाराज श्री गुमानसिंघजी रा चाकर

३ सोलखी मुकनो, पेमो, मासीग, रूपं रा वेटा ।

१ नै रूपा री माजी बाईजी री धाय[1] ।

—

४

परदेसी—

२ अतीता में[2] सभूभारथी, खेमभारथी, मह्न नै मुड़रता ।

१ जमादार हीदालखा कनै आदमी ।

१ जीवणसैख कनै आदमी ।

१ पठाण मेमदखा, पठांण सतारखा ।

२ सेख अेवजअली, मीर मोसद अली ।

---

१ ग मूळो ।

---

1 राजकुमारी की धाय । 2 सन्यासियों में से ।

२ पुरबीयो भवानीसिंघ, नेरोदासिंघ ।
३ पुरबीयो मानवातासिंघ, पुरबीयो गिरवरसिंघ ।
४ पुरबीयो रतनरांम, पुरबीयो रामगुलाम पठाण गुलांमीखां ।

जोधपुर रा घेरा मे चारण हा जिणां रा नांव—

१ बणसूर जुगतो गाव कोटड़ा रौ ।
१ सांदू पीथो गांव भदोरा रौ तिण नु गांव चीमराणी १ नै खेडो १ इनायत कीयौ ।
१ मादू हरसीग गगावत मिरगसर रौ तिण नै गांव खरूकड़ो[1] नै पातावो इनायत कीयौ ।
१ बारट भैरौ गाव रोदाडा[2] रौ तिण नै गांव वाडीयावास नै नीबोल रौ वास इनायत कीयौ ।
२ बारट सेरौ गाव खारी रौ नै बारट ऊमौ, गाव मोरटऊका रौ, तिण नै गांव आंनावस इनायत कीयौ ।
१ बारट दानौ गाव आंकणदा[3] रौ, तिण नै गाव डकडाणी री तीजी हैस रा खेत[1] नै रुपिया १००) री वरसोंद हुई[2] ।
१ रतनू ईदो गाव विणजीया रौ तिण नै गाव वासणी इनायन हुवो ।
१ रतनू कुसलौ चापासणी रौ ।
१ रतनू मेघौ गाव सीरवा रौ ।
१ रतनू माहाराम गाव घड़ोई रौ, तिण नै गाव कटारड़ौ इनायत ।
१ आसीयो पनौ गांव भाडियावस रौ, तिण नै गाव चिडाणी रौ आध[3] इनायत हुवो ।
१ खिडियो नगो गांव जूसरी रौ, तिण नै गाव मेडास इनायत हुवौ ।
१ लालस नवलौ गाव जुडियै रौ, तिण नै गांव नेरवौ इनायत हुवौ ।

१ ग वडूकड़ो । २ ग रोदावा । ३ ग ओकणती ।

1 तीसरे हिस्से की जमीन । 2 प्रति वर्ष 100) रुपये दिये जाते । 3 आधा हिस्सा ।

१ खिडियौ केसरो गांव कावलीया री, निण नै गांव ढाढारीयौ इनायत हुवौ ।

१ बारट सोबी गाव खारी रौ ।

१ ....शोपाळो .... ।

माहाराज श्री मानसिघजी रै फुरमायोड़ौ गीत खुडद सागर कौ दुहौ-अर्थ गीत —

ठौड ठौड़ अत्र ठेहरिया, भड़ श्रपिया कै छोड़ ।
बालो लाज तजे के बहिया, सतरै जद रहिया सुकब ॥१॥

बारली फौज मे तीन लाख लोक सी, मडोवर बालसमद चैनपुरे सैहर रै चौफेर डेरा । नित कहिग्रां चढै । मुलक लुटै सवाईसिघजी रौ डेरौ कागे । सोगोरीया री भाखरी ऊपर बीकानेर री मोरचौ । नै ग्रोवण कुड रै मिंदर ऊपर ब्रह्मपुरी मैं ग्रासोप री हवेली मे वगेरै गढ रै च्यारू तरफ मोरचा लगाया । नित झगडा हुवै । सिघवी जीतमल सुरजमल अै बारै परा गया था सो सवाई-सिघजी कनै दिन ७ सात[1] दिवाणगी रौ काम कीयौ । नागौर मे इणा रो टाबर कबीला रोकीयोड़ा था[1] जिणा नू छुडाय सुरजमलजी तौ नास गयौ[2] नै जीतमलजी पकडीज गयौ । बीकानेर री फौज मे कैद रयौ । पछै परदेसीया नू सूक दे[3] नीसरीया सो जेतावता रा गुडा गयौ सवाईसिघजी कनै सिघवी चैन-करण दीवाणगी लीवी, सिघवी सिभूमल पिण सवाईसिघजी सू आय मिळीयौ । धाधल, खीची, पडियार, अगोन्यिा, ग्रबदारी वगेरै कितराक छोटा मोटा चाकर माहाराज भीवसिघजी रा सवाईसिघजी सू आय मिळिया । श्री हजूर सु सवाईसिघजी रै नै रास ठाकुर जवानसिघजी रै नावे खास रुका मेलीया था— थारा घराणा सामी दिष्ट दीजौ ।[4]

इदरराजजी कयौ नागौर थां नीचै है ईज नै फ़ेर थे कहौ जिकै परगना धौकलसिघजी नै देवा । तरै सवाईसिघजी कह्यौ कै जोधपुर छोड जाळोर परा जावौ नै रुपिया बाईस लाख जैपुर रा राजा रा खरच पडिया है गो देवौ । इण ताछ जोर री वाता कीवी नै परपूठ सवाईसिघजी इसा आखर कया[5] कै धोला मुहडा रा[6] छौरा भेळा हुवा है सो ताडो लूट लेसा नै इदरराजजो गगारामजी नू पकड लेसू । सो अै आखर इदरराजजी सुणिया नै सिरदारां पिण

१ ग दिन 10 ।

1 नजर बद थे । 2 भाग गया । 3 रिश्वत देकर । 4 तुम्हारे घराने के गौरव की तरफ दृष्टि देना । 5 ऐसे शब्द कहे । 6 ओज-हीन चेहरे वाले, कम अनुभव वाले ।

सुणिदा। तरै खेतडी झूंझणु वगेरै सेखावता रा वचन हा सु सेखावता नु कह्यो थारा घोडा साथे दे म्हानु नीवाज ताई पोछाय दो।

इन्द्रराज का जोधपुर से नीवाज की ओर प्रस्थान करना—

सो कुचामण, आऊवो, आसोप, नीवाज वगेरै सिरदार नै इदरराजजी र गारामजी सेखावता रा घोडा लै जोधपुर सूं नीवाज गया ने नीवाज मू वावरै गया। डेरा किया। ऊठा सू लोढो किलाणमलजी नूं तौ पटैल दौलतरावजी व नै मेलीयो कै थे म्हारी खिरणी रा मालक हौ मो थारी चढी खिरणी तौ म्हे देसा। थै आवौ नै मीरखा रै सवाईसिघजी सू खरची बावत झौड हुय गयौ[1] तरै तगादौ कर चढ गयौ तरै इदरराजजी भडारी पिरथीराज नै मीरखा कनै ऊकील मेलीयौ अर वात बाधी[2] कै खरची म्हे थानै घणी देसा थे म्हारे सांमल रहौ। जरै नवाद मीरखा कही अछा, पिण हमारी फौज मे हाल खरची की तगाई है सो कुछ तौ पैली लाग्रौ। सो इदरराजजी कनै रोकड रुपिआ नही तरै वळूदा रा ठाकुर सिवसिघजी सवाईसिघजी सामल थौ नै वळूदा मे पाखती रा गावा री आसामीया घणी भेळी हुई थी सो इदरराजजी फौज ले जाय वळूदा कना सूं रुपीया तीस हजार भराय¹ मीरखा नू दीया² पछै मीरखा नै भडारी पीरथीराज फौज ले ढूढाड री तरफ गया। नै ढुढाड रो मुलक लूटणौ सरू कीयौ। भडारी चुतरभुज, ऊपादीयौ रामवगस नै बूडसू री ठाकुर परतापसिघ अै सारा वडू आया। चोरासी रा सिरदार सारा भयो, गेडो, सरनावड़ौ वडू वगैरै फौज भेळी कर परवतसर डीडवांणा मे पाछौ श्री हजूर रो अमल कर लीयौ (वावरै वैठा वैठा इदरराजजी ने तराक सिरदारा नै फेर फाटीया नै खरची पिण सिरदारा कनासू मगाई।

गढ पर बाहर वालो के हमले

जैपुर रै रायचद³ दीवांण खरची मेलणी वद करदी नै माहाराज जगतसिघजी नू अरजी लिखी फौज नू खरचो सवाईसिघजी देसी सो जैपुर री

१ ग तकड मार कर (अधिक)। २ ख रकत मे लिखा है कि मीरखा नै सरदारो को उल्हाना दिया कि तुम लोग केवल अपनी गरज के समय हमारे से दोस्ती करते हो फिर भूल जाते हो तब सरदारो ने कसम खाई और मीरखा को अपनी ओर मिलाया (२४-A)। ३ खरची देणी वद कर दी (अधिक)।

1 बोल-चाल हो गई। 2 निश्चय किया।

फौज खरची बिना नित बिखरती जावै । दौलतपुरै सीकर रा सेखावत राव लिछमणसिंघ आय गढ रै घेरो दीयो ने माह पडियार अमरदास नै लाड—खानीया कत।र फाड सेमान कर वड गया । महीना दोय लडिया पछै सीकर वाळा फीटा पड[1] पाछा परा गया ।

ईतरी जायगा श्री हजूर रौ अमल रयौ[2]—जोधपुर गढ मे जाळोर, सिवाणौ गढ मे तौ अमल श्री हजूर रौ रयौ नै सिवाणा खास मे भडारी धीरजं-मल अमल कीयौ । दौलतपुरौ, घाणेराव, वाहाली[3], सिव ऊमरकोट वगेरै मे गढा मे तौ अमल माहाराज मानसिघजी रौ रयौ नै परगना मे सवाईसिंघ री फौजा रा तु गा[4] मेल दीया सो सारी जायगा तैसील लीवी ।[5]

गोपालदास पंचोली द्वारा शहर की जनता की सुरक्षा का उपाय—

जोधपुर सैहर लुटीज जावतौ पिण पचोळी गोपाळदास फतैपोळ जाय मालम कराई कै मरजी हूवै तो वदगी मे हूँ, गढ मे आऊ । जद हजूर सू दाऊदखा हस्तै फुरमायौ के तू बारे हीज रेहै चाकरी कर देखावसी तौ आफी[6] मालम पड जावसी । तरै गोपाळदास सवाईसिंघजी सू वात कीवी कै सेहर क्यू खराब करावौ हौ सु वाजवी पईसो हूँ पैदास कर देसू [7] सैहर री कोटवाळी हाकमी, सायर, सवाईसिघजी गोपाळदासजी तालकै कर दीवी । सो गोपाळ—दास बारली फौज वाळा री अजाजीनी[8] हूण दीनी नही सैहर री रईयत री प्रतपाळ राखी[9] और गढ मे पिण सैमान सारू घिरत वगेरे जोईजतो[10] सो मेलतौ नै रौकड रुपिआ पिण सैहेर माहसु ऊगाय नै मेलीया तिण सू गोपाळदास पचोळी री श्री हजूर वदगी जाणी ।

समत १८६४ लागौ, मेह सावण मे मोकळा हुवा । पिण धगा रा गवब सू [11] मुलक सूनी नै लूटा-खोसी[12] तिण सू खेतीया हुई नही । धान रुपिया अेक १) री पकौ पनरै-सेर विकतौ ।

बारली फौज वाळा फतैपोळ री सफील रै सुरग खोदी । तिण री खबर गढ मे पड गई । सो तेल ऊनौ कर नै[13] बारला ऊपर डेहरा भर-भर ऊपर सु नाखीयो

---

1 अपमानित होकर । 2 उस समय अधिकार था । 3 बाली । 4 टुकडियें । 5 रकम उगाही । 6 अपने आप । 7 वाजिब रकम पैदा करके मैं आपको दे दूगा । 8 अत्याचार । 9 सुरक्षा को कायम रखा । 10 आवश्यकता होती । 11 झगडे के कारण । 12 लूट खसोट । 13 तेल गरम करके ।

मो कितराक नी तेल सू बळ मर गया। नै बाकी रा नाम गया। फतेंपोल नैजडला रा भाटीया री डेरी थी सो इणा तरवारा म्याना बारै ले बारै निकळ गया। झगडौ कीयौ। नै राणीसर रा भुरज कानी पिण सुरग बारूंनी लगाई सो उठै न् पिण झगडौ हुवौ जठै तुवर बाहादरसिघ[१] काम आयौ। तिणारी छतरी राणीसर मे है। नै लखणा पोळ बारै रामोळाई मे जैपुर रा दादू पथियां मोरचौ घालियो थौ सो रातरा किले री बारी खोल नै जमोल ठाकुर जसूत-सिघजी वगेरै गया सो मोरचा उठाय दीया। जमू तसिघजो रौ परधान सांडो किरतसिघ काम आयौ। तिण री छतरी जैपोळ बारै छै। श्री हजूर रौ फुरमायोडौ कीरतसिघ रौ दूहौ—

> तन भडि तेगा तीख,[1] पौळ तणी मुख पोढियौ।
> किरतो नग कोडीक[2], जडियौ गढ जौवाण रै॥

नै फेर चवाण सामसिघजी राखी रा काम आयौ तिण री छतरी जैपोळ बारै है। इण तरै रौजीना झगडा हुवै।

ज्यान बत्तीसी तथा आंवा का सवाईसिह की तरफ होना—

लोढो किलाणमल दौलतरावजी कना सू फौज लायौ। आंवो नै ज्यान बत्तीसी फौज रा मालक था सो सवाईसिघजी, बगडी कैसरीसिघजी, बळूदे सिवसिघजी, पाली ग्यानसिघजी, चडावळ बगसीरामजी वगेरै सिरदार हजार दोय २००० फौज सू समत १८६४ सावण वद ११ आंवा अर ज्यान-बत्तीसी सामा चढिया। मेडता रै गाव देवरिये डेरा कीया नै इदरराजजी नै समाचार दीया कै ये आवौ, म्हा सू मिळौ सो बात बाधा[3] तरै इदरराजजी रा डेरा गाव कुडकी हुवा नै हाथीभाटे आवा ज्यानबत्तीसी रा डेरा हुवा। कुडकी देवरीया रै डेरा बात हुई। इदरराजजी कयौ—नागोर, डीडवाणो, कोलीयो, मेडतो, परबतसर, मारोठ, साभर, नांवौ अै तौ धोकळसिघजो नूं देणा नै जोधपुर, जाळोर, सोजत, जैतारण, सिवाणो, पचपदरो, पाली, देसूरी, सिव, उमरकोट, फळोदी अै माहाराज मानसिघजो रै राखणा नै जोधपुर वगेरे सारा राखौ। तरै सवाईसिघजी कह्यो नागोर वगेरे तौ माहाराज मानसिघजी रै राखौ नै जोधपुर वगेरे धौकळसिघजी रै राखो। दिन तीन चार ताई अडवी रही[4] जितरै सवाईसिघजी आंवा ज्यानबत्तीसी नूं फाट लीना। सो इणा

१ हजूर रा माळा (अधिक)।

1 तलवारों की तीखी धारों से। 2. करोड रुपये का; अमूल्य। 3 इन से बातचीत कर सुलह करें। 4 बात उलझी रही।

सवाईसिघजी सामल डेरा कर दीया । तरै सवाईसिघजी जोर मे आय गया नै इदरराजजी सु वात करणी मोकूब राखी[1] नै सिघवी चैनकरणनु कयौ कै ज्यानवत्तीसी नु लेनै सोझत जैतारण कानी जावौ । सो इणा तौ लाम्रीया, नीबाज, आउवा वगेरे ठिकाणा कना सु रुपीया तसील कीया ।

मीरखा को अपनी ओर मिलाने का इन्द्रराज का प्रयास सफल

सवाईसिघजी समत १८६४ रा सावण सुद ५ पाछा जोधपुर आया, घेरो घणौ तग कीयौ अर इदरराजजी कूच कर किसनगढ गया नै मीरखा कनै इदरराजजी री तरफ सु भडारी प्रिथीराज नै कुचामण रा ठाकुर सिवनाथसिघजी गया, नै रुपिया चार-पाच लाख रौ रुकौ मीरखा नू देण रौ रुको ठाकुरा सिवनाथसिघजी लिख दीयौ घराघरू ।[2] मीरखा नै कयौ कै सिवलाल बगसी जैपुर सू फोज ले नै जोधपुर नै विदा हुवौ छै जिण नै झगडो कर विगाड दिया सू[3] लाख अेक रुपिया थानै देणा नै बाकी रा ही म्हारै सामल रया सू भरती कर देणा, जिण वचन मै चूका तौ थाकै भेळो खाणौ खाय[4] मुसलमान हूय जावू । इण तरै रा पका वचन कुचामण रा ठाकुरा सिवनाथसिघजी नवाब मीरखा नू दीया । जोधपुर सू श्री माहाराजा साहबा जवाहर री रकमा मेली । सिरदारा पिण गैणा रोकड मेलीया ।[5] बळूदा रा ठाकुर सिरूसिघजी देवगीया रा डेरा खरची सारू रुपिया अेक हजार रोकडा दीया नै आपरी जमीयत रा घोडा इदरराजजी कनै राखीया । पछै गैणौ जवा[ह]र वैच अठी-उठी सू रकम भेळी कर रुपिया अेक लाख इदरराजजी मीरखाजी नू खरची रा मेलीया । कुचामण सिवनाथसिघजी वूडसु परतापसिघजी वगेरै फोज मावठी भेळी हुई ।[6] मीरखाजी नै सामल ले कूच कीयो[1] सो जैपुर रौ बगसी सिवलाल रा डेरा गाव फागी हुआ। था सो मीरखाजी सिवनाथसिघजी गाव फागी जाय वगसी सिवलाल सु झगडौ कीयौ । माहाराज री फतै हुई । सिवलाल भागौ नै सिवलाल रा डेरा असबाव मारा लूट लीना । फागो फतै हुई जिण रा कागद गाव वडो रौ चारण साईदान लाय गढ मे दीया था । सु

---

१ ख कूच जोधपुर सू कर डेरा वीसलपुर किया नै मजल री मंजल 25 हजार रुपिया सिघवी इन्दरराजजी गगाराम देणा किया सो उणा रा कामेती भडारी पिरथीराज वगेरे 20 थेली नगद सू प दीवी नै कह्यौ काल रा डेरा फेर 20-25 थेली कीये मुजब याने रोजीना दीया जासा ।

---

1 बात करना स्थगित कर दिया । 2 अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर । 3 उसे क्षति पहुचाने पर । 4 तुम्हारे शामिल भोजन करके । 5 गहने व रोकड रुपये भेज । 6 अच्छी सख्या मे फौज शामिल हो गई ।

घेरो खुलिया पछै उण चारण श्री हजूर नै दुहो सुणायो—

फागी जुद पाई फतै, लूंट लियो सिवलाल।
बे कागद म्है आणीया,[1] मान अभनमा माल[2] ॥

तरै इण वदगी मुं साईदान नै वरसोद[3] रुपिया १८०) अेक सौ चाळीस री प्रगने सोजत ऊपर कर दीवी।

श्री हजूर इण वदगी मु मीरखांजी नू खास रुको दीयो जिण मे नवाव भाई रौ ईलकाव लिखियो। नै सिरदारा नू नै ईदरराजजी नू खातरी रा खास रुका दीया जिण मे लिखीयो—थावरै, किसनगढ, फागी, चावरी मे हों जिणा री घेरा मे हाजर है जिणा मुं वदती[4] चाकरी मालम हुसी।

परवतसर, मारोठ, डीडवाणो मेडतीया वडू वगरां नै भंडारी चुतर-भुज ऊपादीयो रामदास छुडाय लीया था नै माहाराज श्री मानसिंघजी रौ अमल कर लीयो थो सो सवाईसिघजी दिखणी आवा ज्यानवक्तोसो नू फाडीया तरै परवतसर, मारोठ, डीडवाणो फेर छुडाय लीया था सो माहाराज रो फागी फतै हुई जरै परवतसर, मारोठ, डीडवाणो पाछा श्री माहाराज मानसिंघजी रौ अमल कर लीयो। वडू रा नै गोडाटी रा नै चौरासी भाडोद रा सिरदारां भडारी चुतरभुज ऊपादीयो रामदास रै सामल हुय वडू रा ठाकुर अजीतसिंघजी श्री दरवार रा घोडा पाळा ५०० पाच सौ भडारी चुतरभुज कनै था जिणा नै मास दोय २ ताई वडू राखीया, रोटीयां, घास, दाणो घर मु दीयो। परवतसर परगना रा सारा सामधरमी रया।[5] अेक जावला रो ठाकुर वाघसिंघ सवाई-सिंघजी कनै गयो थो।

मीरखां का ढूंढाड़ लूटते हुए जयपुर तक पहुंचना—

पछै सिवलाल री फौज विगाड नै मीरखाजी सिवनाथसिंघजी ढूंढाड रो मुलक लूंटता लूंटता गया सो जैपुर सु कोस तीन उणी तरफ गाव झूठ-वाडो जठै डेरा कीया। झूठवाडा रा वाग रा रूख सारा काट नाखीया। जैपुर रा दरवाजा जडीज गया[6]। भडारी पीरथीराज सिवनाथसिंघजी थेट जैपुर गया सो अेक दिन तोपा माड गोळा वाया,[7] पछै पाछा झूठवाडै

1 उस खबर का पत्र मैं गढ में लाया था। 2 राव मालदे का वंशज। 3 प्रति-वर्ष। 4 बढकर। 5 महाराजा की ओर रह कर स्वामी-धर्म का निर्वाह किया। 6 जयपुर शहरपनाह के दरवाजे बन्द हो गये। 7. तोपें लगाकर गोले लगाये।

डेरो आया । पछै झूठवाडै सुं कच पाछौ कीयौ नै किसनगढ सुं सिघवी इंदरराजजी आऊवा रा बखतावरसिघजी, आसोप केसरीसिंघजी, नीबाज सुरतांणसिंघजी, लाबीया भानीसिंघजी, सुमेल रा थानसिंघजी भाटी वगैरै इणा कूच कीयौ नै परबतसर कांनी सुं भंडारी चुतरभुज ऊपादीयो रामदान नै चौरासी रा मेडतीया बडू अजीतसिंघजी, बोरावड रा मगलसिंघजी, खालड रा मोकमसिंघजी, मनाणा रा जूंझारसिंघजी, तोसीणै रुगनाथसिंघजी, भईये हरदानसिंघजी, गेडे सुवसिंघजी, सरनावडे फतैसिंघजी वगैरै सारा गोयनदासोत नै ऊदावत कालीयाटडे परतापसिंघजी पीह रा बखतावरसिंघजी वगैरै फोज हजार पाच ५००० इदरराजजी सामल हुवा ।

मीरखांजी इदराजजी संवत १८६४ रा भादवा में अजमेरा रा गाव हरमाडै सांमल हुवा । कंटाळीया रा सिभूसिघजी, आलण्यावास रा भारतसिघजी मीरखांजी सामल भंडारी पिरथीराजजी साथे था । ववाळ रा ऊदावता नै गोयनदासोत मेडतीया जैपुर रा गाव घणा लूटीया । मीरखाजी इदरराजजी कने लोक सांवठो भेळौ हुवौ नै ढूंढाड री मुलक लूटीयौ । लुगाया सईकडां पकड पकड नै लावै[1] नै अदेले लुगाई वेचे[१],[2] लूट सुं मीरखाजी वगैरे सारी फोज मैं चदगी हुई । नै मीरखाजी सिघवीजी कनै खरचो मागी तरै इदरराजजी परबतसरवाटी रा मेडतीया नै कह्यौ कै रुपिया असी हजार[२] निजर करौ । तरै बडू रै साह चुतरभुज रुपिया अेक लाख रौ विराड घालीयौ ।[3] नै चडवाणी जोसी सिरीकिसन नै घडियो राजाराम अे छोटे दरजै थोडी पूंजी सुं अजमेरा मे वोपार करता था जिणा नै इदरराजजी खातर कर इणा नूं बोरा कीया । लाख रुपिया री साद सिरीकिसन राजाराम री मीरखाजी सु कराय नै परगना री तेहसील ऊपादीया रामदान कर नै सिरीकिसन राजाराम नूं भरती रुपिया री कर दीवी ।[4] ऊण दिन सु राजाराम सिरीकिसन री जमाव सरू हुवौ नै भाग वधियौ ।[5]

पछै जावला रा ठाकुर री गाव झालरा ऊपर फौज मेली, रुपीया २५०००) पचीस हजार लीया । मीरखाजी ईदरराजजी सावठी फौज सु जैपुर सामो कूच कीये री माहाराज जगतसिघजी नूं खबर लागी । तरै बीकानेर

१ ग घर रा धणी नै देय रुपिया लेवै ।
२ ग एक लाख ।

1 खूब औरतों को पकड पकड कर लाते हैं । 2 अकेले मे एक औरत को वेचते ।
3 एक लाख रुपये देने की जिम्मेदारी ली । 4 उनको रुपये वापिस दे दिये ।
5 इज्जत बढी, तकदीर बढी ।

माहाराज सुरतसिंघजी सवाईसिंघजी वगैरै सारां नू भेळा कीया, आमा-सांमा दोसा-वासा काढीया[१][1]।

समत १८६४ रा भादवा सुद १३ रात रा जैपुर रा राजा जगतसिंघजी जोधपुर सु वहीर हुवा। सवाईसिंघजी मोकळा वरजिया[2] पण रया नही। वीकानेर रा राजा सुरतसिंघजी पिण वहीर हुवा रातोरात सवाईसिंघजी वगेरे सारी फौज वहीर हुय गई।[२] हालीयो जितरौ तो असवाव ले गया वाकी असवाव डेरा वाळ गया[3]। माहाराज जगतसिंघजी सुरतसिंघजी भाज गयां रो[4] भादवा सुद १४ परभात रा मालम हुई। वड़ी खुसी हुई। तोपा री सिलका हुई। गढ सैर रा दरवाजा खुलिया।

श्री हजूर साथे पधार नै आयसजी देवनाथजी नूं महामिंदर पधराया,[5] सैहर रा माहाजनां लोका नै मुजरौ हुवौ। खातरी दिलासा फुरमाई। माहाजना अरज कीवी के हिंदू था जिण रा मुसलमान हुय जावता। लुगाया नू तुरक लेजावता सो गोपाळदास पचोळी रैत री आवरु राखी है। पछै गोपाळदास नू हवेली सू बुलाय पूरी खातरी फुरमाई।

माहाराज जगतसिंघजी जैपुर रौ मारग लीयौ। सुरतसिंघजी नागौर हुय वीकानेर गया। नै सवाईसिंघजी नागौर रया। मीरखाजी इदरराजजी नै खबर पौती तरै दर कूचा गाव पावे डेरा कीया। मारग मे जगतसिंघजी री फौज रा घोडा ऊंठ वहीर गोयनदासोत मेडतीया दोय तीन मुकामा ताई लूटिया[3]। जगतसिंघजी री फौज रा आदम्या रा नाक कान घणा रा काटीया। माहाराज जगतसिंघजी रा डेरा दातै रै गाव नोसल हुवा। इदरराजजी मीरखाजी रा डेरा गाव " हुवा। छेती थोडी हीज रही[6] जगतसिंघजी कनै फौज तो

---

१ ग नें कह्यौ सवाईसिंघजी री वाता नू म्हारो अठै आवणौ हुय गयौ। म्हाने रायचद अरज करी तिण नै वरजियां, मानी नहीं जिण सू म्हारो मुल्क ढूढाड खराव कर दियो हमे म्हे तो चढ जासा। तरै सवाईसिंहजी कह्यौ चढो मती सुस्तावो, इतरा दिन मे वीकलसिंह रौ काम तो सही हुवौ नही (अविक)। २. ग भाग गई।

३ ख ख्यात मे लिखा है कि मानसिंहजी ने इन्द्रराज व मीरखा को खास रुक्के शाबासी के लिखे जिनमे मीरखा को भाई कहकर सम्बोधित किया तथा फौज लेकर ढुढाड से कूच किया। हरमाडे डेरा किया। मीरखा को 2 लाख रुपये देने थे अत एक लाख रोकड दिये तया 1 लाख का जुरमाना परवतसरवाटी के मेडतियो पर इन्द्रराज ने डाला, तब शाह चतुरभुज के मारफत रुपये 90 हजार रोकड नवाव को दिलवाये। जावला ठाकुर वागसिंह सवाईसिंह की तरफ था उससे रुपये 2500) भराये। (पृ 31 B)

---

1 एक दूसरे मे दोषारोपण किया। 2 मना किया। 3 जला कर चले गये। 4 भाग गये उसकी 5. महामदिर मे विराजमान किया। 6 थोडी-सी दूरी रही।

सोवठी थी पिण कूच लंबा-लंबा कीया । तिण सूं लोक थाक नै हेरान हुय गया । नै इदरराजजी मीरखाजी नू कयौ-झगडो कर सा । सो अेक तु गो[1] हजार दसेक फौज रो थौ तिण सूं झगडौ कीयौ । श्री दरबार री फतै हुई । जैपुरीयां री फौज भाग छूटी । तरै जैपुर रै दीवाण रायचद रुपिया लाख अेक इदरराजजी नै दीया । नै माहाराज जगतसिंघजी नू कुसळे जैपुर दाखल कीया । अेक लाख रुपिया आया सो इदरराजजी प्रवारा मीरखाजी नूं खरची पेटै दीया ।

श्री हजूर इदरराजजी सु घणा मेरबान हुआ नै तारीफ फुरमाई । पोहोकरण सवाईसिंघजी चडावळ बगसीरामजी, पाली ग्यानसिंघजी, वगडी केसरीसिंघजी, हरसोळाव जाळमसिंघजी, खीवसर परतापसिंघजी, लवेरे रा भाटी उम्मेदसिंघजी, स खवाय वगेरै नै नागौर पटी रा सिरदार लाडणू दुगोली वगैरै नै जैतारण रौ गाव लोटोती वगैरै सारा सिरदार सवाईसिंघजी साथै नागौर गया ।

मीरखां तथा इंद्रराज का जोधपुर की ओर प्रस्थान तथा महाराजा द्वारा अपने पक्ष के जागीरदारों, चाकरो, आदि को पुरस्कृत करना—

नवाब मीरखाजी नै सिंघवी इदरराजजी जैपुर कानी था सो फौज ले जोधपुर आया । सिरदार पिडा साथे था श्री हजुर मे मुजरो हुवौ । खातरी फुरमाई कै थां जिसा उमराव नै इदरराजजी गगारामजी जेडा मुतसदी हुवै नै जोधपुर रौ घेरौ ऊठै । सो इण री तारीफ कठा ताई फुरमावा । मीरखाजी नै नवाब पदवी नै भाई पदवी नै बरोबर बैसण रौ कुरब हूवौ । नै गाव पादवा २ डागास पटै हुवा । नै खरची मे परगना नावौ वगरे दिया । मैंमदखा नै पिण

१ ख ख्यात मे उद्धृत गीत—

जगो जयपुर गयौ तिका वात सुणजो जरूर, हमैं वोह नारिया कीध हामी ।
उवारू जी उवारू रुपिया जी आप पर, पण उदैपुर परणिया सु कदे आमी ।।
असक दळ लेय चढ़गा छा अठा सू, वाजता छनीम घण वाजा ।
गया जिण डाण आया नही, राणावत तणो रथ कटै राजा ।।
क्रोड रा खजाना खाय खाली किया, पण उदमाद सुरग पीठी ।
देखावो राजा मोय सीसोदणी, देखावो कोउ घण नाय दीठी ।।
नाय आमेर नूं हुसैं अगा नैणीया, गायणिया मिळै गीत गाया ।
ढोळिया डोळिया ऊतरै दायजो, व्यात्र कियो जिमी वनी लाया ।।

1 एक टुकड़ी ।

नवाव पदवी हुई। दानाराम मुनसी मीरखांजी री नू गाव ...... "हुवौ नै लालौ लालसिंघ नै राजा वाहादुर पदवी दीवी। आऊवा रा ठाकुर वखनावर-सिंघजी नू परधानगी नै गाव चिरपटिया वधारा मे[1]। चिरपटिया रा फितूर सामल था[2] जिण मुदै गाव लोहावट भारण नै भाईपौ जिलौ आछी तरै ठाकुर रा कैणा मुजव लिख दीया। पिंडा ठाकुरा रै पटौ रेख ६२०००) वासट हजार री लिख दीवी। अर दीवाणगी सिंघवी इदरराजजी नै सिरपाव हूवौ। ऊठण रो कुरव हुवौ। पटौ तौ लियौ नही नै दरसोद रुपिया १२०००) वारै हजार री हुई नै दूहौ उण वखत वणाय ने श्री मुख सूं फुरमायौ—

पडतो घेरौ जोधपुर, आतां दळां असभ ॥
आभ डिगता ईदडा, थे दीधौ भुज थभ ॥१॥

औ दूहौ कै नै श्री हजुर फुरमायौ कै भीवराज सूं लेनै आजतांई थे सारा ही भाई साम धरमी सुं वदगी पोहता।[3] था सिवाय चाकर इण घर में कुण है? खातरी कर सारा मुलक रो मुकत्यारी रौ काम सूंप दीनौ[१]। नै सिंघवी वाहादरमल, भडारी पिरथीराज, मानमल, मोदी मूलचद, पचोळी अखैमल, वगैरै इदरराजजी रा कामेती तालकदारा नै सिरपाव गांव पटा आ जीवगा देनै सिरकारा वाद दीवी। वगसी सिंघवी मेगराज रै नावै दीवाणगी वगसी अेकण घर। मूतौ सुरजमल नै इदरराजजी दोनूं सांमल कांम करै।

आसोप केसरीसिंघजी नै गांव गजसिंघपुरौ वधारा मे दीयौ। गज-सिंघपुरा वाळा फितूर सामल गया तिण सुं ऊणा रौ पटौ सारौ आसोप वाळा नू लिख दीयौ। वडलू सादूळसिंघजी पैली तौ सवाईसिंघजी सांमल रयौ[4] पछै घेरा मे खरची मेली, तिण सु पटौ सावत रयौ। न चडावळ वगसीरामजी नागौर सवाईसिंघजी सामल रयौ नै विसनसिंघजी सीतग उठाय घर वेठो थौ कटारी खाय नै, तिण रै चडावळ सावत रही। नीवाज सुरताणसिंघजी ने वधारा मे गाव खवासपुरो नै वर वगेरै भाईपौ जिलौ लिख दीयौ। लावीया भानसिंघजी रै गाव कठमोर, दयालपुरो जोधा रा था सो लिखीजिया। नै कागेचो वळू दा रा नै वधारा मे हुवौ, भाईपौ जिलौ सुदो[5]। रास जवानसिंघजी

---

१ ख जोधपुर खास री कचेडी री हाकमी मूंता सुरजमल रा वेटा वुधमल रै नावै हुई। भडा रै खोळी दूजी घालीजी अर मैर मे अणदुवाई माराज श्री मानसिंघजी री फिरी।

---

1 आगे जो जागीर थी उसके विस्तार के रूप मे। 2. धौकलसिंह की तरफ थे।
3 स्वामी धर्म का निर्वाह करते हुए सेवा की। 4 सवाईसिंह की तरफ रहा।
5 ठाकुर के भाइयों आदि को भी उसमे अधिकार दिया।

फतिया था पिण पाछा लगाय लीया, पटो सावत रयौ। रायपुर उरजनसिंघजी सवाईसिंघजी कनै गया। पिण रुपिया ठेहराय पगै लगाय लीया। छीपियै अमरसिंघजी पिण सवाईसिंघजी सामल गया था। तिणा नू ही रुपिआ ठेहराय पगे लगाय लीया। रोहट इदरसिंघजी नू वधारा मे गाव खजवाणो दीयौ। भाईपो जिलो फैर सवाय मे लिख दीयौ। कटाळीयै सिभूसिंघजी नू वधारा मे गांव नीवली नै सेखावास लिख दीया। आहोर अनार्डसिंघजी नै गाव वीसलपुर, वीलावस, वेनावस, अटवडौ, खारीयो, सथलाणो, माडावास, लिख दीया। आलणियावास भारथसिंघजी नै वधारा मे फालकी, कौड[1] दीया। नै सिरोदीयो कुचामण सिवनाथसिंघजी नै नावा री कोडी वधारा मे दीवी। वरण गाव री ऊठातरी नै रैण वाव अदखर[1] कर दीवी। धणकोली नीवी भाइया रै लिखाई, भाईपो जिलौ लिखाय दीयौ। बूडसू परतापसिंघजी नू चादावत बाहादरसिंघ रौ गाव डाभरौ,[2] अलकपुरी वगेरै गाव सतरै लिख दीया। खेजडला रा भाटिया रै गाव धाकड़ी, कुरलाया भाईपो जिलौ कर पटौ रेख रुपिआ १०००००) अेक लाख री दीवी। भादराजण भवरी रै वधारौ घेरा मे वडु वोरावड रै आजवो नै नोसीणो रै टापरवाडौ भाईपो गेडो सरनावडा वगेरै री सारा री चाकरी भरीजी। किणी नै गाव किणी रै खेत बेरा दीया। किणा रै चेतलवी। सारा नू निवाजस जथाजोग[2] दरजै मुजब सारा नू राजी किया। जाळोरी रा दासपा वाकरा रा चापावत मडला वाला री सारा री खवर लीवी। जैडी चाकरी जैडी निवाजस दीवी। रुपावत वीकानेर वाळा सु मिळ फलोधी गमाई थी सु तो पाछी छुडाय लीवी नै रुपावता नू मुलक बारै काढ दीया। ने रूपावता रा गाव पातावता नै चाकरी सू लिख दीया।[3]

---

१ ग कोटडिया

२ ग डाभडो

३ ख पातावता की खाप आउ रा सरूपसिंघ वगेरै री चाकरी फलोधी मैं अमल रुपावतां वीकानेर वाळा रो कराय दियौ तौ सो झगडा मे आऊ रो ठाकर सरुपसिंघ काम आयो तिण बदगी मे सरुपसिंघ रा वेटा हरीसिंह नु वधारा मे रूपावता रा पटा रौ गाव भीयासर फलोधी परगने रो रु 5000) री उपज रो लिख दियौ सो हाल बहाल है अर दूजा काका बावा पातावता नु गाव मूजासर, मोरियो, चाखू चीभूणो वगेरे रूपावता रा जबत कर इणा नू लिख दिया अर रूपावत फितूर पथ मे पस गया था तरै रूपावतां रा गाव जवत कर पातावता नु लिख दीया नै रूपावता नै मुलक बारै काढ दीना सो बीकानेर मे पटौ तो मिलियो नही नै घर री खेतिया कर दिन काढिया। पछै सन् 1896 मे सिरदारा नु गाव दिरीजिया जद एक मूजासर वगेरे दिरीजिया। मूजासर बीकानेर रै राजविया रै पटै थौ सो मूजासर री एवज मे फलोधी रो गाव जाभो दियौ।

---

1 आघी। 2 यथायोग्य।

वळू दे सिवसिंघजी हरामखोरा मे था पिण रुपिया ठैहराय पाछा पगे लगाय लीया। कांणोचे विना बाकी पटौ लिख दीयौ। रीआ विडदसिंघजी हरामखोरा मे था तिणा रै रुपिया ठेहरीया नै गाव सरासणा, अरणोयाली विना वाकी रौ पटौ लिख दीयौ। सारा सिरदार वडा अर छोटा भोमीया वगैरे जोधपुर रा गढ मे संवत् १८६४ रा घेरा मे था तथा गाव बाहरै, फागी किसनगढ राज मे सामल था नै चाकरी पोहोता तिणा सारा नू आजीवका जथा-जोग आछी तरा सू कर दीवी। मुतसदी सिंघवी इदरराजजी नै मुहता सुरज-मलजी, साहबचदजी अखेचदजी, व्यास चतुरभुजजी, छागाणी कवरदासजी वगैरे सारा नू निवाजसां हुई पटा खिजमता सारा रै हुवा। मरजी चोखी रही खास पासवान दोढीदार नथकरण नै खीची चेनौ सोडसरूप नै भाटी गजसिंघ देवराजोत नथो वगेरे सारा री चाकरी भर दीवी। परदेसीया मै हीदालखां री लोग गोळ भरीजियौ सो काळू, भावी वगेरै पटौ लिख दीयौ। नै २५०० वाईस सौ आदमी घोड़ा राखीया[1]। गुलामीखा नू वीलाड़ो पटै लिख दीयौ। घोडा पाळा १००० अेक हजार। मैमदखा, जीवणसेख, अेवजअली, मोसमअली, पुरबीयौ गिरवरसिंघ वगेरै पलटणा री वगेरै लोक सारौ वधायौ। परता वधाई। इमत्याज कीया। अपसरा नु गांव पटा दीया। लालौ खूबचन्द गोळ में वधियौ। दाऊदखा नै नवायौ। हिमतराय लालौ तौ जीवण सेख रै ऊकील नै गुलामीखा रै ऊकील तुलाराम, मैमदखा रै ऊकील पचोळी वखतावरमल, अेवजअली रै ऊकील पचोळी इमरतराम सो इणा सारा नू आजीवका दीवी। परदेसी दस हजार चाकर १००००) सो रुपिया १२०००) बारै हजार जोधपुर री कचेडी सू महीना रा महीने दिरीजै। नै वाकी छटै सु दूजी जमी माह सूं दिरीजै। सो परवारा नवाव मीरखा नू दिरीजै।

जमा थोडी नै खरच घणौ तिण सु अडचल। सो सिंघवी इदर-राजजी विना दूजा सूं रस आवै नही[1] सिरदारा कनै रेख रुपीया १०००) अेक हजार लार रुपीया १३५)[२] अेक सौ पेंतीस नै दस रुपीया घर वाब घाली। नै फेर मीरखांजी रो विराड रेख रुपीया १०००) अैक हजार लार रुपीआ २००) दोय सौ वेमरजी रा ठिकाणां[2] कनै मुकरड लीना।[3] १०००००) लाख अेक[३] रुपीया पैदास कर परदेसीया नू दीया।

---

१ ग रसालदार कियौ (अधिक)। २ ग रुपिया 130)।
३ ख. लाख दो रुपिया।

---

1. अन्य किसी से व्यवस्था वैठे नहीं। 2. वे ठिकाने जिन पर कुछ नाराजगी थी।
3. एक साथ लिये।

इण मुजब मुतसद्दियां नूं खिजमता दीवी—

मैडतौ, साभर, नावौ लोढा किलाणमल तालकै । परबतसर उपादीया रामदान तालकै । जैतारण भडारी मानमल तालकै । सोजत इदरराजजी तालकै, सुखराजजी रै नावै । पाली चांपावत ग्यानसिंघ दाब लीवी थी, सो सिघवी सिभूमल नै मेल छुडाय लीवी । गोढवाड मुहतो साहवचद तालकै । जाळोर मुहता सुरजमल तालकै । सिवाणौ, पचपदरौ,[१] दौलतपुरो, डीडवाणो, इण तरै सारा नू भोळाया ।[1]

डाडी रा अजमेरा रा गावा मे थाणो रहतौ सो घेरा मे दिखणीया भिणाय केकडी ममुदो खरबो अजमेरा नीचै लिख दीया सौ पाछा छूटा नही । सुमेल रा गाव ९ नव रया सो मेडतै नीचै नाखीया । वगडी खालसै सो पचोळी गोपाळदास तालकै हुई । पाली हरसोळाव वगेरै सिरदार नागौर था जिणा रा पटा जवत हुवा । सो आवता गया तिणां नू रुपिया ठेहराय ठेहराय पटा लिख दीया ।

आयसजी देवनाथजी रा भाई भतीजा रै-मोकळौ[2] पटो हुवौ । भाव वधियो[3] नै सोमवार री सोमवार असवारी माहामिदर पधारै । आयसजी री अग्या मजूर ठेहरी । इदरराजजी रै नै आयसजी रै मेळ । आयसजी चवडै तौ काम मे भिळै नही नै इदरराजजी काम अग्या मुजब करै ।[२]

मीरखा की सहायता से सवाईसिह को मरवाने का षड्यंत्र

पछै श्री हजूर रै नै मीरखाजी रै अेकंत सला हुई । हजूर फुरमायो-नवाब थे म्हारो राज वणियौ राख दीयौ तिण री तारीफ कठा ताई करा पिण सवाईसिघ म्हानू इतरा फौडा घालीया[4] सो इण रौ वदळौ किण तरै आवै । जद नवाब कह्यौ कै आपकी मरजी है तो सवाईसिघ का सिर गिणिया दिना मे हाजर कर दू गा । पिण फरेब नै दगा बिना वो सखम नही मरेगा । जद हजूर फुरमायौ—चावै ज्यू करौ पिण इण हरामखोर नू सभा दिया विना म्है सुख

१ ख भडारी गगाराम तालकै (अधिक) । २. ख पछै श्री हजूर 1864 रा काती सुद पूनम नू श्री हजूर मीरखा नू याद कियौ । नवाव गढ ऊपर आयौ । मोतीमहल मे पोर एक ताइ रह्या ।

1 सब की व्यवस्था सौंप दी । 2 काफी वडा । 3 आस्था बढी । 4 इतना कष्ट पहुंचाया ।

सू राज कर सका नही म्हानू इण घणा फोडा घालीया है। सो थांसू वात छानी नही। जद नवाव कह्यौ अब खरची बाबत तगादी करूं गा आप हमकूं मनाईजो अर म्हे मनू गा नही जद सवाईसिंघ हम से वात वणावेगा। जब म्हैं आपके मुलक का नुकसाण करूं गा। जद सवाईसिंघ हमसे वीज जावेगा।[1] जद सब काम आप का सही हो जायगा। तरै आप फुरमायौ हर ऊपाव करौ पिण औ काम हुवा सू म्हांनू राज करण रौ सुख आवसी। जद मीरखाजी कयौ—म्हैं जोधपुर आय घेरौ लगाऊ नै गोळा लगाऊ जठा तक आप अदेसा लाईजो मती।[2] इण ताछ श्री हजूर नै मीरखाजी रै इकत[3] सला हुई जिण री खबर किणी नू पडण दीनी नही।

पछै समत १८६४ रा पोस तथा माह मे मीरखा खरची रौ तगादौ कीयौ। तरे इदरराजजी कह्यो कै तोड काढ खरची दे देसा, पिण मानी नही। तरै श्री हजूर पिंडा असवारी कर नवाव रै डेरै पधारिया। पिण नवाव तौ अेक ही वात मानी नही नै छाडाणो कर जोधपुर सू कूचकर मुलक विगाडणौ सरू कीयौ। पचोळी अनोपराम, उपादीया रामदान नवाव कनै ऊकील फौज में मेलीया विसटाळा मोकळा कीया[4]। पिण मानें नही नै मुंहढा माह सूं हळकौ वोलै। सो आ वात सवाईसिंघजी सुणी तरै नागौर मैं कुसी[5] कीवी[7]।

सवाईसिंघजी नागौर मे राज तौ धोकळसिंघजी कना सूं करावै नै दीवाणगी सिंघजी चैनकरण कनै कराई। हाकमी पचोळी अखैमल कनै करावै। सवाईसिंघजी नवाव मीरखा कनै भला आदमी मेलीया नै केवायौ कै थे म्हारै सामल आवौ, थारी खरची म्हैं चुकाय देसां, म्हारी मदत करौ नै धरम-करम पका कर लैवौ[6]। तरै नवाव हाकारो भर लीयौ[7] नै उठासु कुच कर डेरा गाव मूंडवे कीया। तरै सवाईसिंघजी केवायौ कै डेरा जोधपुर सामा करौ। तरै नवाव केवायो कै अेक दफै ठाकुरसाव सै मुलाकात करेंगे। खरची की पकावट हमकू आजावेगी पीछे ठाकुरसाव कहेंगे ज्यू करेंगे।

---

१ ख इन्दरराज वगेरै मुसदिया नूं लारै रा लारै मेलिया कै नवाव नु मनाया पाछा लावौ। औ गया पण नवाव एक ही वात मानी नही अर केई तरै रा कावादेवा किया। दानाराम मुंशी नू कह्यौ-नवाव नू ढावो, पण नवाव मानी नही।

---

1 मुझ पर विश्वास हो जाएगा। 2 किसी प्रकार का संदेह मत करना। 3 एकांत मे। 4 बातचीत से समझौता करने का काफी प्रयत्न किया। 5 खुशी। 6 धर्म कर्म की पक्की शपथ आदि लो। 7 नवाब ने मंजूर कर लिया।

तरै नवाव नूं नागोर बुलाया मूडवा, सू छडी असवारी घोडा २००[१] दोय सौ सू नवाव नागोर गयौ। समत १८६४ रा चैत वदि १४ तारकीनजी री दरगाह मे सवाईसिघजी वगैरा सूं नवाव मिळिया। घडी दो २ ताई इक तरफा धरम-करम हुवा। पोहोकरण सवाईसिंघजी, चडावळ वगसीरामजी, पाली ग्यानसिंघजी, वगडी केसरीसिंघजी, वगेरै सारा सामल होय वात कर नवाब नै सीख दीवी। तरै नवाव कह्यौ—हमारी फौज मे खरचो वावत सिपाया का तगादा है सो म्है तौ मूडवै जाता हूं अर कल हमारे वहा आपकी मिजमानी है[1] सो मूडवै आवौ सो वहा सारी वात की पकावट कर लेंगे। घणी जमा खातर रखौ, गिणिया दिना मे जोधपुर मानसिंघजी से छुडाय लेंगे। इण तरै धरम-करम कुरान वीच मे दे मीरखाजी तौ मूडवे पाछा आया, ने चैत सुद २ दूज सवाईसिघजी, वगसीरामजी ग्यानसिघजी, केसरीसिंघजी चढिया पाळा लोक हजार २०००) दोय[२] सू मुडवै गया। मिजमानी नवाव दीवी। रात ऊठे हीज रह्या। मीरखा रै खरची री वावत परदेसिया रो पूरो तगादो मैंमदखा कर राखीयौ। सो मीरखा सवाईसिंघजी नू केवायो थै आय नै सिपाया नू खरची की खातरी कर दो, पीछे जोधपुर सामा कूच करा। तरै नवाब रै डेरै सिरदार गया सो आगै अेक मोटो साईवान[2]। तिण मे विछायत थी नै साइवान रै चौफेर[3] तोपा लीया सिपाई धरणै बैठा था सो सिरदारा साथै आदमी १००० अेक हजार सिरदारा मैहमदखां सूं खरची देण री वात विगत कीवी। तरै मैहमदखां कह्यौ—म्हे जायकर नवाब कू बाहर ले आऊ। यूं कहे मैमदखा तौ नवाब कनै गयौ। फेर यू सुणी कै सिरदारा कनै मीरखा रो साळो वेठो थो सो ऊही जावण लागो तरै सवाईसिघजी हाथ पकड पाछो वैसाणियो नै कयौ—म्हारै कनै कोई न छे सोबैठा रहो। पछै नवाव रौ ही इसारौ पोथो[4] सो अेके समचै[5] साईवान री डोरीया तरवा रा सू काट नाखी। सु साईवान नीचे सारा दवरा गया। नै ऊपर सू तोपा रै वत्ती दीवी सु सारा भू जीज गया। सिरदारा रा आदमी साईवान वारै ऊभा था तिणा नै तरवारा गोळी टपा सु मारीया। नै सिरदारा रा डेरा ऊपर लोक गयौ सु कितराक तौ तोपा सुं उड गया नै कित-राक तुरका कोस लीया सवीया जीका नू तो मार लीया वाकी रा भाग छूटा।

समत १८६४ रा चैत सुद ३ तीज गिणगोर रै सै दिन सिरदारा नू चूक हुवौ।[6] पोकरण सवाईसिघजी, पाली ग्यानसिघजी वगडी केसरीसिघजी

---

१ ग घोडा 500। २ ग हजार एक।

---

1 आपकी मेहमानदारी है। 2 शामियाना। 3 चारो तरफ। 4 नवाब का इशारा पहुचा। 5 एक साथ। 6 गणगोर पर्व के ही दिन सरदारो को धोखे से मारा।

चडावळ वगसीरामजी कांम आया नै सिरदारां रा आदमी छ सौ नया सात[१] सौ मारीआ गया तथा घायल हुवा। कितराक नू पकड़ लीया बाकी भाग छूटा। घोडा सततर खोस लीया। सवाईसिंघजी नागोर मुं मूंडवा नै चढिया तरै मुकनीया वरजीया था।[1] सो होणहार सो मानीयो नही। च्यारू सिरदारां-रा माथा ऊंट रा बोरा मे घाल जोधपुर मेलीया सो फतैपोळ बारणे लेय नाखीया। माथा लेने मीरखांजी री तरफ सु लालो हणुंतराय नै सिरकार री तरफ सु वकील पचोळी अनोपराम आया था। सो हजूर घणा राजी हुवा[२] नै तोपां री सिलका हुई।[2] अनोपराम हणुंतराय नें कडा मोती हुवा। हजूर सु फुरमायो-इणांरा माथा सु बजार मे[3] दडा रमावो।[3] तरै आउवा रा ठाकुर बखतावरसिंघजी अरज कर नै च्यारु माथा नै भेळो दाग दिरायो।[4]

मीरखांजी रै नावै खलीतो घणी मुसरंखा रा लिखी जीयौ। सिरदारां नू चुक हुवौ तरै नाठा जिका नागोर जाय खबर दीवी तरै नागोर मे हरसोळाव रा ठाकुर जालमसिघजी खीवसर रा ठाकुर प्रतापसिंघजी भाटी छत्रसिंघ[४] तुवर सगतसिंघ मुखत्यार था सो भाग नै बीकानेरी मे गया। बाकी रा मतै मतै नास गया[5]।

मीरखां का नागोर पर कब्जा तथा दंड वसूल करना

पछै समत १८६४ रा चैत सुद ४ चौथ नवाब मीरखा मूंडवे सू नागोर जाय माहाराज श्री मानसिंघजी रौ अमल कर लीयौ। नागोर रा किला मे तोपा वगेरै चीज-वस्त आछी देखी सो मीरखा ऊरी लीवी। नै मीरखांजी सूं मिळ प्रोहित रामसा नागोर री कोटवाळी लीवी। रैत नू बूरी तरै तसतीया दीवी[6] घणौ जुलम कर रैयत कना सु डंड ले नै मीरखा नू खरची मे दीयौ। रामसा रा जुलम सू नागोर खराब हूवौ। नै नागोर रा परगना मे पिण मीर-खांजी डंड लीयौ। लाडणू पदमसिंघजी जोधा नै दुगोली सिवनाथसिंघजी जोधा वगेरै छोटा-मोटा जमीदार नागोरवाटी रा नोखौ, नींवडी, देसवाळ ऊलादण रा चादावता वगेरै ऊपर सिंघवी इदरराजजी रुपिया ठैहराय ठैहराय लगाय लीया।[7] हरामखोरा मे था तिणा नू मुलक सारौ जिण दिना लूंटीज नै बरबाद हुवौ।

---

१ ग चार सौ पाच सौ। २ ख आम दरबार कियौ, खुशी मोकळी कीवी (अधिक)। ३ ख दडा कना सू (अधिक)। ४ ख भाटी सूरतसिंघ।

---

1 शकुनी लोगो ने मना किया था। 2 खुशी मे तोपें छोडी गई। 3. गेंद की तरह इनसे खेलो। 4 च्यारो सिरो को शामिल ही जलवाया। 5 भाग गये। 6 पीड़ा पहुचाई। 7 क्षमा कर अपनी ओर किया।

सवाईसिंह के स्थान पर सालमसिंह का ठाकुर होना व उसका संघर्ष

सवाईसिंघजी नू चूक हुवा री खबर पोहोकरण पोती तरै कारज कर[1] सालमसिंघजी टीकै बैठा नै साथ भेळौ कर फळोधी आया। थळ रा गाव विगाडीया। तरै सिंघवी इदरराजजी री तरफ सु जसुवतरायजी सिंघवी धनराजजी रा बेटा नै मुहता सुरजमलजी री तरफ सू पचोळी राधाकिसन अै दोनू जणा नू लोग दै विदा किया। सो झगडौ सालमसिंघजी सू कीयौ दो तरफा आदमी काम आया नै घायल हुवा। पछै सिघवी इदरराजजी चापावत सालमसिंघजी नू लिखीयौ कै सवाईसिंघजी हरामखोरौ कीयौ सो सभा पाई नै हमे थे पादरा ठिकाणा मे बैठा रहौ[2] जरां तो था सू खेचल होसी नही।[3] नै इण तरै अफंड[4] करसो तौ पोहकरण था सू छूट जासी। तरै सालमसिंघजी पाछा पोहकरण जाय बैठा।

पछै हरीयाडाणा रा चापावत बुधसिंघजी नू सालमसिंघजी माहामीदर मेलिया सो आयसजी देवनाथजी कनै आय डेरौ कीयौ। नै रेख वाब गढ ऊतरी भर देणी नै जमीयत रा घोडा चाकरी मे राखणा कबूल कीया। तरै देवनाथजी माहाराज गाव मजल, धुनाडौ, लिखाय दीया नै कीक जिला रा गाव लिखाय दीया।

सवाईसिंघजी नू चूक हुवा पछै सिंघवी इदरराजजी हजूर में अरज करी कै हरामखोरा सभा पाई हमे सारां नू लगाय लीजै तौ उठी री जथौ विखर जावै। तौ ऊदैपुर वीकानेर सू आंटौ लेवा।[5] घर रा चाकरां नै तौ सजा पोछ गई[6] नै फेर पोछती जावसी। तरै अरज मजूर कीवी। पछै कितराक सारा नू लगाय लीया। और पैला गाव मजल धूनाडा वगैरै पोहोकरण री पटौ जवत थौ नै भंडारी चुतरभुज तालकै थौ तरै पोहोकरण रा माहाजन थळी रा गावा मे रेहता तिणा कना सू रुपिआ हजार दस १००००) डड रा लीया था। फळोधी मे वीकानेर वाळा रौ अमल थौ सो सालमसिंघजी वात कर पोहोकरण जाय बैठा तरै सिंघवी जसुतराय फळोधी ऊपर गया नै इणा कनै परदेसी वगैरै फौज हजार १०००० दस थी नै पातावत दरबार री फौज सामल था नै रूपावत वीकानेर वाळा सामल फळोधी मे था सो सिंघवी जसवतराय झगडो कर फळोधी वीकानेर वाळा कनै छुडाय लीवी दरवार री फौज मै पातावता

---

1 मृत्यु भोज आदि करके। 2 सीधे तरीके से अपने ठिकाने मे बैठे रहो। 3 तुम्हे छोडेगे नही। 4 झगडे, उत्पात। 5. बदला लेवें। 6. दण्डित कर दिया।

झगडो आछी कीयौ। पछै सिघवी जसूतरायजी फळोधी वाळा कनै रुपीया १००००) दस हजार डड रा लीया नै हाकमी जसुतरायजी रै हुई।[१] समत १८६५ लागता पेला हळोतीया मे विरखा हुई थी पछै। सावण मै मेह री खच रही[1]। पछै भाद्रवा मे विरखा घणी हुई, जिण सु ऊनाळीया[2] चोखी हुई। सावणू फोरी हुई। धान रौ भाव अेक १) रुपिया रो दस।) सेर रो थो। सो ऊनाळी मे ।।) वीस रौ हुवौ। पका तोल री त्रिकीयी।

सिघवी इन्द्रराज की बीकानेर पर चढाई

समत १८६५ मे सिघवी इदरराजजी बीकानेर उपर फौज ले विदा हुवा, मुहतो सुरजमलजी पिण साथै थी नै सिरदारा री आसामीया इण मुजब साथे ही, विगत—

१ आऊवो वखतावरसिघजी।
१ रीयट इदरसिघजी खाप चापावत।
१ आसोप केसरीसिघजी खांप कू पावत।
१ नीवाज सुरताणसिघजी ऊदावत।
१ लावीया भवानीसिघजी।
१ छीपियो अमरसिघजी ऊदावत।
१ रीया विडदसिघजी।

ईडवो, चादारुण, वळूदौ सिवसिघजी नोखौ, नीवडी मेडतीया नै भादराजण रा जोधा नै जसूतसिघजी खेजडला रा भाटी, फेर ही छोटा-मोटा सिरदार जाळोरी वगेरै रा था। सो हजार दस १००००) फोज तो जमीदारा री थी नै हजार दस १००००) परदेसी रोजीनदारा री थी। सिघवीजी हजार वीस २००००) फौज ले बीकानेर रा मुलक मे गया। तरै बीकानेर री फौज हजार ७०००)सात सू सिरदार मुसायव सामा आया नै गाव उदासर रै डेरा झगड़ो

१ ख सवत 1865 रा सावण मे नवाब मीरखाजी नागोर मे हाकम बैसाण जोधपुर आयो। श्री हजूर नवाब रै सामा कोस १ ताई असवारी कर पधारिया। पछै दूजै दिन नवाब गढ उपर आयो, वात हुई। श्री हजूर दूहो कह्यो—

वैरी मारण मीरखां, राज काज इन्द्रराज।
म्हे तो सरणै नाथ रै, नाथ सुधारै काज।

महाराजा सू इजाजत ले, मीरखा जैपर गयो। (अधिक)

1 वर्षा की कमी रही। 2 गेहू चने आदि की फसल।

हुवो । दुतरफो तोपखांनो छूटो । इदरराजजी री फोज मैं गाव ईडवा रो ठाकुर हणूतसिंघ जी रै गोलो लागो सो काम आयो । गाव छापरी रो चांदावत पहाड-सिंघ काम आयो । भाद्राजरा रा डेरा मैं अेक ऊदावत ऊदजी री आख रै गोली लागी ।[१] ईंदरराज जी री फतै हुंई ने बीकानेर री फौज भाग नै पाछी बीकानेर गई । बीकानेर वाळा फोज री अवाई सुण मारग मैं गावां मे वेरा नाडीया मे ऊ ट गधा काट-काट नै नखाय दीया । सो डेरा हूता जठै तथा मारग मे सिंघवी जी हाडका[1] तो नाडीया माह मुं बारै नखाय देता नै नाडी कूवा मे गगाजळ नखाय देता । सौ पेहला तो सिंघवी जी नै सिरदार पीवता जरे सारी फौज वाळा पाणी पीवता । पाणी री पखाला हजार अेक १००० ऊ ठा माथै सिंघवी जी रै साथै थी नै बीकानेरी मैं जमानो चोखो थो सो मतीरा घणा हुवा था सो फौज रौ लोक मारग मैं मतीरा खावता तिण सू पाणी री गरज सभ जावती । ने कठै कठै बीकानेर वाळा सीगीमोरा रा भाथडा नाडी वेरा कुवा मैं नखाय दीया था सो खबर पड गई । तिण सू निगे कर[2] पाणी पीवता । बीकानेर सू कोस चार पाच ऊलो कानी गाव गजनेर है जठै डेरा हुवा । तरै बीकानेर वाळा विसटाळो इण मुजब कीयो[3] रुपिया लाख तीन ३०००००, फौज खरच रा देण री कबूलायत बीकानेर वाळा लिख दीवी ने इंदरराजजी वगैरै सारा रो समादान आछी तरै कीयो ।[4] रुपीया एक लाख १०००००, सिंघवीजी इदरराजजी नू मिजमानी रा दिया नै सिरदार साथे था जिणारी मिजमानीया रा रुपीया दोय-दोय हजार मेलीया ।

आयसी जी देवनाथ जी रै बीकानेर रो गाव पाच भेंट करायो[२] नै गीगोली सू बीकानेर वाला हाथी वगैरै लेगया था सो पाछा लीया । फलोधी सू तोपा वगेरै लेगया था सु उरी लीवी ।

लोढो किलाणमल ने हीरासिंघ गजनेर रा डेरा इदरराजजी सामल हुण नू आवता था, तिणा सू बीकानेर री फौज झगडो कीयो सो किलाणमल हीरासिघ रा पग छूट गया ने किलाणमल हीरासिघ रो असबाब बीकानेर वाळा ले गया था सो पाछो मगायो । जोधपुर रो हरामखोर सिरदार, मुतसदी, खास पासवान वगेरा नू बीकानेर रा मुलक मे राखणा नही जिण री इकरार कीयो । इण तरै बीकानेर वाळा सू जाव ठेहराय[5] चैत रै महिने सिंघवी इदरराजजी

१ ख दस बीस काम आया, दसबीस रै घायल हुया (अधिक)। २ ख सवत 1902 मे महाराजा तखतसिहजी पधारिया पछै लिखमीनाथजी सू बीकानेर वाला पाछो जब्त कियो (अधिक)।

1 हड्डियें । 2. पूरा पता करके । 3 इस प्रकार समझौता किया । 4 इद्रराज वगैरे को अच्छी तरह सन्तुष्ट किया । 5 शर्ते तय करके ।

फौज ले जोधपुर आया । इदरराजजी सुरजमलजी सिरदारा नू श्री हजूर धणी खातर फुरमाई । पछै कितराक सिरदारा नू घरा री सीख दीवी ।

मीरखा का मानसिंहजी से मिलने को आना

इदरराजजी वीकानेर ऊपर चढिया जिण दिना नागौर सु मीरखांजी छडी असवारी जोधपुर आया । श्री हजुर धणी मुसरेखा कीवी[1] नै फुरमायो कै थां जिसा दोस्त हुवै तरै म्हारी मरजी मुजब सारा काम हुवै परगना परबतसर, मारोठ, डीडवाणौ, साभर, नावौ, कोलीयो अ परगना मीरखाजी री खरची में काढ दीया[2] मे मीरखाजी कूच कर जैपुर री धरती में गया । ढूढाड रा गाव ऊपर रुपीया ठेहराया नै मुलक लूटीयो । सिरकार री तरफ मु उकील पचोळी अनोपराम नै भडारी पिरथीराज था ।

लोढा किलाणमल द्वारा थांवळा पर चढाई

समत १८६५ रा आसाढ मे लोढो किलाणमल मैंमदसा नै रजा-बाहादुर री फौज ले जाय थावळै घेरो दीयौ महीनो अेक लडिया थावळो पोहकरण री भायपा मे गीजगढ रा चापावत उमेदसिंघजी रै थौ सो उमेदसिंघ जी तौ ढुढाड री तरफ काम आय गया नै थावळा रा किला मे उणा रा आदमी था सो वात कर रुपिया हजार अेक खरची रा ले नै निसरीयौ । थावळा रा किला मे श्री हजूर री अमल हुवौ । नै परबतसर, मारोठ, मेडतौ, नांवा री हाकमीया लोढा किलाणमल तालकै थी नै हाकमीयां री पैदास परवारी मीरखाजी री खरची मे दिरीजती ।

इन्द्रराज का वीकानेर से लौटना और नागोर के जागीरदारो से दंड वसूल करना

इदरराजजी सिंघवी वीकानेर सु पाछा आय नै मुलक मे रेख हजार रुपीया २००) दोय सौ नै दस रुपीया घर वाव रा भरावण री सरु कीवी । नै नागोर री हाकमी[२] फतैराजजी रे नावे थी सौ लाडणू रा सिरदार कनै रुपीया

१ ख प्रति मे यह वृतात कुछ भिन्न तरीके से पहले दे दिया गया है ।
२ ग इन्दरराजजी का वेटा (अधिक) ।

1 खूब आव-भगत की । 2. खर्च के लिये मीरखा को दे दिये ।

३५००००) पैंतीस हजार[1] लीया । नै फेर ही फितूर रै, ने सवाईसिंघजी रै सामल सिरदार छोटा मोटा था तिणा सारा कना सु रुपीया ठेहराया नै नही दिया जिणा रा ठिकाणा बिगाड दिया, बीकानेर रो गाव खरबूजी छुडाय थाणो घालीयो थो सो बीकानेर री वात ठैर गई तरै खरबूजी रो थाणो उठाय लीयो ।

जयपुर महाराजा का सन्धी का प्रस्ताव स्वीकार करना

मीरखांजी जैपुर रौ मुलक लूटै सो जैपुर सु उकील अठै आयो नै आपस मे दुरस्ती री वात कीवी । तरै आयसजी देवनाथजी इदरराजजी श्री हजूर नै मालम करी कै बीकानेर सु नखसे रै साथ[1] वात हुय गई ज्यू ही जैपुर सु वात हुय जाव तो ठीक है । तरै इदरराजजी रा बेटा फतैराजजी नै मुथा सुरजमलजी नै आऊवो, आसोप, नीवाज रा सिरदारा नै जैपुर मेलीया । सो जैपुर रा माहाराजा जगतसिंघजी सु फतैराजजी इण मुजब जाब ठहरायौ–फितूर धोकळसिंघ री वात रौ फेर आवेज राखणो नही नै उणा सु सटपट[2] करणो नही । गीगोली सु हाथी तोपा वगैरह असबाब ले गया था सो सारौ पाछा लीयौ । उदैपुर री सगाई बाबत फेर वात करणी नही ।[2] नै मारवाड रा सिरदार बेमरजी रा[3] उठे हा जिणा नै सीख दिराई । चादावत बाहादरसिंघजी रै पटै उठारौ गाव करणसर थौ सौ जबत करायौ । हरसोलाव रा ठाकुर जालमसिघरी घोडारी बाईस रुपिया री सर मे अगरेजा कनै राखीया चाकरी मे । मीरखाजी रै फौज रा खरचरा रुपीया .) जैपुर वाळा कनै लीया । नै दोनू साहबा रै आपस मे अेकानगी राखणी[4] जिण रौ खलीतौ जैपुर माहाराज कना सु सारी कलमा घलाय लिखत ज्यू श्री हजूर रै नावै लिखाय लीयौ ।

माहाराज जगतसिंघजी कना सु मीरखाजी रै नावै खलीतो लिखायौ इण माफक माहाराज श्री मानसिंघजी सु वरतण राखमा[5] राज री जुमेदारी है । फतैराजजी जैपुर मे मुसायबी ज्यू कांम कीयो । डिगी रा खगारोत मेग-सिंघजी सु फतैराजजी पाग बदळ भाई हुवा । नीबाज ठाकुर सुरतांणसिंघजी सु छोटा भाई भोमसिंघजी रास खोळे बेसणा ठैरीया । नै चामू नाथावत किसनसिंघजी[3] री बैन परणीया ।

---

१ ख चालीस हजार । २ ख या बात संवत 1865 री है ।
३ ग केसरीसिंघजी ।

---

1 तय शुदा तरीके से । 2 साजिश । 3 मानसिंहजी के जो कृपापात्र नही थे । 4 मेल रखना । 5 इस प्रकार का बर्ताव रखेंगे ।

समत १८६६ जमानो सरासरी[1] हुवो गेहूं रुपिये १) अेक रा सेर अठारे विकीया।

मीरखां का उदयपुर की ओर कूच तथा कृष्णाकुमारी का विषपान

जैपुर री वात ठेरीया पछै मीरखाजी कुच कर मेवाड मे गया। सिघवी इदग्राजजी री तरफ सू ऊकील पचोळी अनोपराम साथै थो, मेवाड रा गांव लूटता खोसता वाळता खास उदैपुर नजीक जाय डेरा कोया। नै पूरो ताव दीयो[2] तरे राणैजी भला आदमी मेल मीरखाजी नै भडारी प्रथीराज, पचोळी अनोपराम नू केवायो कै थे म्हांरो मुलक किण मुदै विगाड़ो हो।[3] तरै मीरखाजी तो कयो कै माग माहाराजा श्री मानसिंघजी नू परणाय दो नै पिरथीराजजी, अनोपरामजी कही राणैजी री तरफ रो खलीतो माहाराजा मानसिंघजी रै नावै देवो सो मरजी हजूर री हुसी ज्यू करसी। तरै सिसटाचारी रो खलीतो राणैजी मेलीयो तरै श्री हजूर मीरखाजी नू लिखीयो के वाभाजी भीवसिंघजी री माग है सो म्हे तो सरवथा परणीजा नही थारै तुलै ज्यू कीजो। ये समाचार मीरखाजी उदैपुर वाळा नू कया। तरै ऊणा विचारीयो कै आ माग यूं हीज रया सु फेर कोई दिन म्हारा जीव नू दुख हुसी। जिण सु उदैपुर वाळां आपरी वाई नू जेहर दे नै मार नाखी[1] नै मीरखाजी नै पिरथीराजजी, अनोपरामजी नू कह्यो—माग रो झगड़ो तो म्हे मेट दीनो है।

गोढवाड़ रा सिरदार घाणेराव, चाणोद, नारलाई रा म्हारै मुलक मे वैठा है अर मारवाड रो विगाड करै है सो आज पछै म्हे इणा नू कोई तरै री मदत देसा नही। थारा चाकर है सो मनाय लेण मे भला है। नै मीरखाजी री फौज-खरच रा रुपीया ठेहरीया इण तरै उदैपुर रो फैसलो हुवो।

मीरखाजी रो पाछो कूच हुवो पछै कुचामण ठाकुर सिवनाथसिंघजी री अरज सु घाणैराव, चाणोद नारलाई वाळा ऊपर क्यूक रुपीया ठैर पटा लिखीजीया।[4]

समत १८६६ रा ऊनाळा मे अजीतसिंघजी घाणेराव रा नै चाणोद रा तेजसिंघजी नारलाई रा पिरथीसिंघजी जोधपुर आय श्री हजूर रै पगै लागा।

---

१ ग दूजी ख्यात मे लिखियो है कै , म्हा मुवा विना रजवाडा रो किस्सो मिटै नही सो जहर खाय मर गई।

---

1. साधारण। 2 खूब परेशान किया, दबाव डाला। 3 हमारे देश मे किस कारण मे नुकसान करते हो। 4. कुछ रुपये वसूल करने का तय करके उन्हे पट्टे लिख दिये।

सिंघवी इंदरराजजी बीकानेर रा राजाजी कनै कबुलायत कराई तिण री नकल—

कबूलायत १ माहाराजधिराज श्री सुरतसिंघजी लिख दीवी तथा जोधपुर रा श्री दरबार री फौज खरच रा रुपीया च्यार लाख अेक ४००००१) ठेरीया तिण मे छूट रुपीया ४००००) चालीस हजार बाकी रुपीया तीन लाख साठ हजार अेक ३६०००१) मतु राठौड सुरतसिंघ ऊपर लिखियो सो सही। मतारा दसखत आचारज पुरसोतम साहा अमरचद रा छे श्रीजी हुकम सु समत १८६५ रा मिती मिगसर वद ५ तिण री किमता वसुलायत री[1]—

१४५०००) ओळमे[2] जणा ५ सुराणो ताराचद वगेरै रा आया सु।

५००००) रूको १ देरासरीया आचारज परसोतम, रामसा, अमरचद, दरबागी सवाईराम फागुण सुद १५ देण रौ।

७२०००) कपू तालकै मैमदसा तालकै हूँडिया सिकारी, पचोळी जसकरण, दरबारी सवाईसिंह।

२६८०००) बाकी रुपिया ९३००१ (मवे आया सु रुपिया ८४९४५।।-)।। चौरासी हजार नव सौ पैतालीस रुपीया साढी नव आना सो पोते दाखल। आ कबूलायत[1] सू पी ढोलीया रै कोठा।

सिंघवी इंदरराजजी नै माहाराज श्री मानसिंघ जी खास रुका लिखिया तिण री नकल—

'सिंघवी इदरराज कस्य सू प्रसाद वाच जे तथा अेक-दोय वार रुका आया ज्या मे उपाय काम वणावण री लिखी नै थारा घर रो स्यामधरमपणो नै थारा अगरो म्हारी बदगी मे कायमपणो जाणा छा ज्यू ही अबार किताक सिरदारा नै चाकरा नै अेकठा राख सामल ले कूच कीयो सो आ थारा ही करण री थी। अवै लिखण रौ मुद्दो अठासू तौ ओ छै कै फायदा रा वडा

१ ग तफसील वार उतारी (अधिक)।
२ ग असल (अधिक)।

1 रुपये वसूल होने की किश्तो। 2 जमानत के तौर पर रोके हुए।

चाकर छौ ज्या ने मरजी री रहण[1] तौ मगावणा मुनासब ही छै दूजौ म्हांरी तरफ सु मुकत्यार छौ[2] कोई काम आतरै रो[3] हाग्न लिखण तरीके न होय तौ फायदो सिरकार रौ देखौ ज्यू कीजौ । थे कम्मो मु फायदै वदगी रौ ही कर सौ मो विना पहला महरम ही म्हानै कबूल छै । रुका थारै साथै छै ज्या नै मेलीया है नै फेर लिखौ ज्या नै जिगा रोत ही लिख मेला । दूजा समाचार मारा फतेराज न फुरमाया है मु लिखसी कोई या तै हुवै तौ ऊदेरांम नै वा दूजा आदमी नै था कनै लिखौ तौ मेला । जाळोर सू गढ पधारण री वदगी थांरा हाथ सू वणो जिण सू सवाय था जिमा चाकरा री जुरत अजमायस रो वखत है । सो इण नै थे जरूर जरूर अजमावसौ ईज आ निसचै माने छै । अठे किले री श्रीजी री कृपा प्रताप सु मजबूती छे वारलो ऊपाय था सारू छै थे जळदी कीजौ अरज जळदी पोहोचावजौ । समत १८६३ रा वैसाख वद ११ । आडी ओळ मे[4] –सिरदारा चाकरा नै रसाला आद दे लगावणा जरूर सारा नै अरजी आई नहीं सु लिखजौ नै तजवीज डोळ काई विचार नै अठासू कृत्त कीयौ सु, सारौ अेहवाळ अतस[5] री वात लिखजौ ।'

'सिघवी इदरराज कस्य सु प्रसाद वाचजौ तथा था सामल लिखाया समाचार अगरेजा रै जाव लगायत रा सिरदारा समसत रा रुका मृ वाचण मे आया मु लिखिया मुजब रुका लिख मेलीया है । औ ऊपाय नेक वीचारीयौ । परत जळदी कीजौ था नै विसेस कांई लिखण मे आवै । उठा रा अठा रा काम रौ दोनू फिकर था नै छै । सु हर सूरत कसर नह राखसौ ही नै अठै लिखण ज्यू जाणौ सु अठै लिखसौ । थारी सला मुजब सो हुसी । कितारु समाचार अेक प्रसताव केवाबट रै राह वा दूजा ही फेर फतैराज नू फुरमावण मे आया छै सु ऊण प्रसताव समाचारा ऊपर दिसट दे[6] अठा री सार वेगी करजो[7] थारा हाथ सु तु गा लगायत[8] इण घर रा वडा वडा काम हुआ छै हमे इण घर मे औ काम वणियौ है सो जोधपुर री आछौ लागौ ज्यू करण वाळौ था विना दुजौ ध्यान मे न आवै छै सु थे कीजो, सिवाय काई लिखा[9] पाछौ जाव जळदी लिखसौ । समत १८६३ रा जेठ वद १४ ।' अै खास रुका जोधपुर घेरौ थौ तरै इदरराजजी नै लिखीया था ।

'सिरदारा समसता सू म्हारो जुहार सिंघवी इदरराज साहा किलाण-मल कस्यु सु प्रसाद वाचजो तथा श्री जी रै इकवाल सू थानै वडो जस आयौ

---

1 मेरी इच्छा की जानकारी । 2 सब अधिकार तुम्हे हैं । 3 ज्यादा आगे का । 4 पत्र के हासिये मे लिखा । 5 अन्दरूनी । 6 उनको ध्यान मे रखकर । 7 यहा की सुध जल्दी लेना । 8 फौजी अभियानो तक के 9 इससे बढकर क्या लिखें ।

वडो नामू'न पायौ तिण री तफसील तौ लारा मु लिखा छा नै हाल भादवा सुद १३ तेरस सोमवार पाछली रात रा गढ सूं मोरचा ऊठाय जैपुर वाळा कच अठा सूं कीयौ जिण मुदै दु टिपौ लिख चलायो है[1] व्योरा वार लारा सू लिखा छा अबै इण रौ मारग मे हलकारा री सावधानी राख आछी रीत समाधान हुवै।' सवत १८६४ रा भादवा सुद १४ चौदस। अै खास रुका सिंघवी पेमराजजी सिंघवी इदरराजजी रा पोता जिणा रै कनै विजनस देख[2] नै नकला उतारी छै।

महाराजा मानसिंह के चाकरो के जिम्मे कार्य आदि का वृत्तात

सवत १८६६ मे मेडता री हाकमी कौटवाळी नै सायर तीनू पचोळी गोपाळदास रै हुई मावागी रा रुपीया पचीस हजार महीने रा महीने जोसी मिरी किसन री मारफत खजानै पोतै।

मुता सूरजमल जैपुर सू आया पछै तुरत कैद हुई। जैपुर मै वरतण[3] ठीक रही नही तिण सू सो रुपिया अेक लाख री कबूलायत हुई।

जोधपुर री कोटवाली सिंघवी बाहादर मल रे सो बडो जुलमी थौ जोधपुर मे डड पड़ीयौ।

सवत १८६६[१] आयसजी देवनाथजी रै कवर लाडूनाथजी हुवा भारी ऊछव हुवौ। जोधपुर मे घर दीठ गुळ सेर अेक दीयौ।[4] गाव मडार सू दैवडा रौ डोलो आयौ श्री हजूर छोटा देवडीजी परणीजीया[२]

जोधपुर री किलादारी खीचो चैना रा बैटा सूं ऊतर देवराजोत नथकरण रै हुई नै रसोडा री दरोगाई धाधल जीवराज दाना रै।[३]

खीची चेनौ मरगयौ नै वेटो जालौ मनीजै, तिण रै जाळोर री किलेदारी। नै खीची विहारीदास रै कपड़ा रै कोठार री दरोगाई[४]। तवेले

१ ख प्रमाद रौ जनम (अधिक)।

२ ख सिंघवी इन्दरराजजी रौ व्याव दूजौ फळोदी डढा तथा मुता रै हुऔ (अधिक)।

३ ख महाराज कुमार छतरसिंह कनै रहै, धाधळ मूको बभूतै रा रहै जिणारै गाव केरू पट्टे (अधिक)। ४. ख गैलोत रै हुई (अधिक)।

1. सक्षेप मे पत्र लिखकर भेजा है। 2 उसी समय देखकर। 3. वर्ताव।
4. प्रत्येक घर को सेर गुड खुशी मे बाटा गया।

दरोगो पिडियार जाली भेरा री । दोढी री दरोगाई मोभावत भगवान दास नै आमायच नथकरण रै मीर मे ।[1] परणियो सिरीराम वाकव भी सरफराज[2] । काम म्हारै री मालकी सिघवी इदरराजजी री सरवो सरव काम करै ।[१]

सिघवी ग्यानमल भडारी सिवचद नेरा मैं कैद मे था । फायदा री अरज करता[3] सो घेरी खुलिया छोडीया । सो सिघवी ग्यानमल नू गाव पाता रो वाडो नै भडारी सिवचद नै गाव धवी पर्ट दीया । खालसा रा गावा रौ हवालो मोणोत ग्यानमल तालुकै हूवौ ।

पचोळी लालजी महाराज श्री वगतसिघजी री दीवाणा थी जिण री पडपोतो राधाकिसन मुहता सुरजमल कनै चाकरी करतो वेरा मे हाजर रयो । पछै सुरजमल मूताजी री तरफ सू जोधपुर री हाकमी री काम करतो । मूतै अखेचदजी विचारी कै सिघवी इदरराजजी री दिवाणगी ऊनराय पचोळी राधाकिसन लालजी रौ पडपोतो है तिण नू दिरावणी जिणसू साभर, डीडवाणो, दौलतपुरो, कोलीयो औ चारू हाकमीया मासवारी कराई[4] राधाकिसन सू परदेसीया रा रुपीया सादीया[5] सो दिरोजिया नही । तरै हाकम्या जवत हूई ।

मुहते अखेचदजी अरज करी-सिघवी इदरराज काम सकरडाई[२]-[6] सु करै है ने आप सुरजमल नै सामल राखीयो पिण सुरजमल मे[3] जुडत नही[7] सो दीवाणगी मोहोणोत ग्यानमल नू दिराई जै । तरै फुरमायौ ठीक । तरै दीवाणगी ग्यानमलजी नै धामी तरै ग्यानमलजी कयौ के इण वखत रौ काम इदरराजजी सू हीज होसी । पछै भडारी सिवचदजो नू दीवाणगी धामी सो ऊवा ही इणीज तरै अरज करदीवी ।

महता अखैचदजी री वीरगत रौ विस्तार सिरकार मे सिरदारा मे नै गावा मे वधियौ सो इणा री खत हुवा पछै उतरै नही ।

---

१ ख इन्दरराज रै कीयौडी वात दूजा सू उथलीजै नही नै इन्दरराज चावै सो काम कर लेवै ।

२ ग सकडाई ।

३ ग काम री (अधिक) ।

---

1 शामलात मे । 2 अतिरिक्त । 3 लाभदायक सलाह देते थे । 4 प्रतिमाह के हिसाब से रुपये बाध कर कार्यवाही । 5 रुपये देने की जिम्मेदारी ली थी । 6 कडाई के साथ करता है । 7 काम करने की तजवीज नही ।

घडीयो राजाराम नै जोसी सिरीकिसनजी री दुकान सूं कुल ऊठे[1] नै सारा मुलक री पैदास इणा री दुकान आवै खजानै रुपीयौ आवण जावण रौ मुदो नही। दोनू जणा री मुलक मे वोरगत वधी नै राज मे इणा रौ पूरौ चलण।

जाळौर री हाकमी मूता सायवचद रै हुई। जोधपुर रै चातरा री मुसरफी व्यास विनोदीराम रै हुई। ऊमरकोट री हाकमी भडारी सिवचद रै हुई।[१]

परवतसर, मारोठ, डीडवाणो, लोढा किलाणमल तालके हुई। मेडता री हाकमी पचौळी गोपालदास रै नै मालकोट[2] मे मीरखाजी रौ रिसालदार अजीमुलाखा रहै। गाव डागास दोनु पादूवा बीलाडो मीरखाजी रै पटै, मीरखाजी रो हाकम वीलाडा फरीअंद देवै।

दरीबे नावे मे मीरखाजी आपरौ हाकम फरजुलाखा नू राखीयौ। जमा परवारा लेण लागा नै फरजुलाखा नावा रा समद मे गढरी नीव दिराई।

मीरखाजी ढुढाड माय सु असवार हजार ५००० पाच लै जोधपुर आया सो पाच लाख[२] रो तोड कढाय[३] खरची ले पाछा गया। आयसजी देवनाथजी री वाया दोय तौ गाव वैजनाथजी री पालडी रा जोगेश्वर किरपानाथजी रा बेटा नू परणाई। हाथीया चढ तोरण वादीया दोनू जवाया नू श्री हजुर सू गाव दोय दीया नै देवनाथजी री बाई अेक जाळोर इलाकै वाकडीयो वडगाव परणाई।

आयस देवनाथजी री सला लीया सिंघवी इदरराजजी काम करै। तळाव पदमसर ऊपर श्री नाथजी रौ मिंदर वडा भटियाणी जी करायौ।[४]

श्री तु वरजीसा रै कवरजी हुवा सो वरस अेक रा हुवा पछै चलगया।

१ ख काम करता मोदी भजवनाथ गयौ, सवत 1868 मे गयौ।

२ ख पचास हजार।

३ ग कराय।

४ ख घानमडी मायलो मिंदर नायजी रौ सायर कनेलो राणीजी तु वरजी करायौ। जोसी श्रीकिसन कडा पालकी मोतिया री कठी सिर पाव कियौ, मरजी मोकळी चढी (अधिक)।

1 सरकार के खर्च के लिये रकम उठाई जाती है।

2 राव मालदे का बनाया हुआ मेड़ता का कोट।

समत १८६७ लागौ हळोतीया रौ मेह हूवौ। सांवण भादरवा मे वरखा हुई नही। अनकाळ तिणकाळ दोनू पडिया।[1] सो लोक माळवै गया। धांन जोधपुर रा तोल रौ पको सात सेर ७ विकियौ। माहा सुद ११ लगायत सुद १२ मावटो[2] जवरौ हूवौ[१] वित[3] मुलक मे जीवतौ रयौ सु घणौ मूवौ। ऊण ठारी सू।

वळू दा रौ पटौ सावण मे जवत हुवौ। पेसकसी रा रुपिया १४०००) चवदे हजार[२] ले पाछौ पटौ लिख दीयौ।

मिगसर मे रास रा ठाकुर जवानसिघजी चलीया लारै जळेवीया रौ मोसर हूवौ।[4] काळ वरस रा कारण सूं लोक भेळौ घणौ हूवौ जिण सू मौसर सुधरियौ नही। जवानसिघजी रै ठाकुराणी राजावतजी नीवाज रा ठाकुर सुरताणसिघजी नू कयौ थारा वेटा नूं खोळै लेसू [5] पिण भोमसिघजी[3] नै चांमूं रा नाथावता रै परणाया तरै सुरताणसिघजी नाथावता नू वचन दीयौ थौ, जिण सू आपरा भाई भोमसिघजी नू जवानसिघजी रै खोळै दीयौ। सिंघवी गुलराजजी हस्तै हुकम जीवा[6] रा रुपीया ३००००) तीस हजार ठैरीया।

समत १८६७ रा माह से मेडता री हाकमी कोटवाळी, सायर पचोली गोपाळदास सू तागीर होय[7] नै प्रोहित रामसा रै हुई। पनरै १५०००) हजार री मावारी ठेहराई। सो मास २ दोय रही। पछै माहावारी सभी नही[8] तरै लोढा तालकै हुई।[४]

नवाव मेमदसा फौज ले मुल्क मे आयौ। गाव हाथीभाटे डेरा हूवा। चढी खरची मागी जरै जोधपुर रा मुसायदा कयौ-म्है तौ खरची मीरखाजी नू परी दीनी, पिण मानी नही। तरै मैमदसा नू लाख अेक खरची रा दीया नै मुलक मे रेख वाव नाखी।[9] मगरा मे मैमदसा री फौज रा ऊट ले गया तरै लारै वार चढीया। सो मैमदसा चागचीतार जाय डेरा कीया। सो मास २

१. ग. ठड घणी पडी (अधिक)।

२ ग 19 हजार।

३ ग भोमसिघजी।

४ ख कल्याणमल तातेड मेहकरण काम करता मिलियां (अधिक)।

1. अन्न और चारा-घास का अकाल पडा।

2 माघ मास मे होने वाली वर्षा। 3 पशु धन। 4 जलेबियो का मृत्यु भोज किया। 5 गोद लू गी। 6 नये ठाकुर की गद्दी नशीनी के समय लिया जाने वाला सरकारी कर। 7 हटई जाकर। 8 प्रतिमाह इतने रुपये नही दिये जा सके। 9 रेख के हिसाब से प्रत्येक गाव मे रुपये वसूल किये।

दोय डेरा उठै रया । चाग सूनी रही । पछै श्री हजुर सु हुकम पोतौ तरै चाग सूं वृच कीयौ । चाग रा डेरा गाव सेवरीया रौ चादावत रतनसिघजी नवाब मेमदसा कनै चाकर रयौ । मेमदसाजी ढू ढाड रौ मुलक लू टीयौ । तरै खगारोता नाथावता सेखावता वगेरै रा ठिकाणा राजावत रतनसिघजी हसतै निवडोया ।[1] जिण सू ढु ढाड़ मे रतनसिघजी रौ वडौजस हुवौ । मेमदसा री फौज मे श्री हजुर री तरफ सु ऊपादीयो रतनचन्द नै राईको सरूप ऊकील रहता ।

मुता अखेचदजी आपरा बेटा लिखमीचन्द रौ व्यांव फळोधी रा ढढा सादूलजी री बेटी सू कीयौ । जान मे दोय हजार अढाई हजार आदमी था । जोधपुर मे सैर सारणी कीवी[2] सीरो पुडी रौ जीमण कीयौ । खाप–खांप नै न्यारी न्यारी जिनस तोल दीवी । ३६ छतीस ही पूण[3] नै जीमाई । सेवगा नें जणै दीठ रुपिया २) दोय हजार हा ज्यानै नै घरा बैठा था जिणा सारा नू दीया । मारवाड सारी मे ।

मुहता सायवचद बाप रौ कारज लाडुवा रो कीयौ । जाळौर सैहर नै जाळोरी रा बावन गाव रा माहाजना नू जीमाया । समत १८६६ मे । नै सेवगा नै त्याग रा रुपीया जणै दीठ दोय दोय दीया ।

मुता सुरजमल बाप रौ नै काका रौ औसर सोभत मे कीयौ सो सोभत री छतीस पूण नू सीरौ जीमायौ । समत १८६५ मे । सोभत मे श्री चावडा माताजी रै भाखरी रै पागोतीया बदाया ।[4]

समत १८६७ रा माहा मे घंडिये राजाराम सतरू जा रौ संग काढीयौ[5] सिघवी जसु तरायजी इदरराजजी रा भाई नै धनराजजी रा बेटा । नै संग रा जावता सारू श्री दरवार सू आदमी घोडा ५०० पाच सौ दे साथे मेलीगा । इणा गिरनारजी परसीया । सिघवी इदरराजजी री तरफ सू रुपीया हजार ५०००) पाच हजार लगाय नै गिरनारजी ऊपर अवका माताजी सु ले दता-तिरीजी[6] ताई पगोतीया बदाया ।

सिघवी इदरराजजी रै सदावरत था सोजत मे तो भीवराजजी थका गै श्री पुसकरजी मे श्री दुवारकाजी मे सतभामाजी रा पिडा हसतै । श्री हर–दुवारजी मे अखेराजजी रै तळाव बीलाडै जैतारण वगेरै १२ बारै ठौड सदावरत सिघवी इदरराजजी रै था ।

---

1 छुटकारा पाया । 2 पूरे शहर को भोजन करवाया । 3 छत्तीस पवन जात । 4 पहाडी पर देवी के दर्शनार्थ चढने के लिये सीढिया बनवाई । 5 शत्रुंजय की धार्मिक यात्रा निकाली । 6. दत्तात्रेयजी ।

मीरखाजी कनै उकील पचोळी अनोपरांम पैहला तौ ऊपादीया गंगे-वगस रा जुमे मे था पछै सिंघवीजी इदरराजजी जुमे मे न्यौ नै भंडारी पीरथी-राजजी टेठ सू इदरराजजी जुमे न्या।

लोढो किलाणमलजी नवाव मैमदसा कनै ही सो कैद हूवां पछै काम रयौ नही। पछै समत १८६६ गुणतरा मे रूपनगर चलिया।[1] समत १८६८ रा वैसाख मे सिंघवी इदरराजजी रा मा मरगया तिणा लारै खांड रा नीरा नै मैहर सारणी कीवी। ३६ छतीस पूण जीमाई।

समत १८६८ लागौ। असाढ मे बरखा चोखी हुई। पछै साखां तीड खाये गयौ।[2] भाग सभागी जमानो हुवो।[3] जोधपुर मैं पको नव दस सेर रौ धान विकीयौ।

नवाव मीरखाजी मेमदसा ढुढाड मे तैसील कर नरुकां रै गांव लावै[1] फौज लगाई। लावौ छूटौ नही। लावा रा नरुका झगडा मे तीखा रह्या।[4]

मेडता री हाकमी भंडारी मानमल रै रही सौ पाछी पचोली गोपाल-दास रै हुई।

समत १८६९ लागी सौ मुलक म मेह हूवौ नही। पवन घणौ वाजीयौ समत मितसटो अटमटौ तौ लगता काळ हा नै तीजो समत गुणतरी माहा भया-नख काळ पडीयौ। लोक माळवै गयौ। हजारा आदमी भूखा मरता मर गया। जौधपुर मे धान रुपीया १) रौ तीन सेर विकीयौ।[5]

वडलू रौ ठाकुर सादूळसिंघजी चलियौ सो तीन सेर रा मूंग खरीद नै तीयो[5] कीयो। ईसो काळ कदेई पडियौ नही।

चडवाणी जोसी सिरीकिसन आप रा घर सू गोवा रीं थूली रदाय आपरी न्यात री लुगाया भूखा मरै तिकै जीमण जावती। धान मण पाच तथा सात लागतौ जाज माट[6] रोकड पिण देता।

सिंघवी इदरराजजी रै नै मूता अखेचन्दजी रै ही जौधपुर मे सदावरत थौ। मुलक रा काम मे मुकत्यार सिंघवी इदरराजजी देवनाथजी री आग्या सूं

---

१ ग गाव लावं।
२ ख. गरीब लोग भूखा मरता आपरा पेट रा टाबरा नुं वेचै पण लेवण वाळा नहीं।

---

1 काल कवलित हुआ। 2 टिड्डी दल फसल खा गया। 3 तकदीर के अनुसार जमाना हुआ। 4 युद्ध करने में तेज रहे। 5 मृत्यु के पश्चात तीसरे दिन किया जाने वाला क्रिया कर्म। 6 थोडे वहुत।

करै इंदरराजजी नु पांच बरस रा वचन री खातरी रा वचन श्री हजुर सु देव-नाथजी रा दिराया[१]।

आहोर ठाकुर आनाडसिंह पर महाराजा का कोप

आहोर रा ठाकुर आनाडसिंघजी रै नागोर रौ गाव बलायौ पटै हौ जठाग जाट मे किणी चोरी रौ इलजाम आयौ। सो जाट रै वदळै अनाडसिंघजी श्री हजुर रै पाट हाथ लगाय दीयौ। पछै उण जाट मे चोरी रौ मुदो सावत हुय गयौ।[1] सो झूठो पाट हाथ लगायौ तिण सू मरजी मे फरक पड गयौ। सो बेमरजी देखी तरै अनाडसिंघजी कोटे परा गया। उठे भालै जालमसिंघ पटो हजार ४००००) चालीस रौ लिख दीयो।[२]

इन्द्रराज द्वारा वित्तीय स्थिति सुधारने के लिये अभियान

सिंघवी इदरराजजी श्री हजुर सूं अरज कीवी कै रसाला रा लोक रै खरची री पूरी तगाई है नै श्री बाईजीसा री सगाई जैपुर करी जिणा रौ ब्याव[2] पिण करणौ है सो मरजी हुवै तौ मुलक मे तैसील करू।[3] श्री हजूर फुरमायौ कै थारै तुलै ज्यू कर। तरै इदरराजजी भादवा मे सारो राज रो रिसालो नें ३६ छतीस कारखाना ले कूच कीयौ। आसोप डेरा हुवा। ठाकुर गोठ चोखी कीवी। आसोप रा ठाकुर केसरीसिंघजी नू साथै ले नागौरवाटी मे गया गाव माभी रा डेरा पचोळी गोपाळदास कना सू रुपीया हजार २०००० वीस लीया। नागोर परगना सु तैसील कर मेडता रा परगना मे गया। रीया ठाकुर विडद-सिंघजी आगीवाण होय नै मेडता री हाकमी भडारी मानमल नू दिराई। पचोळी गोपाळदास नू गाव सादडी वगेरे गाव ३० तीस री हवालो दीयौ। मेडतावाटी मे हजार री रेख लारै रुपीया ५००) पांच सौ लीया। परबतसर वाटी मे हजार री रेख लारै रुपीया ३००) तोन सौ लीया। नै बेरा वाव घाली[4] सो वेरा दीठ रुपीया ७०) सितर लीया नै सोजत जैतारण रा परगना मे हजार री रेख लारै रुपीया ३००) तीन सौ[३] लीया। दस रुपीया १०) घर वाव भराई।

---

१ ग. दूजो कोई अरज करण पावै नही तिणरो दोढी ऊपर हेलो पाडीज गयौ तिण सूं सिरदार मुसदी वगेरै सह बेराजी (अधिक)।

२. वडलू रौ ठाकर कूपावत सादूळसिंह मर गयौ (अधिक)।

३ ग घर वाव ग (अधिक)।

---

1 चोरी साबित हो गई। 2 शादी।

3 प्रत्येक तहसील से अतिरिक्त रुपया वसूल करना।

4 प्रत्येक कुए के मालिक से रुपये वसूल किये।

भराई।[1] नीबाज रा मुरतारणसिंघजी नू पिंडा बुलाय नै तीन सौ रुपीया ३००)रेख लार नै दस रुपीया घर वाव भराय लीवी। रायपुर राम वगेरै सारा कनै इणीज मूजब भराय लीया। सोभत मे रेख वाव गुलराजजी भराई। गौढवाड मे फतै-राजजी भराई। जाळोरी मे भडारी पिरथीराजजी भराई। परवतसर हाकम सिंघवी बाहादरमलजी नू मेलीया। मारोठ सिंघवी किलाणमल नु मेलीयौ। जैतारण हाकम मूता सुरजमलजी रै थी। गुणतरा काळ मे राज रो रिसालो तबेलौ फीलखा नो दोढी रौ लोक वगेरै नू सिघवी इदरराजजी वारै लेजाय निभाय लीया।[1] मुलक मे तैसील चोखी कीवी। दोय साखीया[2] गाव हा जिण सू तो रुपीया मुंहगो भाव हो धान रौ जिण सू भरीज गया नै इक साखीया गाव हो जिके सू ना हुय गया। माहा वद ७ रौ सूरज परव[2] हो नै सोमोती व्रितीपात वहिध्रत वगेरै पांच परवीया रौ जोग्य हो सु इदरराजजी पुसकरजी गया। मारग मे चादावता रो गाव वसी आयौ तिण कनै रुपीया ५०००) पाच हजार लीया। इदरराजजी पुसकरजी मे पुन्य घणौ कीयौ।

जैपुर सू माहाराज जगतसिंघजी रौ खास रुकौ सिंघवी इंदरराजजी नै भडारी सिवचदजी नै बुलावण मुदे[3] आयौ जिण रा जवाव मे सिंघवी इदर-राजजी नै भडारी सिवचन्दजी जैपुर रा माहाराज नै पाछौ कागद लिखियौ जिणरी नकल—

"श्री जळंधरनाथजी"

'आखर माराज जगतसिंघजी का सगही इंदरराजजी वा सोचदजी थाकी अरजी आई सो मालूम हुई। सो अबै थे जरूर आण हाजर होला। घडी येक री ढील नही करोला। अठा की पकाई जाणोला म्हाको भरोसौ राखौला। देवीसिंघजी नै पाछा सू भेजा छा सौ जरूर आवोला।'

'स्वारूप श्री सरव ओपमा विराज मान राज राजैन्द्र माहाराजा धिराज माहाराजा श्री सवाई जगतसिंघजी हजूर सदा सेवग सिंघवी इदरराज भडारी सिवचद रौ मुजरौ मालम हुवै। अप्रंच खास रुको इनायत हुवौ सो माथै चढाय लीयौ। म्हानू उठे आवण रौ लिखीयो सु समाचार बारे दीनारामजी नू कया छै। सु अरज लिखसी। अरज माफक जावरी पुखतगी हुवा आवण री जेज न

१ ख परवतसर री हाकमी सिंघवी बादरमल रै हुई।
२ ग गिरण।

1 उनका निर्वाह करवा दिया। | 2 दो फसल वाले। | 3 बुलाने के आशय का।

हुसी । अठै हुकम श्री माहाराज रौ है । सेवगां ऊपर किरपा फुरमावै है जिण था विसैष फुरमाय खास परवाना इनायत करावसी ।'

समत १८६६ रा चैत सुद ७ आड़ी ओळ मे माहाराज जगतसिंघजी रा आखर छै । इदरराजजी सिवचदजी कागद लिखियो, ऊणहीज कागद रा सीराडा मे जगतसिघजी खास दसकतां पाछौ जाब लिख मेलीयौ ।[1] औ कागद सिंघवी इदरराजजी रा पौता पैमराजजी कनै विजनस हाजर छै ।

इंदरराज सिंघवी आउवा आसोप आदि का जयपुर जाना—

पछै सिंघवी इदरराजजी भडारी सिवचदजी जैपुर गया । आऊवा, आसोप, नींवाज रा सिरदार नै जोसी सिरीकिसनजी इदरराजजी रै साथे था । नै कुचामण रा ठाकुर सिवनाथसिंघजी मिसर सिवनारायण सामल जैपुर मे काम करता था ।

इदरराजजी जैपुर गया तरै पेसवाई मे मुसायब दरवाजा बारै सामा आया । नै माहाराज जगतसिंघजी असवारी कर श्री माहादेवजी रा मिंदर ताई सामा पधारीया । जैपुर मे इदरराजजी रौ घणो-कुरब-मुलायजो रयौ । समत १८६६ रा वैसाख मे जैपुर गया था सो समत १८७० रा भादवा ताई इदर-राजजी जैपुर रया । ब्यावा मुदे घणा दिन सलावा हुई । माहाराज जगतसिंघजी फुरमायौ कै म्हे जैपुर सु बारै पधारा तो मीरखाजी म्हाने पकड लेवै । तरै इदरराजजी अरज कीवी कै आप खुसी सूं पधारै, मीरखाजी कोई वात करै तो म्हारी जुमेदारी है । तरै समत १८७०-रा भादरवा सुद ८ नै सुद ६ रै सावा रा दुतरफा व्याव ठेहरीया । तिण री अरजी इदरराजजी री अठै आई । पचोळी गोपाळदासजी हस्ते व्याव री त्यारी हुई । मेडता री हाकमी गोपाळदासजी रै थी । आयसजी देवनाथजी अरज कर बीकानेर माहाराज सुरतसिंघजी रै नावै कुकुमपत्री री खलीतो लिखायौ । नै नागोर माहाराज सुरतसिंघजी री मुलाकात ठेहराई ।

महाराज मानसिंह व जगतसिंह का विवाह के लिये रूपनगर की ओर प्रस्थान—

अठासु श्री हजूर नागोर रै रस्तै कूच कीयो जनाना समेत नागोर रा मेला में दाखल हुवा । बीकानेर रा माहाराज सुरतसिंघजी नागोर

---

१ ग तिण री नकल इण भात—सिंघवीजी इदरराजजी वा सिवचदजी थाकी अरजी आई सो मालूम हुई सो अवै थे जरूर आण हाजर हुवोला । घडी एक री ढील नही करौला । मठा की पक्काई जाणोला । देवीसिंघजी नै पाछा सू भेजा छा मो जरूर आवोला । (अधिक)

आया ।[१] मुलाखात कर पाछा बीकानेर गया नैं श्री हजूर नागोर सू कूच कर किसनगढ इलाके रूपनगर डेरा कीया । सिरदार जान[1] मे मारा साथै हा । अेक पोहकरण बिना मोकळी फौज थी जान री त्यारी घणी आछी हुई । किसनगढ माहाराज किलाणसिंघजी जान मे था नैं अजमेरा रा सिरदार मसूदे रावजी देवीसिंघजी वगेरै मारा जान मे साथै था ।

जैंपुर माहाराज जगतसिंघजी रा डेरा जैंपुर इलाके रै गांव मरवे हुवा रूपनगर मरवे तीन कोस री छैती । दोनू फौजा रो लोक हजार चालीस तथा पचास रै आसरै थौ । पैंले दिन भादवा सुद ८ आठम रा सावा तो श्री हजूर कछवाईजी नैं परणीजीया दूजै दिन भादरवा सुद ९ नम रै सावा श्री सिरेकंवर बाईजी रौ व्याव माहाराज श्री जगतसिंघजी सू हुवौ । नम रै दिन बिरखा माव देंस[2] घणी भारी हुई ।

सदामंद सरस्ते सिरै दरबार हुवौ आपणा सिरदारां नैं किसनगढ रा सिरदार जीवणी मिसल बैठा । जैंपुर रा सिरदार डावी मिसल मे बैठा । माहाराज श्रीमानसिंघजी रै डावी बाजू तौ माहाराज श्री जगतसिंघजी बैठा नैं जीवणी बाजू किसनगढ रा माहाराज बैठा ।[२] पछै पातीयो हूवौ ।[3] तीनूं माहाराज भेळा अरोगीया । किसनगढ माहाराज किलाणसिंघजी रै समरपण थौ तो पिण दारू मांस भेळौ अरोगीया ।

जैंपुर रा माहाराज श्री जगतसिंघजी साथै कवेसर पदमाकर थौ तिणसू चरचा करावण सुदै कविराज श्री बाकीदासजी नू जोधपुर सूं डाक में रूपनगर रा डेरा बुलाया । चरचा कराई । जैंपुर रा पदमाकर नू हराय दीयो कविराजजी बाकीदासजी नैं माहाराज श्री मानसिंघजी नैं जैंपुर रा माहाराज दोनू राजावा हाथी सिरपाव इनायत कीया सरस्ता मुजब दोय तरफा दायजा

---

१ ख जनाने सहित बडी त्यारी सू नागोर आया । दोनू मारावा रो मिलाप दस्तूर मुजब हो गयौ । दोनू राजावा रै मन रागाथी सो-मीठा चस्मा हो गया । गाव पाचू देवनायजी नू दियो जिणरी दस्तावेज पेला नहीं थो सो खास रुको वगेरै लिखावट वगेरै मजबूती कर बीकानेर पधार गया (अधिक) ।

२ ख श्री महाराजा मानसिंहजी बिराजिया । उमराव आदू आप आपरी जागा बैठा । (अधिक)

---

1 बरात । 2 पूरे देश मे । 3 भोजन की व्यवस्था हुई ।

दिरीजीया ।[1]

नवाब मीरखां द्वारा जगतसिंह को आश्वस्त करना—

नवाव मीरखाजी पिण रूपनगर आया था नै माहाराज जगतसिंघजी री खातर तसली मीरखाजी कनै सु हजूर कराई ।

रायपुर रा ठाकुर ऊरजनसिंघजी भादवा सुद ११ ईग्यारस रूपनगर रा डैरा चलिया तिण लारै ठाकुराणी साथै हा सो ऊठै हीज सत कीयौ ।

धौकलसिंह के पक्ष के सरदार जो जयपुर की फौज मे थे उन्हे माफी देकर कुछ पट्टे लिख दिये—

अजमेरे रा सिरदार आया था तिण नु सिरपाव हुवा । फितूर कानी रा सिरदार वगडी सिवेनाथसिंघजी, खीवाडै गजसिंघजी, वेराई जसवंतसिंघजी, करमसोत हरसोलाव जालमसिंघजी रा भाई सबलसिंघजी दोलतसिंघजी नै फेर हीं छोटी-मोटी आसामीया जैपुर री फोज मे आया था सो अेक हरसोलाव जालमसिंघ विना सारा नू इंदरराजजी हजूर मे अरज कर लगाय लीया । किणीक नै तौ आदो दूदो पटो लिख दीयौ किणीक नै रोजीनो कर दीयौ ।[1] चादावत बादरसिंघजी नै जैपुर री अफ सु गाव घाट, पनवाड, हरसोली वगेरै लाख रो पटो हौ तिण नै पिण देवनाथजी माहाराज री वचन दिराय हजुर रै पगा लगाया । ने बाहादरसिंघजी रा घोडा अेक सौ रोजीनदारा मे थाणै तालकै राखीया । धोरीमना रै थाणै राख्या । दोनू राजावा रै आपस मे घणौ राजीपौ रयौ ।[2] नै दोनू राजावा रा कूच हूवा । श्री बाईजीसा रै साथै सिंघवी मेगराजजी ने व्यास सिवदासजी भडारी सिवचदजी नै सिरदारा री आसामीया

१ ख नवाव मीरखा बाईजीसा रै हथलेवै मे एक हजार असरफिया घाली । जैपुर रै मुलक रो पटो नवाब रै कब्जै मे थो सो बाईजी रै हथलेवा मे घाल दियो । अजमेर रा सिरदार आया थो तिका नै सिरपाव दिरीजीया फितूर पथ रा सिरदार जाय जयपुर रह्या सो जगतसिंहजी रै साथे आया सो जगतसिंहजी रा केणा सू हरसोलाव रा जालमसिंह सिवाय सारा रा मुजरा इन्दरराजजी कराया । सिरपाव दिया (अधिक) ।

1 प्रतिदिन के खर्च के रुपये बाध दिये । 2 खूब स्नेह रहा ।

नू मेलीया। नै कुचामण रा ठाकुर सिवनाथसिघजी पेहला ही जैपुर रा महाराज कनै मुसायबी करता हा सो ऊणा नै ही पाछा मेलीया।

श्री बाईजीसा रै व्याव रा नोता रा हजार अेक री रेख लार रुपीया चालीस ४०) लीया। नै १०) दस रुपीया घर बाब लीवो।

कछवाईजीसा री जात देण सारु जाळौर जलंधरनाथजी रै मिंदर हजूर पधारीया।

लोढो किलाणमलजी समत १८६९ मे चल गयो। तिण रा भाई तेजमल नू पाछी राव पदवी हुई।

सराई दोडिया सी जाळौर रो गाव गोळ ओपनाथजी रै पटै हो, जठा री साढीया[1] ले गया। सो इदरराजजी जोधपुर सू बाहार चढिया। गाव घोरीमनै जाय थाणौ घालीयौ। छोटा भाई गुलराजजी नै चादावत बाहादरसिघजी नै घोरीमनै राख इदरराजजी पाछा आया।

बडलू रा ठाकुर सादूलसिघजी गुणतरा मे चला गया था सो[2] आसोप रा ठाकुर केसरीसिघजी अरज कर पटौ सारौ आसोप हैटै घाल लीयौ सादूलसिघजी रै खोळै किणी नू बेठायो नही।

दिवाणगी बगैसी जाळौर, गोढवाड, सोभत, जैतारण सिव री हाकमीया इदरराजजी रै जुमै। मुहता अखैचंदजी बोपार करै नै अेक पाली री हाकमी भतीज फतैचद रै नावै।[3]

पोहोकरण रा सालमसिघजी रा छोटा भाई हिमतसिघजी जमीतलै। घोरीमनै सिघवी गुलराजजी कनै हाजर हूवा।[4]

---

१ ख पाच सौ (अधिक)।

२ ख. तिणरै लारै खोळै बैसाणियो नही (अधिक)।

३ ख और मूतो अखैचद वाणियो वजायो मुसाहिब। वोपार करै घर मे खिजमत लेवै नहीं सिरफ पाली री हाकमी भतीज फतैचद रै नावै सिवाय हजूर धामी पण खिजमत लीवी नही, कारण वौपार मे घणौ फायदो। मामलत करै रुपियौ कठेई अटकै नही जवरी सू उगावै। और सवत १८७० रा सीयाळा मे जैपर कमछवाईजी परणिया था तिणरी जात देण नै जाळोर पधारिया पाछा वेगा हीज जात देय पधारिया।

४ और श्री बाईजी रा व्याव रौ नेतौ रेख एक हजार लार २००) पडिया नै मुसदिया कनां सू पिण लिरीजियौ।

सिरोही के राव उदैभांण का गंगाजी जाते समय पकड़ना—

समत १८६० तथा ६१ में सीरोई री राव दवडौ उदैभाण श्री गगाजी वगैरै जात्रा कर पाछा सीरोही जावता पाली डेरा कीया। तिण री खबर जोधपुर लागी तरै परदेसी छोटेखा कलदरखा वगैरै २०० घोडा दोय सौ लेनै चढिया। सो राव नू पकड लाया। माहलावाग मे अटकाय दीयौ[१] नै रुपीया पचास तथा साठ हजार रौ रुकौ लिखाय छोड दीयौ।

समत १८७१ लागौ विरखा चोखी हुई पिण ऊंदरा घणा हुवा तिण सू खेता मे विगाड घणौ हूवौ। तिण सू जमानो खासो भलौ हूवौ।[२]

अखैचद और इन्द्रराज के बीच विद्वेष तेजी पर—

मुहता अखेचदजी रै सिंघवी इदरराजजी सु अवणत[1] थी सो जाणीयौ देवनाथजी कनै सू हजूर नै अग्या कराय नै विगाड़ देसी।[2] सो इण डर स अखैचदजी निज मिदर सरणे जाय वैठा ने मोहोणोत ग्यानमलजी री सला सू उठे वैठा किरियावा करै।[3] आसोज रै महीनै इदरराजजी श्री हजूर मे अरज करी कै अखैचद निज मिदर बैठो किरियावा करै है रोज रौ हरेक काम सुवरतौ देखै जिको फसाय देवै। सो श्री खावद म्हारै कनै काम करावण री मरजी हूवै तौ मरजी कानी रौ ऊपर रया सू[4] काम होसी। तरै फुरमायौ कै म्हारै कानी सू तौ थारै ऊपर इकत्यारी है। थारी सला हुवै ज्यू नै फायदौ दीसै ज्यू सरवो सरब काम[5] कीया जा। अखैचंद किरियावा करै है सो म्हासू ही मालम है। पिण किरिया कर नै अदबे[6] तौ म्हासू मालम करावसी। म्हारो हुकम होसी ज्यू हुसी। हुकम देणौ तो म्हारै ईकत्यार हैं, तू कुसी राख काम करै है ज्यू कीया जा। इण तरै पूरी खातरी फुरमाई।[7]

---

१ ख रसोडा सू थाल गयौ, ईजत सू रह्यौ पछै कबूलायत ६० हजार री नै १० हजार छूट ५० हजार रौ रुकौ २ महीना रै करार रौ लिखाय लियौ। पछै राव कह्यौ म्हारो महाराजाजी सू मुजरो करावो। जद मुजरो हुवै। पछै राव अरज करी कै आप जद सू गढ चढिया उण दिन सू सिरोही लारै क्यू पडिया इसो काई गुनो कियो। बरस एक मे २४ हजार रुपिया दिया जासू सो लिखाव लिखाय लीवो सिरपाव दे विदा कियो (अधिक)।
२ खेती रा लोका ऊदरियो जमानो नाम दियौ (अधिक)।

---

1 अनवन। 2. मुझे नुकसान पहुचायेगा। 3 चुगलियें करता है। 4. आपकी कृपा रहने से ही। 5 सभी प्रकार का कार्य। 6 कार्य रूप मे परिणत करे। 7 पूरी तरह से आश्वस्त किया।

काम सिंघवीजी कियां गया । न्याहन अखैचन्दजी ग्यांनमलजी नै नीवाज, ग्रासोप वगेरै कितराक मोटोडा सिरदारा सू गट पट[1] सिंघवीजी नु काम डिगावण री कीवी ।[2] जिका परोखत[3] श्री हजूर सू परवानगी मालम हुई । सिंघवीजी पिण मान्नस कीवी । जद श्री हजूर मु दोढी ऊपर चवडै पोम वदी हुकम मारै महीनै म्हेलीयो कै राज रो काम सरब्रोसरब इदरराजजी गुलराज-जी करसी । कोई परवारी ग्ररज राजरा काम री इंणा विना कीजी करावजी मती । कोई ग्ररज करसी करावसी तौ मरजी मे नही ग्रावसी । इण तरै वो सवदी हुकम हुवौ[4] । तरै सिंघवीजी काम खुल नै करण लागा । जद वेंचावगै वाळा[5] हा सो सारा सको खायौ ।[6] मोहोणोत ग्यानमलजी पिण सको खाय निज मिंदर ग्रखेचदजी सामल जाय वैठा । मूता सुरजमलजी साहबचदजी वगेरै पिण हवेलीया रहै । वगत सर[7] गढ ऊपर जाय ग्रावै । हजुर री मोसर[8] सिंघवी जी ग्ररज करावै जद काम काज रा मुदा सु इणा नै मोसर हुवै । दूजा किणी नु हुवै नही ।[9] यू समत १८७१ रा वैसाख ताई काम वडा ठाकौटा सू इदर-राजजी कीयौ ।

मैमदसा का खरची के रुपयों की वसूली के लिये आना—

पछै वैसाख मे नवाव मैमदसाजी री फौज खरची मुदै ग्राई । मेडतै डेरा कीया । सिंघवीजी सामा ऊकील मेलीया-मुलक रा गाव खराब कीजो मती थांरी खरची रो तोड काढ देसा ।[10] पिण मीरखांजी ग्रर मेमदसाजी रै तौ ग्रौहीज सरम्तो हौ[11] सो वरसा-वरस[12] ऊनालू साख ऊपर तौ मैमदसाजी ग्रावतौ सो गाव विगाडता नै सावणू साख मे मीरखांजी ग्रावता सो ऊवै ही गाव विगा-डता । पिण इदरराजजी जिसा सकरड़[13] कामैती हा सौ लाखा रुपीया देणा कर सदाय देता नै पाछौ कूच कराय देता । सौ समत १८७१ रा मे ही मैमद-साजी ग्राया सौ मेडतै डेरा कर मैडतौ लूंट नै तैस मैस कर दीयौ ।[14]

हाकमी पचोळी गोपाळदास रै थी सौ गोपाळदासजी तौ जोधपुर हा नै कांम करता काको ग्रभैमल हो सो नब्रावा रा डेरा हूवा नै नवाव रो वदोवस्त सैर मे हूण री निजर ग्राई तरै चढ नै जोधपुर उरौ ग्रायौ । मू ढा ग्रागे कामे-

---

1. गुप्त विचार विमर्श । 2 सिंघवी से काम हटा देने के लिये किया । 3 प्रत्यक्ष रूप से । 4 जवानी हुक्म हुग्रा । 5 उसे न चाहने वाले । 6. शकित हुए । 7 निश्चित समय के ग्रनुसार । 8 मौका, ग्रवसर । 9. ग्रौर किसी को ग्रवसर नही मिलता । 10 तुम्हारी खरची के रुपयो की व्यवस्था जैसे तैसे कर दी जायगी । 11. उनका तो यही ढग था । 12 प्रत्येक वर्ष । 13 मजबूत, कुशल । 14. विल्कुल वरवाद कर दिया ।

हीया में पोहोकरणो बिरांमण सेवग कालूरांम थो सो ऊनालू साख री तैसील करण मुदै फोजवदी कर परगना मे हो सो थावळै किलो जाण थावळै जाय डेरो कीयो । नबाब री फौज री कई[1] परगना मे जावै जिण सु चापटा[2] करबो करै ।

नवाब मेडते तातेड मेहकरण नु कांम करतां राख नै फौज री कूच कर जोधपुर आयो सेखावतजी रै तळाव डेरा कीया । सिघवीजी वात विसटाळो कर रुपीया तीन लाख ३०००००) खरची रा देणा कीया । नबाब रौ राजोपौ कीयौ ने श्री हजूर मे मुजरौ करायौ । रजाबद पाछौ कूच करायौ । ३०००००) तीन लाख रुपीया री साद मे सवा लाख १२५०००) रुपिया तो पचोळी गोपाळदासजी सु सदाया । मेडता री हाकमी चातरो[3] सायर यारै थी । जिण सु परगना रो रेख विराड[1] घर गिणती पेटै तथा हवालौ गाव अणदपुर भावी ४००००) चालीस हजार रा गाव फेर गोपाळदासजी तालकै कर दीया । नै ८००००) असी हजार सिघवी बाहादरमल रै परवतसर री हाकमी ही तिण री तैसील माथै सदाया । नै लाख रुपिया री फेर सिघवीजी दूजी जमी ऊपर राजा राम किसनजी[2] सू सदाया ने फोज पाच छव हजार हीज थी जिण पू नवाब मवाय जोर दीयो नही ।[4] कूच कर ढूढाड मे परौ गयौ ।

सिघवीजी निराला हुय[5] समत १८७२ रा सावण तांई काम कीयौ । आयसजी देवनाथजी सिघवी इदरराजजी काम करै । दूजा किणी रौ वटै नही ।[6] जिण सू सिरदार मुतसदी सारा नाराज । आसोप ठाकुर केसरीसिंघजी रौ सिको पखाल भरण नू माहामिंदर गयौ थौ सो झालरा ऊपर देवनाथजी रा चाकर सु लडाई हुई सो सिका नू कूटियौ । नै गैर जबा बोलीयौ । तरै सिके आय ठाकुरा नै कयौ सो ठाकुर रूबर कीयौ सो इण ताछ आयसजी लोका नै खारा लागण लागा ।

मीरखा का खरची उगाहने के लिये सेना सहित जोधपुर आना

समत १८७२ लागो जमानो सरासरी हुग्रो नै भादरवा में नबाब मीरखाजी पिडां फौज हजार १५००० पनरै लेनै आण पडीयौ । मारग मे आवता मुलक लूटियौ तो नही नै जामदारीया कर नै गाव वर गाव रुपीया

१ ग वाव । २ ग मिरीकिमन ।

1 लूट के लिये जाने वाली फौज की टुकडी । 2 लूटपाट । 3 वह स्थान जहा कर वसूल किया जाता था । 4 इससे अधिक प्राप्त करने के लिये बाध्य नही किया । 5 निश्चित होकर । 6 और किसी की चलती नही ।

ठेहरावतो आयो । नवाब डेरा सेखावतजी रै तळाव कीया ।

अखैचदजी ग्यानमलजी जाणीयौ—मेमदसा नै तौ थोडा रुपीया देनै इन्दरराजजी काढ दीयौ पिण औतौ सावठा मागसी सो रुपीया कठा सु लावसी । हमकै दाव आयौ आजाण सिरदारा हसतै नवाब नू केवायौ के श्री हजुर सायब तौ मांसर ही दैवै नही देवनाथजी इन्दरराजी जोर दै मरजी ऊप्रायत काम करै है आप श्रीजी सायवा रा भाई हौ सो औ सकट मरजी कानी रौ आप सु कटसी सिरदारा नवाब नू कयौ क देवनाथजी इन्दरराजजी नू आप चूक कराय काडौ[1] तो अखेचन्दजी रौ काम मै पेच पड जावी ।[2] तौ आपरी खरची हा मन चाही देसा । तरै मीरखाजी देवनाथजी इदरराजजी नू चूक करण री विचार कीयौ । अर सिघवीजी नू कैवायौ कै हमारी खरची चुकाय देवौ । सिघवीजी नू अखैचदजी री सटपट री खबर पड गई ।[1] सो सिघवीजी तळैटी जावै नही । सास्ता गढ ऊपर रहे ।[3] हजूर मीरखाजी री चाकरी रौ पूरौ ल्याज राखे । पिण लाखा रुपीआ मागै सो कठा सू लावै । देवनाथजी इदरराजजी जाणीयो कै हमको पेच दुसमणा रा सिखावणा सू भारी है सो हर नेत कर[4] रुपीया नै तोड काढ कूच कराय देवा तौ ठीक है । पिण दोनू जणा रौ वस पौंचीयौ नही ।

देवनाथ व इन्द्रराज को मारने का षड़्यंत्र बना—

न्याहत सिरदारा री नै अखैचद ग्यानमल री हमगिरी सू नवाव आप री फौज रा कपताना कुमेदाना सू सला कीवी कै देवनाथजी इदरराजजी तौ तळेटी आवै नही सो थे धगाई पाच पचीस भेळा हुय गढ ऊपर जाय दोना नै चूक करौ तौ अखैचद खरची चुकाय देवै । जद पठाण कुतबदीखा वगेरै जणा २७ सताईस फोज मे धगाई हा टाळवा[5] जिणा नवाब नै कयौ म्हे ओ काम

---

१ ख ख्यात मे लिखा है कि मुसलमान लोग ब्राह्मण की एक लडकी को उडाकर लेगये इसे इन्दरराज ने बहुत बुरा माना और उस मुसलमान को हाथी के पैर के बधवाकर मरवा डाला । इस घटना मे मीरखा के साथी और उत्तेजित हो गये और रकम का तकाजा जोरो से करने लगे । परिस्थिति मे अधिक तनाव बढता देख श्री हजूर खुद तलेटी के महलो में पधारे । मीरखा को बुलवाया वह 500 पठानो सहित मिलने आया, सलाम की और फिर महला बाग मे दोनो की मुलाकात की जिसमे मीरखा सिस्टाचार से पेश आया पर उसने अपनी रकम का तकाजा पूरी तरह किया । हजूर ने रकम जल्दी चुकाने का आश्वासन दिया (पृ 52-53) ।

---

1 धोखे से मरवा डालो । 2 काम अखैचद के हाथ लग जावे । 3 सदा गढ पर ही रहते हैं । 4 हर प्रकार की अटकल लगाकर । 5 छटे हुए ।

करसां । सो समत १८७२ रा आसोज सुद ७ रात रा २७ सताईस जणा मरण मतै री खैरायत वाट[1] आसोज सुद ८ दिन ऊगै फौज माह सू गढ ऊपर आया । करावीणो[2] भरीयोडी सावधान हुवोड। । आगें खावखा मे आयसजी नै सिववीजी नै सिंघवीजी रौ कामेती मोदी मूलचद सला करता हा । नै श्री हजुर मोतीमैल मे वीराजीया हा । वनै व्यास चत्रभुज नै दूजा ही छूट नाळा हाजर हा । पठाण खीवखा मे आयसजी सिंघवीजी रै चोफेर जाय वैठा आयसजी सिंघवीजी पटाणा नू कह्यो कै था आया पैहला ही खरची रौ तोड विचार लीयौ है सो श्री हजुर मे मालम कर पाछा आवा । यू कहै मोतीमैल मे जावण लागा सो जावण दीना नही नै खावखा री वारली खिडकी रो आडौ दे दीनौ नै पूछै करा-वीणो छोडी[1] सो आयमजी देवनाथ जी सिंघवीजी इदरराजजी नू मार नाखिया । इदरराजजी रौ कामेती मोदी मूलचंद रै ही लागी सो घरे आय नै मूवौ । नै तिवरी रौ प्रोहित गुमानसिंघ मारीजियौ । भारावरदार खावखा रा झरोखा कानी सू दोढी कानी कूद पडियो तिण रै लागी करावीणा छूटी तरै व्यास चुतरभुज मोतीमेल री खिडकी रौ आडौ जड दीयौ ।[२] श्री हजुर सू पूछीयो काई हूवौ–तरै व्यास चुतरभुजजी अरज करी चूक हूवौ । दौलतखाना मे हाकौ हुवौ । दोढी नै सूरजपोल मगळ कर दीवी ।[3] पोळा सारी मगळ कर दीवी ।

श्री हजुर फुरमायौ कै खावखा रै डागळै सावठौ लोक चढाय छात फोड पठाणा नै मार नाखौ जद हजूर कनै हाजर हा जिणा अरज करी कै सेहेर लूटीज जासी । हजूर फुरमायौ सेहेर भलाई लूटीजौ पिण इणा हराम खोर नै तौ मार नाखौ । नबाव मीरखा फौज ले चढ ऊभौ रयौ । नै आसोप नीवाज वगैरै सिरदारा नै अखेचद नू आदमी मेल केवायौ कै हमारा पठाण जो मारीया गया तौ था सू समज लेसू नै सेहेर लूट लेसू ।

तरै सिरदार गढ ऊपर आया । अखेचदजी नू निज मिंदर सू गढ ऊपर बुलाया । सेठ राजाराम नै जोसी सिरीकिसन नू गढ माथै बुलाया । नै कयौ–राज री नै मुलक री बोरगत रा मालक थे हौ सो नवाव रा रुपीया साद कूच करावौ । नही तौ थारे गैर फायदो हुसी । जद अखैचदजी बात नू समज लीनी ।[4] कै थेट सु खोटा म्हैं गू थीया है सो हमे नटिया काई हुवै ।[5] कोई तीजी

---

१ ग झोक दीनी ।

२ ग दरजी चोला रौ भाई सिवजी मारीजियौ ।

---

1. अन्तिम समय का दान पुण्य करके । 2. एक प्रकार की बन्दूक । 3 सूरज पोल का दरवाजा बद कर दिया गया । 4 अखैचन्द परिस्थिति को समझ गया ।
5 अब मना करने से क्या होगा ।

हुवे ।[1] जद सिरदारा नु कह्यो थे नवाब री ठैराव करमो जिण मे आदा रुपीया तो हू साद लेसू नै आदा सेठजी नै जोसी जी सु सदावो । जद सेठजी जोसीजी ही हावारो सिरदारा कनै भर लीयो । तरै सिरदारा आपरा कामेतीया नै नवाब कनै फौज मे मेल नवाब रा मुन्शी दाताराम हस्ते वात ठैहराय रुपीया साढा नव लाख देणा कीया । पूरा पाच लाख तो अखेचदजी मादीया नै पूरा पाच लाख सेठजी जोसीजी[१] सादीया । पठाणा नु खावखा माह सु सावत काढ नै फौज मे कुसले[2] पोंछावण रो वचन कर लीयो ।

पछै सिरदारा हजूर मे अरज कराई नै देवनाथजी रा छोटा भाई भीवनाथजी नै सिरदारा केवायों कै थानै ही तुरक मार नाखसी जीवता रैह्सो नो देवनाथजी री अेवज मे मुसायबी थे करसो सो हजुर मे अरज पठाणां नै नहीं मारण री थें करावो । तरै माहामिंदर सू भीवनाथजी अरज कराई । जद हजुर हांकारो भरीयो । तरै पठाणा नु खावखा रै मैल माह सूं काढ नै सिरदारा मीरखाजी री फोज मे पुगाय दीया ।

आयसजी नू गढ उपर जै मिंदर कनै गऊखानो हो जठै समाव दीवी । सिघवी इदरराजजी नू सवी पोळा उतार[3] रासोळाई उपर दाग दीरायो । इदर-राजजी कनै ही मोदी मूलचद नू दाग दिरायो ।

आसोज सुद ८ आठम पोर रात गई जठा तांई गोरमो[4] रयो दिन तीन ताई सैहर रा दरवाजा मगळ रया[5] दमरावा[6] नूं रावण मारण री दसतूर दर-वाजा मगळ थका कीयो । श्री रामचन्दरजी री असवारी दरवाजा ताई पधारी । वारै पधारीया नही । रुपीया साढा नव लाख ले मीरखा नो कूच कीयो सो हूढाड मे गयो । नै मीरखा चढियो तरै सिरदारा मुलाखात री अरज कराई तरै फुरमायो म्हे तो इण कुतैखा रो मू ढो देखा नही ।

राज्य कार्य मूहता अखैचंद के हाथ में आना—

काम री मालकी आसोप नीबाज, कटालीयो, आऊवो, चडावळ वगेरां री सल्लासूं मूंता अखेचद री ठैरी दीवाणगी खालसै । नै काम अखैचद करै । नगसीगिरी रो काम भडारी चुतरभुज नै सीरदारा भोळायो । श्री हजूर चुपका होय[7] वीराज गया किणी काम री अरज करावै तो पाछो क्यू ही जवाब फुरमावै नही ।

---

१ ग श्री रामजी राजारामजी ।

---

1 कोई और विपदा आएगी । 2 सकुशल 3. मुख्य द्वार से ले जाकर । 4 अशान्ति
5 शहर पना के दरवाजे बंद रहे । 6 दशहरा । 7 शान्त होकर ।

गुलराजजी फौज लीया सोभत कानी हा सो आ वात सुणी तरै राज रौ रसालौ कन हौ सो लेनै कोट रै ढाणै परा गया। सिघवीजी रा बावस्ता[1] सैहर मे हा सो छिप गया मोदी मूलचदजी हस्तै लाख रूपीया रौ हवालौ हो जमा सावठी पोतै भेळी हूवोड़ी थी सो मूलचदजी रा भाई बेटा कनै पौकरणा बीरामण दोय तीन हा तिके थेलीया उचकाय सदरा हुय गया।

सिंघवी जोरावरमलजी रा वेटा सिंभूमलजी आऊवे वगेरै सरणै रहता था तिणा नै अखैचदजी केवायौ कै मोरखाजी री खरचो रा रूपीया मे सवा लाख री मदत करौ तौ मुलक मे पाछा वाड देऊ नै गौढवाड री हाकमी दिराऊ। तरै सिंभूमलजी रूपीया सवा लाख १२५०००) देणा करनै गोढवाड री हाकमी लीवी। श्री हजुर आछी तरै जाणलीयौ कै अखैचन्द मोहोणोत ग्यानमल नै सिरदारा सामल होय आयसजी नू नै इदरराज नू चूक करायौ है। सो उण दिन सू हजूर पूरा कु द होय गया। मौसर देवै नही।

गुलराज की महाराजा से प्रार्थना तथा जोधपुर आना

पछै कोट रा ढाणा सू गुलराजजी अरज लिखी कै मरजी सवाय इदरराज काम कीयो हुवै नै मरजी रा विस्वा सू चूक हुवै जद तौ चाकर ने सजा मरजी हुई ज्यू दीवी। नै दुसमणा री घालमेल सू मरजी सवाय[2] काम हुवौ तौ दुसमणा सू समज सकू छू। नै मरजी मुजब राजरौ काम कर सकू छू। जद गोसे पाछौ फुरमावणौ हूवौ के हरामखोरा मरजी सवाय औ काम घालमेन कर करायौ है हमार माहारौ फुरमावणौ चलै जिसो वखत नही है तू थारा पाण[3] सूं हाजर हुय सकै तौ थारा डील री रिछ्या[4] कर नै राज रा काम री वदगी कर सकै तो म्हे गाढा कुसी[5] हा।¹ इण ताछ इमारौ पोंछियो।[6] गुलराजजी कनै आपरी सिरकार रा दीसता आदमी भडारी पिरथीराज मानमल सिंघवी वादरमल वगेरै सारा परगना ऊपर हा जठा सू जाय कोट रै ढाणै सामल हुवा। सिरकार वणीयोडी नै पिडा रौ घर वणियोडौ[7] नै तालकदारा

---

१ ख अरजी वाच नै फडाय दीवी नै पाछौ फुरमायौ खिजमतदारा नु कै गुलराज नू केवायदो कै हाल थारौ आवणो ठीक नही। हमार पर चक्र सारो इर्या रौ है सो देवनाथ इन्द्रराज वाळी थामे होमी सो म्हारा बिन बुलाया अवे आवजो मती। अै समाचार गुलराज ने सवत 1872 रा पोस मे पोता।

---

1 कुटुम्ब के लोग। 2 आपकी इच्छा के विरूद्ध। 3. तुम्हारी अपनी ताकत के भरोसे। 4 रक्षा। 5 खूब प्रसन्न। 6 सकेत पहुचा। 7. समृद्ध हुआ।

रा घर वणियोडा सो कोट सू हजार २००० दोय घोडा बेलिया री भेळ कर[1] कूच कीयो सो समत १८७२ रा माह सुद ३ तीज आय राईकाबाग डेरा कीया। नै आऊवा रा ठाकुर बखतावरसिंघजी, नीबाज सुरताणसिंघजी, आसोप केसरीसिंघजी, चाडावळ विसनसिंघजी, कटाळीये सिभुसिंघजी, वगेरे सिरदार नै भडारी चतरभुज आप आपरी हवेलीया सू चढ चादपोळ दरवाजा बारै दिन ऊगता नीसरिया सो सूरसागर नै राजबाग बिचै जाजम बिछाय घडी अेक बैठा सारा भेळा हुय गया। तरै उठा सू चढ अखेराजजी रै तळाव कनै हुय चौपासणी गया। मुहती अखेचदजी गढ मे आतमारामजी री समाद[2] मे जाय बैठो।

दूजै दिन गुलराजजी मावटै साथ सू गढ ऊपर आया मालम हुई। खावखा मे हाजर हुवो। खातर फुरमाई कै इदरराजजी श्री आयसजी री माय दीयो। पूरी बदगी जाणजे, काम थारा पर कन्सू पिण थू घणी सावचेती सू कीजै।[3] म्हारा बस री बात है नहीं। तरै गुलराज अरज करी कै आप गाढी कुसी रखावै।[4] तरै उणी वखत दोढी दिवाणी मोर थी सो मंगाय नै फतैराज रै नाव दीवाणगो दीवी। नै बगसी वगेरे सारो काम इणा नू सू पियो।

पछै सारा सिरदार चोपासणी सू चढ चडावळ गया नै। चडावळ सीरा री गोठ री त्यारी हुई। सो सिघवी चैनकरण नू हुकम पोतो सो फौज लेनै चैनकरण चडावळ गयो। सो चडावळ चैनकरण नू आयो सुणीयो तरै सिरदार गोठ विना जीमीया मतै मतै[5] चढ नै आप आप रै ठिकाण गया।¹

संमत १८७२ रा चैतवद ११ इग्यारस व्यास चुतरभुज भाई कामीतीया सुधो कैद कीयो। झरणा मे अटकाय दीयो।[6]

मुलक रो काम गुलराज फतैराज करै। हाकमीया ओदा वगेरै सारा इणारै ईकत्यार। पिण श्री हजुर तो मोसर देवे नही। असवारी कठै ही करै नही। आयसजी इदरराजजी रा अपसोच[7] आगै किणी बात सू चित लगावै नही। तो पिण[8] गुलराज फतैराज तो काम कीयां ही जावै। इणा नू काम रै

१. ख ख्यात मे लिखा है कि सरदारो ने 10 मण का सीरा बनवाया था सो वे छोडकर भाग गये और वह सीरा चैनकरण की फौज के काम आया। हजूर को खबर मिली तो उन्होने कहा—चैनकरण सीरो मलो खुवायो (पृ 56B)।

1 साथियो को शामिल करके। 2 समाधी। 3 परन्तु पूरी सावधानी से कार्य करना। 4 आप पूरी तरह आश्वस्त रहे। 5 अपनी-अपनी सच्छा के अनुसार। 6 झरने के पास की जगह मे बंदी बनाया। 7 अफसोस। 8. फिर भी।

भदै कदै कदै मोसरहोजावै सौ इणा काका भतीजा काम चलायौ। जोधपुर मे तौ गुलराजजी काम करै अर बारै फतैराजजी फौजवदी लीयां परगना मे फिरै।[1] अखैचदजी सुरतनाथजी हस्तै भीवनाथजी सू ढब लगायौ।[1] मूता ऊतमचद माहामिंदर रा कामती नू फाडीयो। अर भीवनाथजी नू कैवायौ कै सिघवीया देवनाथजी नू राज रा काम मे अगवाणी कर मराया। गुलराजजी मरजी सवाय काम करै है नै मुलक खावै है। ने हजूर कीही फुरमावै नही। सो महाराज रै छत्रसिघजी सतरै बरस रा मोटीयार कवर है सो कवरजी रा हुकम सू नै भीवनाथजी री अग्या सू काम वरतसा।[2] भीवनाथजी माहाराज माहामिदर मे विराजिया कुसिया करबो करौ।[3] इण तरै ऊतमचद हस्तै भीवनाथजी सू पकी कीवी। जोसी मगदत इण ताछ रा सदेसा भुगतावै।[4]

छतरसिह को युवराज पदवी दिलवाने का षड्यंत्र

अखैचद आनमारामजी री समाद मे वेठै वेठै हीज कवरजी छत्रसिघजी सू अरज कराई कै श्री हजुर माहवा तौ जाळोर सू आद लै आज ताई वडा वडा राडा खेवीया है[5] पिण देवनाथजी मुवा पछै देवनाथजी रा करायोडा तत्र-मत्र[6] हा सू जिण नू क्रर हजुर नै बेहम रौ कारण हुय गयौ है। नै गुलराज मतै मालक हुय गयौ है। सो आप म्हारी सला मे आवौ तौ मालक कर देवा।[7] नै इणी ताछ कवरजी री मा श्रीचावड़ीजी नू समाचार कैवाया के अेक सिघवीयो बिना सारौ मुलक म्हारै सामल है सो श्री हजूर सायवा रौ जीव जोखौ तौ करा नही,[8] मोतीमैल मे विराजीया कुसीया करौ। नै राज रौ काम आपगी नै कवरजी री मालकी सू करसा। तरै कवरजी रै पिण राज करण री हर चाली।[9]

इण सला मे सामल जोसी मगदत, फतौ, व्यास विनोदीराम मुनसी जीतमल, खीची विहारीदास, धाधल मूळो, दानौ, जीयौ वगेरै था। मगदत ने

---

१ ख 22 परगना री खिजमत श्री गुलराज इकतियार पण श्री हजूर न तो बारै असवारी करै न सिरै दरबार करै। न गुलराज नै कदेई मौसर देवै ... सवत 1872 रा फागुण लगात 1873 ताई काम बराबर कियौ जिणमे किणी री काई वटियौ नही नै श्री हजूर असवारी एक दिन करी नही।

---

1 साठ गांठ की। 2 कार्य चलायेंगे। 3. आनन्द करते रहो। 4 इस प्रकार के सदेश ले जाता है। 5 बडे-बडे झगडो का सामना किया है। 6 तान्त्रिक क्रियाए। 7 आपको राज्य-कार्य का अधिकार दिलवादें। 8 महाराजा की जिन्दगी पर कोई आपत्ति नही आएगी। 9 इच्छा हुई।

विहारीदास भाराडा दे ने[1] किलादार देवराजोत नथकरण नूं पिण सामल लीधी। कवरजी सूं अरज मूने अर्भैचंद कराई के सारा नूं सामल लेलीया है। तरे कवरजी फुरमायो के सिरदारा नूं सामल लेवो। तरे अर्भैचंदजी अरज कराई के आऊवो, आसोप, नींबाज, चाढावळ वगेरे थेट सूं म्हारे सांमल है नें खेजडला रा भाटी म्हारे सामल है। जिके कहे छे सारा मुलक रा सिरदार जाणे नें म्हे जाणा। सो आप गाढी कुमी रखावो।[१]

समत १८७३ रा चैत मे अर्भैचंदजी ऊतमचंदजी साथे भीवनाथजी नूं केवायो के आप गढ ऊपर पधार नैं कवरजी नु थारे पधरावण री[2] हजूर में अरज करो। तरे उतमचन्दजी भीवनाथजी नूं ले गढ ऊपर आया। मोती मेहल मे बुलाया। श्री हजूर रे दोढ वरस री खिजमत वधियोडी थी। संपाडो कीया नूं ने कपडा धोवाया नूं कई महीना हुवा। इण तरे ब्रह्मरूप हुवोडा मोसर दीयो।[3] भीवनाथजी पेला तो देवनाथजी मारीया गया जिणरा रोदणा रोया।[4] पछे कयो के आपरो सरीर इण तरे हुय गयो, हमे जोगीया री प्रतपाळ कुण करसी।[5] पिण इतरा मे भूंडा मे भली है[6] सो छतरसिंघजी मोटीयार बेटा आपरे है, जिणा नैं काम भोळाय दिरावो। ने म्हारो ने लाडूनाथ रो हाथ पकडाय दिरावो तो आप रा गुरदुवारा री पाल[२] रह जाय। तरे हजूर फुरमायो के श्रीजी री ईछया है ने आप कीवी चावसो ज्यूं हूसी[7] पिण घणा पिस्तावसो[8] इतरो फुरमाय ने ब्रहमरूप देखाय गुम होय गया।[9] पछे भीवनाथजी ऊंची नीची वाता री अरजा कीवी पिण हजूर तो पाछा बोलिया ही नहीं। घडी दोय घडी बेठा रह्या तरे ऊतमचन्द भीवनाथजी नूं कह्यो—श्री हजुर रो जीव वस नही है सीख कर माहामिदर पधारीजे। तरे सीख कर माहामिदर पधारीया।

---

१ ख ख्यात मे लिखा है चउवाणी जोशी शिम्भूदत्त छतसिंह को पढाता था उसमे महाराज कुमार ने सलाह मागी तब उसने कहा कि ये सभी लोग राजनैतिक षड्यन्त्र मे उलझे हुए हैं और श्री हजूर इन पर बहुत नाराज हैं क्यो कि इन्होंने देवनाथ व इन्द्रराज को मरवाया था अत आपको हजूर स्वय फुरमावे तब जुगराज पदवी ग्रहण करना। (पृ 159 A)

२ ग पालण।

---

1 पूरा प्रयत्न करके, बहकाकर। 2 राज्य दरबार मे लाने की। 3 मिलने का मौका दिया। 4 अफसोस व्यक्त किया। 5 नाथो का पालन कौन करेगा। 6 इस खराब परिस्थिति मे इतनी बात तो ठीक है। 7 आप करना चाहते हो वैसा ही होगा। 8 परन्तु बहुत पछताओगे। 9 चुप हो गये।

ऊतमचन्द साथे सारी विगत अखेचन्दजी नू केवाई तरे अखेचन्दजी ऊतमचन्द नू पूछियौ के राजाजी किरिया करे ज्यू तरै है के कीकर है[1] ? तरै ऊतमचन्द कह्यौ-राजाजी मे तौ क्यू ही कळा कोय नही[2] थे ईतरी खेवट कर लीवी है[3] तौ हमे जेज[4] क्यू करौ हौ, मे थारै भेळा हा। फतैराजजी रा मेडतै डेरा। साथै जिनसी दानसिंघ मेमदसा अेवजअली रौ लोक नै भाद्राजण वगेरै इणा रै ढब-रा[5] सिरदार साथै। भाद्राजण वाळा रौ भरोसो जादा। जोधपुर मे गुलराजजी[1] सावठा आदम्या सू परभान रा गढ ऊपर आवै सो तीजा पौर तांई काम करै। अखेचदजी री रचना जाण लीवी।[6] जद गुलराजजी अरज कीवी सो हजूर तौ पाछौ क्यू ही फुरमायौ नहीं। हौणहार टळै नहीं। सो गुलराजजी जाणियौ किण रौ मगदूर है सो म्हनै हाथ घाळै।[7]

गुलराज सिंघवी की हत्या—

समत १८७३ रा बैसाख वद ३ तीज तीजा पौर[8] रा गढ ऊपर गया, हवेली सू निसरता सुकन फौरा हुवा, सुकनियां कह्यौ-आज मत पधारौ। तरै कयौ थोडी वार रहै नै पाछा ऊरा आवसा।[9] आदमी ३०० तीन सौ साथे नै गढ ऊपर गया। सो सिंघवीजी तौ माह गया नै आदमी सिणगार चौकी ढबिया।[10] नै अखेचदजी आतमारामजी री समाद मे हा जठा सूं किळैदार नथकरण देवराजोत नै केवायौ कै आज जिसौ लेह आवसी नही।[11] तरै नथकरणजी सारी पोळा रौ वदोवस्त करायौ नै पिंडा आदमी २०० दोय सौ सू माह आयौ। खीची विहारीदास, जोसी भगदत्त, व्यास विनोदीराम मुनमी जीतमल, धाधळ वगेरै माय हाईज। गुलराजजी खावखा मे गया, घडी दो अेक बैठा। किलेदारा अफ सु आदमी हौ जिण सिंघवीजी रौ हाथ पकडियौ नै कह्यौ-कैद रौ हुकम है। आ कहै कटारी ले लीवी दोढी मगळ कर दीवी।[12] सूरजपोळ मगल कर दीवी। किला रा आदमी नथकरणजी साथै हा जिणा नू तौ पैली दोढी मे ले लीया हा फकत सिंघवीजी रा आदमी हा जिणा नु ऊपर सू हेलौ पाडियौ[13] के गुलराजजी

१ ग फतैराज (अधिक)।

1 कार्य करने की कुछ क्षमता बची है या नही। 2 महाराजा मे अब किसी प्रकार की कार्य क्षमता नही रही। 3 इतना प्रयत्न कर लिया है। 4 विलब। 5. इनके पक्ष के। 6 अखैचद का षड्यत्र जान लिया। 7 किस की हिम्मत है सो मेरा अपमान करे या बदी बनावे। 8. तीसरे पहर। 9 थोडी देर ठहर कर वापस आजाऊगा। 10 बाकी आदमी शृगार चौकी के पास रुक गये। 11 आज जैसा अनुकूल अवसर आएगा नही। 12. ड्योढी का दरवाजा बद कर दिया। 13 ऊपर से आवाज लगाई।

नै कैद हुई, थे तळेटी जावौ ।[1] किणी वात री हुजत कर सौ तौ भूंडा दीस सी । इतरी राज सू कया पछे आसग पडी नही काई आदमी नीचे तळेटी गया । कितराक आदमी तौ सिघवीजी री हवेली गया नै कितराक आप आप रै गावा गया । सिघवीजी नू च्यार ४ घडी रात गया सलेम कोट मे बैठागीया नै रात आदी ढळिया[2] पछै कामेत्या सारा भेळा होय सला कर कवरजी सू अरज करी कै आ रकम जीवती राखण री नही,[3] आपरौ राज नही जमण देसी । तरै चूक करण रौ हुकम हूवौ[4] । म्हेमदखा री पलटण मे सिपाई दोय तीन जणा हा ज्या नै मेलीया । अे सलेम कोट मे गया । सिघवीजी नू नीद आई थी । चाकर पग दावतौ थो, सो सिपाई तरवारा काढीया गया चाकर देख नै सिघवीजी नै जगाया सो सिघवीजी वैठा हुता तरवारा वुही ।[5] सिघवीजी नै चूक हूवौ सो दोवड मे वाघ[6] गिडा कानी गुडाय दीया ।[7] दूजै दिन परभात रा सिघवी वखतावरमलजी[1] पिडा साथै जाय अखराजजी रै तळाव दाग दीयौ[8] ।

फतैराजजी रा डेरा मेडतै हा वावस्ता अठै हाजर हा सो छिप गया । फतैराजजी नू समाचार घरू पोहोता[9] । नै राज सू जिनसी दानसिघ नै हुकम पोहोतौ कै खरची रा वाहना सू फतैराज नू अटकाय दीजो[10] । दानसिंघ नै मीरखा रै ऊमरखा पिण फौज मे मामला री किस्त बाकी री लेखा वावत[11] उठै हौ । जिणा नै ठीक हुई[12] कै फतेराजजी रा घर मे समाचार गुलराजजी नै चूक हुवा रा आया है सो चढ नै जावै है । जद ऊमरखा आपरा आदम्यां री चौकी वेसाण दीवी नै अटकाय दीया । नै कह्यौ म्हारी खरची लावौ तौ जावण देवा । तरै जिनसी दानसिघ जाणीयौ म्है वदनाम केहण नै हुवा । फतैराजजी नू तौ ऊमर खा अटकाया हीज है । आ खवर भादराजण रा ठाकुर बखतावरसिघजी नै हुई तरा इणा आप रा डेरा रा सावठा आदमी[13] फतैराजजी री मदत मे त्यार कीया । मेडता री हाकमी पचोळी गोपाळदास रै ही सो इणा रै घर मे समाचार गुलराजजी नू चूक हूवा रौ आयौ । जद गोपाळदासजी पिडा उठै था सु जाणियौ गुलराजजी सू म्हारै इदरराजजी थका सू ले नै अणवणत है[14] पिण गुलराजजी जिसा मुसायव मारीया गया नै फतेराजजी फेर मारीया जावसी सो वात आछी

१ ग परतापमल (अधिक) ।

1. तुम लोग किले के नीचे जाओ । 2 आधीरात व्यतीत हो जाने पर । 3 यह व्यक्ति जिन्दा रखने लायक नहीं है । 4 मार डालने का हुकम हो गया । 5 बैठे होते समय तलवारें चली । 6 दो परत वाले कपडे मे लाश को बाध कर 7 किले के ऊपर से बाहर पत्थरो पर लुढका दिया । 8 दाह क्रिया करवाई । 9 निजी तौर पर समाचार मिले । 10 रोक लेना । 11 बकाया रकम का हिसाब करने के लिये । 12 मालुम पडी । 13 बाकी सख्या मे सिपाही । 14 अनबन है ।

नही । इणां नै पिंडां री मेनत सुं तथा रुपीयां पईसां रा पेच मे[1] आव्रतां ही काढा तो मोटो अैसान है । वखत री चाकरी जाणासी[2] । आ विचार कचेड़ी सू फोज मे गया । ऊमरखा सुं मिळिया । फतैराजजी नू पूछाई कै अै खरची री फहै छै आप काई विचारी है । जद फतैराजजी कह्यौ-जीव भलाई इणा रै लेणी हुवै तौ लेवौ[3] मो कनै खरची रो टको अेक देण नू नही । थे हर ऊपाव करता जीवता काढ सौ नी थारौ ईसान जाण सूं । जद गोपाळदासजी रुपीया ५०००) हजार ऊमरखा नै घर सूं देणा कर साद लीया । फतैराजजी दोळी[4] चौकी ऊमरखा री[1] थी सो उठाई । गोगाळदासजी फतेराजजी नू कयो गुलराजजी नू चूक हुवा रा समाचार आय गया है । हमे आप रै तुनै जठै जावौ ।

तरै फतेराजजी आपरी घर री साथ लेने भादराजण वाळा नू मांथे ले वहीर हुवा । भादराजण वाळा कह्यो-मरजी हुवै तो भादराजण लेजाऊ । जद फतेराजजी कह्यौ-कुचामण पौछाय दो । जद इणा कुचामण पौछाय दीया ने भाद्राजण वाळा प्रवारा घरे गया । भाद्राजण वाळा रो ने गोपाळदासजी रौ अेसान फतेराजजी जाणीयो । गुलराजजी रा वेटा फौजराजजी टावर ही था ।[5] सो फौजराजजी री मा फौजराजजी ने ले कुचामण गई । मेगराजजी, कुसल-राजजी कुचामण गया ने इणा रा बावस्ता मानमलजी, बाहादरमलजी वगेरे सारा ही कुचामण भेळा हुवा ।

गुलराजजो नू चुक हुवा पछे तीजे दिन अखेचंदजी भीवनाथजी नू गढ़ ऊपर बुलाया । सिरदार पिण गढ ऊपर आया । हजूर मे मौसर री अरज कराई । हजूर मन मे जाण लीनौ अे कवर ने वारे काढ़ण री अरज करसी[6] सो फुरमायो मे तो श्रीजी रो भजन करसा । कवर नू लावो सो जुगराज पदवी देवा । ।

कुवर छतरसिंह को युवराज–पदवी मिलना ।

सो पछे आखातीज री मुहरत थो सो समत १८७३ रा वैसाख सुद ३ तीज आखातीज[7] रे दिन श्री हजूर आप रा हाथ सू जुगराज पदवी री

१ ग. सात (अधिक) ।

1 रुपये के लोभ मे । 2 ऐसे अवसर पर की हुई सहायता को सदा मानेंगे। 3 मेरा प्राण ये लेना चाहें तो भले ही लें। 4 चारो तरफ। 5. नाबालिग था। 6 छत्रसिंह को युवराज पदवी देने की अर्ज करेंगे। 7 अक्षय तृतिया।

तिलक कर दीयो । रात पोहोर दोढ गया आसरे महाराज कंवर छतरसिंघजी ने जुगराज पदवी री सिरपाव पेहराय बारे पधरागा । तोपा री सिलक हुई ।

महाराजकवर छतरसिंघजी री जनम संमत १८५७ रा । दूजे दिन वैसाख सुद ४ चौथ नु बजार सिणगारीजियो । दिन दोय चढियां आसरे माहाराज कवार री असवारी लवाजमा सू हुई ।[1] ज्याना मे बीगजीया । खिड्कीया पागा जामो वगेरै सारी नवाजमा राजावा रै दस्तूर मुजब मुहटा आगे । खुले खासे बिराजीयोडा आयसजी देवनाथजी रा बेटा लाडूनाथजी साथे था । असवारी सिरे बाजार[2] पधारीया श्री बालकिसनजी महाराजा रा मिदर कने पधारीया । गुसाईजी ब्रजाधीसजी माहाराज मिंदर रै झरोखे ऊपर[3] बेठा था सो माहाराजकवार री असवारी पधारी तरै बेठा होय अेक हाथ सु आसीरवाद दीयो । महाराजकवार दोनू हाथ सु निमस्कार डडवत कर खासे मे बिराजीया कोवी । अर लंजामातर मिंदर कनै न्यासो टावीयो । पछै धीमे धीमे असवारी सिरै बजार होय माहामिदर दोफार आसरै दाखल हुवा । मिदर म भेट कर पछै लारले दिन रा[4] गोळ री घाटी हुय गढ दाखल हुवा । श्री हजुर कनै मुजरै पधारीया[1] श्री हजुर तो मुहडे सू बोल क्यू ही फुरमायो नहीं ।

काम मे मालकी मुख अखेचदजी री ।[5] दिवांणगी अखेचादजी रा बेटा लिखमीचादजी रै नावै र बगसी भडारी सिवचादजी रा बेटा अगरचादजी रै नावै हुई । किलेदारी देवराजोत नथकरण रै पेहला सु थी । बेटो गुमानीराम व्यास विनोदीराम री माहाराज कवार री छूट मे ।[6] कोटवाळी व्यास विनोदीराम रै ईज पैहला सू थी । रसोडा री दरोगाई धाधल ऊदेरामजी गोरधन रै थी सो इणा नू तो सीख दीवी ने धाधळ मूळजी, दानजी नू दीवी । ने गाव केरु पटै दीयो । रसोडा री मुसरफी जोसी सगदत रा भाई फतैदत नु हुई । कपडा रै कोठार री दरोगाई नै गागांणी रा खीची बिहारीदास नै इनायत हुई । डीडवाणा री हाकमी भडारी बिठलदास रै हुई । फेर ही ओहदा खिजमता अखैचदजी रै तुलिया[7] जिणा नै दिराया ।

मुनसी जीतमल रै गाव पटै नै जैतारण री कारकूनी । किलेदार नथजी मुसायब बिहारीदास खीची री सला भेळी । मुनसी जीतमल व्यास

---

१ ख सामी तो करडी निजर सू जोयो ।

---

1 पूरे राजसी लवाजमे के साथ । 2 मुख्य बाजार के बीच मे होकर । 3 झरोके पर । 4 दिन अस्त होते समय । 5 मुख्य रूप से काम का मालिक अखैचन्द हुआ । 6. महाराजकुमार की निजी सेवामे । 7 मरजी मे आया ।

विनोदीराम अखैचदजी कनै मुकत्यार। मुख अकल री कूंची[1] मगदत जोसी सो इणा सारा रै मावोमाव[2] मे कोई राजी वेराजी हुवै तौ पाछी दूरस्ती करावणी। तथा सला आगी चलावणी।[3] सो सारा जणा मगदतजी रै इकत्यार कीवी। मगदतजी श्री वालकिसनजी रा मिंदर रा भावीक हा[4] सो कवरजी रै गुसाईजी रो भाव वधायौ।[5]

गुसाईजी व्रजाधोसजी माहाराज सुं माहाराज कवार नू नाम सुणावण री वीनती कीवी। तरै व्रजाधीसजी फुरमायौ कै माहाराज श्री अभैसिघजी सु लगार्य नै नाव तो चौपासणी सुणीजै है ने म्हारो नै उणा रौ अेक कुळ अेक घर है। सो नांव तौ उठे हीज सुणौ। तरै माहाराज कवार चोपासणी जाय नाव सुणिया।

पोहोकरण रा ठाकर सालमसिघजी घरे वैठा हा जिणां नू खास रुको दे वुलाया। परधानगी इनायत कीवी। आहोर ठाकुर अनाडसिघजी कोटे था सु तिणां नू खास रुको दे बुलाया।

समत १८७३ रा जेठ मे पाली रा माहाजन रो माल पाली सू जोधपुर आवतो हौ सो[1] खोसीज गयौ[6] सो माहाजन असवारी मे कूकीयो[7] सो गाव रोहट, काकाणी रा सिरदारा कना सु माल रा रुपिया[2] दिराय दिया। इण बात सु माहाराज कवार रौ राज तेज नै जस हुवौ। महाराज कवार रै चवाणो रौ डोळो[8] गाव किलाणपुर सू आयौ सु माहलावाग मे व्याव हुवौ। पछै माहाडोळ मे विराज रात रा आतसबाजी छूटता गढ दाखल हुवा। व्याव दूजो गाव ओसियां रा भाटी रावळोता रै कीयौ। डोळौ आयौ।

ज़ोसी मगदत री अरज सू श्री बालकिसनजी रै मिंदर समत १८७४ रा सावण महीना मे हीडोरा रा दरसण करण नू दोय तीन वार पधारीया। मिंदर रा मुहढा आगै साथीण रौ ठाकुर भाटी सगतीदान सूं बाहाला-जौडी चाल[9] घोडा फेरीया।

---

१ ग रोहट कांकाणी विचै (अधिक)।

२ ग विजक मुजब (अधिक)।

---

1. मुख्य सलाह की कुंजी 2. आपस मे। 3 सला के अनुनार कार्य करवाना। 4 वालकिसनजी मे भक्ति-भाव रखते थे। 5 गुसाईजी का भक्ति-भाव पैदा किया। 6 लूट लिया गया। 7. महाजन ने फरियाद की। 8. चहुवानो ने अपनी लडकी शादी के लिये भेजी। 9 घोडे पर चढे हुए एक दूसरे के हाथ पकड कर।

सिंघवी गुलराजजी नै चूक हुवा पछै सिंघवी चैनकरण कांणांणा रा ठाकुर स्यामकरण करणोत री हवेली सरणे जाय बैठो थो । आगै चैनकरण सिरदारा ऊपर चढ नै चडावळ गयौ थो समत १८७२ में, सो गोठ री त्यारी छोड सिरदार भाज गया नै गोठ चैनकरण लूट लीवी । जिण वगैरै दोस थौ[1] सो आऊवो, आसोप, पोहोकरण, रास, नीवाज, चडावळ, कटाळीयौ नै अखे-चदजी वगेरै मुतसदिया सामल हुय माहाराज कवार सू अरज करी कै चेनकरण मोटौ सिरदार नै हरामखोर छै । माहाराज श्रीमानसिंघजी जाळोर सू पाली लूट पधारीया तरै माहाराज श्री भीवसिंघजी री तरफ सू चैनकरण गाव साकदडै पूग झगडो कीयौ नै मु हढा माह सु गैरवाजवी वोलीयौ[2] । सो माहा-राज सा रै मन मे इण नू सजा देण री पूरी थी । पिण इदरराज रा मुलायजा सू दिरीजी नहीं । सो इण नू पकड सजा दै मार नाखण ज्यू छै । कवरजी हाकारौ भरीयौ[3] । तरै सिरदारा करणोत स्यामकरणजी नै कयौ चैनकरण हरामखोर छै सो इण नु पकडाय देवो । आपा नू अेक सला राखी चाहीजै । तरै सामकरणजी कयौ कै आज ताई किणी सिरदार री हवेली माह सू आयोडा नू पकडायौ नही[4] सो म्है किण तरै पकडावा । तरै सिरदारा कही कै माहाराज कवार पिंडा पधार आपरा चाकर नै हाथ पकड लेजावै तिण में आपणी कीही और तरै लागै नही[5] । तरै इण तरै ठेहराय माहाराज कवार असवारी कर काणाणा री हवेली सू चैनकरण नू लीयाया । नै सीवाणची दरवाजा बारै तोप सु ऊडाय मराय नाखीयौ ।

मीना[6] दोय तीनेक तौ कवरजी दरबार करणो राज रौ काम करणौ वगेरै करीना रै साथै वरतियौ । पछै तौ रळियारणी रै चाळै लागा[7] । रात रा माहलावाग मे तथा सैर मे रह जावै दोय च्यार आदमीया सू । मरजी आवै जठै चल्या जावै । खास केली रा आदम्या[8] नू लेय कायलाणै पधार जावै । उठै भगतणिया पातरीया[9] नू बुलाय लेवै[1] ।

---

१ ख भगतण सजनी नू चाकर राख लीनी, सो छानै राखै । इण तरै री वाता नादानी री करणी सरू करी । जदे एक दिन जोसी सम्भूदत्त मारोज कवार सू अरजकरी कै आप मानसिंहजी रा कवर हो अर राज री अकतियारी करो हो । अर आपरा मूडा आगे फोरा आदमिया री सौवत है सो आ वात आछी नही ।

1- जिस का दोप उस पर था । 2 गैर जबा बोला था । 3 कुवर ने स्वीकृति देदी । 4 गिरफ्तार नहीं होने दिया । 5 किसी तरह अन्यथा नहीं समझा जागया । 6. महीने । 7 लपटता में फस गये । 8 अपनी मरजी के यारदोस्त । 9. वेश्याएँ ।

श्री हजुर मोतीमेल मे विराज्या रहै । ऊतमतवणा री दशा राखै[1] । रसोडा सु तासळी[2] आवै सो मेल देवै । पछै मरजी हुवै तरै थोड़ा घणा अरोगै । कबूतर मोकला कनै राखै सो रसोडा सू जिनस आवै सो पैला कबूतरा नू चुगाया पछै आप अरोगै । सो अेक दोय वार कबूतर मर गया । जद पछै रसोवड़ा सू जिनस आयोड़ी अरोगता नही नै ढव सू बारै नखाय देता[3] । केई वार दोय-दोय च्यार-च्यार दिन ताई लाघण काढ देता[4] । खिजमतदारी मे भाराबरदार माळी लखौ रहै । ऊण नै समझाय दीयौ सो ऊण रा घर सू रोटीया आवै जिण माह सू रेहण दैवै[5] सु ढव सू हजूर अरोग लेवै ।

चेले दरजी कवर सू अरज कर नै साप मगाय तकीया री खोळी मे घाल दीयौ सो हजूर निचे घणी राखता[6] सु लख गया[7] । तकीयो बारै नखाय दीयौ । भाराबरदार लखै उण वखत मे श्री हजूर री घणी तन मन सू बदगी कीवी हजूर उनमत पणौ राखै । खिजमत करावै नही[8] । कपडौ धोवावै नही । लोग जाणै राजाजी साफ गेला होय गया है । भटियाणीजी तुवरजी कदेक दरसण करण नू मोतीमैल मे जावै पिण हजूर तौ बोलै नही । नै कबूतर चुगायवो करै । चावडीजी जावै तरै जादा ऊनमत पणौ दिखावै ।

मूता सुरजमलजी नू अखेचंदजी कयौ थे तौ जाळोर रा चाकर हौ सो था सू म्हारै काई वात रौ अदेसो नही । सुरजमलजी वखत देख अखैचद सू मिळाय लीवी[9] । फौजवदी रौ दुपटौ दिरायौ फौजवदी कर मेडतां रा परगना मे गया । पचोळी गोपाळदासजी मेडतै हाकम हौ सो परगना रौ लोक[10] लै सुरजमलजी सामल हुवौ । कुचामण रा ठाकुर कवरजी री सटपट मे नही था सो कुचामण रौ गाव लूटीयौ । रुपया चालीस हजार ४००००) ठेहराया । पचोळी गोपाळदासजी फतैराजजी नै काढीया । जिण दोख सू अखेचंदजी गोपाळदासजी नू कैद करण री कवरजी सू अरज करी । तरै कवरजी फुरमायौ गोपाळदास तौ सांम धरमी हैं घेरा मे रस्त पोहोचाई सैहर रुखवाळियौ[11] सिंघवी इदरराज इण नै नही चावतौ हौ पिण हजूर इण नै हाकमी दीवी । तरै अखैचंदजी अरज कीवी कै गोपाळदास रै सिंघवीया सू ढब नही है[12] तो

---

1. उन्मत्तता की दशा बनाई रखते हैं। 2 भोजन का थाल। 3 अवसर निकालकर बाहर डलवा देते। 4 भूखे रहजाते। 5 उस खाने मे से बचाकर रखता है। 6 बहुत ध्यान रखते थे। 7 पता चल गया। 8 दाढी नही बनवाते। 9 समय की हवा देखकर अखैचद के साथ हो गया। 10 फौज नौकर चाकर आदि। 11 शहर की सुरक्षा की। 12. सिंघवियो मे मिलावट नही हैं।

कुडकी खाली कराय लेसी। सो खाम रुको दीनायौ कै कुडकी खाली कराय लीजै। तरै गोपाळदासजी सुरजमलजी सू फट नै कुडकी फौज लगाई। जिनमी रो लोक हजार दोय २००० नै परगना रा जमीदार सेड वगेरै लोक हजार अेक गोपाळदासजी कनै थी। गोपाळदासजी फटीयां पछै मूता सुरजमलजी री फौज रा ऊठ चादावत वाहादरसिंघ ले गयौ। वाहादरसिंघ कनै घोटा ४०० चार सौ था। पछै वाहादरसिंघजी कुडकी मे फौज सू लडै जिणां ऊपर घोडा ४०० च्यार सौ ५०० पाच सौ ले कुचामण सू आवै। सो भगडो कर जावै। दोय तीन वार फौज माथै राती वासा दीया[1]। पिण गोपाळदास वडो मजबूत रयौ। अखैचंद जी ईसका सु[2] खरची मेलै नही सो गोपाळदासजी घर स खरच मावै। मोहला नू पुरा तग कीया। मेड़तीयो रतनसिंघ पाड़मिघोत रै अखैचदजी मु ढव हौ सो रतनसिंघजी री कामेती खगारोत लालसिंघ जोधपुर हौ जिण हम्नै जवाव कीयौ कै अेक वार फौज ऊठाय देवौ पछै म्हे गढी खाली कर देसा। तरै अखैचदजी गोपाळदासजी नू लिखियौ कै कुडकी सू फोज ऊठाय मेडतै ऊरा आवजो। तरै गोपाळदास लिखियौ के गढी खाली कीया विना मोरचा उठाऊं नही। तरै अखैचदजी कवरजी सू मालम कीवी कै सिंघियां रै जोर मुदै वाहादरसिंघ रो है सो इण नै लगाय लेवां तौ सिंधवीया री वाय तूट जावै[3]। पिण गोपाळदास मानै नही। तरै कवरजी फुरमायौ के गोपाळदास म्हारा खास रुका सु कुडकी गयौ है सो गढी मे सिरकार री अमल हुवा पछै फौज ऊठो चाहीजै। तरै वाहादरसिंघजी मजूर कीवी। तरै कुडकी री गढी मे हजूर रो निसाण मेलीयौ[4]। ने गढी रा कागरा पाडीया। पछै मोरचा ऊठाया। पछै अखैचदजी अरज कर गोपाळदासजी नू कैद कराया। रुपिया ५००००) पचास हजार ठैहरीया मे पाच हजार ५०००) छूट नै वाकी पैतालीस हजार ४५०००) री तीन किस्ता कीवी। मेडता जैतारण री हाकमीया दीवी।

व्यास चुतरभुज समत १८७२ रा चैत सूं कैद थौ भरणा मे जिणां रै रुपीया अेक १०००००) लाख ठेहर सीख हुई। व्यास पदवी वाहाल रही। जोसी भगदतजी आपरा वाप लारै मरदा रै साथ लाडुवां री जिमणवार कीवी। अठै आज पेहली पोहकरणा ब्रांमणां रै खरच री जीमणवार जळेवियां री हुती। सु लाडु सरू हूवा। दिखणा[5] रौ रुपीयो सवा १।) आदमी दीठ दीयौ।

जोसी सिभूदत माहाराज कवार सू अरज करी कै आप राजा हौ सो मातवरी राखी जोईजै[6] आप कनै छूट मे छोरारोळ है[7] सो आ वात नादानी री नही राखी जोईजै। इण ताछ खाच नै अरज करी सौ माहाराज कवार कनै छूट

---

1 फौज पर रात को हमले किये। २ ईर्ष्या के कारण। 3 वाह टूट जाएगी, उनका पक्ष कमजोर पड जाएगा। 4 वाद्ययन्त्र। 5. दक्षिणा। 6. बड़प्पन रखना चाहिए। 7 आपके पास बचपना करने वाले व्यक्तियों का जमाव है।

मे हा जिणा नै खारी लागी[1] सो माहाराज कवार नूं सीखाय भरवाय सिभूदतजी नूं कैद भरणा मे कराया। सिभूदतजी अन जळ छोड दीयौ। तरै तीजे दिन सीख दीवी।

माहाराज कवार माहलेबाग पधारै। आसो[2] अरोगै। गिरदीकोट में हाथीया री लडाईया करावै। साटमारा रै छिपण री भीत अडग री कवरजी कराई। व्यास चुतरभुज नू कैद हुई।[1]

अंगरेजां कनै उकील आसोपो विसनरांम रहतौ सो दिली मै अेहदनांमो सिरकार अगरेजी रै नै सिरकार जोधपुर रै आपस मै हुवौ तिण री नकल—

सिरकार अगरेजी नै सिरकार जोधपुर माहाराजा मानसिंघजी बहादुर नै जुगराज माहाराज कवार छतरसिंघजी बहादुर नै सिरकार अगरेजा री तरफ सू मिस्तर मटकलप साहब बाहादुर च्यारलस साहब[3] बाहादुर माफक मरजी गवरनर साहिब बाहादुर कै अर जौधपुर की सिरकार की तरफ सू उकील आसोपा विसनरांम अभैराम री मारफत अैहदनामो ठेहरीयौ मुकाम दिली जहानावाद

१ कलम पेहली— प्रथम दोस्ती हितारथ अपणायत सिरकार कपनी अगरेज बाहादुर अर ऊणा री औलाद रै हमेसा पीढी दर पीढी पुस्त दरपुस्त कायमी रहेगी। दोस्त दुसमण अेक तरफ का, दोस्त दुसमण दोनू कना री का होसी।

---

१ ख अगरेजा रो फैलाव मुलक मे होण लागो पातसात धीमी पडण लागी। अगरेजां नै राजस्थान रै आपस मे अैदनामा उदैपुर जैपुर वगेरा रै हुवा तिणरा समाचार विसनराम रा दिल्ली जहानावाद सु आया। तिण मे लिखियौ कै आपणै भी अैदनामो होयण रो सब केवै छै सो उठी सू कलमा रो मसोदो उतार श्री हजूर माहाराजा मानसिंहजी सू अरजकर फेर किसी भले आदमी नू मेलाईजो सो कौलनामो करलेवा। तरै जोधपुर सू हुकम पोतो के मसोदो कराय श्री हजूर मालम कराय मेलियौ है फेर ऊचनीच हुवै सो सवाल जवाव कर लिखावट पक्की कराय लीजो। तरै मसोदो दिल्ली आसोपा विरांमण कनै आयौ तरै ऐदनामा री कलमा १० ठेरी सिरकार अगरेज री तरफ सू मिस्टर मटकल साब वहादर अर जोधपुर री तरफ सू उकील आसोपो व्यास विसनराम मारफत कलमा ठेरी तिणरी नकल—

---

1 बुरी लगी। 2. विशेष प्रकार की तेज शराब।

3 मि चार्ल्स थियाफिलास मेटकाफ।

२ कलम दूसरी— जोधपुर रा राज मुलक री रखवाळी को जुमो सिरकार अगरैजी को है।

३ कलम तीसरी— माहाराजा मानसिंघजी वाहादुर नै औलाद उनकी पीढी दर पीढी पुस्त दर पुस्त कपनी वाहादुर की सिरकार की वदगी हिफाजत करसी। और दूजी सिरकार सूं सिरदारा सू सिरकार लगावट राख सी नही।

४ कलम चौथी— माहाराजा मानसिंघजी वाहादुर पीढी दर पीढी पुस्त दर पुस्त सिरकार अगरेजी कै वेमरजी इतलाय ना किणी सिरदारा सू किणी सिरकार सू सवाल जवाब करसी नही। हेत हितारथ को कागद[1] दोस्त भाया नै भलाई दैवो।

५ कलम पांचमी—माहाराज मोसूफ पीढी दर पीढी पुस्त दर पुस्त झगडौ किणी सू खडौ नही करसी और जो कदास किणी सू किणी कारण तकरार होसी तो ऊण रो निवेडो[2] सिरकार अगरेजी री तजवीज मुजब होसी।

६ कलम छठी— जो कुछ मामलो आगा सू सिरकार जुदी फरद माफक राज जोधपुर वा सू सिरकार सिधीया वाहदुर नै पोचै हौ सो हमे आगा सू सिरकार अगरेजी मे पोहोचीया करसी। नै सीधीया वाहादुर सू हमे मामला वावत क्यू ही प्रीयोजन रहेसी नही।

७ कलम सातवीं— माहाराज मोसूफ जाहर करै कै जोधपुर का राज सू सिधीया वाहादुर सिवाय मामलो किणी न पोहोचै नही है दूसरौ किणी न आज ताई दीयो नही है नै हमे मांमलो पोहोचावण रो सिरकार अगरेजी मे क़रार पायो है सो मामलो को दावौ सीधीया वहादुर तथा कोई दूसरो करसी तो जिण री जवाव सिरकार अगरेजी मन मनावसी।

८ कलम आठमी— अेक हजार पाच सौ असवार वुलाये माफ़क जोधपुर की सिरकार सू अगरेजी सिरकार मे जाय हाजर होसी। और जरूरत रै वखत सारी फौज जोधपुर का राज के वदोवस्त करणै सिवाय फौज कपनी सिरकार के सामल होसी।

९ कलम नवमी— माहाराजा साहव मोसूफ नै औलाद इणा री पीढी दर पीढी पुस्त दर पुस्त अपणा मुलक कै ऊपर हुकम हकूमत का मालक रहैसी। और अगरैजी सिरकार की अदालत को दखल जोधपुर का राज मे नहीं रहसी।

---

1 कुशल क्षेम का पत्र आदि।

2 निपटारा।

१० कलम दसमी—श्री कौलनामो इण सुदो दस वाना मटकलफ साहब की मोर दसकना सुधी और व्यास विसनराम अभैराम की मोर दसकना सुधी दिली मे हुवो है सो दोढ महीनै मे मोहर दसकती गवरनर जनरल साहब बाहादुर[1] का और माहाराजा मानसिंघजी साहब बाहादुर माहाराज कवर छतरसिंघजी बाहादुर का अहदनावा हुवा है मो दुतरफा पोतसी। फकत.......।

मुतालबां री फरद री नकल—

माहाराज साहा सर मंद राजहाय हिंदूसथान राज राजेश्वर माहाराजा मानसिंघजी साहब बाहादुर की नालम जो कोई भाई ठाकुर रजपूत राज जोधपुर की सिरकार अगरेजी क आय कर वास्तै अपनी गरज कै अरज करै तो सुणै नही मुराद दफै नवमी मे अहद नामा कीया है सो ऊपर लिखी गई है।

परगना गोढवाड का स्वरगवासी माहाराजा विजैसिंघजी नै राणा ऊदैपुर का अडसीजी नै अेवज कुम खरच कै दीया था सो माहाराज कवार छतरसिंघजी बाहादुर ताई पीढी चार हुई है सो कवजै हमार राज जोधपुर कै रहै है सो राणा ऊदैपुर की तरफ सू इस गोडवाड परगना का दावा करै जवाब करै तो उसकी सुणवाई सिरकार अगरैजी करै नही।

जवाब सिरकार अगरेजी की तरफ सू—कोई मुलक पीढी दर पीढी से कवजे राज जोधपुर के है जो ऊसी राज मे समज्या जायगा।

सवाल राज जोधपुर की तरफ से—नवाब मीरखा जयपुर का नोकर था और पीछे जोधपुर मे रया सो कोई मकान मीरखा के नोकर रह जाय तो माहाराजा साहब लेवे ऊसकी सुणवाई सिरकार अगरेजी करै नही। जवाब सिरकार अंगरेजी की तरफ से—। उस बात का माहाराजा साहब कूं अखत्यार है।

सवाल राज जोधपुर की तरफ से—मोजे सो मुताबिक कदीम कोई सरणी आव उस कू सूंपते नही है इस सिरकार की रसम है सो जारी रहैगी।

जवाब सिरकार अगरेजी की तरफ सू—कै सिवाय दुसमणी सिरकार के सो कोई सरणै आवैगे तो कदीम का दसतूर मुजब जारी रहैगी।

1. लार्ड हेस्टिंग्ज।

सवाल राज जोधपुर की तरफ सैं— तीन बरस हुवा किला उमरकोट का सबब निमकहरामी नौकरां के बीच कबजे टालपुरियां कै हुवा है सो माहाराजा साहब फौज अपनी भेजे तो सिरकार इनकी मनाई नही करे।

जवाब सिरकार अगरेजो की तरफ सू — माहाराजा साहब फौज अपनै तौर पर भेजेंगे तो हमारी सिरकार नहो बोलेंगे।

सवाल राज जोधपुर की तरफ से— सीरोही का देवड़ां के पास स्वरगवासी माहाराजा विजेसिघजी की वखत सैं फोज भेज मांमला लीया गया था सो मामला देवै या जमीयत अपनी से नौकरी करै सो इसमे सिरकार सीरोही का देवड़ां की सुणै नहि।

जवाब सिरकार अगरेजी की तरफ सैं— माहाराज विजैसिघजी की वखत मे जो बात थी सो मजबूत रहेगी।

सवाल राज जोधपुर की तरफ से— फौज माहाराजा साहब की तरफ दिखण मे नहि भेजेंगे।

जवाब सिरकार अगरेजी की तरफ सैं— कै नरबदा की पेलै तरफ नही भेजेंगे।

सवाल राज जोधपुर की तरफ सैं— मामला समत १८७५ रा दरसा श्याहजानाबाद कै दूसरी फरद के लिखी गई है सो पोंची जायगी।

जवाब सिरकार अगरेजी की तरफ से— कै मजूर है। फक्त.......।

दिल्ली में साहब अेहदनामो करण रो हुक्म दीयो नरै उकीला साहब सू अरज कीवी—समोसो जोधपुर मेल मजुरी मगाय लेऊ नरै साहब बाहादुर कह्यो इसी वखत सूगी देर करणे में तमारै हरज होगा। नरै अेहदनावा नीचै खास [illegible] दसखत कर दीया नै हजूर री सही करावण वास्तै अेहदनांमो जोधपुर मेलीयो सो पछा सु अेहदनामो पाछो मेलीयो जिण माथै मुतालबा री फरद सब मेली सो साहब बाहादर मजूर कीवी।

अंगरेजी सम्मत १८१८ रा चैत वद ५ पाचम पनिया नै कौलनामा मे संवत् १८०७ री लिखियो है सो फर्क राज में समत सावण वद १ सू फिरै है जिण सू अगरेजी [illegible] मैं पनिया सो समत १८७४ रो लिखियो है नै

जोतस मैं समत चैत सूं लिखियो है जिण सू कौल नावौ मैं पिचतरौ धरीयो है।

कुंवर छत्रसिंह की मृत्यु और मानसिंहजी की उदासी

कुंवरजी छतरसिंघजी रै गरमी रौ रोग हुय गयौ। डील मे तज गया[1] बेआरामी वध गई। तरै कामेतीया माहलैबाग मे दाखल कीया। समत १८७४ रा चैतवद ४ माहाराजकुंवार छतरसिंघजी देवलोक हुवा। सो अेकदिन तौ जाहर कीया नहीं।[2] नै आ सला ठेराई कै कवरजी रै उणीयारै[3] कोई आदमी हाथ आय जावै तो उण नै कवंरजी री ठौड थाप देणा।[4] पिण आ सला पार पडी नही। तरै चैत वद ५ रै दिन माहाराज कवार नूं मंडोवर दाग दीयो। तौ इसी वात उठाई कै कवराणीजी चत्राणजी रै आसा है।[5]

सावण महीना मे कवराणजी चवाणजी चल गया।[6] कवरजी देवलोक हुवा तरै सारा जणा सला कीवी के भदर हुवा कै नही।[7] तरै मोणोत ग्यानमल कयौ—राज कर नै देवलोक हुवा है सो भदर तौ हुवा चाहीजै। तरै सारा चाकर सहर मुलक मारवाड भदर हुवा। अेक पोहीकरण री ऊकील चापावत बुधसिंघजी गाव हरियाडाणा रा ठाकुर भदर हुवा नही। कह्यौ माहाराज विराजिया है सो भदर कीकर हुवा।

कवरजी देवलोक हुवा री हजूर मालम हुई सो ऊनमंत पण मे सुंसा लीवी नै क्यु ही फुरमायो नही। बेहोसी सवाय मैं देखावण लागा।

कवरजी थका राज रौ काम करता तिके हीज मुतसद्दी मुसायब काम करै। पोहोकरण सू सालमसिघजी आया, आऊवौ, आसोप, नींवाज रा ठाकुर अठै हाईज। सिरदारा बाळसमद डेरा कीया।

समत १८७५ रा सावण मे कुंवराणीजी चल गया। तरै कवरजी रै रासै वाळा ईडर सूं कवरजी रै खोळै लावण री सला कीवी थी। तरै गाव दावरा रौ करमसोत भानसिंघ खीवसर रौ उकील जिण कयौ म्हारै वाडीयो

---

1. बिलकुल निर्बल हो गये। 2 इस घटना का पता नही चलने दिया। 3. कुंवर की शक्ल का। 4 बैठा देना। 5. गर्भवती हैं। 6. मृत्यु हो गई। 7 बाल मुंडवाये या नही।

ऊ ठ ईसो है सो ईडर सू वादै ले आऊ।[1] पछै आाही नला पार पडी नही[1]। हजूर कनै भटियाणीजी जावै। सारी हकीगता केवै। पिण हजूर तो पाआ कीहूँही फुरमावै नही।

कामेतीया चावडीजी भटियाणीजी नू कैवायी कै हजूर नै वारै पधरावौ नही तौ मुलक रा जमीदार फितूर खडौ करसी। जद भटियाणीजी सा कामेत्या नू केवायौ कै मुढौ किण रौ सु फितूर करै। नै हजुर मु मालम करी कै अै कामैती हमे श्री उपाव करसी नही तौ आप वारै पधारौ। पिण हजूर नू तौ किणी री परतीत आवौ नही[2]। जिण सू पाछौ क्यू ही जाव देवौ नही। उनमतपणा री दसा राखै।

सो आ वात अगरैजा री सिरकार मे अखवार तेरीक जाहर हुई-कवर था सो चल गया अर माहाराज वेहोस है। राज सू नौ है। तरै दिली रै साहव वाहादुर मुनसी वरकतअली नू जोधपुर मेलियौ। के तुम माहाराज से रूवरु मिल के आवौ सो वेहोसी अछी होण जैसी है या किस तरै है।

अंग्रेजो की तरफ से वरकतअली का जोधपुर आना—

साहव रा खलीता ले वरकतअली जोधपुर आयौ आसोज मे। मुसायव सिरदारा रा कामैती वरकतअली नै साथे लै सारा हजूर मे गया। सो हजुर उण दिन तो पाछौ किहूई[3] फुरमायौ नही[2]। दूजै दिन वरकतअली अेकलौ हजूर में गयौ, खलीतो दीयौ। मुखजवानी समाचार कया। तरै जोधपुर री पचोळी मुनसी गिरधारीलाल नू वुलाय हजुर खलीतौ वचायौ[4]। वरकत-

---

१ ख ख्यात मे लिखा है कि सरदारो ने डेरे वालसमद पर कर रखे थे उन्होंने ईडर से खोळे लाने का प्रस्ताव चावडीजी के सामने रखा तो उन्होंने कोई जवाब नही दिया, तव उन्होंने निश्चय किया की अजमेर मे अग्रेजो का अफसर रहता हैं उससे निवेदन करें ताकि वह समुचित व्यवस्था करवावेगा। (पृ 63B)

२. ख ख्यात मे लिखा है कि जव महाराजा वोले नही तो ४ घडी सभी कामेती वैठे रहे पर अत मे थक कर चले गये। वरकतअली ने सरदारो से कहा कि महाराजा तो वोलते ही नहीं ऐसी हालत मे राज क्या करेंगे। तव कई जागीरदारो ने कहा कि आप इनको जानते नही, आप अकेले जाओगे तो वात करेंगे। (पृ 64 A)

---

1 निश्चित समय पर ले आऊ गा। 2. किसी का विश्वास नही आता।
3 कुछ भी। 4. पढवाया।

भली नहीं-दिली के बडे साहब सदर के हुकम सू हमकू आप कै पास भेजा है। आप ने अपनी जान के खतरे से ये हालत कर रखी है। अब आप कूं राज करणा होय तौ आपका हौसला बेहोसजा होय जैसा फुरमावौ आपका राज आप कै अखत्यार है। मरजी होवै जिस तरै बदोवस्त करै। तरै हजूर मुनसी सू खुलासै वात करी कै भीवसिघजी रौ दाकौ हुवा पछै समत १८६० रै वरस म्हारो जाळोर सू अठै पधारणौ हूवौ। जद सू सिरदार म्हानै फो॰ा घालै है अर हमारा तनू[1] चाकर हा तिके ही हरामखोर हुय कवर नै वारे काढ म्हारा जीव री घात विचारी। जद जीव बचावण नै आ विरती भाली है।[2] हमे कवर री इण तरै हुई तौ पिण सिरदारा चाकरा रौ ईतवार म्हानै आवै नही। सिरकार कपनी म्हारी मदत राखै तौ राज री वदोवरत आछी तरै कर सका हा।

तरै वरकतअली अरज करी कै आप खुसी से राज करौ। हरामखोरा कू सजा दैवौ। कपनी सिरकार का हुकम है और अंग्रेजी सिरकार का अखबार-नवेस यहा रहेगा सौ जो आप कू केणा होय। सो ऊस कू केह देणा। ऊवो सदर मे रिपोट कर दीया करसी। अर पीछा आप कूं जवाब मिल जासी। पछै पाछौ खलीतो लिख दियौ।[3] तरै वरकतअली सदर रौ पाछौ जवाब भुग-तीयौ। जितरै हजूर केईक दिन हा ज्यु हीज काढीया।

अगरेजी सिरकार रौ मुनसी वरकतअली आया पैहला वालसमद रै डेरा सिरदारा सला विचारी कै हजुर जाण नै आ दसा धारी है केवै हा सहीज है। तिण री निरणै करण सारू[4] पोहोकरण रौ कामैती चांपावत बुधसिघजी[१] नै हजूर कनै मेलीया। सो बुधसिघजी जाय मुजरो कीयौ। तरै हजूर मामूल मुजव ताजीम दीवी। वात विगत तो क्यू ही कीवी नही। हजूर री तरै देख पाछा आय सिरदारा नू कह्यो कै हजुर नै गेहला कहै तिके गेहला है। हजूर नै वारै पधरावौ दूजी कांई सला विचारणा मे फायदो नही छै। तरै सिरदारा बारै पधारण री हजूर मे अरजा कराई। पिण हजूर सु तौ पाछौ क्यु ही फुरमायो नही।

जैपुर मे बाईजीसा रै काम जोधपुर रो व्यास फौजीराम करतो जिण सू माहाराज जगतसिघजी री-मरजी वध गई सो मुसायबी करण लाग गया सो

---

१ हरियाढाणा रौ (अधिक)।

---

1. खास निजी। 2. यह वृत्ति पकडी है। 3 दिल्ली को जवाब भेज दिया।
4 इसका निर्णय करने के लिये।

फौजीरामजी सूं दव लगाय फतैराजजी कुचामण सूं जेपुर गया सो जैपुर में कुल मालकी री खेवट सरू कीवी[1] तरै जेपुरीया जाणीयो कै राज मे इणा रौ फैल पडीयो,[2] आछो नही। सो माहाराज जगतसिंघजी नै कोई तरै रो वैम घाल नै व्यास फौजीरामजी नू कैद कराय दीया। तरै सिंघवी फतैराजजी जैपुर सूं भागा सो पाछा कुचामण डेरा आया। नै विचार कीयो कवरजी तो चल गया है हजूर साहब हा ज्यू बिराजीया है नै हरामखोर मतै मालकी करै है सु आपा ही जोधपुर चालौ। सो मतै माचजावां[3]। ठाकुर सिवनाथसिंघजी नू सला पूछी तरै सिवनाथसिंघजी कयो कै उतावळ करसो जिनरी थारै हरकत छै। हजूर साहबा रौ वस पोहोचीयां आफी[4] बुलाय लैसी। पिण सिंघवी बाहादरमल वगेरै तालकदारा री सला सू ताकीद कर फतैराजजी आप रा घर रा बोडा वेली वगेरै सावठै साथ सू कुचामण सू जोधपुर नै कूच कीयो। तरै कुचामण सूं ठाकुर सिवनाथसिंघजी पिण फतैराजजी साथै कूच कीयो।

फतैराजजी मारग मे आवतां परवतसर मेडता में आप रा हाकम कोटवाल बैसांण दीया। सावण मे संमत १८७५ रा कुचामण ठाकुर सिवनाथ-सिंघजी, फतैराजजी जोधपुर आया। डेरा बालसमद कीया।

मुनसी बरकतअली जोधपुर सु पाछौ जाय वडा साहब नै सारा समाचार कह्या। नै अंगरेजा रौ जवाब पूरी दिलजमी रौ हजूर कनै आयो। तरै हौसला सु बात करण लागा।[5] रसोड़ा रा मुसरफ जोसी फतजी साथै मूथा अखैचंदजी वगैरै अरज कराई—आपरा सरीर री गत और तरै हुय गई नै सिंघवी मतै काम रा मालक हुय गया तरै आपरा कवरजी रा हात सू कांम करायो।[6] फितूर नै तो ताकीयो नही।[7] इण बात रौ मरजी मे हरामखोरो तुलीयौ हुवै[8] तो म्हनै सजा दिराईजै। नै खांवद[9] विचारौ तौ चाकर हां, आगै ही चाकरी कीवी नै फेर वणसी ज्यू चाकरी करसा। इण ताछ फतजी लारै अरज कराई तरै फुरमायौ—अखैचद वगेरै नै कैदै काम करौ, हौ ज्यू ही खुल नै कीया जावौ[10] कोई तरै रो विचार लावौ मती, थे फितूर री विचारता तौ हरामखोरो थौ, थे तो हुती बात कीवी है। म्हे म्हारा हाथ सूं जुगराज पदवी कवर नै दीवी नै था सारां नू कवर नू ओळाय दीयौ। सो मालक तौ किणो

---

1. सारा कार्य अपने अधिकार मे लिया। 2. राज्यकार्य मे इनका बहुत अधिक दखल हो गया है। 3. अपने-आप वहां अधिकार प्राप्त कर लेंगे। 4 अपने आप। 5 पूरे होश के साथ बात-चीत करने लगे। 6 ऐसी स्थिति मे आपके ही कुंवर के हाथ से राज्यकार्य करवाया। 7. धौकलसिंह को गद्दी पर बैठाने की चेष्टा नही की। 8 इस कारण आपके मन मे हमारी हरामखोरी नजर आई हो। 9 मालिक। 10. जिस स्थिति मे हो उसी तरह खुलकर काम करते रहो।

मोटा चाकर नं ही कांम भोळाय देवै[1] तो ऊ कहै ज्यूं करणौ चाकर री धरम है। सो था मे तार चूक है नही।[2] इण ताछ पूरी खातर फुरमाई। तिण सूं सारा रै दिलजमी आई।[3]

समत १८७५ रा दिवाळी नू जनाना माय सू नै सारा सिरदारा मुतसदीया खाच नै अरज कराई[4] आज जरूर बारै पधारीजै तरै फरमायौ—आज तौ खच मत करौ दोयां—चारा मे[5] जरूर बारै पधारसा।

माहाराजा मानसिंह का पुनः राज्यकार्य संभालना

पछै सिरदारा मुसायबा री अरज सू काती सुद ५ पाचम[1] नू खिजमत पधराई। सपाडौ कीयौ[6] पोसाक पधराई। आथण रा[7] दरबार कीयौ। सारा जणा निजर निछरावळ कीवी।

फुरमायौ कै म्हांरौ तौ मांय विराजणौ हुय गयौ नै कवर रौ समौ हुय गयौ।[8] पिण थां जिसा चाकर उमराव था तौ सारी वात ठीकाणै रही। इण ताछ पूरी खातर फुरमाई। सिरदारा नू फुरमायौ डेरा हवेलीया मे करौ। फतैराजजी नू इतरा दिन तौ कीह फुरमावणो हुवौ नही नै उण दिन फुरमायौ—तू ही सैहर मे डेरौ करदे।पौर रात गया मोसर वोडीयो।[9]

दूजै दिन सिरदारा हवेलीया मे डेरा कीया। फतैराजजी कनै घोडा बेली सावठा[10] सो हवेली मे मावै नही। तरै फतैसागर माथै डेरा कीया। फतैराजजी कुचामण सू आवतां परबतसर मेडते मारग मे हीज आप रा हाकम कोटवाळ राख दीया था नै जोधपूर आया पछै जोधपुर री हाकमी ऊपर तौ सिंघवी वाहादरमलजी नू मेलीयौ नै सोजत री हाकमी काका रा बेटा भाई सुखराजजी तालकै कर दीवी। गोढवाड री हाकमी पचोळी अखैमल नू मेल दीयौ थौ। सो अखैचदजी हजूर मे अरज—करी फतेराज मतै हाकम आप रा मेल दीया है जिण री काई मरजी है। तरै फुरमायौ फतैराज रा आदमी ऊठायदै नै दूजा आदमी अर हाकम मेल दै। तरै अखैचदजी दूजा हाकम मेल दीया नै फतेराजजी रा आदमी ऊठ आया।

---

१ ख आसोज सुद ३।

---

1 काम करने को कहे। 2 तुम्हारी किसी प्रकार की गल्ती नही है। 3 सभी को विश्वास आया। 4 पूरा जोर देकर विनती की। 5 दो चार दिनो मे। 6 स्नान किया 7 सध्या समय। 8 मृत्यु हो गई। 9 बात-चीत का अवसर दिया। 10 घोडे फौज आदि बडी सख्या मे।

पाचा साता दरबार हुवै फतेराजजी रोजीना गढ ऊपर जावै । पिण खातर तसली तार नही ।[1] तिण सु पूरा कुंद ।

पोस सुद ५ पाचम श्रीहजूर री असवारी सीरै बाजार होय महामिदर पधारीया ।[१] बाजार सिणगारीयो रईयत नू दिलासा खातरी फुरमाई । रईयत नू डड माफग हुकम रा कागद लिखीजिया । काम री मालकी अखैचदजी री दूजा ही ओहदा खिजमता कवरजी रै राज मे था सो मावत राखीया । हरामखोरा नू पूरी मैहरबानी दिखावै ।

समत १८७५ रा माह महीना मे अखैचदजी अरजकरी–जमा खरच रो कटकणो बाधीया बिना[2] काम धकै नही । तरै फुरमायौ—थारै तुलै ज्यू ही सालीको बाध । तरै अखैचदजी सिरदारा नु कयौ कै राज मे जमा तौ कम है नै खरच ज्यादा है सो अेक अेक गाव थे सारा छोडौ । बाकीरां सू हु छुडाय लेसू । तरै आऊवो, आसोफ, नीबाज, खेजडलो, चडावळ वगेरै तौ अखैचदजी री सला मामल सौ ना किण तरै देवै नै कुचामण रायपुर भाद्राजूण अै सामधरमा मे सो ना कीकर देवै । सारा सिरदारा हाकारौ भरीयो ।[3]

अखैचदजी अरज करी—अेक–अेक गाव घोडण री हाकारो सिरदारां नू भराय दीयौ है । आप श्रीमुख सू फुरमायौ मो छोड देसी । तरै दरबार कर सिरदारा नू फुरमायौ कामेती अरज करै है कै जमा वधाया सू नै खरच घटाया सू काम धकसी । सो खरच रा कटकणा तो म्है राखसा ने जमा वधावण री मदत थे सारा सिरदार देवौ । तरै सिरदारा अरज करी कै मरजी मुजब करदेसा ।[4] पछे नीबाज रौ तौ गांव खवासपुरो, आऊवा रौ गांव रीया, चडावळ रौ गाव खारचीया, इणताछ[5] अेक–अेक गाव सारा सीरदारा छोडीया । तरै बाकी रा ही छुडाय लीया । लाख तीन ३०००००)[२] रो हवालो हूवौ ।

जिण दिनां पाच मुसायब गिणती मे हा[6]— मुहता अखेचदजी, भडारी सिवचदजी, व्यास चुतरभुजजी, भडारी चुतरभुजजी, मूतौ सुरजमलजी

१. ख नाथजी रा दरसण किया अर देवनाथजी री मातम पोसी कराई । लाडूनाथजी री मावा नु दिलासा कंवाई कै होणहार मोतो हुय गयौ हमे नाथनी आछी हीज करसी (अधिक) ।

२ ख दो लाख अमरै ।

1 महाराजा की ओर से किसी प्रकार का आश्वासन नहीं । 2 बजट बनाये बिना । 3 सभी सरदारो ने एक-एक गाव छोडना स्वीकार कर लिया । 4 आपकी जैसी मर्जी होगी वैसा ही करदेंगे । 5 इस प्रकार । 6 पाच मुसाहिब माने हुए थे ।

इणां पाना तालके हवाला रा गाव बराबर वांट ने कर दीया। हजूर रा हुकम विना ने अखेचादजी री दूवायती[1] बिना जमा खरचणी नही। औ बदोवस्त कीयौ। सिघवी सुमेरमलजी अरजी दीवी के दफतर रौ काम सूपावै तौ खानाजाद रे दानसदारी कामूपणा री मालम पडै। तरै हजूर अखेचादजी ने पूछियौ—इण तरै सुमेरमल अरजी दीवी है। तरै अखैचादजी अरज करी के इसा दानसदार चाकरा ने ओहदा खिजमता दिरीजसी जद ही राज ऊचौ आवसी। तरे सुमेरमलजी नू दफतर हुवौ।[2] दफरत रौ काम आछौ कीयौ।

बूडसू फौज मेल छुडाय लीवी। बूडसू ठाकुर ढूढाड मे गया। मुलक मे चोरी धाडा बद हुवा। हुकम बरकरार। बूडसू री फौज मे मूता मुरजमलजी रौ बेटो बुधमल फौज मुसायब थौ।

परधानगी रौ सिरपाव पोहकरण रा ठाकुर सालमसिंघजी ने हुवौ। नीबाज रा ठाकुर सुरताणसिंघजी पच।यती मे हजूर सू अखैचादजी नु फुरमायौ दिदाणगी तौ थारे हीज रहसी ने बगसीगिरी रौ ओहदौ सिघवीया रे तीन पीढी गू है सो बखसी ने सोजत री हाकमी फतेराज नू देवा। सो अखेचादजी रा मन मे तो नहीं भाई। पिण कयौ—ठीक है। तरे बगसीगिरो रौ सिरपाव सिंघवी मेघराजजी ने हुवौ। पोहोकरण सालमसिंघजी नू परधानगी रौ ने मेगराजजी नू बगसोगिरी रौ सिरपाव साथे हुवा। सुखराजजी रे नांवै सोभत गी हाकमी हुई। जोसी सिरीकिसनजो सू पूरी मरजी। सो राज रौ काम काज लेण री विसेस फुरमावे। तरे सिरीकिसनजी अरज करी के पाचू मुसायवा तालके हवाला रा गाव है सो सारा म्हारे तालकै कराय दिराईजे[1] नै पचोळी गोपाळदास ने फुरमाय दिराईजै सो हवाला री कटकणो लगाय देवे।

१ ख बारठ आसियो धांकीदास ऊपर श्रीहजूर री मरजी कविराज पदवी दीवी लाख पसाव दीया, सपूरण मरजी रही परन्तु लारलां दिना मे महाराज कुवर छतरसिंह कने जलधरनाथजी रा धरम री निंदा कीवी कै—मान को नद गोविंद रटै जब, कान फटा की गाह फटै। फेर गजल जोडी कै—आये जलदर, लाये दलद्दर सब दुनियन कू कीवी कलदर ठोड ठोड बनाये महामदिर। इणताछ राजकुवर नू राजी राखण खातर कहता था जिण रा समाचार हलकारारी फरद मे मालूम हुवा जद बाकीदास नु गढ ऊपर बुलायो, रूबरू आय मुजरो कियो जद हजूर फुरमायो दोढीदार नु कै इण नू पूछ—गोविंद रटै रौ ते किण रै सिखायै कवर कने कह्यो जद बांकीदास नु धूजणी छूट गई सो किही जबाब आयो नही जद आप फुरमायो कै इण नु अठा सू काड देवौ तरै बाहूडा पकड पाछ पगलिया दोढी

क्र प उ

1. स्वीकृति। 2 दफ्तर का कार्य सौंपा गया।

सो समत १८७६ रा आसोज मे मारी हवालो गिरीकिसनजी तालकै हुवो । पचोळी गोपाळदास नै फुरमायो तू सिरकारी ईमनदार चाकर है पिण मारा फुरमानणा मू गिरीकिसन नू हवालो बेचटाय दै ।

समत १८७६ रा सांवण मे तीजां ऊपर जनांना सहेत सूरसागर पधारीया व्यास विनोदीराम हस्तै सूरसागर तय्यारी हुई थी सो विनोदीरामजी रा बेटा गुमानीरामजी नु चानणी रा कटा इनायत हुवा । सरद पूनम वगैरै असवारीया दोय तीन वार जनाना सहेत सूरसागर पधारीया । हजारा रुपीया ईमी मे खरच पडीया ।

घाधल गोरधनजी तालकै सिलेपोस १०० अेक सो साजीयागढ ऊपर घावला री जायगा मे डेरो हुवो । भाटी गजसिंघजी तालकै सिलेपोस १०० अेक सो सजिया । गढ ऊपर जै मिदर अनेनी पोळ रै मांहले पसवाडै डेरो हुवो । खीची चैनजी रा बेटा जालजी तालकै सिलैपोस १०० अेक सो सजीया । गढ ऊपर खीचीया री जायगा मे डेरो हुवो । रसोडा री मुसरफी छागाणी कचरदासजी रै हुई । रसोडा री दरोगाई घाधल मूळजी दानजी रै, पिण हजुर रो खान पान छागांणीयां रै हाथै । फतजी जोसी नै फुरमायो तू रसोडा री मुसरफी थका हाजर रहतो ज्यू हाजर रया कर । था बिना म्हानै आवडै नही ।[1] फतजी साथै असेचंदजी वगेरा नू खातर फुरमायबो करै ।

वारै काढ दियो । अर फुरमायो के चारण मगती जात है सो सीख दो । तरै बाकीदास उठा सू भागो सो गोळ री घाटी, मारग होय पादरो भाद्राजण ठाकुर बखतावरसिंहजी नु आय कह्यो के जोधाणनाथ कोपियो है सो था सू ढाबणी आवै तो ढाब । नही तो माको तो मरणो आयो सो धूजतो धूजतो आयो अर दस्ता लागणी सरू होय गई नै उठै हीज सरणै बैठ गयो । पछै एक दोय दिना सु भाद्राजण रै ठाकुर गढ ऊपर जाय श्रीहजूर मे मालम करी कै आसियो चारण बाकीदास म्हारी हवेली बेठो है अर दस्तां लोगै है के हजूर म्हा पर कोपिया म्हारी बुध खराब हुय गई जिणसू म्हारा मूडा सू कोई आखर ऊंचो नीचो निकल गयो सो हमे तो घणो ही पिसतावै है सो मरजी हुवै तो हवेली मे राखू ओर मरजी हुवै तो सीख देऊ, मगती जात है जद आप फुरमायो कै बडा बडा री मिनखारी बुध मे फेर पड गयो जिण सरम्ने इण चारण री बुध भिसट हो गई सो इणनु काई कहा छा । मरजी आवै जठै वेसो मरजी आवे जठै जावो कीं लायक नहीं (पृ 68 A B)

---

1 तुम्हारे बिना मेरा मन नही लगता ।

अखैचदजी नू फुरमायौ माहाराज श्री गुमानसिघजी ऊपर देवळ करावणो है सो तू मडोवर जायगा देख आव ।[१] सो वैसाख सुद ९ अखेचदजी मडोवर गया । सो पाछा आवता नागोरी दरवाजा बारै जिनसी रौ डेरौ हौ । जिनसी रो लोक अखेचदजी रो रथ पलटण मे लेगया । तरै लिखमीचदजी हजूर मे अरज करी, तरै आदमी मेल जिनसी सू समजास कराई । तरै जिनसी कयौ कै म्हारी च..ी चढी खरची दीया छोडसू[1] नै म्हा ऊपर राज सु लोक मैलसी तौ जोधपुर नै माहामिदर लूट लेसा ।[२] तरै हजूर सू माहामिदर रौ ही जाबतौ करायौ । नागोरी दरवाजा नै मेडतीया दरवाजा सिरदारा वगेरै लोक रा डेरा कराया । किलेदार[३] आपरै गाव लोडतै हौ जिण नै कासीद मेलायौ ।[2] अखेचद सु परदेसीया इण तरै घणो कीयौ है सो तू जळदी सू आवजै । तरै नथजी पिण आय गयौ ।

हजूर फुरमायौ कै अखेचद नु लोक मेल छुडाय लेवौ । इण सला मुदै सारा गढ ऊपर भेळा हुवा । तरै वाघल गोरधन नु फुरमायौ कै लोवापोळ[3] रौ ताळो दिराय दै । तरै गोरधन लोवापोळ आय नायका नू कयौ कै लोवापोळ मगळ कर ताळा री कुचीया उरी दैवो । हूकम है । गोरधनजी कूचीया लै हजूर मे गया तरै गोरधनजी नै भाटी गजसिघजी नै खीची जालजी नै फुरमायौ कै हरामखोर सारा नु पकडलौ । जोसी सिरीकिसनजी नै गोरधनजी सामल राखीया ।

संमत १८७६ रा वैसाख सुद १४ चोदस नरसींग चुतरदसी नूं इतरा जणां नू पकडीया—

१ दिवाण मुहतौ, लिखमीचदजी अखैचदजी रा वेटा नै गढ ऊपर पकटीया नै लिखमीचदजी रा वेटा मुकनचद नै कामेती गुमासता[४] नै हवेजी पकडीया नै घर लूट लीयौ । नै खत हा सौ राज मे ऊगाया ।[4]

---

१ ग गजदरा नु जाय देखाय आव ।

२ ख सरदारा नै विसटाळो कियौ—हजूर फरमायो जाय जिनसी कना सू अखैराज नै छुडावौ ।

३ ग नथौ (अधिक)

४ ग रामचदर (अधिक)

---

1. मेरी खरची के जो रुपये वकाया हैं वे मिलने पर छोड़ूगा । 2 पत्र वाहक सवार भेजा । 3 लोहापोल । 4 उनके पास उधार के खत थे सो रकम राज्य ने वसूल की ।

१ किलेदार देवराजोत नथकरण ।[1]

१ व्यास विनोदीराम नूं गढ ऊपर पकडीयौ नै बेटा गुमानीराम नू घरै पकडीयौ ।

१ मुनसी पंचोळी जीतमल ।

१ जोसी मगदत तौ पेहला हीज मरगयौ थौ नै मगदत रौ छोटौ भाई फतैचद ने मगदत रौ बेटौ विठलदास नै फतजी रौ बेटौ दामोदर नूं पकड लीना ।

१ बाघल मूळा, जीयौ दोना नू तौ गढ ऊपर पकडीया नै दांनौ जाळोर किलेदार थो मु उणनै जाळोर मे पकडीयौ । दरजी, चेलौ वगैरै जणा ८४ चौरासी नू अेकण साथै पकडीया ।

खीची विहारीदास तळेटी हौ सो जिनसी रा लोक रा धणा मुदै खेजडला मायसीण रौ डेरौ फतैसागर ऊपर थौ सो खेजडला रै डेरे वीहारीदास जाय वैठौ । तरै विहारीदास नै लेनै खेजडला रा ठाकुर सादूलसिंघजी नै सायोण रा ठाकुर सगतीदानजी खेजडला री हवेली उरा आया । हजूर मे मालम हुई तरै भाटीया नू समजासै कराई । पिण विहारीदास नु पकड़ायौ नही । तरै भाटीया री हवेली ऊपरे कलदरखा नै विदा कीयौ । भाटीया री हवेली ऊपर गया । झगड़ौ हुवौ सो अेकवार तौ राजरा लोका[2] रा पग छूट[1] गया । पछै नीसरणीया लगाय सिपाई हवेली मे कूद पडिया । तरवारा सू झगडौ हूवौ । भाटी सगतीदानजी रै तरवारा ऊगणीस १९ लागी ।[3] दोनू कानी रा आदमी मरण गया नै घायल हुवा । खीची विहारीदास झगड़ौ कर काम आयौ । आ हजूर मे मालम हुई तरै राज रा लोक नू झगड़ौ मौकूफ करण रौ[2] हुकम पोतो । सगतीदानजी भाटी रै पाटा बदावण सारू हजूर सू नायता मेलीया । पछै जिनसी नू खास रुकौ लिख मेलीयौ अखैचद नूं गढ ऊपर पौछाय दीजै तरै गढ ऊपर पौछाय दीयौ । सारा रै वेडीयां घाल सलेमकोट मे कैद कीया । [3]तस्तीया दिरीजी कबूलायता हुई ।[3]

१ ग पदमावत लोडता रौ (अधिक)
२ ग आउवे री हवेली री तरफ सूं (अधिक
३ ग पण बचगयौ (अधिक)

1 एक वार तो राज्य की फौज के पैर उखड गये । 2 झगडा वद करने का ।
3-3 कष्टकारक सजा दी गई एवं जुर्माने के रुपये कबूल करवाये ।

पछै प्रथम जेठ सुद १४ चोदस नू इतरा जणां नू सोमल रा प्याला पाया—

१ दैवराजोत किलादार नथकरण। नथकरण प्यालौ पी लियौ नै कयौ हरामखोरो तौ घणी कूपीता सू मारै जिसौ कीयौ हौ[1] पिण घणी बडा है सु सोरा मारीया।

२ मुहता अखेचद कह्यौ—रुपीया पचीस लाख २५०००००) देऊ नही मारो तौ पिण मजूर हुई नही। अर प्यालौ पाय दीयौ।

३. व्यास विनोदीराम।

४. मुनसी पचोळी जीतमल।

५ जोसी फतैन्द।[१]

इणा पाचू जणा नू तो सौमल रा प्याला पाय मराया नै धाघल मूळो, दानौ, जीयो इंणा नु तसती दीवी जिण सू मूवा।

वैसाख सुद १४ चौदस अखैचदजी वगेरै नै पकड कैद कीया तर पोहोकरण नीवाज रा ठाकुरा नै केवायौ कै कवर रा रासा मे अै हरामखोर हा जिणा नू सभा दीवी। जोसी सिरीकिसन वोरो हुवोडौ राज रा काम सू अदायलो[2] रेवे है सो ठाकुरा इण नै थे समजावौ सो राज रौ काम चलावै। सिरीकिस्न केवै जिण नै ही इण रै सामल राख देवा। सो थारी मालकी सू काम वरतावे है।[3] दोनू सिरदारा सिरीकिसनजी नै हुसीयार कीया।[4] मूथा सूरजमलजी नू सांमल राखीया। पोहकरण नीवाज री सला सू सिरीकिसनजी सूरजमलजी कांम करै।

दुतीक जैठ सुद १३ रै दिन इतरा जणां नू फेर कैद कीया—

१ मुथो सुरजमलजी वेटा भाई भतीजा सुदो।

१ जोसी सिरीकिसनजी।

---

१ ग जिणरै लारै जोसी मगदत्त री वहु सत कियौ करणा कै मगदत्त र वेटे विठलदास नु मगदत्त री एवज मे प्यालो देण हा सो इण कह्यौ म्हा वैठा इण नु मत दो हु लेसू तिण सू सती हुई कै म्हारा धणी री एवज प्यालो लियौ है।

---

1 वहुत बुरीतरह मारे ऐसा किया। 2 अलग।
3 तुम्हारी देखरेख मे कार्य करता रहे। 4 कार्य करने के लिये तैयार किया।

१ पचोळी गोपाळदास ।

१ व्यास चुतरभुज तो पैलाहीज मर गयौ थौ नै चुत्रभुजजी रा बेटा सिवदास लालचद ।

पोहकरण रा कामेंतीया नै माय बुलाया फुरमायो श्री देवनाथजी उदरराजजी नै चूक करावण वगेरै घालमेल मे थे हो नही सो नीवाज वाळा रै सामल रैजो मती ।[१] दूतीक जेठ सुद १५ पूनम रै दिन आथण रा सुरताणसिंघजी नीवाज रा पोहकरण री हवेली गया । सालमसिंघजो नै कयौ कै हमे आपा नू ही वारी आवती दीसै है ।[1] तरै सालमसिंघजी कयौ कै आपरी हवेली काम पडै तौ म्हानू देजो[2] ने म्हारै काम पडसी तौ आप नू समचौ देसां । तरै सुरताणसिंघजी पाछा हवेली गया । उणीज पाछली रात रा नीवाज री हवेली ऊपर लोक विदा हुवौ । सौ अेक पलटण री सिपाई आगै जाय नीवाज रा ठाकुर सुरताणसिंघजी नू खबर दीवी । तरै सुरताणसिंघजी तागै बैस सारा बैलीया नै साथै ले पोहकरण री हवेली जावण सारू वहीर हुवा । सो मोतीचौक आवता राज रो लोक सामो मिळगयौ तरै पाछा हवेली मे वडीया । सुरताणसिंघजी रै साथै आदमी ५०० पाच सौ था सो आदमी २०० दो सौ ठाकुर रै साथै पाछा माय वडिया बाकी रा गळियां मे बिखर गया । हवेली घेरीज गई ।[3] फतैराजजी, मेगराजजी, कुसलराजजी अै तीनू भाइया नू नीवाज री हवेली ऊपर मेलीया । कुचामण रायपुर रा आदमी राज रा लोक सामल नीवाज री हवेली ऊपर गया ।[२] सुरताणसिंघजी रा छोटा भाई सूरसिंघजी हवेली मे हा सो सुरताणसिंघजी फतैराजजी नू कैवायौ हरामखोरो है तौ म्हामे है सूरसिंघ तौ टाबर है सो इण नै बारै जावण दो । तरै फतैराजजी हजूर मे मालम कराई सो मरजी मे नही आई ।[4] हजूर फतैमेल में विराजीया था सु मुसायबा नै ताकीद फुरमाई के सुरताणसिंघ रै मारीया री मालम हुसी पछै थाळ अरोगसा । भडारी चुतरभुज रै गोळी लागी तोपा सू हवेली उडावै सु तौ सैहररी जागावा फूटै । नै आदमी सेहर रा मर । जिण सू वार आवै[5] नही । तरै दो फार ढळतै हवेली रै सुरंग खोदी । तरै माहला जाणीयौ कै हमे सारा मारीया जासा । तरै सुरताणसिंघजी सूरसिंघजी सुधा आदमी १८ अठारे पौळ

१. ख. नाथ जी फुरमायौ कै म्हारो वावसू उत्तमचद मूतो नीवाज री हवेली में है सौ जाण पावे नही (युद्ध का यह भी कारण था) ।

२ ग कै स्याम रौ काम नै वाप रौ वैर है सौ अै गया (अधिक) ।

1 अब अपनी भी वारी आती दिखती है । 2 सूचना देना । 3 हवेली के घेरा लग गया । 4 स्वीकार नही किया । 5 मौका लगता नही ।

खोल नै नीसरीया । सो वारै आवता ही सामी तोपां री छररो छूटौ जिण सूं सारा काम आया । असाढ वद १ अेकम । कामेती जोसी नगजी[1] ऊदावत मालजी वगैरै ठाकुर साथे काम आया । रायपुर रा ठाकुर अर्जुनसिंघजी नै लावीणां रा ठाकुर भानसिंघजी नू द्राग देण री हुकम दीयौ । सो इणा नै दाग दियौ ।

पोहोकरण रा ठाकुर सालमसिंघजी तागे बैस पाळा आदमी माथै ले माहामिंदर परा गया नै पछै माहामिंदर सूं चढ न पोहकरण परा गया ।[2] आसोप ठाकुर केसरीसिंघजी हजूर समत १८७५ रा मे वारै पधारीया नरै सुरताणसिंघजी नूं कह्यौ थौ कै आपणौ हरामखोरो राजा कदेई भूलै नही जीव लीया छोडसी[1] सो घरै हालौ । सो सुरताणसिंघजी मुसायवी रा भूखा मानी नही । नै केसरीसिंघजी नू कह्यौ—हजूर री आपा ऊपर पूरी मरजी है । आप घरै क्यूं जावौ । तरै केसरीसिंघजी कयौ—म्हारै माथौ अेक हीज छै ।

पछै केसरीसिंघजी तौ माजी री मांदगी रो बाहनो कर दस पनरै दिना री सीख कर आसोप जाय बैठा । सो सुरताणसिंघजी नू चूक हुवा री खबर लागी तरै आसोप सु चढ बीकानेर रो गांव देसणोक परा गया । सो संवत १८७७ रा पोस मे देसणोक ही चळ गया । अर उठे ही कारज हुवौ ।[2]

आसोप रो पटौ जिलो सारो सालसै हुवो । फकत अेक आऊवो वखतावरसिंघजी रै रयौ । पोहकरण रा मजल धुनाडो वगेरे जबत हुवा । घडावळ रौ पटौ जिलौ सारो सालसै हुवौ । ठाकुर विसनसिंघजी मेवाड में गया । रोयट रो पटो खालसै हुवौ ठाकुर मेवाड मे गया । खेजडलो साथसीण रौ पटौ जिलो जबत हुवौ । नींवाज रौ पटौ जिलौ जवत हुवौ । नीवाज खाली करावण सारू भंडारी धीरमलजी नूं फौज दे मेलीया ।

आगे माहाराज श्री भीवसिंघजी रा राज मे धीरमलजी नीवाज लडिया था जिण नामून सू धीरजमलजी गाव रोहीचै सरणे बैठा था जिणा

१ ख ख्यात मे लिखा है कि नगजी ने ठाकुर को बहुत समझाया था कि यहा से नीवाज चलना अच्छा है पर ठाकुर ने बात मानी नही ।

२ ग पाछा जीवता फेर जोधपुर आया नही नै स. १८७६ मे पोहकरण मे मुवा । (अधिक)

1. अपने प्राण लेकर छोड़ेगा । 2 वहीं उनका क्रिया-कर्म किया गया ।

नू बुलाय नै फतैराजजी मेलीया सो कितराक दिन धीरजमलजी जैतारण रया पछै नीबाज गाव सू नजीक डेरा कीया । सो माहला गोळा आय फौज मे पडिया तरै डेरा पाछा सिरकाया मोरचा लगाया नही ।

समत १८३६ रा असाढ सुद मै बीकानेर किसनगढ रा कवर ऊदैपुर परणीजण नू गया जिण री जान मे सिघवी कुसलराजजी नू मेलीया था नै लारे पचोळी अनोपराम नै मेलीयौ ।

कुसलराजजी जान सू पाछा आया तरै फतैराजजी नू फुरमायौ कै धीरजमल सू क्यू ही हुवौ नही ।[1] कुसलराज ने नीवाज मेल दे । तरै फौज मुसायबी रौ दुपटौ इनायत कर भादवा सुद ७ सातम नै विदा कीया । समत १८७७ रा किलकिला तोप मेली । मोरचा साकडा लगाया ।[2] कुसलराजजी रै हाथ रै गोळी लागी । कामेती पचोळी कवरचद रै हिचकी[१] ठोडी रै गोळी लागी । पडदार ताजखा रै गोळी लागी । सु काम आयौ । ताजखा मोरचा मे चाकरी आछी कीवी थी । गाव बर रो गढी कुसलराजजी खाली कराई नै कानपुरा री गढी खाली कराय लीवी थी ।

नाजर इमरतमराम नू श्री हजूर सू घोडा २०० दोय सौ देनै नीवाज फौज मे मेलीया नै नीवाज रा ठाकुर सावतसिंघजी रै खरची री तगाई आय गई तरै नाजर इमरतरामजी हस्तै विगटाळो ठेहराय पुरखीयौ दानसिंघ रा नै कायमखानी अलफुखा रा वचन ले वदनोर ताई पुगावण रा नै कबीला असवाव ले ठाकुर सावतसिंघजी मेवाड मे गया ।[२] नीवाज मे हजूर रौ अमल हुवौ । मैलायत कोट पाड नाखीया ।[3]

नीवाज फौज लागा पैली रास रौ गढ सिघवी सुखराजजी खाली कराय लीयौ थौ सो रास रौ गढ नै बर री गढी पडाया कुसलराजजी नू आऊवौ खाली करावण रौ हुकम पोतौ । तरै कुसलराजजी उठा सू कूचकर सोजत डेरा कीया । तरै फतैराजजी अरज कीवी कै नीबाज सात महीना[३] फौज लडी जिण मे रुपिया साढा छव लाख खरच पडीया नै आऊवा रौ मोटौ काम है सो मरजी हुवै ज्यू करा । तरै फुरमायौ—पटौ तौ सारौ ही खालसे है ईज नै आऊवा रै

१ ग छिलती ।

२ ख उणारा गुजारा माफक ढब कर मेवाड वाळा उणा नै ढाब लिया । (अधिक)

३ ख दस महीना ।

1 धीरजमल से कुछ भी नही हुआ । 2 मोरचे और नजदीक लगाये ।
3 गिरा दिये ।

नजीक थाणो राख देवौ। तरै पचोळी कवरचंद नै गाव भगवानपुरै थाणौ घाल ऊठे राखीयो।[1] घोडा ३०० तीन सौ, पाला ५०० पाच सौ, तोपा दोय २।
कंवरचंद थाणो चोखौ[2] जमायौ।

कुसलराजजी जोधपुर आया तरै कडा, मोती कठी सिरपेच, पालखो, इनायत हुवा। गाव सूरायता पटै हुवौ। खातर दिलासा आछी तरै फुरमाई।

समत १८७७ रा भादवा सुद ४ चौथ रात रा सोमल रा प्याला पाय मारीया इणा नूं चोकेळाव सलेमकोट मे सू लाय नै पाया। जिण मे जोसी सिरीकिसन नै प्यालो पावण वास्तै सलेमकोट मे सू चोकेळाव लेगया। तरै सूरजपोळ कनै आवता श्रीमाहाराज नै सराप दीयौ नै घणा दुरवचन कैया। जोसी सिरीकिसन नै मूतो सुरजमल इणा दोना नू सोमल रा प्याला पाय मराया।¹

समत १८७७ रा कवरजो छतरसिंघजी री माजी राणीजी चावडीजी नै अेकण मैल मे बंद कर दीया पछै तुरत हीज चल गया। नाजर विंदाबन कवरजी रा सटपट मे थौ जिण नै कैद कीयौ थौ सो नाक काट छोडीयौ।

जती हरकचद कवरजी रै ओखद करतौ दारू री भटिया कडावतो कवरजी री मरजी मे थौ तिण नू कैद कर नाक काटीयौ। फेर कैद कीया पछै आयसजी लाडुनाथजी अरज कर छुडायौ।

समत १८८५ मे मूहता अखैचदजी रौ घर लूटीयौ सो रुपीया १२९०००) अेक लाख गुणतीस हजार रौ अेबज नीसरीयौ[3] नै खत खाला री वहिया राज मे आई सो फतैराजजी रुपिया उगाया नै अखैचदजी रा बेटा लिखमीचदजी नै पोतौ मुकनचदजी कैद मे था सो माहामिदर रा कामदारा री अरज सू रुपीया ३००००) तीस हजार ठेहराय नै समत १८७९ मे छोडीया। नै अखैचादजी री हवेली खालसे हुय नै बाभा लालसिंघजी नै ईनायत हुई। अखैचादजी रौ भतीजौ फतैचद रै रुपीया २७०००) सताईस हजार ठेहरीया। इण रै पाली री हाकमो थी। मुहता सुरजमल रे बेटा बुधमल रे रुपीया

१ ग इणां सराप दियौ कै म्हनै जैर रौ प्यालो पाय मरावै है सौ म्हारै लारै वस नही है नै लारै लुगाई रोवती सो ईस्वर रै घरे साच है तो म्हारै लारै वस नही है ज्यू थारै ही लारै वस नही रहणी (अधिक)

1 थाना स्थापित कर वहा रखा। 2 अच्छा। 3 माल निकला।

५५०००) पचावन हजार ठेहरीया, पछे छोड़ीया । व्यास त्रिनोदीरांम रा वेटा गुमानीराम रॆ रुपीया १५०००) पनरे हजार ठेहरीया, पछै छोड्यो ।

जोसी मगदतजी फतजी रा वेटा विठल दामोदर रॆ रुपीया ८०००) आठ हजार ठेहरीया पछे छोडीया । देवराजोत नथकरण किलेदार रो वेटो अमलदार कडीर थो,[1] तिणरे ४०००) चार हजार ठेहराय छोडीयो ।

मुनसी जीतमल रो वेटो टावर थो सो तो मर गयो ने फकत लुगाई रह गई ।जोसी सिरीकिसन रै वेटो नही । पचोली गोपाळदास कैद मे थो तिण रॆ रुपीया २५०००) पचीस हजार ठेहरीया । सौ रुपीया पाच हजार ५०००) वारै काढीयो । रुपया वाकी रया तिण वावत फेर कैद हुई तरै रुपया १७०००) सतरै हजार भराय डीडवाणा री हाकमी दे छोडीयो ।

समत १८७७ मे ओहदा इण मुजव हुआ

१ दिवाणगी सिघवी फतैराज जी रै सिरपाव हुवो । नै काम री कुल मुखत्यारी हुई ।[१]

१ किलेदारी भाटी गर्जसिघजी धांधळ गोरधनजी रै सामलायत में हुई ।

१ रसोडारी दरोगाई धाधळ गोरधनजी रै हुई ।

१ रसोडा री मुसरफी छागाणी कचरदासजी रै हुई ।

१ जालौर री कीलैदारी खीचो जालजी रै हुई ।

१ कपड़ा रै कोठार री दरोगाई खीची जालजी रै हुई ।

१ कपडा रै कोठार री मुसरफी पचोळी मुरलीधर रै हुई ।

१ पाली री हाकमी सिघवी फतैराजजी तालकै नै सोभत री हाकमी पेहला हीज थी ।

परवतसर री हाकमी मुंहता मलूकचद रै, सिरीकिसनजी सुरजमलजी रा कांम मे हुई थी सो सावत रही ।

१ ग वगसीगिरी सिघी मेगराज रै पैलाइज हुय गई थी ।

1 वहुत वडा अफीमची था ।

संमत १८७६ मैं कुचामण, भाद्राजण, रायपुर, लाडण, अै चारू सिरदारा नै वधारा पटा दीया । नै कुचामण भाद्राजण री सिरकार रा काम मै पचायती भाज घड[1] रही[१]

१ मारोठ री हाकमी भंडारी तेजमल धीरजमलजी रा बेटा रै हुई ।

१ नागोर री हाकमी सिंघवी गभीरमल फतैमलोत रै हुई । गजसिंघजी रा ढव सु हुई ।[2]

१ मेडता री हाकमी सिंघवी गभीरमल फतेमलोत रै हुई । गजसिंघजी रा ढव सु हुई ।

१ गोढवाड री हाकमी सिंघवी इ दरमलरै समत १८७५ मे हुई थी । मरजी सू[3] सो सावत रही ।

१ फळोधी री हाकमी सिंघवी सुमेरमल रा भाई हरखमल रै हुई ।

१ जाळोर री हाकमी भंडारी पिरथीराज रै फतेराजजी रै तालकै ।

१ डीडवाणा री हाकमी सिंघवी जसू तरायजी रै, सो सिंघवी फतेराजजी तालकै ।

१ नावा री हाकमी सिंघवी फतैराजजी तालकै । काम करता मोहोणोत खूबचदजी ।

१ पचपदरा री हाकमी भडारी गोयनदास विठलदासोत रै हुई ।

१ जनानी दोढी री दरोगाई नाजर ईमरतराम रै हुई । नै मुसायबी रौ काम करतौ ।

१ जोधपुर री हाकमी[२]

११

राज रौ काम पाच मुसायबा री सला सू हुवै-

---

१ ग कारण कै बडोडा सिरदार पोकरण आउवो. आसोप. नीवाज बेमरजी मे । (अधिक)

२ सिंघी फतैराज तालकै ।

---

1 हस्तक्षेप । 2 गजसिंह के पक्ष के कारण हुई । 3 महाराजा की स्वय की इच्छा से ।

१ दीवांण सिंघवी फतैराजजी ।

१ छागाणी कचरदासजी ।

१ भाटी गजसिंघजी ।

१ धाधल गोरधनजी ।

१ नाजर ईमरतरामजी ।

—

५

खीवसर रा ठाकुर बेमरजी रा तौ धाईज[१] नै कतारां पाडी[1] । भाटी गजसिंघजी रा गाव गोवा मू खेचल कीवी[2] । तरै गजसिंघजी री अरज सू खीवसर रा ठाकुरा भोपालसिंघजी नू लिखावट हुई कै काम री मुदो है सो ताकीद सू हाजर हुई जो । तरै ठाकुर जोधपुर आया । हजूर मे मुजरो हुवौ । पाछा वारै आवता नै दौलतखाना मे पकड़ लीया । वेडीया घाल मलेमकोट मे कैद कीया । खीवसर पाचोडी डावरी वगेरै पटौ जिलो सारो जवत हुवो । सो सिंघवी फतैराजजी तालकै हूवो । ठाकुर रै रसोड़ा सू थाळ नै ढोलिया रौ हुकम हुवौ । वरस पाच कैद मे रया । पछै रुपीया ... ठेहराय नै छोडीया । खीवसर ठाकुर भोपालसिंघजी पाचोडी रा ठाकुर नै उकील मांनसिंघ डावरा रो ।

समत १८७८ रा मैं वगसी सिंघवी मेगराजजी, धांधल गोरधनजी भाद्राजण ठाकुर बखतावरसिंघजी वगेरै अगरेजी सिरकार री चाकरी मे घोड़ा १५०० पनरै सौ अेहदनावा री लिखावट मुजब दिली गया । केई महीना उठे रया । पछै समत १८७९ मे पाछा आया ।

देवनाथजी नू चूक हुवा पछै देवनाथजी रा छोटा भाई भीवनाथजी माहामिंदर मे मालकी करै । देवनाथजी रा वेटा लाडूनाथजी टावर । तिणां नू पूरा तग राखै । तरै लाडूनाथजी निज मिंदर आय वैठा तरै हजूर सू मोकळी समजास कीवी । पिण लाडूनाथजी मानीयौ नही, नै कयौ म्हारी जायगा मे भीवनाथजी काई मागै । आप भीवनाथजी नू माहामिंदर मे राखसौ तौ हु गिरनार परी जासू । तरै लाडूनाथजी नै तौ माहामिंदर सुपायौ । पछै नाजर इमरतरामजी हस्तै उदैमिंदर वाग भालरो उणा हस्तै कराय भीवनाथजी नै

१. ग सवत 1863 सू (अधिक)

1. कतारें लूटी । 2. छेड़छाड़ की ।

ग्रठै राखीया । नै मांहामिंदर वरावर ईजत ग्राजीवका कर दीवी । नाजर इमरतरामजी भीवनाथजी री पूरी खेवट मे हौ[1] ।

पांच ही मुसायबा अेकठ राख[1] राज रो काम कीयौ । मछै दोय घडा हुवा[2] । सिघवी फतैराजजी भाटी, गजसिंघजी छागाणी, कचरदासजी री तौ माहामिंदर सामी सला रही । नै नाजर ईमरतरामजी, धाधल गोरधनजी री ऊदैमिंदर सामल सला रही । माहोमाह मे खायकीया री चुगलीया हजूर मे कीवी ।

नावा री हाकमी सिंघवी फतेराजजी तालकै थी ने काम करता सिंघवी जसु तराय नै मोहोणोत खूबचंद रया सु नावा रै वाकानवैस प्रोहित भीखनदास हौ जिण रुपीया २०००००) दोय लाख री खायकी साबत कीवी ।[2] फैर ही फतैराजजी री खायकीया चावी कीवी । जिण माथै फतैराजजी दिवाणगो थका रुपीया दोय लाख २०००००) निजर कीया । ने धाधल गोरधनजी री नै नाजर इमरतरामजी री चुगलीया खायकीया री फतेराजजो चावी कीवी सो गोरधनजी तौ रुपीया ५०,०००) पचास हजार निजर कीया नै नाजर इमरत-राम समत १८८१ मे वाईजी रौ व्याव बूदी हुवा पछै कैद कर रूपिया अेक लाख १०००००) ठैहरीया । तिण मे वीस हजार छूट हुवा २०,०००) । वाकी ८०,०००) असी हजार भराया । नै जनानी दोढी री दरोगाई ईमरत-रामजी सू जबत हुय मुसलमान नाजर वसत नै हुई ।

समत १८७९ मे मिगसर मे व्यास सिवदासजी नू कैद हुई व्यास पदवी छागाणी कचरदासजी रै हुई[3] ।

---

१ ख देवनाथजी रौ मडारो सवत 1876 मे करायो महामिंदर मे लाडुवारो ।

0 सवत 1879 जमानो चोखो हुवो । ऊनाळी चोखी हुई । धान 1) रो अधमण ठैरियो ।

0 पुस्तक प्रकास नै विद्यासाळ रो काम व्यास सभूदत्त रै हवाले हुवो । लाखा रुपियाँ रो जमा खरच हुवो । (अधिक)

२ ख भीखनदास ने 10) महीनो कराय दियो सो नावा री कचेड़ी सू घणा बरसा ताई पावतो रियो ।

३ ख श्री हजूर सारा मुसायवा ने बुलाय नै आप दरबार मे फुरमायो के थारा आपस रा झगडा सू सिरकार रो काम बिगडै है सो सगळा एक हुय जावो । सगळां री चुगलिया सुणसा नही । (अधिक)

---

1 एकता रखकर । 2 दो दल हो गये ।

समत १८७९ लागता असाढ सुद १ अेकम सू लगायत असाढ सुद ९ नम ताई मेह रौ झड घणौ[1] रयौ[१] सैर मे हवेलीया ४५०० पैतालीस सौ आसरै पडी नै नवी नदीया चाली। जमानो चोखौ हुवौ[२]।

जागीरदारो का अजमेर जाकर अपने पट्टो के बावत शिकायत करना—

समत १८८० रा मे आसोप रौ कामेती कूपावत हरीसिंघ गाव बासणी रौ, आऊवा रौ कामेती पचोळी कानकरण, चडावळ रौ कामेती कूपावत दौलतसिंघ, नीवाज[३] रौ कामेती वगैरै अजमेर वडा साहब बाहादूर कनै गया नै कयौ म्हारा पटा जवत है सो हजूर साहबा ने केणौ कर बहाल करावौ। नही तौ मुलक मे फिसाद हुसी। तरै वडा साहब हुक्म दीयौ कै माहाराजा साव की दोढी जावौ। माहाराज परवरस[2] करैगे तरै ऊकीला कयौ—म्है जोधपुर जावा तौ माहाराज म्हानू मार नाखै तरै साहब बाहादुर कयौ हमारै भेजे हुवे कू माहाराज साहाव कुछ नही कहे गे। तरै उकील जोधपुर नै वहीर हुवा। हजूर रा उकीला हजूर मे लिख मालम कराई कै सिरदारा रा ऊकीला नूं सीख दिराय दीवी है। तिण ऊपर नाजर ईमरतरामजी नै फतैराजजी री तरफ सूं पंचोळी छोगालाल नै घोडा २०० दोय सै सू चढाया। सु चढिया सो गाव चोपडा रा तळाव ऊपर ऊतरीया था। सो जाझरकै जाय घेरीया।[3] सो आऊवा रौ कामेती पचोळी कानकरण तौ दिसाफरागत गयौ थौ[4] सो नास अजमेर गयौ ने बाकी रा कूपावत हरीसिंघजी वगैरै सिरदारा रा कामेतीया नू पकड लाया। बेडीया घाल सलेमकोट मे घाल दीया। नै आऊवा रौ कामेती पचोळी कानकरण वडा साहब नू जाय अैवाळ कह्यौ।[5] तरै वडा साहब ऊकीला नूं बुलाय तकरार कीवी। नै वडा साहब री तरफ सूं[४] जौधपुर मे खवरनवेस मौलवी थौ तिण नू हुकम आयौ कै कामेतीया नू तुरत छुडाय दीजै। सो खबर-

---

१ ग जिण सू नवी नदिया बाळा हालिया। मालाणी जसोल कने पाणी री रेल आई तिण सूं गाव वह गया आदमी वित्त वगेरे विगाड घणो हुवो। (अधिक)

२ ग धान 2॥) रो भण विकियो।

३ ख खीवसर री तरफ से करमसोत थौ।

४ ग हाजर वास (अधिक)

---

1 वर्षा की झडी खूब। 2. परवारिश। 3 सवेरे के समय जाकर घेर लिया। 4 निपटने गया था। 5 सारा हाल कहा।

नवेस जोधपुर मे थो सू गढ ऊपर जाय सिरदारा रा कामेत्या री वेडीया कटाय सीख दिराय दीवी ।[१]

समत १८८१ जमानो फोरो हुवो ।

स्वरूप कुंवरबाई का विवाह बूंदी राव राजा के साथ होना—

छोटा बाईजी सरूपकवर बाईजी रौ व्याव बूंदी रा राव राजाजी रामसिंघजी सू ठेहरीयो । बूंदी उकील सिंघवी सिरदारमल नू दोय महीना आगू च मेलीयौ । अर फुरमायौ कै व्याव री त्यारी मे रूपीया खरच बूंदी वाळा रा पडै जिण री पकी निगै कर विगत लिखजे । नै जान रै साथै रहीजै[1] । बूंदी वाळा जान री त्यारी वास्तै रुपिया २०००००) दोय लाख रौ खत कोटै कीयौ । जान फागुण वद ७ सातम जोधपुर आई[२] ।

श्री हजूर जलूसी असवारी कर खास विराज सेखावतजी रै तळाव सू पैली तरफ पावडा अेक सौ १०० आमरै सामा पधारीया । मिलाप हुवो । असवारी मे लोक घणो थो । पछै राव राजाजी खासा सू उतर घोडै असवार हुवा । सिलका हुई[2] । राव राजाजी डेरा दाखल हूवा[३] ।

फागुण वद ८ आठम राव राजाजी हाथी असवार हुय गढ ऊपर परणीजण पधारीया । बूंदो वाळां कोटे री दुकान रौ खत दोय लाख २०००००) रौ कीयौ थौ सो रुपिया चुकाय नै हजूर विजनस[3] मगाय लीयौ[४] ।

---

१ ख आसोपो सुरतराम अजमेर मे जोधपुर रौ वकील । जोधपुर मे पिंडत विश्वनाथ अंग्रेजा रो वकील । विश्वनाथ आय छुडावण री तकरार की जद हजूर विश्वनाथ नै रूबरू बुलाय कह्यो वकीलरा लिखणा मे गलती रह गई सो हमे छुडाय लेजावो । पछै थोडा दिन आडा घाल सारा नै ठिकाणा लिख दिया सो आप आप रे ठिकाणे जाय वैठा हाल बधारा रा गाव भाईपो लिखीजियो नहीं । आ बात सवत 1880 चौमासे री है ।

२ ख माह सुद 1 नु बूंदी सू रवाना हुई । सिंघवी सरदारमल री खबर आई के कोटा री दुकाना सू इणा 2 लाख रौ खत लिख जान रै इन्तजाम सारू रिपिया उधार लिया । (अधिक)

३ ख लोक 20 हजार थो । बूंदी वाळा सामा आया नही जद हजूर कह्यो जवाई हैं 200 पावडा आगे जावा तो कोइ वात नही । पछै दुतरफो मिलाप हुवो । (अधिक)

४ ख खूबचद हस्ते जोरावरमल दानमल कोटे वाळा खने सू खत मगाय लियो ।

---

1 बरात के साथ रहना । 2. तोपें छोडी गई । 3. तुरत ।

सो हथळेवा मे[1] दीयौ। मोटा मोत्या री कंठी ऐक रुपीया ५००००) पचास हजार री खरीद रौ दीयौ। भटियाणीजी मा ऊपर हजूर माहवा रौ बेराजीपो थौ नरै भटियाणीजी-मा रा कामेती छांगाणी रुपराम रावाकिशन नै कैद कर रुपिया ५००००) पचास हजार लीया था सो हुमार व्यांव मे भटियाणीजी नू राजीपौ हुवौ तरै रुपीया हजूर भटियाणीजी नै पाछा दीया। पचास हजार रुपीया वाईजी-सा रै हथळेवा मे भटियाणीजी-मा घालिया। वूंदी वाळा रै साथै धायभाई मुसायव थौ सो पैला मालम हुई तरै फुरमायो कै धायभाई री ऐवज आपणो ही धायभाई चाहीजै सो धायभाई देवकरण हळका दरजा मे थो[2] तिण नू उणीज दिन पटौ सिरपाव कुरब वटा माहाराज श्री विजैसिंघजी माहवां री वखत मे धायभाई जगजी रे हो जिण मुजब इनायत कीयो।[१]

वूंदी री जान माणी नु पेटीया हाजा मागै जिण मुजब दिरीजता। पाच सात वार गीरदीकोट मे मीठाईया रा सात हुवा। गढ ऊपर दस्तूर मुजब पातीयौ हुवौ। श्री हजूर नै राव राजाजी भेळा आरोगीया। सैहर में मनाई कर दीवी कै जान वाळा कना सु मिठाई वगेरै चीज रौ कोई मोल लीजो मती। सो माहामिंदर रै वाणिये जान वाळा कना सू मोल लीवी[3]। सो नाडूनाथजी माहाराज उण वाणीये कने सु गुनैगारी लीवी[4]। श्री हजूर राव राजाजी सु घणा राजी रया। नै वूंदी वाळा रै धायभाई मुसायव हो जिण दोय चार वार सीख री अरज कराई पिण सीख दीवी नही। गिणगोरा ताई राखण री मरजी थी। पछै धायभाई भाद्राजण ठाकुर वखतावरसिंघजी लारै[5] मालम कराई कै राव राजाजी री सगाई सूरजगढ विसाऊ सेखावता रै कीयोडी है सो दूजी वार जान कर नै आवा तौ फेर म्हांनै खरच लागै सो ऊठी व्याव करता जावा।[6] सु म्हानै सीख दिराय देवौ। इण वात सु श्री हजूर पूरा कुढ हूवा[7]। नै सीख दे दीवी। दायजा मे हाथी घोडा जवारात वगेरै गेणौ कपडौ वासण आछी तरै दीयौ[8] ने वाईजी नै गाव वोयल, अटवडौ, केकीद कलरु पटी २०००० वीस हजार रो दीयो।

वीकानेर री तरफ सूं दायजा मे हाथी, रथ, रोकड़ रुपीया ५०००) पाच हजार लेनै आचारज पुरसोतमदास वगेरै आया, सु दीया। किसनगढ सूं वखसी नै उमराव दायजा मे हाथी १ अेक नै रुपिया २०००) दोय हजार लाया था, सो दीया।

---

१ ख प्रति मे शादी का वर्णन कुछ विस्तार से किया गया है।

---

1 पाणिग्रहण के समय दे दिया। 2 निम्नस्तर के कर्मचारियो मे था। 3 वस्तु की कीमत लेली। 4 गुनहगारी वसूल की। 5 मारफत। 6 वहा भी शादी करते ही जावें। 7 मन मे वडे दुखी हुए। 8 खूब अच्छा दहेज दिया।

चैत वद ९ नम जांन नै सीख हुई । इण ब्याव मे रुपीया १०००००० दस लाख खरच पडीया । सीख दीवी तरै श्री हजूर सू जलूसी असवारी हाथी रै होदे विराज मेडतीया दरवाजा वारै राव राजाजी रै डेरै पधारीया । नाजर इमरतराम व्यास जेठमल नै सांवठा साथ सू[1] बाईजी नै पोहचावरण नू[2] मेलीया नै फुरमायौ राव राजाजी नै मारग मे ब्याव करण दीजौ मती[3] अठा सु बू दी गया पछै चावै जठे परणीजैं तिण रौ स्यू ही और तरै नही[4] सो सिंघवी मेग-राजजी बूंदी पोहोचाय आया । मारग मे राव राजा नै परणीजण दीया नही ।

पछै सवत १८८६ रा जेठ मे बाईजी-सा बू दी रा धायभाई नै चूक कराय-मरायौ[5] जिण ऊपर रावराजाजी बाईजी-सा रा नौरा ऊपर लोक मेलीयौ[6] सु वाईजी-सा रा कामेती छागाणी रूपराम, सिंघवी सिरदारमल काम आया । खूटसू रा ठाकुर परतापसिंघजी कोटे था जिणा नै बाईजीसा केवायौ–समाचार दीया[7] तरै उणीज वकत आय बाईजी-सा रै नोरै डेरौ कीयौ । इण बदगी सूं हजूर परतापसिंघजी री बदगी जाणी ।

सिंघवी फतैराजजी पाच बरस मुकत्यारी सूं काम कीयौ । सिरदारा रा पटा खालसै लटिया । रेख तौ श्रीहजूर सू माफ कीवी थी नै निजराणा रा[8] रुपीया ३०००००) तीन लाख वरसा वरस जमीदारा कना सूं लिरीजता । फतै-राजजी फौजराजजी नूं ही कूचामण सूं बुलाया नही नै भडारी गगाराम जी रा बेटा भानीरामजी रै नावै गाव वणाड समत १८७७ मे लिखीजियौ थौ सु फतैराजजी खायवौ कीया ।[9] भानीरामजी नटवरजी रै मिंदर मे बैठा रया ।

बागा जालोरी की फर्जी चिट्ठी और फतैराज को कैद करना-

जाळोर रौ माहाजन वागो वडो जालसाज हो जिण नै भांनीरांम कयौ-फतेराजजी बिगडै जिसो कोई ऊपाव वताव ।[10] तरै वागै कयौ–आखर[11] तौ थे केवौ जिसा हूं लिख देऊं । तरै फोजराजजी रै नावे हजूर रा दसकता रौ खास

१ ग. ख्यात मे लिखा है कि रावराजा की मा किशनगढ की राजकुमारी थी उससे बाईजी की वनी नही जिसके फलस्वरूप यह खटपट हुई । (पृ 104 B)

1 काफी लोगो सहित । 2. पहुंचाने के लिये । 3 रास्ते मे रावराजाजी को दूसरी शादी मत करने देना । 4 कुछ अन्यथा नहीं लेंगे । 5 धोखे से मरवाया । 6 फौज भेजी । 7. सूचना भेजी । 8 नजराने के तौर पर । 9. फतेराज उसकी आमदनी खाता रहा । 10 फतैराज को हानि पहुचे ऐसा कोई उपाय बता । 11. अक्षर ।

रुको बणाय कूचामण सू रुपिया ५०००) पाच हजार मगाय खाय गयौ । पछै फतैराजजी रै आखरा जिसा फतैराजजी रा नाव री फितूर रै नावे[1] अरजी लिखी कै खरची रा इतरा हजार रुपिया मेलीया है सु पोतसी ।[2] इण ताछ री[3] अरजी बणाय भानीराम भडारी मालम कराई । श्री हजूर नै पूरी सक पड़ीयौ ।[4] तरै समत १८८१ रा चैत सुद ६ नम रै दिन फाग खेलण मुदै[5] रंग रा कडाव भराया । नै फतैराजजी रा सारा घर रा नू याद फुरमाया । सो फतैराजजी, मेगराज जी, कुसलराज जी, उमेदराजजी नै इणा रा कामेती वगैरै सारा हाजर हुवा । फाग रमीया पछै सारा नू पकड सलेमकोट मे घालीया । हवेलीयां चोकिया बैठी । नै फितुर रै नावै किरतवी अरजी ही तिका फतैराज कनै मेली सो ऊपर मु खोलनै थोडीसीक वचाई[6] नै पुछायौ—अै आखर किण रा[7] है ? तरै फतैराजजी कयौ—आखर तौ म्हारै जिसा हीज है,[8] पिण म्हे लिखिया नही । इण रौ निरधार कराईजे ।[9]

सुखराजजी रतनराजजी मोभत था सो सौडसरूप पकड नै लायौ । दीवाणगी वगसी खालसे हूई नै भंडारी भानीरामजी ऊपर मरजी वधी फुरमायो–फौजराज नै बुलाव सु तू नै फौजराज काम करौ[10] फौजराज रै नावे खास रुको लिख दीयौ । फौजराज वरस तेरै चवदै मे नै आगे इदरराजजी गुलराजजो मारीया गया जिण सू फौजराजजी री मा रौ मेलण मू मन नही ।[11] जिण सू जेज[12] हुई । तरै भडारी भांनीराम वागा जालोरी कना सूं हजुर जिसा दस्कतां रौ खास रुको किरतवी[13] फेर फौजराजजी रै नावे लिखाय मेलीयौ । तरै फौज-राजजी संमत 1881 रा जेठ मे कुचामण सू जोधपुर आया । श्रीहजूर घणी खातर फुरमाई ।[14] दीवाणगी वगसी तौ खालसे नै काम फोजराजजी नै सू पीयौ सो फौजराजजी कनै काम भडारी भानीराम जी करै नै फेर फौजराजजो कनै कामेती सिघवी माणकचदजी पिण काम करै । फतेराजजो रा बावस्ता रै रुपिया ठेहराणा सरु हुवा ।

समत १८८२ लागौ[1] फौजराजजी नू वगसी रौ सिरपाव रौ फुरमायौ तरै सिघवी माणकचद गुलराजजी री चाकरी लगाय[15] भडारी भांनीरामजी

---

1 ग मेह पाणी मोकळा हुवा ।

---

1 वौन्कळसिंह के नाम । 2. पहुच रहे हैं । 3 इस प्रकार की । 4 शक-पडा । 5 फाग खेलने के लिये । 6 थोडासा अश पढवाया । 7 ये अक्षर किसके हैं । 8 मेरे हो जैसे ही हैं । 9. इसका निवटारा करवाइये । 10. तुम और फौजदार दोनो कार्य करो । 11 फौजराज की माता का भेजने को मन नही हुआ । 12 विलम्ब । 13 जाली, बनावटी । 14 संमान देते हुए आश्वस्त किया । 15 गुलराज की सेवाओ को ध्यान मे रखते हुए ।

हस्तै फौजराजजी नू खास रुका इनायत हुवा। नै रुपीया मगाया सो मेलीया जिण तगायत री मालम कीवी[1] तरै हजूर सूं फुरमायौ कै म्हे तौ फौजराजजी नू अेक खास रुको तौ दीयो है नै म्हे रुपीया देवा कै अपूटी सामा मगावा[2] तरै फौजराजजी रुका निजनस निजर गुदराया[3] तरै फुरमायौ के दसकत वणावण वालै सागै वणाया है।[4] भंडारी भानीराम नू बुलाय फुरमायौ कै तै फौजराज नू अे खास रुका मेलीया सो किण वणाया है। साच बोल। तरै भानीराम अरज करी कै रुका वागै जाळोरी लिखिया है, नै रूपिया म्हे मगाया है। तरै फुरमायौ फतैराज वाळी अरजी री कीकर है[5] तरै भानीराम अरज करी वाही अरजी वागै जाळोरी लिखी है। तरै भंडारी भानीराम नू नै वागै जाळोरी नु कैद किया। पछै वागा जाळोरी ने तौ गधे चढाय, सैहर रै बारै लेजाय जीवणो हात आखर वणाय लिखिया[6] तिकौ हाथ कटाय नाखीयौ। ने भानीराम कैद थी सु कोईक दिना पछै[7] सन्नेमकोट मे सू नास नै जैमिंदर मे गढ ऊपर है जठै जाय बैठौ। सो रूपीया १०,०००) दस हजार ठेहर [1] नै सीख हुई।[8]

समत १८८२ रा काती मे फतैराजजी रै रूपीया १००००००) दस लाख ठेहरीया। पाच लाख ५०००००) री तौ साहूकारी नै ५०००००) पाच लाख री हाजरी जामनी। साहूकारी रा रुका इण मुजब सिरदारा लिखिया। विगत–

४००००) लाडणू रा चालीस हजार।

४००००) चालीस हजार नीवी रा मेडतीया लिछमण सिंघ।

५०००) कटालीया रा पाच हजार।

५०००) रामपुरा रा भाटिया रा पाच हजार।

११०००) कोटडी रा भाटी इग्यारे हजार।

१०१०००)

---

१ ख. रुपिया 70,000) ठेहरिया।

---

1. रुपये मगवाये उस तक की पूछताछ की। 2 हम इसे रुपये देवें या उल्टे इससे मगवावें। 3 उसी समय हुजूर के सामने पेश किये। 4. अक्षर बनाने वाले ने खूब ही बनाये हैं। 5 फतैराज ने धौकलसिंह को अरजी भेजी थी उसके बावत का मामल है। बनावटी अक्षर लिखे। 7 कुछ दिनो के बाद। 8 दस हजार रुपये वसूल करने के निर्णयोपरान्त छोड़ दिया।

इण ताछ घणा जमीदारा कना सू रूका दिराया सु राज रा रुपीया भराय लीया। जमीदारा कना सू।[1] फौजराजजी वाळक नै कामेती सिघवी माणकचद, सो काम चालै नही तरै हजूर जोसी सिभूदतजी नै फुरमायौ कै फोज राज टावर है,[2] सो इणा नु काम मै मदत दीजै। तरै सिभुदतजी मदत दीवी।[1] तो पिण[3] काम चलै नही। तरै फौजराजजी री मा अरज कराई कै फौजराज टावर है सु काम चलै नही सु दूजा नै दिराईजै। तरै दीवाणगी सिघवी इदरमलजी रै हुई सो वरस तीन रही।

महामन्दिर के नाथो का काज्यकार्य मे फिरसे दखल बढा

समत १८८२ सु माहामिदर रा कामेत्या री पचायती राज रा काम मे जांदा पडी। लाडूनाथजी री श्रग्या सू हरेक काम कराय लेता। सो- समत १८८४ लागता माहामिदर रा कामेत्या री सला सू आऊवै फौज लगाई। फौज मे मुसायव बोला सिघवी रौ छोटो वेटौ जीवराज माहामिदर रा कामेती ऊतमचद रा जवाई[4] नू मेलीयौ। सो उण सू काम रस आयौ नही।[5] तरै सू दौ जसरूप माहामिदर रौ कामेती री तरफ सू पचोळी कालूरामजी नै मेलीयौ सो हल्लो करायो पिण रस आयौ नही। फौज रौ लोक घणौ काम आयौ। तरै आऊवा सू फौज उठाय सिघवी फौजराजजी नै विदा किया।

आऊवा रा ठाकुर वखतावरसिंघजी आऊवा री मजबूती कर नै नीवाज रा ठाकुर सावतसिंघजी कनै गया। सो नीवाज ठाकुर सावतसिंघजी नै राम रा ठाकुर भीवसिंघजी[2] वगेरै भेळा होय डीडवाणा री तरफ धोकळसिंघजी नू बुलाया। सु डीडवाणा मै अमल कर लीयौ। तरै आऊवा सू फौज ऊठाय

---

१ ख सो भाजघड सिम्भूदत्त री। सिम्भूदत्त उत्तमचद जसरूप नू घणौ हळको वोलियौ। जद लाडूनाथजी गढ ऊपर आय धरणो दियौ कै सिम्भू नू कैद कर दिरावौ जद हजूर फुरमायो कै देवनाथजी माराज इण कना सू सिवपुराण सुण पालकी रै काधो देय पोछायो जिण नू कैद तो म्हे करा नही अर अेडोज मरजी आपरी है तो दोढी मना करसा। भाटी गजसिंह नै कैवाय पोह सुद मे सवत 1882 मे जोसी नै दोढी मना हुई।

२ ख असोप रा कूपावत तया कूपावत हरीसिंघ वासणी वाळा मिल सला करी कै धोकलसिंह जय्पर रा इलाका परगना जाभगढ वैठो है तिण कनै आपण भला आदमी मेल बुलावो। जय्पर रै नवाव 500 आदमी साथे दिया तिणा नू लेय धोकलसिंह बीकानेर री

(क्र प उ)

---

1. सो राज्य की रकम जागीरदारो मे वसूल करली। 2 अवयस्क है।
3. फिर भी। 4 दामाद। 5 कार्य सधा नही।

सिंघवी फौजराजजी नै बिदा कीया। फौज मे आऊवे खरची री तगाई, तिण सु माहामिंदर रा कामदारा अरज कर मुलक मे च्यार रुपिया घर बाब लीवी पछै नीबाज रा ठाकुर सावतसिंघजी रास भींवसिंवजी नू श्रीहजूर फटाय लीया तरै फितूर धौकळसिंघजी नू छोड अठै उरा आया। तरै गुलाबसागर रै पेली तरफ श्रीजी मातमपोसी डेरौ खडौ कराय कराई। पछै नीवाज रास रा ठाकुर हवेलीया मे आय डेरा कीया। आऊवै री फोज घेरौ ऊठाय लीयौ। आऊवा रा ठाकुर वखतावरसिंघजी आऊवे आय बैठा नै फितूर री फोज बिखर गई।

नागपुर के मीरखां को शरण देना

नागपुर रौ राजा[१] अगरेजी सिरकार रा डर सूं भागौ सो दोय चार आदम्या सु माहामिंदर छानै[1] आयौ। श्री हजूर मालम हुई तरै[2] सरणै राख लीयो।[3] माहामिंदर रा मैहला मे डेरौ करायौ।[4] अगरेजी सिरकार मागीयौ[5] पिण दीयौ नही। घणा वरसा पछै अठै माहामिंदर मे चलियौ।[6] लोढौ किलाणमलजी चलिया पछै छोटो भाई तेजमलजी नै श्रीहजूर राव पदवी दीवी। कंवरजी रा रासा मै तेजमलजो मूता अखेचदजी सु ढब लगाय[7] परबतसर मारोठ री हाकमीया लीवी सो हजूर बारै पधारीया तरै नास नै किसनगढ परा गया सो जद सू[8] रिवमलजी वारै हीज हा सु तेजमलजी तौ मर गया नै रिघमलजी रया सो रिवमलजी रा वडा बेटा फौजमलजी सू सिंघवी फौजराजजी री बेन री सगाई कीवी सो ब्याव[9] करण मुदै[10] रिघमलजी नै मुलक मे लावण री फौजराजजी अरज कीवी सो फौजराजजी रा मुलायजा सू[11] अरज मजूर कीवी नै परवतसर रौ गाव भडसीयौ पटै दीरायौ। समत १८७९ व्याव कीयौ थौ।

काकड आयो। डीडवाणा री रैत कना सूं रु 50 हजार डडरा लिया। पछै वट बावत सिरदारा रै आपस मे फौड हुयो- सो विखर गया। नीवाज नै रास सवत 1884 रा असाढ सुद नै आउवा ठाकुर ने छोड जोधपुर आया) आउवे रो घेरो पण ऊठियो। 1885 लागता फेर महामिंदर सू तो काम मोकूव हुवो ने जोसी सिम्भूदत्त तालकै हुवो। 22 परगना री हाकमिया इण तालके हुई (अधिक)।

१ ग धेरसलियो (अधिक)।

---

1 चुपके से। 2 महाराजा को मालुम हुई तब। 3 अपनी शरण मे रख लिया। 4 महामदिर के महलो मे रखा। 5. उसे मागा। 6 यही उसका देहान्त हुवा। 7 अटकल लगाकर। 8 तवसे। 9.-10 विवाह के लिए। 11 लिहाज से।

फौजराजजी री माई री बेटी बैन[1]-तौ फौजमलजी नू परणाई नै सगी बेन किसनगढ रा दिवाण मेहता करणसिंघजी रा बेटा विजैसिंघजी नू समत १८८४ रा माहा सुद ५ परणाई[2] पछै विजैसिंघजी नै फोजराजजी अरज कर अठै हीज[3] राखीया नै जैतारण री गाव आसरलाई पटै दिराई।

लाडूनाथ की गिरनार यात्रा और मृत्यु—

समत १८८५ रा आसोज[4] मे आयसजी श्री लाडूनाथजी गिरनारजी री जात्रा करण गया सो गिरनारजी नू चढती वखत[5] श्री हजूर मे अरज करी-सिंघवी फतैराजजी नू दीवाणगी दिराई¹ लाडूनाथजी गिरनारजी चढिया तरै श्री हजूर सु सिरकारी लोग अग्या मुजब साथै मेलीया[6]। सिंघवी कुसलराजजी नू साथै मेलीया।

गिरनारजी परस[7] पाछा आवता[8] सिंघवी कुसलराजजी वगैरै आयसजी सू अरज कर श्री द्वारकानाथजी गया सु मारग मे पाछा आय सांमल हूवा[9]।

पाछा आवता गुजरात रै गाव बामणवाडै लाडूनाथजी माहाराज नै ताव आय देवलोक हुवा[10] आयसजी कनै चारण मरजीदान[11] घणा[12] था सौ किणी नै गिणता न्ही।[13] जिण सू सिरकार रा कामदार वगैरै सारा दोरा था सो लाडूनाथजी देवलोक हुवण री झूंठी वदनांमी चारण ऊपर दीवी।[14] सो इण वात री सायद[15] आयसजी रा कामदारा सिंघवी कुसलराजजी ऊपर थापी।

कुसलराजजी नै श्रीहजूर पूछीयौ। तरै कुसलराजजी अरज कीवी कै आ वात झूठी है। गाव जुडिया रा चारण लालस नाथूराम रै कयोडो दूहो—

देवा रो दरियाव, फूटता फाटी जती।
निज कब पाता नाव,[16] कुसलै हिक राखी।

---

¹ ख श्री हजूर री मरजी सिवाय फतैराजजी नै दीवाणगी लाडूनाथजी दिराई सो जमी नही। (अधिक)

---

1 मा की वहन। 2 शादी की। 3 यहीं पर। 4 आश्विन। 5 विदा होते समय। 6 आज्ञा के अनुसार लोगों को साथ भेजा। 7 गिरनार में देवता के चरण-स्पर्श कर। 8. लौटते समय। 9. वापिस आकर उनके साथ मिले। 10 बुखार आकर मृत्यु हो गई। 11. कृपा पात्र चारण। 12 बहुत से। 13. किसी को मानते तक नहीं। 14. बदनामी चारणों पर दी गई। 15. संभावना की वास्तविकता। 16. चारण लोगों की नाव।

लाडूनाथजी साढा उगणीस वरस री आवस्ता पाई । वडा समजवार था[1] । वडा दातार[2] । चारणा नै अेक दिन २५ पचीस हाथी दिया[3] । लाडूनाथजी रै साथे लोक थो तिण मे ही घणी मादगी हुई[4] । सो सारा नू अवेर नै कुसलराजजी लाया[5] ।

लाडूनाथजी रा वेटा भैरूनाथजी वरस दोय-तीन रा था जिणा नै गादी बेठाणीया[6] सो मीना छयेक पछै चल गया[7] । तरै भीवनाथजी आप रा वेटा लिखमीनाथजी नू लाडूनाथजी रै खोळै[8] दीया । भैरूनाथजी चल गया तरै सुरतनाथजी रा पोतरा[1] चनणनाथजी नू खोळै लीया था । जिणां नू ऊथाप नै[9] भीवनाथजी धरणी गढ ऊपर देय नै लिखमीनाथजी नू खोळै दीया । जठा पछै गुर पदवी रा मालक भीवनाथजी हुवा । राज रौ काम भीवनाथजी री अग्या सूं हूवतौ । लिखमीनाथजी नू खोळै री चादर गढ ऊपर हजूर ओढाई नै हाथी रै होदै लिखमीनाथजी नै वेसाणीया नै खवासी मे चवर ले छोटा भाई प्राणनाथजी वैठा । सिरे वजार होय माहामिंदर दाखल हूवा[10] ।

समत १८८१ मे किसनगढ माहाराज किलाणसिंघजी गगाजी सू पाछा आवता दिली आया दिली रा वडा साहव कवल वुरक सू दोस्ती हुई पाछा किसनगढ आया । माहाराज वादरसिंघजी रा पडपोता माहाराज किलाणसिंघजी रा पोता[11] चादसिंघजी जिणां रै फतेगढ ही नै दूजा ही[12] जमीदारा रा ठिकाणा छुडाय लेवण रौ माहाराज किलाणसिंघजी रौ ईरादो हूवौ । सो पाछा दिली गया नै खजानो ले गया । जिण सू परदेसी लोग पाच-छव हजार लोग भरती कर पाछा किसनगढ आया । जमीदार सारा नै देसी चाकर सारा किसनगढ मे भेळा हुवा । दूजै दिन किसनगढ सु रूपनगर मे वड गया जद किलाणसिंघजी रूपनगर फौज लगाई[13] । दोय तरफी तोपा सरू हुई ।[14] माहाराज किलाणसिंघजी अजमेर वडा साहिव कमडीस कनै गया नै देसी चाकर कनै रया जिणा नै सारा नै अजमेर सू सीख दीवी ।

---

१ ग वालानाथजी रा वेटा (अधिक)

---

1 वडे समझदार थे । 2 बहुत दानी थे । 3. एक दिन मे पच्चीस हाथी (राज्य की ओर से) दिये । 4. बहुत लोग बीमार हुए । 5 सब की देखरेख करके कुशलराज लाया । 6 गद्दी पर बैठाया । 7, छ महीने बाद ही मृत्यु हो गई । 8 गोद (दत्तक)। 9 गद्दी से हटाकर । 10 महामंदिर मे प्रवेश किया । 11 पौत्र । 12 दूसरे भी । 13. फौज भेजदी । 14. दोनों तरफ तोपें चलने लगी ।

मुलक मे लू टाखोसी[1] वडो फिसाद पैदा हूवौ । वडै साहव सिरदारा रा ऊकीला नें वुलाय रूपनगर खाली कराय दीयौ नै फोज उठवाय दीवी ।

माहाराज रैं नै जमीदारा रै केई दिन रूह वकारीया हूई सेवट[2] माहाराज किलाणसिंघजी साहव रौ कयौ मानीयौ नही[3] । जव साहव सिरदारा न् कयौ[4] मुलक का वदोवस्त तुम कर लेवौ । तरै सारा मुलक मे जमीदारा वदोवस्त कर लीयौ । किसनगढ सैर मे नै सरवाड रा किला मे माहाराज रौ अमल रयौ । तरै माहाराज थोडा सा असवारा सू अजमेर सू जोधपुर समत १८८५ रा भाद्रवा मे ऊरा आया । सौ ऊदेमिदर रेहता[5] । नै रुपिया १००) अेक सौ माहाराज श्री मांनसिंघजी हमेसा[6] कर दीया । लारै किसनगढ मे सिरदारा चाकरा कवरजी मोहकमसिंघजी नै मुकत्यार कर दीया ।[7] पछै समत १८८८ मै वडा लाठसाहव अजमेर आया जद माहाराज किलाणसिंघजी जोधपुर सू अजमेर गया । लाठसाहव वहादुर नै अरजी दीवी । तरै रुपीया १००) अेक सौ किसनगढ रा राज माह सू कराय दीया नै हुकम दीयौ–किसनगढ इलाके से वाहिर दूसरी जगा रहौ[8] । तरै किलाणसिंघजी दिली जाय रह्या सो समत १८९६ वा रा वैसाख मे दिली देवलोक हूवा[9] ।

आयसजी लिखमीनाथजी माहामिंदर री गादी वैठा तरै माहामिंदर रा कामदार मुतो ऊतमचद जसरूप कवीला सहैत[10] रायपुर जाय वैठा । मूतो किसतूरचद नै माहामिंदर री काम सूपीयौ । पछै लिखमीनाथजी भीवनाथजी वाप वेटा रै आपस मे वणत रही नही[11] तरै लिखमीनाथजी मूता उतमचद जसरूप नै रायपुर सू वुलाय काम सूपीयौ । हजूर मे छूट कराई । राज री काम माहामिंदर री अरया सू होणौ सरू हूवौ । तरै भीवनाथजी उदैमिंदर सू छाडाणो कर[12] गाव कायथा गया । हजूर सु व्यास कचरदासजी नू लारै मेलीया मनवारा मोकळी कीवी[13] पिण भीवनाथजी तौ पाछा आया नही ।

जोशी शम्भुदत्त पर महाराजा की विशेष कृपा—

जोसी सिभूदतजी जोसी वेदिया मे घेरा मे हाजर हा जिण सू श्री हजूर । मेहरवान । देवनाथजी नै पढावता,[14] पछै कवरजी नै पढावण नै राखीया ।

---

1. लूटपाट । 2 अत मे । 3 महाराजा ने साहव की कही हुई वात नही मानी । 4 सरदारो को कहा । 5 उदैमदिर मे रहते थे । 6 रोजाना के एक सौ रुपये खर्च के उन्हे दिये जाते थे । 7 राज्यकार्य का अधिकार कुवर मोहकमसिंह को दे दिया । 8 किशनगढ की सीमा से वाहर दूसरी जगह रहो । 9 स्वर्गवासी हुए । 10 वालवच्चो महित । 11 आपस मे वनी नही । 12 उदैमदिर छोडकर । 13 मनाने का काफी प्रयास किया । 14 पढाते थे ।

कंवरजी बारै पधारीया तरै विद्या-गुर पणा रौ सिरपाव कडा मोती कंठी वेठण नै रथ सिभूदतजी नै दीया । कवरजी नै बारै पधरावण री सटपट[1] सरू हुई तरै सिभुदतजी कवरजी नै अरजी दीवी-हजूर रै अेक आप हीज कवर हौ सो पाट भगती[2] राखी चाहीजै । ऊवा अरजी वाच नै कवरजी उणीज अरजी लारै खास दसकता लिखीयौ थै नसीयत लिखी सो वाजबी है पिण बारै आवणो ठेहर गयौ नै पाट-भगती मे कसर घालस्या नही । पछै कवरजी छळीयार गिरी[3] री चाल सरू कीवी, तरै सिभुदतजी घणा मनै कीया । तरै सिभुदतजी नै झरणा मे कैद कर दीया तरै सिभुदतजी तीन दिन ताई अन जळ लीयौ नही तरै छोड दीया । कवरजी चलिया पछै श्री हजूर बारै पधारीया तरै जोसीजी कवरजी रा आखरा सुधी अरजी वचाई तरै हजूर खातर फुरमाई[4] । पछै जोसीजी सू दिन दिन मरजी वधी ।

श्रीनाथजी रो धरम ईश्वर मे मिलावण रा ग्रंथ जोसीजी बणाया सो जोसीजी नै कविंद्र पदवी हजूर दीवी¹ उदैमिदर माहामिदर रा कामेती राज रो काम वेवाजवी करता जिणा नै अहोडा जोसीजी देता[5] तिण रौ हजूर और तरै[6] जाणता नही । चार-पाच वार कुल मुकत्यारी मुसायबी करी कुसलचदोत भडारीया नै ओधा खिजमता जोसीजी दिराया, नै इणारी खाप नै वधाई ।[7] समत १८८५ मे भडारी किसतूरचदजी नै अगरैजा री ऊकीलायत दिराई नै भीवनाथ जी सू वणतो नही सु भीवनाथजी रै लेह आवतौ[8] जरै जोसीजी रौ काम मोकब कराय देता ।

सिघवी फतैराजजी रै पैली किस्त रा रुपीया पाच लाख ५०००००) ठेहरीया तिण मे ७५०००) पिचतर हजार तो सिघवी ऊमेदराजजी² दीया नै मेगराजजी कुनलराजजी सुखराजजी ८६०००) छिआसी हजार दीया । ने बाकी रा रुपीया जामनी रा रुका जमीदारा रा फतैराजजी लिखाय दीया था सु जमीदारा भरीया । पछै समत १८८४ मे लारली किस्त रा रुपीया ५०००००) पाच लाख बाकी था तिण मुदै माहामिदर रा कामेतीया फतैराजजी नै फेर कैद कराई । पछै फतैराजजी माहामिदर रा कामेती ऊतमचदजी री बेटी सू आपरा बेटा पेमराजजी सू सगपण कीयौ नै रुपीया ५००००) पचास हजार भर नै

---

१ ग पैलाइज दीवी थी ।
२ ग उमेदराम जी ।

---

1 साजिश । 2 गद्दी के प्रति आस्था, वफादारी । 3 बदचलन ।
4 महरवानी प्रकट कर आश्वस्त किया । 5 जोशीजी उन्हे टोकते थे ।
6 अन्यथा । 7 इनकी खाप (कुल का) का महत्व बढाया । 8 वश पहुचता ।

छूटा। मेगराजजी कुसलराजजी सुखराजजी इणां हजूर सुं न्यारो तार लगाय लीयो[1] समत १८८० मे जोधपुर री हाकमी सुखराजजी रै हुई। पछै संमत १८८६ रा मिगसर मे भीवनाथजी फतैराजजी री दोढी मने कराई[2]। तरै मेगराजजी कुसलराजजी सुखराजजी री ही दोढी मने कराय दीवी। समत १८८६ रा सीयाला मे दीवाणगी रो काम खालसै नै सिंघवी फौजराजजी नूं भोळावण।[3] सो दीवाणगी नै वगसी रो काम दोनू फौजराजजी करै।

गुलराजजी लारै सेहर मारणी खाड रा सीरा री पोहकरण री हवेली मे फौजराजजी कीवी। छतीस पूरण जिमाई[4]।

फतैराज को फिर से दीवान का पद मिलना—

समत १८८७ रा आसोज मे माहामिंदर रा कांमदारां री मारफत दिवाणगी सिंघवी फतैराजजी नै हुई परवतसर मारोठ री हाकमीया सिंघवी कुसलराजजी सुखराजजी रै हुई सो साढा चार वरस रही, हाकमीया घणी आछी तरै कीवी[5]। वडू रा कामदार आसकरण कनै रुपीया २००००) वीस हजार[1] लीया। आलणीयावास वाळा कना सु रुपीया ७०००) सात हजार लीया। बोडावड वाळा कना सू रुपीया ८०००) आठ हजार लीया। फतैराजजी री दिवाणगी समत १८८८ मे उतर गई।

तरै भाटी गजसिंघजी री मारफत सिंघवी गभीरमलजी रै दिवाणगी हुई समत १८८८ मे गाव वीठोजो सिंघवी मेगराजजी रै पटै हुवो। राज मे खरच रो तोडो[6] सु परवाणा ऊधार जमा रा दस रुपीया सैकडै काटा रा नै दोय रै व्याज रा हुंता।

अग्रेजो द्वारा जोधपुर से चढी हुई रकम और नागपुर के शासक को दी गई शरण का तकाजा-

समत १८८७ मे अगरेजा री उकीलायत कुसलचदोत भडारी किसतूरचदजी रै थी। सो अगरेज मामला रा रुपिया वावत तथा गैर इलाकां रा मुकदमा वावत तथा नागपुर राजा वावत जवाव मागै। सो उकील सूं जवाव

१ ग तीस हजार।

1 अलग से सम्पर्क स्थापित कर लिया। 2. महाराजा से मिलने का अवसर बंद करवा दिया। 3 काम की देखरेख फौजराज के सुपुर्द। 4 छत्तीस ही कौम के लोगों को भोजन कराया। 5 अच्छा शासन किया। 6 रकम की कमी।

बराबर भुगतै नही ।[1] तिण बावन वडो सायब नाराज । तरै उकील री मदत सारू व्यास कचरदासजी नू सावठो लोरु-बाग नै मेलीयौ । सायब[१] दिली थी सु सपाट्र रा पाहाडा परौ गयौ थौ । तरै कचरदासजी हरदुवार री जात्रा कीवी । पछै सायब पाछा आया तरै मामला रा रुपीया री हुंडीया दे जरा-बोत सफाई कर कजरदासजी जोधपुर आयौ[2] ।

पछै ऊकीलायत आसोपा सुरतराम रै हुई ।

अजमेर में अंग्रेजो की ओर से शासको का दरबार बुलाना—

पछै समत १८८८ रा सीयाला मे लाठ साहब बहादुर अजमेर आया । सारा रजावाळां नै बुलाया । उदैपुर, जपुर, भरथपुर, टोक, बूंदी, कोटौ, बगेरह सारा राजा अजमेर आया । नै अठे अजमेर जावण सारूं बारै डेरा खडा हुवा । सिरदारा नूं बुलाया । सारी वात री तयारी करायी । पिण पछै माहाराज श्री मानसिंघजी अजमेर पधारीया नही[२] सो इण वात सू अगरेजी सिरकार नाराज हुवा पिण उण वखत जाहारायन मे[3] विसेस नाराजी दिखाई नही । अजमैर मे उदैपुर, जैपुर वगेरे राजा आया जिण री लाठ साहब सू न्यारी-न्यारी मुलाखात हुई । दरबार हुवौ नही । लाट सायब राजावा रै डेरा[4] पधारीया ।

समत १८८९ मे दिवाणगी री काम खालसाई भडारी लिखमीचदजी नू सूपीयौ मौर खालसा ही नै मुसायबी भीवनाथजी री अग्या सू मूतौ हरकचद करै । वडो सायब लाट साहब बाहादुर जोधपुर हुय जैसलमेर गया । तिणा नै पौचावण सारु व्यास कचरदासजी नै मुहता हरकचदजी गया गाव तिवरी ताई[5] गया ।

कचरदास भाटी गजसिंघ आदि को कैद करना

व्यास कचरदासजी, जेठमल, सिवलाल, अखैराम, उदैराम, भाटी गजसिंघ नै कैद समत १८८९ रा आसाढ मे नै ऊणीज दिन श्री हजूर सायबा री ब्याव

१ ग हुवा खावण नै (अधिक) ।

२ ख पिण श्री हजूर सू किणी सिरदारा मुसदिया वगेरे मोहले अरज करी कै कदास आपे उठे जावा नै आपानू अटकाय देवै कै नागपुर रा राजा नु देय नै जावो तो सबलआदी सू पहपावा नही । नागपुर वाळै नू सूप देवा तौ वात वेढव लागै सो जावण मे सला है नही । तिण सू हजूर पधारिया नही । (अधिक)

1. समय पर वकील उपयुक्त जवाब नही दे पाना । 2 थोडी बहुत स्थिति स्पष्ट करके । 3 प्रकट रूप मे । 4 प्रवास स्थान । 5 तिवरी ग्राम तक ।

श्री ।[१] व्यास पदवी व्यास सिवदास नै हुई भाटी गर्जसिंघजी रै रुपिया २०००००) दोय लाख जोसी सिभूदतजी हस्तै ठेहरीया । नै व्यास कचरदासजी रै रुपीया २०००००) दोय लाख जोसी सिभूदतजो हसतै ठैहरीया नै व्यास पदवी पाछी हुई ।[1] नै व्यास सिवदासजी रै गाव आसीया पटै हुई । कचरदासजी रा रुपीया भरीज गया पछै व्यास पदवी पाछी सिवदासजी रै हुय गई । छागांणी सिवलाल अखैराम उदैराम रै रुपीया १०००००) अेक लाख ठेहरीया । सो फजीती रै साथ[2] सितर असी हजार भरीजीया ।

ठिकाने बूड़सू व वगडी मे उलटफेर का वृत्तात

समत १८७५ मै बूडसू अखेसिघोता कने छुडाई । सो कितराक वरस खालसै पटौ रयौ । पछै जसरी रा मेडतीया सादुळसिंघ, रतनसिंघ पाडसिंघोत नै समत १८८५ मे पटौ श्री हजूर सूं बूडसू रो लिख दीयौ । सु अखेसिंघोता मुलक मे पूरो दोडा धावौ कीयौ[3] पिण समत १८८७ लगायत समत १८९१ रा सुधी हाकमी परब्रतसर मारोठ री कुसलराजजी तालकै रही, धोडा-धावौ करता जद लारै वाहार पचोळी कवरचद चढतौ मु द्र ढाड मैं लारो कर भगडौ वेहदो कर[4] धन पाछौ लावता ।[5]

पछै समत १८८८ मे वगडी रौ ठाकुर जैतावत सिवनाथसिंघ केसरी सिंघोत छाड गयौ । वगडी खालसै जोसी सिभूदतजी तालकै हुई । तरै वगडी वाळो ही अखैसिंघोता सामल हुय गयौ[२-6] मुलक मे दौडतौ,[7] सु समत १८८९ मे भावी लूटी, जैतारण लूटी, वगडी लूटी, सावठौ माल लैगयौ ।[8] जद श्री हजूर सू समत १८८९ रा आसाढ वद ३ तीज नै सिंघवी कुसलराजजी नै विदा किया ।

१ ख देवडा रौ डोळौ आयौ । (अधिक)

२ ख वणसूर भैरुदानजी रौ श्री हजूर मे पूरो मुलायजो । श्री हजूर किणी वगत मे उदासी मे चित्त जाय लागै जदै भैरदानजी नू याद फरमावै । श्रौ आय हाजर हुवै । वाता एडी खुसी री करै मसला प्रस्ताविक हुवै जद श्रीहजूर सारी फिकर भूल हसी-खुसी वाता करण लाग जावै । और कोई मुकदमा निरदारा वगेरा रौ आय पडै नै वचन जमीदार नू सिरकार रा दिरावणा हुवै तो भैरुदानजी रा दिरावै । मुसायवी रै दरजै बादरमलजी री अदालत तालकै । सो श्रीहजूर री मरजी उणा सू मपूरण जीविया जितरै रही । अर चैनदानजी पिण भैरदानजी रौ वेटो हुवै जिसो, सासतर भणियोडो वडी दानाई री चाल' ' । (अधिक)

1 व्यास पदवी फिर से कचरदास को दी गई । 2. वडे अपमान के साथ । 3 लूट-खसोट की । 4 लडाई टटा करके । 5 गया हुआ माल वापिस लाते । 6 वगडी ठाकुर भी बूडसू के अखैसिंघोतो के शामिल हो गया । 7 मुल्क को लूट-खसोट करता । 8 काफी माल लूट कर ले गया ।

राज मैं रुपिया री तोडौ सु खरची कठा सूं लावै ? तरै राणीजी श्री बडा देवडी-जी-मा नै फुरमायौ मुलक रा वदोबस्त मुदै कुसलराज नै मेला हा सु रुपीया ८०००) आठ हजार रौ खत कराय देवै। तरै कराय दीयौ। सु कुसलराजजी सात घोडां सूं डेरौ वारै कीयौ। सेख अेवजअली रा पाळा[1] १५० साथै हा सु कूच करता गया ज्यूं लोक भेळो हूतो गयौ। असाढ वद १० डैरा गाव कैलवाद हुवा।

परवतसर सूं मुखराजजी पचोळी कंवरचदजी नूं घोडा ५०० पाच सौ देनै सिघवीजी कनै मेलीया। सो आघौ आतरौ जिण सु करडी मजला करनै पोथा[2] वगडी रा नै अखैसिघोता रा गाव खोडीया रा गढ मे था सु इणारा डेरा कैलवाद सुणिया तरै भाग नै मेवाड मे गयां। हलकारा री खबर सूं वद १० नै गत रा कुसलराजजी लारै चढिया सु मेवाड रौ गाव चीवडै पोथा। जठै झगडो हूवौ। वगडी रा नै अखैसिघोता रा सावठा आदमी मारीया गया। घोडा पडाऊ आया उणा रौ डेरौ सारौ लूट लीयौ। इण झगडा मे रायपुर ठाकुर साधोसिंघजी सामल हा सु फतेहकर नै पाछा असाढ वद ११ ग्यारस कैलवाद आया। फतै हुवा री अरज जोधपुर लिखी। तरै मैरवान हुय[3] नै गाव कौसाणो कुसलराजजी नै पटै दीयौ।

समत १८९० मे काल पडीयो[1]। समत १८८९ रा असाढ मे पका तोल रा गोहू रुपिये अेक रा १) रा ३॥।)३ तेतीस सेर विकता सो नव सेर रा विकिया, घास हुवौ नही सो थराव[4] मुलकरा घणा मूवां।

माहांमिदर रा कामदार ऊतमचद जसरूप री राज रा काम मे पचायती पडी। लिखमीनाथजी री अग्या वरतीजै।[5] जसरूपजी समत १८९० रा आसोज मे दिवाणगी पचोळी कालूरामजी नूं दिराई। सो चैत मे जबत हुई। मीर दोढी धरीजी।

सेठ रुघनाथमा नै कैदकर सलेमकोट मे घाल रुपीया साठ हजार ६००००) जसरूपजी लीया। ऊतमचद जी माहांमिदर सूं फट[6] भीवनाथजी

---

१ ख 36 कारखाना वरवाद हुय गया। जमा आवै सो तो परवारी-मुसायव खायपा पातिया मार लेवै अर परदेमी वगेरे सागडद पैले री खरची पूगै नही।—वडे साव रो खिरणी वावत तकाजो। (अधिक)

---

1. पैदल सिपाही। 2. अधिक दूरी के कारण लवे-लवे पडाव करके पहुंचा। 3 मेहरवान होकर। 4 पशु। 5 राज्य-कार्य मे आज्ञा चलती है। 6 अलग होकर।

सामल हुवौ । भीवनाथजी मतै ही लिखमीनाथजी नै महामिंदर बारै काढ दीया सु भटकता फिरिया । जसरूप नै भीवनाथजी मोकुफ कराय दीया ।

लिखमीनाथजी नु काढ दीया सौ वात हजूर रै मन भाई नही पिण भाव रा मुदा सू[1] भीवनाथजी नै क्यूं ही कह सकै नही । ऊतमचंदजी कहै ज्यूं भीवनाथजी करै । ऊतमचंदजी फतैराजजी सू सगपण हुवा पछै पूरा राजी । मू पचोळी कालूरामजी सू दिवाणगी उतराय नै फतैराजजी नू दिराई ।

अगरेजा री उकीलायत हजूर सु मरजी सू[2] आसोपा अनोपराम न दीवी । अगरेजी सिरकार मे घोडा १५०० पनरैसौ चाकरी रा मगाया सो लोढौ रिधमल नै मोणोत रामदास घोडा ले अजमेर गया ।

समत १८९० रा वेसाख जैठ मे दोय तीन वार काळी-पीळी आधीयां आई । असाढ लागता व्रखा[3] हूई । समत-१८९१ जमानौ चोखो हूवौ[4] पको तोल रा गोऊ ऽ।)४, मोठ ऽ।।)१, मूग ऽ।)४, बाजरी ऽ।।) विकीया ।

अंग्रजो की ओर से खलीतो के जवाब के लिए तकाजा

आसोपो अनोपरामजी ऊकील जोधपुर लिखावट करी जिण रौ जवाव भीवनाथजी भुगतावै नही ।[5] हरेक मुकदमा वावत खलीता आवै । जिण रो जवाव लिखीजै नही । खलीता ४५ रौ जवाव भुगतीयौ नही । हरेक मुकदमा वावत अनोपरामजी तो चल गया नै ऊणा रो वेटो सवाईराम अेवजी मे गयौ ।[6] जिण ऊपर वडा साहव री पूरी तकरार हुई । सो आ विगत मालम हुई ।

तरै सिंघवी फौजराजजी वगसी भडारी लिखमीचद खालसै दिवाणगी रौ काम करै । जोसी सिभूदतजी, सिंघवी कुसलराजजी, धाधल केसरीसिंघजी इणा नै समत १८९१ रा भाद्रवा-सुद १४ चौदस मे विदा अजमेर नै किया । नै कुचामण रा ठाकुर रणजीतसिंघजी नै खास रुको इनायत हूवौ सु अजमेर सामल हुवा । मुसायवा नू जाता नू हजूर फुरमायौ के-हर वेत कर[7] अगरेजा नै राजी राखजो । पिण लिखावट रा वद मे[8] आवजो मती ।[१] कुचामण ठाकुर रणजीत-

१ एव थारै तुळै ज्यू करजो पण फितूर दिरावण रौ कदास केवै तो हाकारो भरजो मती । "(ग) शाहजी री सीख फलसा ताई है ।

0 दो मोटा उमराव भाद्राजण अर कुचामण माथे । (अधिक)

1. भक्तिभाव के कारण । 2 महाराजा की इच्छा के अनुसार । 3 वर्षा । 4. फसलें अच्छी हुई । 5 प्रत्युत्तर नही देते । 6 उनके स्थान पर वकील वनकर गया । 7 हर प्रकार के प्रयास से । 8 लिखित रूप मे किसी वधन मे मत आना ।

सिघजी नै पांचू मुसायब वडा साहब अलवीर साहब बहादुर सू छोटा साहब सिर विलियम साहब[1] बहादुर री मारफत मुलाकात कीवी। वडा साहब नाराज हा जिण सू पैरवाई री इलला कराई नही लाठ सायब सू मुलाकात करण हजूर पधारीया नही जिण रो पिण वडे साहब जतावो दियो।[1] नै लारला खलीता रै जवाब री पिण पूरी ताकीद कीवी। तरै ठाकुरा नै मुसायबा अरज करी कै हजूर रा सरीर मे दोय तीन बरस सू बीमारी है जिण सबब सू अजमेर पधारणो नही हुवो। नै इण ही सबब सू खलीता रो जवाब नही लिखीजियो। तरै वडे साहब कह्यो–माहाराज कू कुछ बीमारी नही है, नाथा की दबवारी की[2] बीमारी है जरूर। हमारी सिरकार दानी है[3] और माहाराज सायब कू दानी समझते हैं जिस सबब से धकता है। लेकिन नागपुर का राजा सिरकार कपनी का गुनेहगार है जिस कू रखकर माहाराज साहब नै क्या कीया? तरै अरज करी कै माहामिंदर म्हा रै सरणै री जगा है[4] आप भी नागपुर के राजा कू पकड कर के कैद करनै। जैसा हम भी वहा कैद मे रखेंगे। सायब कयो–अच्छा मामले का बहुत रूपया चढै है[२] अर फौज खरच देवो नै आगा सू सुधी वरतण राखण[5] री पकाइ करो। तरै मामला रा नै फौज खरच रा रूपिया रो मुकरडो बाध नै[6] रूपीया ५००००) पाच लाख कबूल कीया। जिणा रूपीया मे साभर नावा री जमा लगाई। दोनू दरीवा[7] अगरेजी सिरकार मे रूपिया पेटे सुपरद करणा ठैहराया। नै सुधी वरतण राखण रो खलीतो लिखाय दीयो।

वडा साहब नै रजावध कर नै[8] जोधपुर आसोज सुदि मे आया। सारी विगत मालूम करी। तरै फुरमायो–रूपीया तो पाच लाख रा दस लाख ठैहराय नै चारू दरीवा दे आवता नो ओर तरै नही थी पिण सुधी वरतण राखण रो

१ ख मरसताई मुलाकात पैले दिन हुई दूजै दिन आसोज सुद दूज नू फेर मुलाकात हुई (अधिक)

२ ख. खिरणी रा रुपिया चढ गया बावत सिरकार कहै सो इकसाखिया मुलक अर सवत 90 हळाहळ काळ पड गयो तिण सू खिरणी दिरीजी नही नै गैर इलाका मुकदमा बाबत फुरमायो सो मारवाड रा मुकदमा बाकी रा मारवाड ऊपर है सो दुतरफो फैसलो करावो। खिरणी रा रुपिया 2-3 लाख आसरै बाकी तिणरो मुकरडो लेखो कर 2 महीना रो कौल कियो। अर जैसलमेर सिरोही रा दूतरफा फैसला कराय लेणा इण तरै बात कर तसली करलीवी। (अधिक)

1 अपनी नाराजगी प्रकट की। 2 नाथो के दवाव की। 3 मौतबर, गभीर। 4 वह शरण की जगह है। 5 हिसाव किताब स्पष्ट रखने की। 6 पूरे हिसाव की निश्चित रकम तय करके। 7 नमक की खाने आदि। 8 खुश करके।

वधारग नही करणौ हौ ।[1] सो आ वात हजूर रै मरजी मे आई नही । भीवनाथजी इण पाचू मुसायवा री नालस करवो करता । सौ सिंभृदतजी लिखमीचंदजी केसगेजी ऊपर तौ हजूर री मरजी विसेस जिण सु वार आणौ नही[2] नै फौजराजजी कुसलराजजी नै सिंघवी सुमेरमलजी नै कैद करण रौ भीवनाथजी हजूर नै हाकारौ भरायौ ।[3]

फागुण सुद ८ आठम तीना ही नै कैद कराय दीया नै दीवाणगी रौ काम भडारी लिखमीचंदजी करै । कवरजी रो रामौ हुवा पछै ठाकुर कुचामण, भाद्राजण, रायपुर, नै जूसरी रा ठाकुर सादूळसिघजी, या सू मरजी वधी ।[4] नै इणा नै पचायती मे राखीया । सो कुचामण भाद्राजण वाळा रै फौजराजजी सू पूरौ ममत हौ[5] सो फौजराजजी नू कैद हुई तरै भादाजण रा ठाकुर बखतावरसिघजी नूं ही वैम आयौ । सो तळेटी रा मैला आयसजी लिखमीनाथजी रहता जिणा रै सरणै जाय बैठा । तरै फतैराजजी रा कैणा सू भादाजण रौ जटौ जवत हुय फतैराजजी तालकै हुवौ । नै भादराजण ऊपर फौजवधी[6] फतैराजजी तालकै हुई । फतैराजजी री तरफ सू फौज मुसायव पचोळी छोगमलजी ने मेलीया । लिखमीनाथजी री खातरी सू ठाकुर बखतावरसिघजी चढ नै भाद्राजण गया नै भादराजण घेरौ लागौ । लडाई सरू हुई ।

भादराजण वाळो फतैपुरीया री कतार मभोई[7] सु आवती थी जिण मे माल रुपिया दोढ लाख रौ खौस लीयौ । फतैपुरीया री दुकान अजमेर मे थी सो साहब बहादर नै अरजी दीवी । भादराजण रा कामेतीया साहब बाहादर नै ईनला करी कै हमकू ¹ भीवनाथजी विना गुनै मुलक बारै काढै है अर फौज लगाई है जब हमने माल खोसीया है । तरै उकीला सू साहब बहादर तकरार कीवी कै कैतौ माहाजना के माल का रुपीया माहाराज के खजाने से देवो कै भादराजण से फोज उठाय लेवौ । सु भादराजण वाळा माल देदेसी । तरै भादराजण सू फौज उठाय लीवी । पटो जिलौ जवत हौ सु पाछौ लिखदीयौ । तरै भादराजण वाळा फतैपुरीया रौ माल सारौ देदीयौ ।[8]

१ ग दिना खून (अधिक)

1 परन्तु आगे से उनकी इच्छा के अनुसार चलने का वचन स्वीकार करके नहीं आना था । 2 नुकसान पहुचाने का अवसर आया नहीं । 3 स्वीकृति दी । 4 इन पर मेहरबानी बढी । 5 पूरा ममत्व था । 6. फौज की चढाई हुई । 7 बम्बई । 8 पूरा माल वापस लौटा दिया ।

मालानी इलाके के जमीदारो का उपद्रव

समत १८९१ रा मा तथा फागुण मे मालाणी इलाका रा जमीदार भोमोया चोरी धाडौ सिंध गुजरात वगेरै इलाका मे करै जिण रौ वडे साहब वाहादुर हजूर नै कैवायौ कै इनका वदोवस्त ररौ। या ये लोग बिगाड करै जिसका थेवज वसूल करौ।[1] नहि तो हमारी सिरकार इनकु सजा देवै जिस मे ग्रापकी फौज हमारे सामल रखो। तरै लाडणु रा जोधा परतापसिंघजी नै जाळोर रा हाकम नै फौज दे मेलीया। सिंध गुजरात गैर इलाका रा साहब वाहादुर सामल हुय वाडमेर डेरा कीया। वाडमेर रा सिरदारा नै मुलाकात वास्तै वुलाया सु दगौ कर सारा नू पकड लीया।[2] वेडीया घाल कछभुज पोचता कीया।[3] वाहाडमेर मे सायव वगलो वणायौ नै लोक उठै राखीयौ। जोधपुर री सिरकार री फौज-वळ[4] जसोल, गुडै, नगर, वाडमेर वगेरै मे रुपीया १२०००) बारै हजार कदीम सू लागता[5] सौ अगरेजा कयौ कै हमारी सिरकार की मारफत अै रुपीया जोधपुर खजानै वरसा-वरस[6] पोहोथ जासी नै मालाणी मै दिवाणी फौजदारी तेहसील वगेरै रौ कवजौ अगरेजी सिरकार कीयौ।

समत १८९२ रा पोस महीने मे जोसी सिभूदतजी, भडारी लिखमीचदजी नै भीवनाथजी कैद कराई[1] सलेमकोट मे

वड़े साहब का जोधपुर आना और चाकरी के घोड़ो का मामला—

समत १८९२ रा वडा सायव वाहादर रो शिक तिर त्रिलियेम सायब वाड़मेर सू ग्रजमेर जातां जोधपुर ग्राया सु सूरसागर डेरौ दिरायौ। फतेपौळ कनै धायभाई री हवेली मे सायव वाहादुर री मुलाखात करणनै श्री हजूर साहवा री ग्रसवारी पधारी।[2]

---

१ ख ग्रागे फौजराज कुसलराज कैद मे बैठा ईंज था। कामं इखतियारी हरखचंद उदै मिंदर रै कामदार री नै सिंघवी फतेराजजी सू मारवाड रौ काम हुवै। फौज-खरच रा रुपिया मुसायव बड़े साव नू देणा कर दिया था सो हरकचद वसूल किया नही। सो समर नावा दरीवा जव्त" । (ग्रधिक)

२ ख भटियाणी चौक (ग्रधिक)

---

1 ये लोग जो नुक्सान करते हैं उसका हरजाना भरो। 2 धोखे से सब को पकड़ लिया। 3 पहुचा दिया। 4 फौज-खर्च के लिये लगाया जाने वाला कर। 5 पहिले से ही लगते थे। 6 प्रति वर्ष।

समत १८८९ मै अगरेजी सिरकार री चाकरी मैं घोडा १५०० पनरैसौ राखणा ठेहरीया था ।[1] घोडा मेलीया सु वरस १ अेक तौ राखीया नै पछै अगरेजा रै घोडा पसन आया नही ।[2] तरै घोडा नै सीख दीवी । सो घोडा री चाकरी रा रुपीया मामला भेळा[3] ठेहराय देण री तिर विलियेम साहव वाहादुर कामनीया सू सवाल कीयौ । सौ भीवनाथजी आपरो काम सावत वणीयौ राखण मुदै[4] घोडा री चाकरी रा रुपीया ११५०००) अेक लाख पनरै हजार वरसा-वरस[5] देणा ठेहरीया जद सु अै रुपीया सरू हुवा । पैला दिखणीयां नै[6] १०८०००) अेक लाख आठ हजार मामला रा देता, जिकै ही अगरेज लेता हा ।[7]

अेरनपुरा की छावनी स्थापित होना—

सीरोही नै गोढवाड जाळोर री चोरीया रा मुकदमा वावत नीमच री छावणी रा साहव करणेल ईसपीयर सायव वाहादुर सरहद ऊपर आया । सीरोही रौ दीवाण मयाचद नै सिंघवी खूवचद आया । नै अठी सू गोढवाड रौ हाकम जोसी सावतराम नै जाळौर रौ हाकम भंडारी लालचद गया । आपस मे चोरीया रौ फेसलो हूवौ ।[१] पछै साहव वाहादुर कयौ-कै जोधपुर सीरोही की फौज दोनू सरहदा ऊपर रखो सो चोरी का वदोवस्त रहै । चार छव महीनां मे तुम फौज नही रखोगे तौ हमारी सिरकार की छावणी यहां पडेगी ।[8] ऊदेमिदर वाळा खरच लागण रा सवव सू सरहद ऊपर फौज राखी नही । तिण सू अेरणपुर री छावणी अगरेजी सिरकार सू समत १८९२ रा वरस मे घाली ।

मूहता उत्तमचंद को कैद करके मरवाना—

जोसी सिभूदतजी भडारी लिखमीचदजी ने कैद हुवा पछै दिवाणगी मुसायवी वगेरै राज रौ काम मूता ऊतमचद हरखचद करता । समत १८९१ रा वरस सु भींवनाथजी गढ ऊपर फतैमैल मे रहता । सो समत १८९२ रा वैसाख मै ऊतमचंद खावखा रा पावडीया ऊपर वैठौ थौ[9] सो फतैमेहल माह सू भीव-

---

१ ग रुपकारी मेणा भीलां सू साव रै रुखरु गोढवाड सिरोही रै काकड वडगाव कला परै ऊदरी विचै डेरो, फैसलो हुवै ।

---

1 रखने निश्चित हुए थे । 2 पसन्द नही आए । 3 कर सम्बन्धी रुपयो के साथ । 4 राज्य का अधिकार अपने हाथ मे रखने के सवव से । 5. प्रति वर्ष । 6 दक्षिण के मरहठो को । 7 वही रकम अग्रेज लेते थे । 8 हमारी सरकार यहा छावनी स्थापित करेगी । 9. खवावगाह की सीढियो पर वैठा था ।

नाथजी चाकरा नै मैलीया सो ऊतमचद नै पकड ऊदैमिंदर लेजाय कैद कीयौ। रुपीया दोय तीन लाख मागीया सु पईसो अेक दीयौ नही नरै तसतिया दै मार नाखीयौ नै भगीया कनै घीसाय वारै नखाय दीयौ।[1] सु चार दिना पछै सेहर रा माहाजना भीम्रनाथजी सू वीनती कर दाग दीयौ।[2][१] भीवनाथजी री अग्या सु रुपिया ठेरै बुडसू रौ पटौ लिखीजियौ।

समत १८९२ रा असाढ मे सिंघवी फौजराजजी रै रुपीया दोढ लाख ठेहर सीख हुई। पैली किस्त रा रुपीया ७५०००) पिचतर हजार भरीया। बगसीगीरी हुई। दूजी किस्त सजी नही तरै गढ ऊपर वाभा लालसिंघजी रै डेरै जाय बैठा। हरकचदजी सू ढब हौ[3] सो सरणै बैठा। काम बगसी रौ करवौ कीया। सिंघवी कुसलराजजी रै रुपीया ९५०००) पचाणू हजार खरा ठेहरोया। पैली किस्त रा रुपीया ४७५००) सैंताळीस हजार पाच सौ बाळी वींटी वेच नै भरीया।[4] लारली किस्त सझी नही[5] तरै जामनी आहोर खेरवौ अर लाडणू री दिराई। सु लारली किस्त सझी नही तरै मेगराजजी, कुसलराजजी, सुखराजजी, आहोर री हवेली जाय बैठा। सो बरस दोय ऊठे रया। हजूर री मरजी ऊपरान भीवनाथजी कैद कराई ही जिण सू पछे बिसेस खच आहोर री हवेली बेठा सू हुई नही। मरजी रौ इसारो रहबो कीयौ।[6]

भींवनाथ की मृत्यु और लिखमीनाथ का दखल

समत १८९४ रा असाढ वद ७ नै भीवनाथजी ऊदैमिंदर मै चलिया। भीवनाथजी रो कामेती मुहतो हरखचद आहोर री हवेली सरणै जाय बैठो नै आयसजी लिखमीनाथजी वीकानैर रो गाव पाचुहा सु माहामिंदर आय बैठा। भीवनाथजी री अेवज लिखमीनाथजी री अग्या राज रै काम मे वरतीजी।

पछै भाद्रवा सुद ९ नम गढ ऊपर लिखमीनाथजी आया तरै मेगराजजी कुसलराजजी नै सुखराजजी नै ही हजूर गढ ऊपर बुलाय लिया। भाद्रवा सुद १३ तेरस परवतसर मारोठ री हाकमीया इनायत कीवी नै आसोज मे दूजी किस्त बाकी थी जिका कवूलायत[7] ढोलीया रा कोठार सू मगाय नै श्रीहजूर सू कुसलराजजी नै इनायत कीवी।

---

१ ख कामकाज मे घाधल केसरीसिंघरी पिण पचायती। (अधिक)

---

1 घसीटवा कर बाहर डलवा दिया। 2 दाह सस्कार किया गया। 3 अच्छे सम्बन्ध थे। 4. छोटे बडे सब गहने वेचकर भरे गये। 5 बाद की किश्त भर नहीं सका। 6 महाराजा की कृपा का सकेत उन्हें मिलता रहा। 7 रुपये का खत।

महामारी का प्रकोप और जन-हानि—

समत १८९२ रा ऊनाळा मे मरी पडी ।[1] वणा महीना रही । आदमी हजारा मर गया । पीठ विखर गई ।[2] समत १८९३ रा भादरवा सुद ५ पाचम सु लगाय फागुण सुदि १५ पूनम ताई खास जोधपुर में मरी पड़ी । [१]आदमी लुगाया टावर कर बाईस हजार आनरै मूवा । ताव[3] चढती ने साथळ[4] रै तथा गळा रै हरेक जागा डील मै अेक गाठ उपडती । पासळी मै पीड उठती[5] इखार मे लोही आवती दोय तीन दिन मे मर जाती । जिणरै घर मे मरी आवती तरै पेली ऊदरा मरता ।[6] जमानो आछौ हुवौ । गोहूं रुपीये अेक १) रा ।।।) (३० सेर) बाजरी १) (मन) विकती । घ्रत ३ (सेर) विकतो ।

जोशी शम्भुदत्त की मृत्यु और लिखमीचंद को दीवानगी का पद मिलना—

समत १८९३ रा जेठ सुद १० जोसी तिभूवनजी सलेमकोट मे चलिया सु च्चावडा माताजी री भूरजकानी उतारीया ।[२] समत १८९४ रा असाढ मे भडारी लिखमीचदजी कैद मे था सु बावल केसरीसिघजी री अरज सूं मीख हुई । दीवाणगी रौ काम सू पीजीयौ ।[3]

नाथां रा कामैतीया आगे काम चालीयौ नही जिणसूं बाबा वभूतसिंघजी री हवेली सरणै जाय वैठा ।

अंग्रेजों द्वारा साभर व नांवा के दरीबे जब्त करना—

मांमला रा रुपीया पोता नही[7] तिण सुं दरीबो साभर अगरैजां जवत कर अंगरेजी सिरकार सूं आदमी मेल दीया । केई दिना पछै अगरैजा दरीबो नावो फेर जवत कर लीयौ ।

---

१ ख गुजराती रोग वरतियो.. पैला बीमारी पाली मे आई । भादवा मे जोधपुर मे आई छ महीना तक रही ।

२ ग लार वेटा परभूळाल वगेरे सुधारौ आछो कियो । (अधिक)

३ ख म्हूने घणी दीवाणगी देवै तो 2 लाख रै जमा इनामत है सो उगाय हाजर करसू । इण ताछ वूतो दे बारे आय थोडा दिन दीवाणगी की, पण काम वणियो नहीं ।

---

1. महामारी आई । 2 जनता तितर-वितर होगई । 3 बुखार । 4 जांघ । 5 पसली मे दर्द उठता था । 6 पहले चूहे मरते थे । 7 कर सम्बन्धी रुपये नहीं भरे गये ।

समत १८९४ रा वैसाख सुद ७ सातम ओसीया रा पाचमा भटियाणीजी रै कवरजी श्री सिधांनसिघजी जनमीया। मुलक मे घणी कुमी हुई।[१]

महामंदिर के नाथो का राज्य-कार्य संभालना—

समत १८९५ रा भादरवा सु काम मे मालकी माहामदिर री हुई। लिखमीनाथजी रौ कामेती जसरूपजी मुसायब भीवनाथजी रा काम मे खत्रास पासवान मुतसदी मनीजता जिणा नै माहामिंदर वाळा कैद कराई। तिणा री विगत—

१ खीची जू झारसिंघ।

१ घावल पीरदान, अमरजी, लालजी वगैरै।

१ आसोपो ऊतमरामजी भानीरामजी।

१ आसोपा सवाईरामजी।

१ व्यास गुमानीरामजी तौ हाथ आया नही नै बेटा दोय नै कैद हुई।

१ धाधल केसरोजी गाव हौ सो चढ नै चारणा रै गाव[२] ऊजळा जाय बैठौ।

ओघा खिजमता[1] माहामिंदर री मारफत हुवा, तिण री विगत—

१ किलेदारी धायभाई देवकरण नै सामल[2] जसरूप रा बेटा बछराज नै राखीयौ।

१ अगरेजा री उकीलायत कु चट किलाणदास रै हुई।

जसरूपजी रा सासरा रै भाईपौ थौ सु फौजबधी रौ दुपटौ पचोळी काळूरामजी रै। साढीया री दरोगाई धायभाई देवकरण रै। कपडा रै कोठार री दरोगाई खीची ऊमेदजी रै।

समत १८९५ रा मिगसर मै फतैपोळ री स्याही री खरची सावठी चढै।[3] सु सारा परदेसी मिळ दौढी ऊपर सिणगार चौकी नै गढ री पोळा धरणै

१ ग मारवाड रा घर घर मे हुई।
२ ग चौपासणी पछै। (अधिक)।

1 पद तथा कार्य आदि। 2 साथ मे। 3 फतैपोल पर रहने वाली फौज की काफी तनख्वाह चढ गई।

वैठा। तरै श्रीहजूर सू हुकम हुवौ के ज्यु ऊतरै ज्यु नीचा ऊतार दौ। तरै किला रा खवास पासवान मुतसदीया रा आदमी भेळा कर परदेसी ढोय सेक सिरणगार चोकी वैठा हा जिरणा नै गोता दे[1] गढ सू नीचा ऊतार दीया। नै वगाई हा जिरणा रा नावा काट दीया।[2] नै वाकी रा री खरची नोमरी सु चुकाय दीवी।

विद्रोही चापावत चिमनसिंह के विरुद्ध कार्यवाही—

हरसोळाव री भायप मे गांव खोखरी रौ चापावत चिमनजी मुलक मे त्रोडरणौ सरु कीयौ।[3] पाच सौ सात सौ घोड़ा चोरा लू टेरा रा भेळा हुय गया। कोट सौलखीया रै ढारणा[4] मे रहै। गैर इलाका री कतारां खौसै।[5] तिरण री वडा साहव कनै फिरियादा जावै। सायव उकीला सू ताकीद करै। उकील जोधपुर लिखै, पिरण क्यू ही व्रदोवस्त हुवै नही। अर अगरेजा रा मामला रा रुपिया चढै जिकै ही दिरीजै नही। दिवारणगी सिघवी गंभीरमल, वगसी सिंघवी फौजराजजी करै। सिरदारा मे कुचामरण रणजीतसिंघजी नै भादराजरण वखतावरसिंघजी पचायती मे। नै मुख सारा कामरा।[6] मालक माहामिंदर रा कामेती जसरूपजी।

भाटी शक्तिदान का असंतुष्ट सरदारो को लेकर अजमेर जाना—

साथीरण रा ठाकुर भाटी सगतीदानजी वहोत हुसीयार हा सो ऊरणा साग सिरदारा सू खैवट करी।[7] नै कह्यौ—कठाक ताई वैठा भूखा मरसां[8] सारा भेला होय नै ऊदम करौ तरै सारा आळवै भेळा हुवा। पोहकररण, आऊवो, रास, नीवाज चडावळा, हरसोळाव, वगेरै सारा सिरदारा रा कामेतीया नै लेनै सगतीदानजी अजमेर गया। नीवाज ठाकुरां री तरफ सू काका सिवनाथसिंघजी नै वासरणी रो कू पावत कररणसिंघ वगैरै अजमेर गया। रजवाडा रा ऊकीला मे वीकानेर रौ ऊकील हिंदूमलजी वडा साहव कनै सरफराज हो। सौ सिरदारा रा ऊकील हिंदूमलजी सू मिळिया। हिंदूमलजी पूरी मदत वंधाई।[9]

---

1 उल्टा सीधा समझा बुझाकर। 2 नौकरी से अलग कर दिया। 3 लूटपाट करनी प्रारम्भ की। 4 पहाड मे सुरक्षित स्थान। 5 दूसरे इलाको से सामान की जो कतारें आती हैं उन्हें लूट लेता है। 6 सारे कार्य के मुखिया। 7 वातचीत की। 8 कब तक यों वैठे-वैठे भूखें मरेंगे। 9 सरदारो की पूरी मदद की।

बडा साहब सदर लेन साहब नै छोटा लडलू साहब वाहादुर हा । सगतीदान जी वगैरे साहब बाहादुर सू मिळीया नै राज री चौडे नालसा कीवी[1] कै नाथ मुलक खावै है । काम बिगाडै है । सारा जमीदारा नै काढ दीया है । कदीमी मुतसदी खास पासवान हा जिणा नै केद कीया है । चोर धाडवी मुलक लूटे है । रईयत माहा दुखी हे । आप मुलक रा बादस्या हौ सो आय पधार नै समजास कर[2] राज री सालीको लगाईजै । नाही तो म्हारौ दाईयौ लागै है[3] सो म्है मारवाड मे बिगाड करसा ।[4] नै मुलक सूनो करसा ।

कु वट किलाणदास उकील गयौ तिण सू सगतीदानजी कयौ कै ओ माहामिंदर रा कामेती जसरूप रो साळौ[5] है । जद साहब वाहादुर नाराज हूय नै ऊकील किलांणदास नै काढ दियौ । सिरदारा रा कामैतीया नै कह्यौ–हम जोधपुर चलेंगे । तम सब सिरदारा कू लिख दो सो जोधपुर आवै ।

आऊवा वगैरे कितराक सिरदारा डेरा गाव चोपडै कीया ।

चापावत चिमनसिंह का अंग्रेजो से मुकावला व मारा जाना

चिमनजी चापावत नै भागेसर रौ भाटी नाराणदास वगैरे बारोटीया कोट रै । ढांणो मे रहता नै मुलक लू टता । जिणां ऊपर नवेनगर[6] नीमच, नसीरावाद ऐरणपुर री छावणी सू लोक आयौ[7] सौ च्यारु तरफ सू भाखर ऊपर लारला रात रा चढ गया । सो कितराक बारोटीया तौ नास गया । चिमनजो वगैरे घणा आदमी काम आया । ढाणौ भिळ गयौ ।[8] गाव कोट जबत हूवौ ।

कर्नल सदरलैन्ड का ससैन्य जोधपुर आना—

समत १८९५ रा चैत मे बडा साहब बाहादुर करनेल सदरलेन साहब नै छोटा सायव कपतान लडलू साहब वाहादर घोडा २०० दोय सौ, पाळा ५०० पाच सौ सू जोधपुर नै रवानै हुवा । २२ वाईस रजावाडा रा उकील साथै था[9] कितराक सिरदार मारग मे साहब बहादुर रै सामल हुआ ।

साहब वाहादुर री पेसवाई मे दीवाण सिंघवी गभीरमलजी वगसी सिंघवी फौजराजजी, कुचांमण भादराजण रा सिरदार वगैरै गाव डीगाडो ताई गया ।[10]

---

1 शिकायतें को । 2 अच्छी तरह समझा–बुझा कर । 3 हमारा हक लगता है । 4 नुकसान करेंगे । 5. साला । 6 ब्यावर । 7. फौजें आई । 8. फौजो ने अपने अधिकार मे कर लिया । 9. रियासतों के वकील उनके साथ थे । 10 डीगाडी ग्राम (करीव 6 मील पूर्व मे) तक अगवानी के लिये गये ।

साहब बाहादुर रा डेरा राईकेबाग सोभतीया दरवाजा विचै हुवा। साहब बाहादर रा डेरा रै नजीक सारा सिरदारा रा डेरा हुवा[१]। पोहोकरण सू बभुतसिंघजी पिण आया। साहब बाहादुर हाथी असवार हुय गोळ री घाटी हुय चेत सुद ६ छठ गढ ऊपर गया। श्री हजूर साहब खासै विराज लखणा पौळ जैपोळ वीचल चौक ताई सामा पधारीया।[२] तोपा री सिलका हुई।[1]

दूजे दिन श्री हजूर चैत सुद ७ सातम वडा साहब बाहादुर पोहोकरण री हवेली कनै गोराधाय[2] री वावडी है। जठा ताई सामा आया। वडासाहब बहादूर री उकीलायत कुचामण रा ठाकुर रणजीतसिंघजी नै सिंघवी फौजराजजी री मारफत लोढा राव रिधमलजी नै हुई। सिरदारा सु जवाब करण वास्तै साहब बाहादुर कनै सिंघवी गभीरमलजी दीवाण नै फौजराजजी वगसी नै उकील रिधमलजी, सिंघवी कूसलराजजी जावै। नै फेर जनाना कामदार मूतौ गाडमल छागाणी नथू, मू तो मनोहरदास वछराज वगेरै जावै। साहब बहादर जमीदारा रै. फैसला रो नै चोरी धाडा रै वदोबस्त रौ गैर इलाका रा मुकदमा रा फैसला, मामला रा रुपिया वसूल करण रौ, नाथां रौ जुलम वध करण रौ, राज रौ काम रौ सालीकौ[3] वगेरै नै माहामिंदर रा कामेती जसरूप नू काढ देण रौ[4] कयौ। तर सिरदारा बारला सायब बहादुर सू अरज कीवी कै फौजराज कुसलराज नू ही नीकालीया राज रौ परबद बधसी।[5] तरै इणा ने ही निकाळण रौ साहब बहादर कह्यौ। तरै फौजराजजी कुसलराजजी आप-आप री हवेलीया मे जाय वसै रया।[6]

वैसाख सुद ७ सातम नै माहाराज कवार सिघदानसिंघजी देवलोक हुय गया। तिण री उदासी सुदै पाच सात दिन काम वध रह्यौ।

पछै बारला सिरदार भाटी सगतीदानजी, नीवाज रा सिवनाथसिंघजी, चडावळ रा उकील दौलजी, खीवसर रौ भानजी, इणां नू श्रीहजुर सायब नू कैवाय नै गड ऊपर बुलाया। तरै सिरदारा गाव लिखावण री फरदां दीवी।[7]

---

१ ख. मारवाड मे जलधर रोग लगा है सो आप जेडा डाकटर होसी तो मिटसी। (सरदारो ने कहा) आदि।

२ ख. तीन चार हजार आदमिया री भीड-भाड हो गई।

---

1 साहब के सम्मान मे तोपें छोडी गई। 2 महाराजा अजीतसिंह की धाय गोरा की बनाई हुई बावली। 3 राज्यकार्य की समुचित व्यवस्था। 4 निकाल देने का। 5 राज्य का प्रबंध जमेगा। 6. बैठ गया। 7 जागीर मे गाव लिख देने के लिये सूचिया दी।

जिण मुजब पटा लिखाय खास दसकन कर दीया ।[१] सिरदारा आ वात मजूर करी नै साहब बाहादुर मू इतला करी । सो साहब बाहादुर नाथा रा प्रबध री नै मामला रा रुपीया री कयौ । नाथा रा परबध री वात मरजी मे आई नही ।[1] तरै सायब बहादुर खफा हुय नै चढ गयौ ।[2] न कयौ फौज लेकर आवेंगे ।

सायब बहादूर रा डेरा गाव झालामड हुवा । नै प्रथम जेठ वद मे श्रीहजुर सायब मनावण नू[3] पधारण री विचारी सो मू ता जसरूपजी वगैरा री अरज सू वात मोकुब रही ।[4] जनाना कामैती मू तो गाढमल, छाणाणी नथू वगेरा नू झालामड मेलीया सु साहब बाहादर मू ढे लगाया नही ।[5] खफा हूवौ ।

वारला सिरदार सारा सायब लारै चढ गया । झालामड सू गाव पाल्यासणी डेरा हुवा । पछै कापरडे हुय बीलाडे डेरा हुवा । भाटी सगतीदानजी सिवनाथजी साहब बाहादुर सू अरज कीवी कै हम भूखा मरते है, क्या करै ? तरै सायब कयौ तुमारा जो कदीम सू दस्तुर हुवै सो करो ।[6] अर हम फौज लेके आवैगे[२] जब फैसला हुय जायगा । साहब बाहादर नै नीवाज गोठ दीवी । साहब अजमेर गया । राज री स्याही रा परदेसी ५०० पाच सौ सात सो तो पाले ने सिरदारा सामल खरची चढती थी तिण सु हूवा सिरदारा गाव बीलाडा रा माहाजना कनै रुपीया २००००) बीस हजार लीया[3] नै फेर गाव भावी, खारीयो, मालकोसणी, चावडीयौ वगैरै सारा गावा कनै मू रुपीया लीया । आपरा दाईया रा गाव[7] हा सु दाव लीया । उकील राव रिधमलजी अेक मजल सायब रै लारै बेहेवौ किया । अजमेर पोता, डेरौ सेर वारै राखीयौ । साहब उकीलां सू मुलाकात करै नही ।[४]

---

१ ख ख्यात मे लिखा है कि बाहर के सरदार शक्तिदान वगेरे की दलीलें ठीक रही तब हजूर ने कहा कि खिरणी का हिसाब लगाओ और इन जागीरदारो के पट्टे कर दू गा । नाथो से काम हटाने के मामले का स्पष्ट जवाब महाराजा ने नही दिया ।

२ ग 4 महीने के बाद जोधपुर आवेंगे और नाथो वगेरे बदमाशो को सजा देंगे ।

३ ख ख्यात मे लिखा हैं कि यह रुपया सदर लेन्ड की स्वीकृति मे उगाया गया (पृ 101 A)

४ राव रिधमल ने पोकरण ठाकुर वगेरे से अरज की कि आपके रहते मारवाड की वात बिगड रही है सो साहब को समझा कर वापिस लाओ । फिर नीवाज वगेरे से बात हुई । भाटी शक्तिदान ने आखिर मे जवाब दिया कि रिधमल तुम्हारे हाथ मे कुछ है नही, मारवाड मेतो जसूत करेगा वह होगा । फिर रिधमल लोट गया । (पृ 101 B)

---

1 नाथो का राज्य कार्य मे हस्तक्षेप कम करने की वात महाराजा को उचित नही लगी । 2 नाराज होकर विदा हो गया । 3 साहब को मनाने के लिये । 4 स्थगित रही । 5 साहब ने उनसे वात तक नहीं की । 6 परम्परा से तुम्हारे यहा जो रीति है वही करो । 7 जिन गावो पर उनका दावा लगता था ।

मूतौ जसरूप काम री मुकत्यारी करता ज्यू कीया जावैं। पिण गढ ऊपर कम आवै। आप थकौ[1] खीची उमेदजी नैं हजुर मे राख दीयौ। सु उणा हस्ते काम कढावणौ हुवै सो कढाय लेवै।[2] आसोप रा ठाकुर वखतावरसिंघजी चल गया। तिण रैं खोळे[3] सिवनाथसिंघजी वैठा। तरैं वासणी रौ कूंपावत कन्नसिंघ असोप खोळे वैसण मूदै आपरा भाई वखतावरसिंघजी सावतसिंघजी साथैं आदमी छव सौ–सात सौ नैं तोपा दोय खेजडला री दे नैं आसोप मे अमल करण नैं मेलीया। भाटी सगतीदानजी ऊदावत सिवनाथसिंघजी री सला मूं सो आसोप माहला ही सभ गया।[4] दुतरफा तोपा वदूका छूटणी सरु हूई। पोहोकरण वभूतसिंघजी, आऊवा रा कुसालसिंघजी, रास भीवसिंघजी वडा साहव वाहादर नू वाकव कर[5] सायव वाहादुर रा घोडा नै तीनु सिरदारा रा घोडा आसोप घेरौ ऊठावण मूदै मेलीया। श्रीहजूर सुं पिण घोडा आदमी मेलीया सो घेरो उठाय दीयौ। ने ठाकुराणीयां राजी हुय नैं गाव हीगोली रा कूंपावत मोहवतसिंघजी रा वेटा सिवनाथसिंघजी नैं खोळे लीया था जिण नैं श्रीहजूर सू आसोप लिख दीवी।[5]

महाराजा द्वारा अंग्रेजो की बकाया रकम भरने के लिये गहने आदि भेजना—

श्रीहजूर सू पिडा रौ[6] जवाहर तथा सारा जनाना रौ जवाहर गैणौ[7] मामला रा रुपीया पेटे देण सारू[8] दीवाण गभीरमल नैं आहोर रै ठाकुर सगतीदानजी, खजानची व्यास सुरतराम न अजमेर मेलीया, खलीतो देय नैं। सो अजमेर मदार दरवाजे ऊकील रिधमलजी रै सामल डेरा कीया। वारला सिरदारा रा डेरा वडा साहव रा वगला सू नजीक था। वडा सायव दीवाण गभीरमल उकील रिधमल रै डेरै मुनसी आगाज्यान नैं मेल नैं कैवायौ कै हमारे इलाका माय सू चले जावौ। तरै दीवाण नैं उकील नै ठाकुर आहोर अ सारा श्री पुसकरजी तथा थावळे उरा आया।

कुचामण नैं भादराजण रा ठाकुर पिण वडा साहव जोधपुर सुं रीसाय नैं[9] चढीया था जद सूं श्रीहजूर रा फुरमावण सू अै ही अेक–अेक

१ ख ख्यात मे लिखा है कि भाटी खगारोतजी ने पोकरण ठाकुर वभूतसिंह को लिखा कि हमारा किया हुआ खोळा (गोद) लोग उठाते हैं तव वभूतसिंह खुसालसिंह वगेरे ने भाटी सगतीदान को उल्हाना दिया। (पृ 102 B)

1 अपनी ओर से। 2 अपना काम निकलवा लेता है। 3 गोद। 4 मुकाबला करने को तैयार हो गये। 5. परिस्थिति से अवगत करवा कर। 5 महाराजा ने उसे आसोप का पट्टा लिख दिया। 6 अपना निजी। 7. रानियो आदि के जवाहरात व गहने। 8. चुकाने के लिये। 9 नाराज होकर।

मजल री छेती सूं लारै वेहता था[1] सो सायब अजमेर गया जद अै दोनूं सिरदार थावळै रया। जिण सामल दीवाण नै उकील थांवळै गया। पछै दिवांण मैं ठाकुर आहोर, नै खजानची जवाहर पाछौ ले जोधपुर आया।[१]

समत १८६६ रा सांवण वद २ दूज बडे साहब बाहादर आंम दरबार कीयौ। नै बारलां सिरदारां नै[2] कयौ कै हमारी फौज जोधपुर जायगी अर नाथा कुं पकडेंगी। माहाराज से जग कर किला खाली करावैगी। अर माहाराज से जग कर राज-गादी[3] से दूर करेंगे। सो जग की वखत तुम किस की तरफ रहोगे।[4] तरै मारा सिरदारा री तरफ सूं भाटी सगतीदानजी कयौ के माहाराज साहब आप से जग करे नही अर नाथ भाग जासी रकदास[5] माहाराज सायबा रै सरीर ऊपर हीज तकलीफ पड़ी[6] तौ उण वखत जिण मे राजपूती होसी जिकौ तो माहाराज साहब रा मूंडा आगै माथौ देसी।[7] तरै इण वात मु सायब खुसी हुवा। अै ममाचार मालम हुवा तरै श्री हजूर सगतीदानजी री तारीफ फुरमाई। पछै सावण वद १० दसम नै भाटी सगतीदान जी तौ अजमेर मे चल गया।[२]

समत १८६६ रा सांवण सुद १५ पूनम नै अजमेर रा डेरां बडे साहब बाहादुर ईस्तीयार सारा रजवाड़ा मे जारी कीयौ, तिण री नकल—

'लारड गवरनर' जनरल साहब वाहादर मालक मुलक हिंदसथान हिंद की तरफ से मारफत करनेल ज्यांन सदर लेन साहब बाहादुर की तरफ से रजवाडा के बदोबसत वास्तै ज्या नसीन है।[8] वास्तै खबर देणं सारै रईसा अर रईयत मारवाड़ के लिखा हूवा तारीख १७ अगस्त सन, १८३६ ईसवी मुकाम नसीरावाद, माहाराजा श्री मांनसिघजी नै करीब पाच बरस के अरसे से अेहद अर करार अपणै जो सिरकार अगरेंजी साथ रखते थे सो अपणी बुध की राहा से[9] अपना अेकराहा मुकरर करके तोड दीया और इस जोधपुर के सवाल जबाब से तदा रुक अर बदला जो के सिरकार नै वखत पर मागणै मे गाफली[10] नही कीया अर सिरकार का कह्या नही हुवा अवल अेहदनावा की लिखावट मुजब सिरकार

१ ख ख्यात मे एक लाख की हुंडी भेजने का भी उल्लेख है। (पृ 102A)

२ ख दाग पुस्कर मे हुओ। वडा साहब कैयौ कै सगतीदान बड़ा हुसियार आदमी था। अब हमको मारवाड़ का इन्तजाम करणे मे बड़ी तकलीफ होगी (पृ 104 A)

1 पीछे-पीछे चलते थे। 2 मारवाड़ के असन्तुष्ट सरदारों को। 3 राज्य-गद्दी। 4 युद्ध के समय तुम लोग किस के पक्ष मे रहोगे। 5. कदाचित। 6 महाराजा की जान को जोखिम हुआ। 7 महाराजा के सामने उनकी रक्षा के लिये अपना मस्तक देंगे। 8 मुकर्रर हैं। 9 अपनी मरजी के अनुसार। 10. गफलत।

के हक के रुपईये दोय लाख तेईस हजार २२३०००) बरसोंद का[1] मुकरर है जिसका कुल आज तक १०१९१८६=)दस लाख ऊगणीस हजार अेक सौ छीयासी रुपीया दोय आना हुवा। सो आज तक वसूल नहीं हुवा। दूसरा, औरा इलाका का रेहणे वाळा का नुकसाण मारवाड के मुलक मे वेवदोवस्ती[2] के वखत हुवा अर गिणती ऊसकी लाखा कू पौहोची। सो उस नुकसाण का अेवज[3] वसूल नहीं हुवा। तीसरी, मुकरर करणा अेसे वदोवस्त का के वो वदोवस्त रईयत कूं पसद होवैं। और ऊसमे मुलक मारवाड मे मुख अर चैन होवैं। और औरा इलाका क तथा वौपारी के माल कू और मुसाफरा कूं जुलम और ज्यादती वदोवस्त करणैं वाळा की असमरथाई[4] से और मारवाड कै रहणैं वाळो की हरामजादगी से पोहोचनी है सो उस मे वचाव हुवे सो नही हुवा।[5] इस सूरत मे लारड गवरनर जनरल साहव वाहादुर हिंद के ऊपर वे ही वाजव हूवा कै रईस मारवाड से अपणे हक अर दावा कु जोर से लेणे वास्तै[6] हुकम देवे। मुलक मारवाड में फोज भेजणे वास्तै। इस वासतै तीन कपू[7] सिरकार अगरैजी की फौज से तीन तरफ से मारवाड के मुलक मे दाखल होकर जोधपुर जावेगे। अर झगडा सिरकार अगरैजी का माहाराजा श्रीमानसिघजी से अर उणा के कामैत्या से है। मारवाड की रईयत से नही है। इस वासते रईयत मुलक मारवाड की दिल जमई रखे[8] अर जव तक रईयत भचकूर[9] सिरकार की फौज से दुसमणी नही करेगी तव तक सिरकार उस रईयत के माल अर जीवा की प्रतपाल[10] अपणी रईयत जैसी रखैगी। और हरेक कपू मे वदोवस्त सिरकार का अेसी खूवी के साथ होगा कै रईयत के लोग अपणै—अपणै घरा मे अर अपणै-अपणै कामा मे अेसी खूवी के साथ रहेगा के जैसे फोज नही आणे के वखत मे खुसी रहे।[11] फकत—।

और ३ कलमां री फरद जुदी लिखी री नकल पैली बार सदर लेन सायब जोधपुर आया था जदरी अठै हमे लिखी—

सिरकार अगरैजी का दावा कै तगादा की कलमा जो माहाराज मानसिघजी ऊपर है तारीख ८ अपरेल सन १८३९ ईसवी हिंदवी मे समत १८९५ रा चैत सुद ५ पाचम नू जोधपुर के मुकाम सदर लेन साहव कलमा लिख सूंपी थी जिण रौ जवाव माहाराजा साहव श्रीमानसिघजी कुछ दीया नहीं। विगत

---

1 प्रति वर्ष का। 2 प्रशासन की ढिलाई। 3 हरजाना। 4 असमर्थता। 5 दुर्नीति से वचने का उपाय नही निकाला गया। 6 जवरदस्ती से लेने के लिये। 7 कम्पनियें, सेनायें। 8 आश्वस्त रहे। 9 जानबूझकर। 10 देखरेख, सुरक्षा। 11 जैसा कि साधारण समय मे लोग रहते हैं।

कलमा री – कलम पैली–जोधपुर का मुलक मे अेसा बदोवस्त होवे कै उससे बिलकुल अमन वेहतरी हुवै ।[1] अर आयदे कू निगैवानी[2] गैर के मुलक बोपारी मसाफरा की अर चोकसी अर उण कै माल सौदागरा की चाहीये । अर अमन–आमान निगै कराकै मुलक कै रहैणे वाळा कू जो मुलक मारवाड की सरहद सू मीला है जैसो कै सिंध, वा जेसलमेर, वा बीकानेर, जैपुर, किसनगढ, अजमेर, उदैपुर, सीरोही, पालणपुर वगैरे के चाहीये। किस वासतै अै सब रीयासते हिफाजत हीमायत सीरकार कपनी कै नीचै है ।[3] कलम दूजी–तदारुक यानै वदला दिलाणा[4] रहैणा वाळा उणा मुलका कै जो पहेली कलम मे लिखा है अर वो नुखसाण जो रईयत पनाह पाणो वाळा मुलक मारवाड कै हात सै बखत आपत-री वा वेबदोबस्ती मुलक मारवाड केसे हुवा चाहीयै । कलम तीसरी—अदा करणा सिरकार अगरेंजी कै रुपया का । बमुजब अेहदनामा कै[5] किसत आखर कै आखर होणै रुपीया किसत के बखत तक चाहीयै । ओर अदा करणै किसत आयदै का मालूम होता है कै मारफत उण बदोनसत कै जो माहाराजा सायब अब मुकरर करेगे अच्छी तरै होगा । लेकीन अगर भरोसा सिरकार अगरेजी कू वासतै अदा होणै किसता आयदै सिरकार कै मारफत बदोबसत मजकूर कनै होगा तौ जामनी[6] दूसरी सिरकार अपणी तजवीज कै मुनासब मागैगी ।

वासते फैसला-करणै इण तीन कलमा के करनैल सदर लैन साहब ज्यानसीन गवरनर जनरैल साहब बाहादुर हिंदुसथान कै जोधपुर आये है सो अै दावा सिरकार अगरेजी का वासते फैसला करवा नै कलमा कै बसबब बुलदी सिरकार की सारी सिरकारा पर जोधपुर कै राज कै ऊपर है ।[7] ईस वासते कै जो माहाराजा साहब पूरी दिल जमे करनैल साहब की बाबत इस बाता के कर देगे कै फैसला इस कलमा का माहाराजा साहब कू दिल सू मजूर है अर महा० साहब को ताकत जोर इण मतलबा के दुरसती कर देगे । पर है तो जो राहा रसम अब दरम्यान सिरकार अगरेजी वा राज जोधपुर के जारी है बदस्तूर जारी रहेगी । नही तौ करनैल साहब फिल फेर जोधपुर कै मुलक से चले जावेगे । सवाल जवाब सिरकार अगरेजी का माहाराजा साहब से अर उस दरबार के अेहलकारा से बध करेंगे ।[8] बाद उसके अकत्यार नवाब गवरनर जेनरल साहब बाहादुर का होगा के कौनसी तजवीज वासतै[9] जाहर करणै पूरी हकूमत अपणी कै और वासते जामनी-लेणै उस सिरकार के हक के वसूल करणै के वासते फरमाते हैं । फकत—।

---

1 और अच्छी शान्ति की व्यवस्था हो । 2 चौकसी । 3 हिफाजत की दृष्टि से ये सभी सरकारें अंग्रेजी कम्पनी के अधीन हैं । 4 हरजाना दिलाना । 5 सन्धि पत्र के अनुसार । 6 जमानत । 7 इन कलमो (शर्तों) को कार्यान्वित करवाने के लिये । 8 सवाल जवाब करना बंद कर देंगे । 9 यह फिर गवर्नर जनरल के हक की बात होगी कि वह क्या रास्ता अपनाये ।

साहब बहादुर सिरदारां नै कयो—के सांड्यांरी[1] रै वासतै[1] ऊंठ पाडो हजार २००० दोय मगवाय दो तरै ऊंठ हजार १००० अेक तो बीकानेर रै उकील हिंदुमलजी मंगाय दीयां। बाकी मारवाड़ रा सिरदारां मंगाय दीया।

फौजरी अजमेर सूं कूच हुय पुसकरजी डेरा हुवा। मेडते २ दोय मुकाम र्‍या। नानी तरफ सु अंगरेजां री फौज भेळी[1] हुई। कुचांमण ठाकुर रणजीतसिंघजी, आउवारा ठाकर बखतावरसिंघजी, अै बडा साहब बहादुर रै लारै लारै जोधपुर सूं गया था जिणां रा थांवळे डेरा हा सो अैही पाछा फौज रै लारै-लारै बहीर हुवा।[2] दोनूं सिरदार नै दीवाण गंभीरमलजी नै रिखमलजी उकील फौज स कोस दोय कोस अळगा डेरा करै। नजीक डेरो साहब करण देवै नहीं नै सरबरा कांम सो लेवै नहीं।[3]

संमत १८६६ रा भादवा सुद नू सिपाही जणा १० धंगाई राज में खरची चढती ही जिण सूं दोढीदार पुसकरणा ब्रांमण बिरधीचद पिरोहत जिण तालकै विसून थी सो दिवाण विसू न मांह सूं परदेसीयां नू खरची देण रो बिरधीचंद नू कह्यो मो रुपीया देणां री जेज करी।[4] जिण सूं बिरधीचद रो बेटो परणीयोडो बरस बारै तेरै रो हो जिण नू पकड खानखा पीर री दरगा सांमो महादेव रो मिंदर है जठै सिपाई चढ गया। नै माहलो आडो देदीयो।[5] नै ऊपर सूं हेलो पाडीयो अर कयो[6] रुपीया ६०००) छव हजार खरची रा मांगां हां सु देवो नै म्हांनु मारवाड बारै पोचाय देण रा पका वचन दिराय देवो नही तो इस लडका कूं हम मारे नाखसां।[7] तरै रुपीया दोय हजार तांई धामीया पिण सिपायां मांनी नहीं। नै लड़का नै मार नांखीयो। पछै जोधा परताप-सिंघजी मिंदर रै नीसरणीयां लगाय नै पुरबीया तथा सिपाई जणा दुय लडका नू मारण मे हा जिणां नै मार नाखीया।[2] आ बात बडा सायब बहादर रै नै लसकर[8] में मालम हुई।[3]

---

१. न जूंझरण, फतैपुर, मैरनपुरा री तरफ सूं फौज रा डेरा मेहता हुआ। तोपां छोटी मोटी 40 आसरे। पाळा 10 हजार, घोडा 1 हजार उकीला साथे चांदियां पाळा 3 हजार। कुल आदमी 20 हजार।

२. ख्र परतापसिंघ 25 आदमिया गयो सो 11 पूरबियां नै मार बाजार में नाखिया।

३. ग तरै साब खफा हुयो के जोधपुर मे धोळै दिन मिनख मरता है। (अधिक)

---

1. फौज का भार ढोने के लिये। 2. वे लोग भी फौज के पीछे-पीछे रवाना हुए। 3. रुपये पैसे देने का प्रयत्न करते हैं सो लेते नहीं। 4 रुपये देने में विलंब किया। 5. अन्दर से दरवाजा बंद कर दिया। 6 ऊपर से आवाज देकर कहा। 7 वरना इस लड़के को हम मार डालेंगे। 8 अंग्रेजी फौज।

फौज रा डेरा पीपाड हुवा। श्री हजूर रा मेडतीये दरवाजे वारै मानदहो मे डेरा खडा कराया। आसोज वद ३ तीज डेरो दाखल हुवा। फौजराजजी सिंघवी सीख कर भादराजण गया। सिंघवी कुसलराजजी कटाळये गया। आयसजी लिखमीनाथजी भागा सु बीकानेर रौ गांव पांचुवो[१] पटै थौ जठै परा गया नै प्रागनाथजी जालोर रै गांव कायथां गया। सदरलेन साहब बहादर रै साथे फौज दस हजार थी १०००० तिण में ५०० पाच सौ तौ गोरा था नै बाकी रा काळा था।[1] अंगरेजी फौज रा डेरा गाव दांतीवाडे हुवा। उठै अेक मुकांम रह्यो।

श्रीहजुर जोधपुर सूं कोस चार ४ गांव बणाड डेरा कीया। आसोज वद ४ चौथ रात रा विरखा घणी हुई सो डेरा मे पांणी आय गयौ तरै श्रीहजुर रथ मे विराज नै श्रीनाथजी रौ मिंदर गांव में थौ जठै पधारीया। उठा सुं खलीतो लिख नै सोडा मेगजी नै वडा साहब बहादुर कनै म्हेलीयौ। तिण मे लिखियो कै उकील तौ हूते झगडे[2] ही रुके नही है सो उकील सूं मुलाखात हुई चाहीजै। तरै सायब कयौ उकील कूं भेजो।[3] तरै उकील नै दीवाण अेक मुकाम आगे बणाड आय गया था सो उकीलां नै दातीवाडै पाछा मुलाखात वास्तै मेलीया। साहब री मुलाखात हुई। पछै साहब रो कूच हुवो। तरै खबर दीवी साहब बहादुर नेडा आया। तरै श्रीहजूर खासै विराज गाव बणाड सू कोस अेक ताई सांमा पधारीया। वडा साहब नै छोटा साहब बाहादुर घोडेचढीया आया। टोपी ऊतार दस्ता-पोसी कीवी[4] नै फोज रा ठावा ठावा अपसरां नै सामब ओलखाय[5] नै श्री हजूर सुं दस्ता-पोसी कराई। श्री हजूर रै साथै साथै बडो साहब नै छोटो साहब बाहादुर हजूर रै डेरै आया। अेकंत हुवा।[6] श्री हजूर फुरमायो कै फौज तौ सामनो करै जिण रै माथै आवण री रीत है, म्हे तौ किलो छोड नै थारै सामा आया हा।[7] किलो नै राज सारौ हाजर है। थारै तुले ज्यूं करो।[8] इण ताह्ल पुरी दोस्ती री वातां कीवी। साहब बाहादुर पिण राजी हुवा। नै पाछी पूरी सिसटाचारी कीवी।[9] पछै बणाड, भादडा विचै अगरेजी फौज रा डेरा हा जठै साहब दाखल हुवा। साहब बाहादुर वहीर हुवा तरै उकील रिधमलजी नै श्री हजूर फुरमायो के तूं सायब नै डेरां

१ ख पाचूं।

1 बाकी के हिन्दुस्तानी लोग थे। 2. लडाई चलते समय भी। 3 तब साहब ने कहा कि वकील को भेजो। 4 हाथ मिलाया। 5 अपनी फौज के खास अफसरों से परिचय करवाया। 6. एकात मे जाकर बैठे। 7 किले को छोड कर तुम्हारे सामने आये हैं। 8. तुमको ठीक लगे जैसे करो। 9 पूरे शिष्टाचार के साथ पेश आया।

दाखल कराय नै आवजै ।[1] सो उकील साहब बाहादर नै डेरा ताई पुगावण ने गयौ । उण दिन सू उकीला री मारफत जवाब भुगतणो सरू हूवौ ।[2] साहब बहादुर रा डेरा तौ राईका वाग कनै हुवा नै श्रीहजूर वणाड सू कूच कर मालदडा मे डेरा हा जठै दाखल हुवा ।

आसोज वद ५ पाचम दूजै दिन साहब बहादुर मुलाखात करण नू आया । गढ मे अगरेजी थाणौ राखण री कही ।[3] तरै श्रीहजुर फुरमायौ मजुर है । थारी मरजी हुवै जद म्हांनू गढ पाछौ सू पजौ । इण वात सू साहब घणा राजी हुवा ।[4] साहब डेरा जाय नै समत १८९१ रै वरस फौज-खरच तथा मामला रा रुपीया पाच लाख मे साभर नावो अगरेजा रै सुपरद हा सु रुपीया वसूल हूय गया था सो साभर नावो श्री दरवार नै पाछौ सूंपण री अगरेजी चिठी साहब उकीला साथे लिख नै मेली । दोनू दरीवा री हाकमीया राव रिधमलजी रै हुई ।

महाराजा का गढ खाली कर अंग्रेजो को सौंपना

आसोज वद ६ नु गढ ऊपर सू जनांनो सारो[5] गोळ री घाटी होय मांहलाबाग मे दाखल हुवा । सो माहलाबाग मे संकडायत ।[6] तिण सू पछै मुहता लिखमीचंदजी री हवेली पेहली बाभा लालसिंघजी रै ही तिण मे जनानी असवारी दाखल हुई । खजाना वगेरै कारखानां मे असवाव हौ सो कोठारा मे नखाय लाखोटा कराय दीया ।[7] मरदाना मेहला री दोढी ऊपर दोढीदार पुसकरणा पिरोहित फतैराम कुना नै राखीया । जनांनी दोढी कौटेचा जैता नै राखीयौ । वाकी सारा कारखाना अेक-अेक ओधेदार नै दोय-दोय च्यार-च्यार आदमी राखीया । सारा आदमी १०० अेक सौ रै आसरै किला मे मिंदरा रा पुजारी वगैरे कर नै साहव वाहादर री इतला सूं राखीया । उकील रिधमल रौ भतीज अभैकरण नै गढ ऊपर राखीयौ नै गढ रा लोक नै नीचे बुलाय लीयौ ।[8]

श्री हजुर डेरा दाखल हुवा तरै रायपुर रा ठाकुर माधोसिंघजी नू गढ मे राखीया था सो ठाकुर माधोसिंघजी केवायौ कै हू तौ श्रीहजुर गढ मे

1 साहब को डेरे मे प्रविष्ट करा कर आना । 2 उस दिन से वकील के मारफत सवाल जवाब प्रारम्भ हुआ । 3 किले मे अग्रेजो का थाना रखने का प्रस्ताव रखा । 4 प्रसन्न हुआ । 5 रानिया, पासवानिया तथा पडदायतनिया आदि । 6 निवास के लिये स्थान की कमी । 7 कोठारो मे डलवा कर ताले लगवा दिये । 8 गढ के अन्य सभी लोगो को नीचे बुला लिया ।

पधारीयां बिनां नीचौ उतरु नही ।[1] तरै श्री हजूर आसोज वद ६ छठ[१] गढ ऊपर पधार नै समजायस कर[2] रायपुर रा ठाकुर माधोसिंघजी वगेरा नू नै जनांना सिरदारा नू माहाडोळ पालखीया, पीनसा, मे बैमाण नीचे ऊतारीया । श्रीहजूर डेरा दाखल हुवा नै वडा सायब ने केवायौ कै किलो खाली कर दीयौ है सो थे चालौ, म्है साथै पधार गढ मे थांणो बैठाय देवा। तरै सदर लेन साहब बहादुर नै लडलू साहब फौज रा अफसर जरनेल साहब वहादुर आदमी ५०० पाच सौ सात सौ ले बाजा वजावता श्री हजुर सायबा रै साथै गोळ री घाटी होय गढ उपर गया । श्री हजूर पोळा मे पधारता गया ज्यू अगरेजी फौज रा सिपाईया नु वेठावता गया । गढ ऊपर पधार जनानी मरदानी दोढी ऊपर तथा कारखानां ऊपर ओधेदार राखीया था तिणानै साहब लोका नै ओळखाया ।[3]

श्री हजूर साहब नै सदरलेन साहब बाहादुर तौ गोळ री घाटी होय पाछा डेरां दाखल हुवा नै लडलू साहब बहादुर फौज रा लोक नै जागा-जागा डेरा करावण मुदै गढ ऊपर ठेहर गया ।[4] करमसोत राठौड भोमसिंघजी गाव भटनोखा रौ किला मे आसामीदारा मे नौकर हौ ।[5] जिण वीचारीयो कै आज गढ पटै है[6] सो मरणोलवाजम है[7] सो सूरजपोळ रा मू ढा आगै लडलू साहब बाहादुर ऊपर भोमसिंघजी तरवार बाही[8] सो लडलू साहब बाहादुर र फोरी सीक लीलाड रै लागी ।[9] सो टाका तीन आया । लडलू साहब बाहादुर रा हाथ री तथा अगरेजी सीपाया रा हाथ री चार पाच तरवारा भोमसिंघ रै लागी । पछे लडलू साहब सिपाया नै मने कर दीया । भोमजी नै जखमी हवोडा नै किला सू नीचे उतार दीयौ । सो पाच चार दिना पछै मर गयौ । लडलू साहब बहादुर नू तरवार वाया री श्री हजुर मे मालम हुई । तरै उकील[२] साथे सदरलैन साहब बहादर नै केवायौ कै खपखानी बाडो जुलम कीयौ[10] इण वात रो म्हानू पूरौ रज है । नै धोखो है । इण ताछ पूरी सिसटाचारी कराई । सो साहब बहादुर पूरा लाचार हूवा नै श्री हजुर मे पाछी अरज उकील साथै कराई कै

१. ग सातम ।
२ ग रिधमल (अधिक)

1 महाराजा स्वय गढ मे आये विना मैं नीचे नही उतरूंगा । 2 समझा बुझाकर । 3 पहिचान करवाई । 4 यथा स्थान फौज के डेरे [illegible] पीछे रह गये । 5. किले के सिपाहियो मे से था । 6 आज गढ हम रहा है । 7. सो मरना उचित है । 8 तलवार चलाई । 9 ललाट चोट आई । 10 क्रोधीले सिपाही ने बड़ा जुलम किया ।

इम मे आप का कुछ कसूर नही है। आप इस दात का कुछ अदेसा नहि लावे ।[1] आपकी दोस्ती सचाई का हमकू पुरा भरोसा है।

अगरेजी फौज रा आदमी ३०० तीन सौ साढा तीन सौ ३५० अदाजे तो गढ ऊपर राखीया। जरनेल साहव वाहादुर गढ ऊपर रया। मिदरा रा पुजारी गढ माथै जाय पूजा कीयावता ।[2] अगरेजी फौज रौ डेरो वालसमद मडोर वीच मे हुवौ। छावणी ज्यु माटी रा घर नै दोय[२] चार वगला कचा[3] वणाय लीया।[१]

पछै दुतरफी सला सु आपस मे कलमां ठैहर लिखावट हुई तिणरी नकल—

सिरकार दोलत मदार कपनी अगरैज वाहादर वा जोधपुर की सिर-कार के कदीम सू आपस मे हेत हिथारत कौ दरम्यान है अर फेर समत १८७५ रा मुताबिक सन १८१८ ईसवी के साल कौल नामा कै होवा सू दोस्ती कीनी विसेस मजवूती पाई सो सदामद[4], सू दुतरफी दोसती[5] आज ताई पकावट मे ही रही ।[6] अर फेर रया ही कर सी। अवार सिरकार अजमत मदार कपनी अगरेज वाहादुर अर जोधपुर का मालिक माहाराजाजी श्री मांनसिघजी वाहा-दर के मारफत करनेल ज्यान सदर लेने साहाव वाहादुर व मुजव अकत्यार दीयै हूवै जारज लारड आकलट[7] साहाव मालक मुनक हिदुसथांन के से ये कलमा नीचे मुजव ठैहरी-

१ कलम पैहली —हमार मूलक री इतजामी मुदै आपस की सलाह सू काम री तजवीज ठेहरी सो अेक वखत माहाराजा साहव वा करनेल साहव वा राज का सिरदार अैहलकार खास पासवान सव मिल कर अेक आईन ठेहरावणी। अर उस मुजव राज का कारवारी काम सरु करणा। वा ज्यारी रखणा अर ये सव हरेक सिरदार तथा अेहलकार तथा सारै आसरीभूत[8] राजका का हक माफक दस्तूर कदीम के हदवद कर मुकरर करेंगे।

---

१ ख अेरनपुरा वगेरा री तरफ सू अगरेजी पलटणां अेरनपुर री छावणी सूं आई तिणा रा डेरा देरावरजी रा तळाव कनै वाकी री फौज अगरेजा री नसीराबाद जु झणा फतैपुर सू आई तिणा नू सीख दीवी।

---

1 किसी प्रकार का मन मे विचार न करें। 2 पूजा करके लौट आते। 3 कच्चे बगले बना लिये। 4 सदा के लिये। 5 दोनो पक्षों की ओर से। 6 आज दिन तक पक्की रही। 7 जार्ज आकलेंड। 8 आश्रिभूत।

२ कलम दूसरी—सिरकार अगरेजी को पुलटीकल अजट[1] अेहलकार राज जोधपुर का से सलाय मिलायकर अर माहाराज साहब से सलाह पूछ कर राज का काम इण कलमा मुजब करेगे।

३ कलम तीसरी—पचायत मजकूर सारा कारवारी राज का कदीम का दसतूर मुजब चलावेगे।

४ कलम चौथी—करनेल साहब कह्यौ सिरकार अगरेजी को थाणौ जोधपुर का किला मे रहेगा। जब माहाराजा मानसिंघजी मजूर अर कबूल कीयौ। ग्रौर राजसथाना मे[2] अजेट रेवै है सौ सेहर बारै रेवै है अर अठे तो किला ऊपर सिरफ रेवास की जगा है फेर ऊपर जायगा बोहोत कोतै है।[3] जिण वासतै इण वात की अडचल है।[4] परत सिरफ सिरकार की खुसी कै वास्तै सिरकार को थाणौ मजूर कीयौ है सो मुनासब जायगा देख रखणं मे ग्रावसी।[5] कोई तरै को अदेसो दरवार नै सिरकार को है नही।

५ कलम पाचमी— श्री······जी रा मिदर सरूप जोगेश्वर तालकदारा समेत दरवार के ऊमराव, कीका, मुतसदी, खवास, पासवान, देसी परदेसी वगेरै की मरजाद[6] इजत ग्राजीवगा वरतण मे[7] कसूर नही पडसी। सब अपना अपना काम करसी।

६ कलम छटी— सब कारवारी ग्राइन बधसी[8] जिण मुजब काम करसी। अर ऊणा रै काम करणै मे फरक मालम होसी तौ उणा री अेवज दूजौ काम करणै लायक श्री माहाराजा साहब की सलाह मुजब मुकरर होसी।

७ कलम सातमी— जिण किणी रौ हक बध होगयौ[9] है जिण नै राहा वाजबी कै तावै दिरीजसी अर ऊवे दरवार को हुकम बदगी ग्राछी तरै वजावसी।

८ कलम ग्राठमी— मारवाड की राजधानी मे माहाराजा साहब की जात का कानग नामु समै सिरकार अगरेजी की तरफ सूं तथा दूजी कानी सूं तकरार तफावत होवण देसी नही इण वात री सिरकार अगरेजी की जामनी है।

---

1 पॉलीटिकल एजेन्ट। 2 रजवाडो मे। 3 कम स्थान है। 4 रहने की तकलीफ है। 5 उचित स्थान देख कर स्थायी थाना रखा जायगा। 6 मर्यादा। 7 व्यवहार मे लाने मे। 8 व्यवस्था बाधी जाएगी। 9 जागीर ग्राजीविका जब्त हो गई है।

६ कलम नवमी— सिरकार के मामले का तथा असवारा बावत का रुपीया जो इस वखत मे जोधपुर के राज ऊपर लैणा है[1] वा आगै कु मांमला तथा सवारा बावत का लेहणा होगा सु साहब बहादुर पुलटीकल अजट सिरकार अगरेजी का तथा अेहलकार राज मारवाड का आपस मे सलाह कर दरबार की सलाह मुजब जो आईन मुकरर होगा उसके माफक नेक तजवीज कर[2] अदा कर देवेगे। और जो रुपईया नुकसाण बावत का है सो सावत हुवा[3] जिण पर पोहोचेगा उण पास दिराया जावेगा। और मारवाड के नुकसाण का जो रुपईया दूसरा पर सावत होगा सो भी दिलाया जावेगा।

१० कलम दसमी— सिरदार लोका नै पटा देकर दरबार बदगी मे लगाया है सौ आज पेहली रो कसूर है सो सारी माफ कीयो है। अर इणी तरै सू सिरकार अगरेजी की हर किणी ऊपर तकरार हे। सरूपां, जोगेस्वरा, उमरावा सू, अेहलकारा सू तकरार होय सो माफ है।

११ कलम ईग्यारमी— अजट साहब की अठै रहणो होसी।[4] सौ किणी ऊपर जुलम ज्यादती नह होसी। खटदरसण[5] री मरजाद मे कसर नही पडसी। जिण जीवा री मारवाड रा मुलक मे मारण री मनाई है सो उण जीवा री हिंसा जोधपुर रा राज मे नह होसी।

१२ कलम बारमी— सारा कामा री इतजामी छव महीना तथा बरस दिन तथा डेढ बरस ताई हो जायगी। जब साहब पुलटीकल अजट तथा थाणा सिरकार का जोधपुर के किला माह सू उठाय लीया जायगा और जितना जलद ये काम दुरसत होगा अेन कुमी सिरकार कपनी की है, किस वासतै कै इसमे सिरकार कपनी की नेकनामी की बात है।[6]

१३ कलम तेरमी— ये ईकरारनामा २४ सितबर बरस सन १८३६ ईसवी कू जोधपुर के मुकाम पर उपर लिखे मुजब बण कर मारफत करनेल ज्यान सदरलेन साहब के पका दुरस्त होणे वासते[7] लारड गवरनर जनरल साहब बाहादुर की खिदमत मे भेजा जावेगा। लारड गवरनर जनरल साहब बाहादुर का खरीता माहाराजा साहब बाहादुर जोधपुर के नांवै इण कलमा के मजमून मुजब मगवाय दीया जायगा। फकत ......।

---

1. बकाया निकलता है। 2. उचित तरीके से। 3 सबूत मिलने पर। 4 पॉलीटिकल एजेन्ट यहा रहेगा। 5. षट्दर्शन ब्राह्मण, जोगी, चारण आदि। 6 इससे अग्रेजी सरकार की नेकनीति प्रकट होती है। 7. विधिवत स्वीकृति के लिये।

पछै समत १८९६ रा आसोज सुद १ अेकम नू करनेल सदरलेन साहब लड्लू साहब बाहादुर श्री हजूर मे वगी मे बैस आया। अर कह्यौ-सब ऊमरावा मुतसदीया खास पासवानां वगेरा कू बुलाय कर हुकम फरमावै कै जो कदीम सू[1] जोधपुर के राज की राज कै कामा की जो रीत दसतूर है अर हाल जो काम जाहरी है जिसकी अेक आईन लिख कर हम कू देवौ[2] तौ हम जाणै कै यहा राज का काम इस तौर पर होगा[3] तौ हमकु वाकफी रहै। अर हम सदर मे रपोट करें। १३ कलमा तेरह तो आपस की सफाई हुई जिसकी लिखी गई है अर राज के काम की १ अेक याददासती हमकू बणाय कर अगरेजी मे तरजुमा करावण वासतै आईन का कागज हमकू सूपौ। सो सारा ही सिरदारा माहला बारला अर दीवाण वगसी वगेरा सलाह मिळाय कलमा बाधी। तिणरी नकल विगत।

राज्य व्यवस्था सम्बन्धी मजमून अंग्रेजों को प्रेषित किया गया

१ कलम पैहली— परधान दिवाण वगसी, खानसामा वगेरै सरब ओहदा खिजमता श्रीहजूर रै ईकत्यार किणी री अरज सू नहि मरजी सू वगसै।[4] ओहधा लायक केवट लेवै जिसा ने।[5]

२ कलम दूसरी— हरेक काम मे श्री खावदा रौ[6] पाछौ फुरमावणौ खुलासे होय गयो चाहीजे।[7]

३ कलम तीसरी— किणी रा कैणा सू तथा अरज सू हरेक चाकर नै विना खून विगाडणौ नही।[8] नै चूक री मालम हुवै तौ निमाफ[9] फुरमाय निरधार कराय देणौ।[10]

४ कलम चोथी— दौड नै वदगी करै ज्या नै वरदास्त फुरमावणी नै तखसीर मे आवै ज्यां नै तखसीर मुजब सजा दैणी।[11]

५ कलम पाचमी— पटौ गाव श्री वडा माहाराजा श्री विजैसिंघजी री सिलामती सू लगाय न आज तांई मुनासब जाण श्री खावद मरजी सू वगसे सो कबूल है।

---

1 परम्परा से। 2 उसकी एक सक्षिप्त टिप्पणी बनाकर हमको दें। 3 इस विधि से होगा। 4 महाराजा किसी के निवेदन पर नहीं अपनी इच्छा से देते है। 5 जो उस पद के लिये उपयुक्त होते हैं। 6 महाराजा का। 7 स्पष्ट उत्तर मिलना चाहिए। 8 विना बड़ी गल्ती के किसी नौकर को हानि नहीं पहुचनी चाहिए। 9 इन्साफ। 10 पूरी तहकीकात करवा लेनी। 11 जैसी गल्ती हो वैसी सजा दी जाय।

६ कलम छटी— वेतलवी श्री वडा महाराजाजी री सिलांमती मैं थी जिण मुजब राखणी । नै किताक ठिकाणा वंदगी सू नवा बटीया है जिण रीं आगला ठिकांणो रौ मरस्तौ देख[1] मुनासब माफक राखणीं ।

७ कलम सातमी— चाकरी रेख मुजब सदामंद मुजब भौळावनी[2] जठै कग्मी ।

८ कलम आठमी— चोरी धाडौ हुवै जिण रा खोज सांतारा ले नै[3] जिण गाव री सीव मे आवै सो जागीरदार भोमीयो वाहार वाळां री लारै हुय नै सीव वारै खोज काढ देसी । नै खोज किणी गाव मे अटक सी[4] तौ जिण गाव रौ खोजी कनै जलरी धीज कराय देणी । नै लारला गांव वाळो छाया करसी मो धीज मे सावौ उतरसी तो लारला गांव वाळी झूठौ हुसी तौ ऊ देसी । जागीरदार अर भोमीयौ चोरी रौ माल लागसी सो सदामद मुजब सरसतै देसी ।

६ कलम नवमीं— सरणं आय नै वैसे सो जीवां नौ ऊवरै[5] नै किणी रो धन वच लावै सो पाछौ दिराय देणौ ।[6] नै और सरणे री मरजाद सदामंद माफक राखणी । किणी री विगाड कर कोई किणी रा गांव मैं आय वेसै जिण री तौ श्रीहजूर मे मालम कराय देणी कै फलांणौ आदमीं म्हारा गांव मे आयौ है । औ म्हारै अठे वैठ कोई विगाड करै तौ म्हारी जामनी है । नै कदास जामनी नही लिखै तौ राखणीं नही ।[7] आयां री खवर कराव देणी तथा परगना रा हाकम नै कैदेणौ[8] नै वाकब नही करे तौ गुनेगार ।

१० कलम दसमी— सायरा मे हांसल राहदारीं दाण श्रीवडा माहाराजाजी री सिलांमती मे भरीज नौ जिण माफक भरावणी । नै जिकण जिकण ठिकांणा मे थाणाय्त आदमी रहता जिण मुजब राखणी । अर हासल राहादारी दांण सदामद मुजब वोपारीया कना सूं भरावणौ ।

११ कलम ईग्यारमी— घर व्याव जरूरायत काम रौ मुदो हुवै तरे तो लेणी, हर वरस नही लेणी ।[9]

---

1. पहले की रीति को ध्यान में रखते हुए । 2 आज्ञा देंगे । 3 खोज (चिह्न) देखकर अच्छी तरह पीछा करना । ४ यदि पैरों के चिह्न उस गांव से आगे नहीं निकलेंगे । 5 उसके प्राण उबर जायेंगे । 6. किसी का धन माल लायेगा सो वापिस दिलवाया जाएगा । 7 यदि जमानत लिख कर नहीं दे तो ऐसे आदमी को वह शरण नहीं दे । 8 हाकिम को सूचना दे देनी चाहिए । 9. विशेष प्रयोजन से ली जा सकती है, हर वर्ष नही ली जाय ।

१२ कलम बारमी— भोम बाब श्री बडा माहाराजाजी री सिलामती मुजब लिरोजसी नै भोम री जमी श्री बडा माहाराजाजी री सिलामती सूं तथा सनदां सूं तथा कदीम सूं है जिण मुजब राखणी। सवाय दनी हुवै सो निरधार कर मौकूब राखणी।

१३ कलम तेहरमी— लागती रकम चौभर बाब वगेरे कचेडीया री हुवै सो सदाभद माफक श्री बडा माहाराजाजी री सिलामती मुजब भरावणी।

१४ कलम चवदमी— सैहर में तथा गावा मे कचैडी चातरां खून तखसीर वाळां नै सिरकारी रकम बाकी हुवै तिण बाबत बुलावै जिण री कोई हिमायत करसी नही नै परबारो कचेड़ी चातरै आदमी मेल कैहणो करसी नही।

१५ कलम पनरमी—सायरां कचेडी चातरा हवाला टकसाळा[1] वगेरां री रुपीयो पईसो बाकी नीमरे सू लेखा री रूह सू[2] भरावै तिण री कोई हिमायत करसी नही।

१६ कलम सोळहमी— सारा चाकर दांनतदारी सूं[3] बदगी करसी। श्री दरबार रै फायदे मुजब नै मरजी मुजब करसी।

१७ कलम सतरमी— चाकर तखसीर मे आदमी नही नै जे कोई न्वायकी मे अरय जासी[4] तो ईग्यारै गुणो भराय लेणो।[5]

१८ कलम अठारमी— गैरवाजवी अरज नही करणी।[6]

१९ कलम उगणीसमी— हर कौर गैरवाजवी किणी री राखणी नही।[7]

२० कलम बीसमी— आप आप रै ओहदै सवाय अरज नही करणी नै ओहदै सवाय अडवी नहि करणी।[8]

२१ कलम ईकीसमी— परगना मे हाकम ओहोदेदार पिंडा रहै।[9] थाणां वगेरे मे बदोवसत राखणो।

---

1 सिक्के बनाने की टकसाल। 2 हिसाब के अनुसार। 3 वफादारी से। 4 रिश्वत ले लेगा। 5 जितनी रिश्वत ली है उसका ग्यारह गुना जुर्माना ले लेना। 6 अनुचित कार्यों के लिये कोई बात निवेदन नहीं की जाय। 7. किसी का गैर वाजिब पक्ष नही लिया जाय। 8 किसी बात के लिये जिद्द नहीं करना जो उसके कार्य क्षेत्र के बाहर हो। 9. हाकिम स्वय वहा मौजूद रहे।

२२ कलम बाईसमी—जुमादारी अेक अेक री है सो किणी री जुमेदारी राखणी नही ।[1] सारा श्रीहजूर रै कदमा रै आसरै रहसी ।

२३ कलम तेईसमी— कचेड़ी चांतरा सायर हवाला टकसाळा कारखाना वगेरे ईकरोजा मुजब चालसी । सवाय दाम अेक १ खरचमी तौ श्रौहवेदार आपरा घर सूं भरसी ।

२४ कलम चोईसमी— सारा चाकर किणी सूं चालमेल सट-पट करै नही[2] अर जथा बधी[3] राखै नही ।

२५ कलम पचीसमी— तलब नगादो वेवाजवी करणी नही । नै वाजबी हुवै सो पाछी फेरणी नही । तलब मे पाळा रा दोय २ टका नै घोडा रो ।) पावलो नै ऊधडो ‾) अेक आने कोस इण सवाय नही करणी । मानै नही तौ पछै सवाय करणी ।[4]

२६ कलम छाईसमी— न्यात्र निमाफ री रुह सूं अदालत मे करावणी हर कौर किणी री नहि राखणा ।[5] अदालत वाळा नु खोटी किणी री सुपारस करावै नही । आपरा तालकदारा विना तरफदारी करै नही ।

२७ कलम सताईसमी— प्यादा वगसी चौकीनवेस कदीम सूं श्रीवडा माहाराजाजी री सिलामती मुजब राखणा ।

२८ कलम अठाईसमी— वसी वसायता रौ रकानो श्रीवडा माहाराजाजी री सिलामती मुजब राखणा ।

२९ कलम गुणतीसमी— खेडा दीठ रुपीयो नै छदामी लागै नु इणा बरसा मे घणा वध गया है सौ छव सात तो राखणा वाकी मोकूब राखणा । सो मोकूब राखणा तिणारी जमा लगाय देणी सो दूजा रै खरच रो नालीको बवसी ज्यु इणा रो ही हुसी ।[6]

३० कलम तीसमी— दोढी तालके सागड़द पेसा रौ लोक[7] कदीम सूं थो जिण माफक राखणो । नै दसतूर री जमा सदामद री है जिण माफक दिरावणी ।

---

1 अपनी अपनी जिम्मेदारी अलग अलग रखें । 2 साजिश आदि । 3 फिरके बाजी । 4 यदि न माने तो उसमें सवाया तक बढाया जा सकता है । 5 किसी की तरफदारी नही रहनी चाहिए । 6 दूसरो की जैसी व्यवस्था होगी वैसी इनकी भी होगी । 7 राज-घराने का कार्य करने वाले लोग ।

३१ कलम ईगतीसमी— हर अेक आप-आप रा काम करसी। ज्यूं ही श्रीनरूप जोगेश्वर गुरपणा आप री रीत मरजाद है जिण माफक राखसी। राज रा काम मे दखल नही करसी। अपणा-अपणा मकाना मे दिल जमाई[1] सू विराजसी।

३२ कलम बतीसमी— गवईया पिडत फेर सागडद पैसा वगेरै खरच ज्यादा है सो ईजाफै वधियौ है सो मरजी मुजब राखणौ।

३३ कलम तेतीसमी— सारा ही राजधानी रौ कटकणौ[2] श्रीवडा माहाराजाजी री सिलामती माफक राखणौ।

३४ कलम चौतीसमी—जिलो सदामद मुजब श्री वडा माहाराजाजी री सिलांमती मुजब राखणौ।

३५ कलम पैतीसमी— श्री दरबार रौ खरच अठै तथा परगना मे कचैडीया तथा चातरा सायरां वगेरै तमाम ठिकाणा मे वध गयौ है सो श्रीवडा माहाराजाजी री सिलामती रौ राहा नै हमार रौ राहा देख वाजबी राखीया विना सजै नही।[3] सु जिण माफक राखणौ।

३६ कलम छतीसमी— सिरायत[4] सूं लगाय अेक गांव रौ धणी पटायत भोमीयो तथा घर रौ धणी रजपूत वेटी मारण पावै नही।[5] व्याव मे चारणा नै इण माफक देसी[6]—

१ पटायत अेक हजार री रेख लार रुपीया २५) पचीस।

१ भोमीयो रुपीया १०) दस देसी।

१ घर रौ धणी विना जमी वाळो रुपीया पाच ५) देसी।

चारण वगैरे इण सवाय ऊजर करण पावै नही।

३७ कलम सैतीसमी— कोई आदमी तखसीर में आवसी तौ श्री वडा माहाराजाजी री तखसीर मुजब सजा दिरीजसी पिण चोरगो नह होसी।[7]

---

1. निश्चिंत होकर। 2. आय व्यय। 3 उचित ढ़ग से खर्च बांधे विना कार्य नही चलेगा। 4 विशेष सम्मान व कुरब प्राप्त वडा जागीरदार। 5. अपनी लड़की की हत्या नही करे। 6 विवाह मे चारणो को नेग स्वरूप इस प्रकार देगा। 7 उसके हाथ पैर नही काटे जा सकेंगे।

३८ कलम अडतीसमी— गाव मे तखसीर आवसी तौ श्री वडा माहाराजाजी री सिलामती मे लिरीजती ज्यूं लारली वहीया देख लिरीजसी । नैं पछ १८वारा बधीया है सु ठिकाणा मुजब रैंहसी ।

३९ कलम गुणचाळीसमी— सारा चाकर अरज कर किणी नै दिरावणो लिरावणौ करसी नही ।

४० कलम चाळीसमी— ओहधा खिजमतां रौ रोजगार श्री वडा माहाराजजी री सिलामती मुजव राखणौ ।

४१ कलम ईगताळीसमी— सांढीया रा टौळा[1] चरावण जावै तरै गावा री जरायत[2] रौ विगाड करावणौ नही ।

४२ कलम बियाळसमी श्री दरवार रा पुराणा सांढीया ऊठ घोडा बलहद गाया वगैरे श्रीवडा माहाराजाजी री सिलामती मे छटे री छटे महीनैं हाजरी लिरीजती नैं दाग दिरीजतो ज्युं दिरीज जासी ।

४३ कलम तयाळीसमी— रुळीयो धराव आवसी[3] सु छत्र महीना ताई तौ धणी री वाट जोवणी पछै दाग दिराय देणी ।[4]

४४ कलम चमाळीसमी— साढीयां ऊट जिण गाव मे मरजाय जिण गाव रा लोका री साख रौ रुको लिखाय लावणौ । नै दाग कारखानैं सूप देणौ ।[5]

४५ कलम पैंताळीसमी— वरसोदा मीना सवाय वध गया है[6] सु गैर वाजबी हुवै सो मोकूव करणा ।

४६ कलम छियाळीसमी— ढोली राणा नै व्याव मे रेख हजार लारै रुपीया ५) पाच परा देसी । सवाय ऊजर करसी नही ।

४७ कलम सैंताळीसमी— अेक लाख आठ हजार रुपीया १०८०००) खिरणी रा लागै सु दरीवैं साभर री पदास मांह सू कचेडी रो खरच ढळिया पछै[7] रहेसी सो देदेणा । सवाय घटसी वधसी तौ दूजो जमा माह सू दिरीजसी ।

---

1 ऊटनियो के टोले (समूह) । 2 फसले, पेड आदि । 3 फिरता हुआ कोई पशु आजाय । 4 छ महीने वाद उस पर अपना निशान अंकित करवाया जा सकता है । 5 राज्य चिह्न अंकित किया हुआ चमडे का टुकडा विभाग मे जमा करवा देना । 6 प्रतिमास व वर्ष दी जाने वाली रकम वहुत वढ गई है । 7 कचहरी का खर्च काटकर ।

४८ कलम अडतालीसमी—घोडा री चाकरी रा रुपीया ११५०००) अेक लाख पनरै हजार वरस अेक १ रा लागै सु पटायता रो रेख माह म् दिरीजसी ।[1]

फकत.... ...... ।

वडा साहब सदर लेन साहब बाहादुर नै अजट लडलू साहब बहादुर हमेस[2] हजूर मैं[१] आवै नै कहै—हम माहाराजा साहब का अेहलकार है सो जमीदार और हरअेक नौकर लोक नही समजैगा जिस कू हम समजाय देंगे ।[3] और सिरदारा सारां नै कैह दीयो के तुम नै आप आप की वारसी का गाव[२] ऊतार दीया लेकिन अेक-अेक गाव ऊपर तीन-तीन च्यार-च्यार जमीदारा की वारसी है सो अगाडी भी माहाराजा साहबा के वडे रा का दीया हुवा गाव भुगतीया है ।[4] अब भी माहाराजा साहब मुनासव जाण देवेंगे सो लेवोगे, इण तरै कह्यौ ।

सभी जागीरदारो को महाराजा की स्वीकृति से पट्टे दिये जाना

साहब बहादुर हजुर मे आवता जिण वखत दिवाण सिंघवी गभीरमलजी ऊकील राव रिधमलजी[३] नै दफतरी दरोगाई सिंघवी सुमेरमलजी रै ही सो सुमेरमलजी तो चल गया नै ऊणा रौ बेटो नथमल टाबर हौ[5] सौ ऊणा री तरफ सू पचोळी नदलाल हाजर रहतौ सो सिरदारा री वारसी रा गावा रा चोपनीया वचता[6] सो रिधमलजी अरज करता के औ गाव देणौ मुनासब है तरे श्री हजूर फुरमाय देता के ठीक है । जद दीवाण दूजै दिन ऊवै गाव लिख दैता । इण तरै दोढ दोय महीना मे सारा जमीदारा रा पटा जिला लिखीज गया । श्री हजूर री मरजी मुजब गाव लिखावणा इण वात मे पोहकरण ठाकर वभूतसिंघजी हमगीर हा । आयसजी लिखमीनाथजी तौ साहब लोका रा डर सू गाव पाचु परा गया था नै आयसजी रौ कामेती मूतो जसरूप लाडणू री हवेली मे बैठो

१ ग - वारला डेरा (अधिक) ।

२ ग कामा की फरदा ।

३. ग पोकरण ठाकुर वभूतसिंहजी पचायत मे सामल नै नीवाज रा सिवनाथसिंहजी पिण भाण घड मे सामल सो गाव आगे यौ पाटवो लिखाय लियौ नै कूपावत करणसिह वासणी रा कुचेरो लिखाय लियौ (अधिक) ।

1. जागीरदारो की रेख की रकम मे से दी जायगी । 2 हर रोज । 3 जो ठीक रास्ते पर नही आएगा उसे रास्ते पर ले आयेंगे । 4 भोगे हैं । 5 नाबालिग था । 6 पढे जाना ।

रयौ । उणां री तरफ सू पचोळी काळूराम मेडतीया दरवाजा रा डेरां हाजर रहतौ । नै माहामिंदर वाळा री आग्या रौ गोसैं फैल मोकळौ रह्यौ ।[1] पिण श्री हजूर री खातर सू [2] साहव वाहादुर क्यू ही कैहता नहो ।

महीनो अेक पछै किला मे थाणौ हौ जिण सवाय फौज वारैं ही तिण नै अजमेर मेल दीवी । नै दोनू सायब अठै रया ।

मारा सिरदारा रै डेरै पधार नै श्रीहजूर दसतूर मुजब मातम पोसीया कराई ।[3] १ राज रौ सारो काम मेडतीया दरवाजा वारैं डेरा मे हुवै ।

वडे साहव वाहादुर श्री हजूर नैं कयौ—वारवाड का गांव मग वंद कितना है अर कितनी रेख है अर खालसै कितना है अर ऊमरावा कै पटै कितना है पैला कितना था अर हाल अव वारला कू कितना दीया[4] अर सासण डोहोळी[5] कितना है । जिसकी हमकू विगत तफसीलवार ऊतराय दिरावै तौ खुलासा हमकू भी मालुम होजावै ।[2] सो हम अगरेजी मे तरजुमा करेंगे । जद श्रीहजूर दफतर रा दरोगा नू फुरमायौ कै साहव कहै जिण मुजव अेक चोपनीयो वणाय ताकीद सू लावौ ।[6] तरैं दफतर रै दरोगे जोसी जमनादास दफतर मे हजूरी नवी सदो घणा वरसा सू है जिण नूं कयो, मुदो सारौ नै लिखावट[7] थोडी रौ नखसो सारी माडवाड रा गावा रौ तफसीलवार ताकीद सूं वणाय लावसो श्रीहजुर वडा साहव नू वचावसी । तरैं जोसी जमनादास इण मुजव नखसो वणायौ[3]—

१. ग दस्तूर मुजब एकूका डेरा मे 5-5 4 4 (अधिक) ।

२ ख सरदार फरदा लिख-लिख गाव लिख आया सो कदेई किणी सवव सू एक दोय साख भाटी हूवैं 3-4 पीढी पेली तौ उवे ही लिख आया । जद श्रीहजूर रा मुसायव वडे साव ने केयौ इण तरैं पट्टा मागे है सो इण तरैं गाव इणा नू दिरीजैं जद तौ सारी मारवाड रा गाव किताक इणारे कदे कदे लिखीजिया है सो सारा ए लेवैं जद राजी हुवैं । सो इण तरैं लिखीजण री रीत नही । पछै वडे साव वारलैं सिरदारा नैं धमकी घुडकी दी—इतना गाव नही मिलेगा ।

३ ग वणाय हाजर कियौ मु साव खुस हुवौ, तरजुमो करनै सदर मे भेजियौ ।

1 राज्य में काफी अनुचित हस्तक्षेप रहा । 2 महाराजा की मन्शा को ध्यान में रखने के कारण । 3 जो सरदार मर गये थे उनके लिये मातमपोशी करने की रीति का निर्वाह पूरा किया । 4 असतुष्ट सरदारों को अभी क्या दिया । 5 दान के गाव । 6 एक सूची वनाकर तुरत लाओ । 7 सक्षिप्त मे सारा वृत्तात ।

रेख	गाव	आसामी
१५४४५४५)	१४४४	गढ जोधपुर
५६६६१५)	४६०	सिरकार जाळोर
१२२६७५०)	५५७	सिरकार नागोर
४६१४५०)	३६४	प्रगनो गोढवाड
४४६१७५)	२६६	परगनै सोभत
६२४०५५)	१४८॥	परगनै जैतारण
११२३१६३)	४१६	परगनै मेडतो
४१६५००)	२१०	परगनै परवतसर
३६२७०)	११०	परगनै मारोठ
१३८००)	२५	दरीवा नावा रा
१४५००)	२१	दरीबो डीडवाणो
१६२०३)	१०	दरीबो साभर
		२० रै याद रा १०
१७२०५४)	८४	परगनै फळोघी
)	.	दरीवो पचपदरो
)	१४०	परगनो सिवाणो
)	५७	परगनो दौलतपुरो
)		परगनो सिव
)		परगनो

अनो खरच री विगत—

रेख	गाव	आसांमी
६९८९१)	३४|||=)||	श्रीजी रा मिंदरां सारू पा तालके
१५३२५)	१५	श्री ठाकुर दुवारां
१८६७५)	२७||	श्री देवसथान
१५६९७५)	१२||	श्री गुसाईजी रा मिंदरां सारू पा तालके।
२५२६५६)	५१६||	खटदरसण तथा सासण
२७७७९०)	८३=||	श्री जनानी दोढी तालके
२०००)	१	वीकानेर रा राजवीया रै
३०७००)	५	वाभा रै पटै
७९६००)	८९।	रसालो सागरद पेसो कारखाना वगेरे
७२४५४९)	३६२।=	हवालो खालसो
१३१३८०)	६७||	कसबो चांतरा परगना कचेडीया तालकै सो पेदास तो अठै आवै नही नै कितराक सूना।
८११७५)	४६=||	मुतसदीयां रै पटै
१२३९२५)	४०||	फरदेसी कपतान पिडता वगेरै
८७७०५)	७६||	खास पासवाना रै
२९७०)	२९	अगरेजी सिरकार तालके मगरा रा गाव २२ मेरवाडा रा गांव ७
		२९

सिरदार पटायत खाप वार–चापावत–

रेख	गांव	आसामी	वाहाल	फेरदीया
७६६०८)	८५	पोहोकरण बभूतसिंघ सालमसिंघोत	५६४४३)७२	२०१६५)१३
५३७७५)	२३।।	पोहोकरण रो भाईपो जिलो	१४४५०)६।।	३६३२५)१७
४०४००)	२३	आऊवो कुसालसिंघ वखतावरसिंघोत	३०४००)२२	१००००)१
६३२०२।।)	२७।	आऊवा रौ भाईपो जिलौ	१४७२५)७	४८४७७।।)२०।
१६५२५)	११	रोयट रौ पटो	३०००)१	१३२२५)१०
८२३३।‾)।	५।–।	रोयट रौ जिलो	—	८२३३।‾)५।–।
१५०००)	५	हरसोळाव	—	१५०००)५
३०००)	३	हरसोळाव रौ जिलो	—	३०००)३
१६०२५)	११	खीवाडो	७०००)५	६०२५)६
"		खीवाडा रो जिलो""	"।"	"।"
६०००)	५	खाट्ट रौ पटो	६०००)५	—
२४७५०)	६।।	आहोर रो पटो	२४७५०)६।।	—
८६२५)	५।।	आहोर रौ जिलौ	८६२५)५।।	—
३०५००)	१३	दासपा रौ पटो	३०५००)१३	—
४५००)	२	दासपा रौ जिलो	४५००)२	—
१८२५०)	८	वाकरा रौ पटो	१८२५०)८	—
५०००)	२।।	बाकरा रौ जिलो	५०००)२।।	—
४४००)	१	धामळी रौ पटो	४४००)१	—

१६६२५)	६	भैंसवाडा रौ पटो	१६६२५)६	—
१०००)	१	भैंसवाडा रौ जिलो	१०००)१	—

कू पावता मे—

३०५००)	८	आसोप ठाकुर सिवनार्थसिंघ बखतावरसिंघोत	३०५००)८	—
..		आसोप रौ जिलो	..	..
२२०००)	११	चडावळ रौ पटो	१२०००)५	१००२५)६
२३७३८।¯)।७।।		चडावळ रौ जिलो	२३७३८।¯)७।।	
७५००)	१	गजसीगपुरौ पटो	७५००)१	
४५००)	।।	गजसीगपुरा रो जिलौ	४५००)।।	
१४३००)	१२	कटाळीया रौ पटो	१४३००)१२	
१५००)	१	कटाळीया रौ जिलो	१५००)१	—
१२०००)	३	वूसी रौ पटो	१२०००)३	—
)	५	सीवास	)५	—

जोधा—

२७७५०)	६	खेरवौ मात्रतसिंघ	१००००)१	१७०५०)८
३७६५०)	२८	भादराजण बखतावरसिंघ	३७६५०)२८	—
५२८५०)	४८=।।	भादराजण रौ जिलौ	५२८५०)४८=।।	—
२००००)	७	लाडणू रौ पटो	२००००)७	—

१५२५००)	७३।।	नाडणू रौ जिलो	१५२५००)७३।।	—
१४०००)	५	दुगोली रौ पटो	११०००)४	३०००)१
६०००)	४	दुगोली रौ जिलो	६०००)४	—
६०००)	२	लोटोती रौ पटो	६०००)२	—
८५००)	१।।	लोटोती रौ जिलो	८५००)१।।	—
५०००)	३	भवरी रौ पटो	२५००)१	२५००)२
६०००)	३	होडावास	६०००)३	
१०२००)	११	नीबी रौ पटो	१०२००)११	
२०००)	१	नैवाई	२०००)१	
२०००)	३	पाटोदी रौ पटो	२०००)३	
५०००)	१	कैसवाणा रौ पटो	५०००)१	
१२०००)	२	रोहीसो	१२०००)२	
५०००)	३	बावरी	५०००)३	

जैतावत—

१५०००)	७	बगडी सिवनाथसिंघ	१५०००)७	—
३७२५)	२	बगडी रौ जिलो	—	३७२५)२

करणोत—

१२०००)	३	काणोणो रौ पटो	१२०००)३	—
१०१००)	४	समदड़ी रौ पटो	१०१००)४	—

५४००)	४	समदडी रौ जिलौ	५४००)४	—
६६२५)	१३	वागावास रौ पटो	६८००)६	४१२५)८

करम सोत—

१४५५०)	१८	खीवसर वखता वरसिंघ रौ पटो	५०००)५	६५५०)१३
५४००)	३	खीवसर रौ जिलौ	—	५४००)३
४१२५)	३	पाचोड़ी रौ पटो	३०००)१	११२५)२

ऊदावत—

३५१००)	१०	नींवाज रौ पटो सवाईसिंघ सावतसिंघोत	३५१००)१०	—
७१३८०)	२७॥	नीवाज रौ जिलौ	२०००)१	५६३८०)२६॥
३८२५०)	१५	रास भीवसिंघ रै पटो	२००००)१३	१७२५०)२
३५००)	२	रास रौ जिलौ	—	३५००)१
५५२६५)	३६	रायपुर माधोसिंघ रूप सिंघोत रै पटो	५५२६५)३६	—
४३६००)	२०	रायपुर रौ जिलौ	४३६००)२०	
३०६७५)	६	लावीया रौ पटो	३०६७५)६	
१७१५०)	७	लांवीया रौ जिलौ	१२३५०)४	४६००)३
१३०००)	२	देवळी रौ पटो	१३०००)२	
१५५००)	२	कुसालपुर पटो	१५५००)२	—

३५५५०)२२	बूडसू रौ पटो	३५५५०)२२	—
१७००)६	बूडसू रो जिनो	१७००)६	—
१३०००)४	बोरावड रौ पटो	१२०००)४	—
१६७००)८	मनाणा रौ पटो	१६७००)८	—
६०००)१	वडागणा रो पटो	६०००)१	—
६०००)१	विदीयाद रौ पटो	६०००)२	—
११०००)६	रोड़ रौ पटो	११०००)६	—
३४६४२)१७६	मारोठ रौ देवीसिंघ महेसदासोत रै पटो	३४६४२)१७६	—
३०००)३	देवीसिंघ रौ जिलो	३०००)३	—
५६४१)३।।।	रिधसिंघ देवीसिंघोत रै पटो	५६४१)३।।।	—
४८७२)२।।	अभैसिंघ मोभासिंघोत रै पटो	४८७२)२।।	—
२२३७५)१०।	राजसिंघ रतनसिंघोत रै पटो	२२३७५)१०।	—
६२५०)२।।≡	सिरदारसिंघ फतेसिंघोत रै पटो	६२५०)२।।≡	—
६२५६)३।	मगलसिंघ मिलाप सिंघोत रै पटो	६२५६)३।	—
४७५०)४।=	देवीसिंघ बखतावरसिंघोत रै पटो	४७५०)४।=	—
१८०६२।।)३।=	नवो वगैरे	१८०६२)३।=	—
१२८७५)६।।।	चादसिंघ दुरजणसिंघोत रै पटो	१२८७५)६।।।	—

६४११४)२६।।।-।।	लूणावा रा पटा रा	६४११४)२६।।।-।।	—
३६६२०)१५।	पाचोता रौ पटो	३६६२०)१५।	—
२६०००)१८	पाचवा रौ पटो	२६०००)१८	—
७६३००)१७६	कुचामण रौ पटो ठाकुर रणजीतसिंघ जी	७६३००)१७६	—
१३६५५०)४६।।	कुचामण रौ जिलो	१३६५५०)४६।।	—
४३६००)१४।-	मीठडी रौ पटो	४३६००)१४।-	—
६५००)४	मीठडी रौ जिलो	६५००)४	—
३२७५०)६।।	गूलर रौ पटो	३२७५०)६।।	—
२८६६।।=)।।१=।।	गूलर रौ जिलो	२८६६।।=)।।१=।।	
८२५०)३	बावरला रौ पटो	८२५०)३	—
४७०००)१०	हरसोर रौ पटो	४७०००)१०	—
११०००)७	हरसोर रौ जिलो	११०००)७	—
६१५०)१।।	बोरुदा रौ पटो	६२५०)१।।	—
१०५००)५	खोड रौ पटो	१०५००)५	—
२०२५०)६	वळूदा रौ पटो	२०२५०)६	—
२१२००)१४	वळूदा रौ जिलो	२१२५०)१४	—
१०८७५)४	सँवरीया रौ पटो	१०८७५)४	—
३०००)२	नोखा री पटो	३०००)२	—

६०००)४	नींबड़ी री पटो	६०००)४	—
१८५००)५	कुड़की री पटो	१८५००)५	—
७०००)३	कुड़की री जिलो	७०००)३	—
१४०००)४	राहण री पटो	१४०००)४	—
६५००)३॥	राहण री जिलो	६५००)३॥	—
१४०००)११	सुमेल री पटो	१४०००)११	—
४२०००)४२	घाणेराव री पटो	४२०००)४२	—
३७३००)१७	नारलाई री पटो	३७३००)१७	—
४३८००)२६	घाणोद री पटो	४३८००)२६	—
५०००)१	नींबड़ी री पटो	५०००)१	—
५०००)१	पानड़ी री पटो	५०००)१	—
६०००)३	होडावास री पटो	६०००)३	—

भाटी —

२४८००)८	खेजडला री पटो ठा हिमतसिंघ	२०००)१	२२८००)७
३४५५०)१७	खेजडला री जिलो	३८००)३	३०७५०)१४
१९५००)४	साथीसीण री पटो लिछमणसिंघ	४०००)१	१५५००)३
५१००)७	लवेरा री पटो	२१००)५	३०००)२
२७५०)२॥।	लवेरा री जिलो	२७५०)२॥।	—

४०००)१२	रामपुरा री पटो	२०००)६	२०००)६
५६५०)६	वालरवा रौ पटो	५६५०)६	—
११२५०)४॥	कोटडी री पटो	११२५०)४॥	—
३२५९)३॥	कोटडी री जिलो	३२५०)३॥	—

चहुवांण —

२१०००)१७	राखी री पटो	२१००)१७	—
३६५५०)२५॥	राखी रौ जिलो	३५५५०)२५॥	—
१९५५०)९०	साचोरी रा गाव री पटो चीतलवाणो	१९५५०)९०	—
१६७५०)८	किलाणपुर री पटो	९५००)६	७२५०)२
४४००)३	किलाणपुर रौ जिलो	—	४४००)३
८०००)२	सखवास रौ पटो	६०००)१	२०●०)१
२०००)१	सखवास रौ जिलो	—	२०००)१

सोलंखी —

२६४५०)२०	रूपनगर रौ पटो आनौ करणवौ वगैर	२६४५०)२०	—
४०००)८	कोट वगैरे री पटो	४०००)७	—

महेचा मालांणी —

२००४२)१३०	जमीन गवळ वैरीसाल, निवदानसिंघ वगैरे भोमीचारे रा	२००४०)१३२	—
७६२५)४२	जैतमालोता रै गुडो राडदरी रा रांणा रै पटो	७६२५)४२	—

सींधल —

१६४००)१६	कवळा, भूनी पाचोटो वगैरे री पटो	१६४००)१६	—

पातावत —

१०५००)४	शाहू हरीसिंघ सरूप सिंघोत	१०५००)४	—

बाला —

६२५०)११	मोकलसर पटो	२६५०)११	—
६७५०)३	भवराणी री पटो	६७५०)३	—
८६६७)४॥=।।।	नीवलाणो	८६६७)४॥=।।।	
५५००)२	बाला री पटो	३५००)१	२०००)१
१८६२५)१६॥	बालोता री पटो डोडीयाळ वगैरे	१८६२५)१६॥	—

१६२५०)११	बोडाणा रौ पटो सैणा वगैरे	१६२५०)११	—
१५४५०)३७	देवडा रै वडगाव वगैरे	१५४५०)३७	—
१४०००)२७	कावा रै थूहर वगैर	१४०००)२७	—
४४०७५)१५८	थळी रा गाव[1] सेतरावो, देछू, केतू, बेळवो बापीणी, ईसरू वगैरे	४४०७५)१५८	—
५००)१	चीकावता रे	५००)१	—
६२५०)१६	कोढणा रौ पटो	६२५०)१६	—
३२५०)३	कोढणा रौ जिलो	३२५०)३	—
७०००)५	नीम्बावास पाडपुरी	७०००)५	—
३७५००)१३॥	भोपता रा गाव	३७५००)१३॥	—
७०००)२	बुढतरो नै गोधणा	७०००)२	—
१८१२६)१२॥-॥	फुटकर आसामिया रा	१८१२६)१२॥-॥	—
१६२६४६५॥≡)	फुटकर फैर पटायत	१६२६४६५॥≡)८४८॥=	
८४८॥=	समसता के पैदास		

मारवाड रा गावां री गिणती नै रेख अर खालसौ तथा पटायता नू तथा सासण वगैरै सारी विगत ऊतार चोपनीयो वडा साहव लडलू साहव वहादुर नै सू पीयौ। तरै अगरेजी मे तरजुमो कर सदर मे रपोट कीवी।

समत १८९६ रा माहा वद २ दूज नू श्री माहाराजा साहव नै सदर लेन साहव कयौ—गावा की विगत तो हम देखी, परत गावा सवाय जमा सायरा,

---

१ शेरगढ इलाके के।

दरीबा, हवाला, परगना कचैडी चातरा की जमा किस मुजब है सो हमकूं वाकबी तावं[1] लिख कै देवो ।

तरै श्री हजूर दीवाण तथा दफतर रा दरोगां नूं हुकम दीयौ कै साहब केवै है जिण मुजब जमा रो मेळ ऊतराय सूंप दो तरै हूकम मुजब जमा रो मेळ कर सूंपीयौ ।[2]

विगत जमां री—

२०५०००)	कचेडीया रा
१२०००)	जोधपुर रा
१५०००)	नागोर रा
७०००)	सोजत रा
२०००)	पाली रा
१२०००)	परवतसर रा
४००००)	बीलाड़े रा
६०००)	सीवाणे रा
२२०००)	जाळोर रा
१२०००)	मेडता रा
४०००)	जैतारण रा
१००००)	देसूरी रा
६०००)	मारोठ रा
६०००)	फलोधी रा

1. वाकिफ करने के लिये । 2 आमदनी की रकम समुचित ढंग से लिख कर सौंपी ।

३०००) कौलीया रा

३०००) दोलतपुरा रा

५०००) सिव रा

६०००) भीनमाल रा

१००००) माचोर रा

६०००) थावळै रा

२०५०००)

४२५५००) दरीवा रा

१०००००) साभर १५००००) नावा रा

१०००००) पचपदरो ७०५००) डीडवाणो

५०००) फलोधी

४२५५००)

२८६६००) सायरा रा—

४६४००) ३५०००) जोधपुर २५०००) जाळोर रा

४५०००) नागौर १०८०००) पाली रा

११०००) देसूरी रा १७६००) मेडता रा

६०००) सोजत रा ४०००) जेतारण रा

११०००) परवतसर रा ६०००) मारोठ रा

३०००) दोलतपुरो १००००) डीडवाणे रा

१६००) भीनमाल ३४००) फळोधी रा

२८६६००)

४६४००) परवध वदीया फेर सवाय मे वधसी ।[1]

३३६०००)

१ प्रबन्ध होने पर आमदनी और बढेगी ।

५००००) चातरा रा —

१४०००) जोधपुर　　७०००) जाळोर

१००००) नागोर　　६०००) मैडतो

१३०००) सोभत रा

५००००)

९८००) टकसाळा रा —

२०००) जोधपुर रा

३००) मेडता रा

५००) नागोर रा

६०००) पाली रा

१०००) सोभत रा

९८००)

६४५७००) फुटकर पैदास रा —

२२५०००) हवाला रा गावा रा

७५००) गोढवाड री दोय रुपीया घर बाब रा

१२०००) दोढी रै दमतूर रा

२२००) बागायता रा
४०००) निजर रा
६००००) हुकम नावां[1] रा
१२५०००) रेख गांवा री रा पटायता कना सूं
५००००) पेसकसी निजराणा रा
१०००००) फरोई खून तखसीर रा
२५०००) वें तलवी रा
२००००) तलवाना रा
१५०००) अदालता रा

६४५७००)
१७०००००)

दोय त्हाडी लागोडी होवें सो मोहर को आक ।

पछे साहब कयो इसका खरच की तफसील किस तरह है । तरें खरच रो मेळ ऊतारीयो ।

विगत —

५८)
३०१०२०) सेवा मिंदर सरूप जोगेश्वर
१०५८=) श्रीवलभ कुळ रा सरूप

1. पिता की मृत्यु पर नया जागीरदार गद्दी पर बैठता है उसे गद्दी का अधिकार देते समय लिया जाने वाला कर।

२५०००) धरम रै
४६६)॥ दैवळ, थडा[1]
४६६ ‾)॥ देवळ थडा
१६१२६१) अेन्न रै कोठार
१००५८।।।) हसम खुराक[2]
७३))
१५००) जवाहर खाना तालकै
१८५'॥☰)॥ खासै रसौवडै तालकै
१२४) तवोलखाना तालकै
४००६०) फुरमायस तालकै
१६०००) श्री देवसथान तालकै
२१०।।।=) श्री आतमारामजी
५००) ब्राह्मण पिंडत आचारी
४०००) हजूर री वरस गाठ तालकै
४२०००) वागर तालकै
४००००) किला तालकै
२०००) जरजरखांना तालकै
११७।-) अवदार खानै तालकै
३२६८३४) महीनादारा तालकै
१०००००) रौजीनदारा तालकै

---

1 स्वर्गवासी महाराजा पर बनाये गये स्मृति-भवन ।
2 फौज की खुराक के लिये ।

७०००) कपड़ा रै कोठार तालकै

८३३४॥) दफतर खरच तालकै

४०००) सेमा रै कारखानै तालकै

५०००) खरचां रा

४६८) इनाम खरच

५०००) दाणा तालकै

४४) सलेखाना तालकै

२२) तालिमखांना तालकै

४८०॥।~)॥। तोपखाना तालकै

५२५६) सुतरखाना तालकै

२५२२॥।) पीलीखानी

६४३~)॥ बागा रै कोठार तालकै

६०००) तिवार खरच[1]

३०००) ईनायत खरच

१४००) गाव वेरा री साख रा

४))

११६७४॥)॥ जनानी डोढी रा खरच ४)) मोरा

१००) ढोलिया रा कोठार तालक

२२६०००) अगरेजा तालकै

१०८०००) ११५०००) ३०००)

---

1. त्यौहारो पर खर्च।

५८६)	फीलखाना तालकै
१७०=)||	बारूदखानै तालकै
१४|–)	कवूतरखानो तालकै
५)	घड़ियालखांनो तालकै
५०)	झाराखाना तालकै
१०००)	सोराखाना तालकै
५५००)	कासीद खरच तालकै
११२२||)	किरायौ भाडो तालकै
४४१५)	सिरपाव खरच
१२६०)	खरीद खरच तालकै
११६)	तवेला खरच तालकै
८०००)	कमठा रा तालकै
१६२≡)	गऊखांना तालकै
१००)|||	नगारखांना तालकै
१६६७४=)	परवारी खुराक तालकै
१२७३)	बळ मिजमांनी
१०००)	विदा रा. दिरीजै
३२३२|||)|	निवांणां तालकै
६१)	अनामत खरच
६१)	फरासखांना खरच
३०२०||≡)	वागायत रा खरच

२०१८☰)	रसल खरच
१८००००)	फौज तालके
४६५।	ब्राम नो चूंगी रा
११७६७।=)	थांणा तालके
६८७)	मैंहलां तालके
४०७।=)ıı	टकसाळ तालके
६६३०।‾)ıı	चटा रा
७८।	पाटा बधाई
२०)	रसाळ नो दुकांन
१६००ııı‾)ııı	विछायत तालके
३६८००)	महा पुरसा तालके
१५२००)	समद खरच
१७७८)	सेउ खरच तालके
६३६ıı)	सनूंणो तालके
२००००)	व्याज रा खरच
५११५ııı‾)	हुटावणा रा
१६४)	खेती तालके
२ıı)	सीसा री दरीबो
१०१५)	चोरी रै माल रा
८६५।‾)	मोताद रा
६)	पुखतनी रा
१००)	मारखाई रा

५८०॥)	तैल रुसनाई रा
२०००)	वाजै खरच
१३५)	१७०००००)
२१९३॥)	मोरां १३५)) रा ण्त १६।) लेखै मुकरडे रुपीया २१९३॥)

१७०२१९३॥)

संवत १८९६ रा माहा वद नु वडे साहब कह्यौ मुलक का जमा-खरच ही देखा, परंत परदेसी लोक जो फतेहपोळ नौकर हैं नै हमेसा तगादा दोढी ऊपर करना है सो इसका हिसाव किस तरै सैं है सो अर इसका राज मे बाकी क्या नीसरता है सो हम कूं वतावौ ।[1] ज्यूं हम सफाई करा देवैं, सो थोडी विगत घाल हमकूं सच-सच हुवै सु वाकव करौ ।[2] तरै इण मुजब हैंसाव करायौ, तिण री विगत —

६०००००)	लारले हिसाव रा समत १८८८ रा असाड सुद १५ सुधा वाकी नीसरीया छव लाख ।
२३०००००)	समत १८८९ रा आसोज वद १ सूं लगायत संवत १८९४ रा असाड सुद १५ सुधा मास ७० दिन २६ आसरे मुकरडे रुपीया तेईस लाख ।
७५००००)	समत १८९५ रा सांवण वद १ लगायत समत १८९६ रा असाड सुद १५ सुधो हिसाव तौ जुदो जुडीयौ नही नै दरमावा[3] सु आसरो देख धरीया, साढी सात लाख ।
७५००००)	इसतायाज रौ हिसाव तौ जुडीयो नही सु आसरो देख धरीया साढी सात लाख ।
५०००००)	समत १८९४ रा असाड सुद १५ सुधा ।
२५००००)	समत १८९५ रा सावण वद १ लगायत समत १८९६ रा असाड सुद १५ सुधा, साढा सात लाख ।
४४०००००)	चमालीस लाख देणा रया समत १८९६ रा असाड सुद १५ सुधा ।

1 राज्य मे ये क्या दरबारा मागने है सो मुझे बताओ । 2 संक्षिप्त मे सच्ची स्थिति से अवगत कराओ । 3 माहवारी दर के हिसाब से ।

वसूल इण भांत हुवां —

२४६११०५) संमत १८८६ रा सावण वद १ लगायत समत १८९४ रा असाड सुद १५ पाया आसरै।

१९६११०५) खजाना सु पाया

५०००००) साभर नावो डीडवाणो पाली हवालो सायरा सुधा आसरै पाच लाख पाया ।

२४६११०५)

३५००००) समत १८९५ रा सावण वद १ लगायत असाड सुद १५ सुधा खजाना सू वीणदामी वगेरै पाया ।

२८११०५) बाकी १५८८८९५) तिण मधै रुपीया ४२५०००) अखरे चार लाख पचीस हजार मुकरड़ ठेहरीया। तिण री दुतरफी सफाई हुय राजी-बाजी हुय किसता बाधी ।

विगत किसतां री —

१५००००) हाल रोकडा दीना नै आधै लोक नै तौ सीख दीवी नै आधो लोक बाकी रयौ।[1] तिण रा चैराई १८९७ सामण वद-१ सू ।

२७५०००) दोय लाख पिचतर हजार बाकी रया सौ मास १२ मे देणा ।

४२५०००) इण विध फैसलो हुवौ ।

1. आधे सैनिकों को तो विदा किया और आधे यहा रहे ।

परदेसी लोक बेड़ा रा कपतान मेजर राजसथांनां रा ऊकील वगेरै अठै रहै, तिणां री विगत —

—
६ **कपतांन बेड़ां रा—**

१ नवाब अबदुल रहीम, बेगखा, मेमद हसन, बेग खा जी रा बेटा बेगखाजी रा पोता मुलक ईरान मे सहैर मसहद जान मुगल । अठै आया समत १८६३ रा बरस मे, घोडा १०० सू नौकर ।

१ पठाण सिकन्दरखा कलदरखा रो बेटो, जारतखा रौ पोतौ ऊतन[1] रामपुर । चाकर समत १८६४ सू ।

१ पठाण छोटेखा हिंदालखा रौ बेटौ । वास विलायत । हिंदालखा चाकर सवत १८४७ रा बरस मे नौकर रयौ सु कंई वरस रहै पाछौ परौ गयौ ।[2] पछै समत १८६१ रा बरस मे फेर चाकर रयौ । पछै फेर सीख हुई । सु समत १८८३ रा वरस मे फेर नौकर हुवौ ।

१ पूरबीयो रसालदार गिरवरसिंघ ऊमेदसिंघ रौ वेटो । ऊतन महु । परगने कनोज । चाकर समत १८५६ रा बरस सू रयौ ।

१ कायामखानी बादरखा अलफूखा रौ बेटो । वास फतैपुर । चाकर १८. बरस सू ।

१ सेख गुलाममेदी गोस मेमदखा रौ बेटो खोळै[3] सादलखा रा बेटा । ऊतन सावाद सं० १८६३ सू नौकर ।

—
६
१ सिंधी साहब जादौ ।
२ राजसथाना रा ऊकील दोय ।

१ ऊदैपुर रौ ऊकील पचोळी विरधीचन्द छोगालाल रौ ।

१ किसनगढ रौ ऊकील पचोळी आनदीरामस भानीरामस रौ ।

१ पिंडत वाजैराव आगै दिखणीया री तरफ सू रहतौ सो हाल तक है ।

—
१०

---

1 वतन । 2 कई वर्षों तक रह कर फिर लौट गया । 3 गोद ।

पछै मायर कयो मारवाड का काम पचायत से हुसी[1] सो सिरदारा मे पच कोण-कोण ठाकुर अर अहलकारा मे पचायत सामल कोण-कोण मुतसदी मुकर होसी सो विगत वार माड के कागज हमकू सूपो। सो हम सदर मै रपोट करेगे।[2] जद इण मुजब उतार नै सूपी[3] —

विगत —

८ सरदारां मे —

१ पोहोकरण ठाकुर बभूतसिघजी चापावत।

१ आऊवै ठाकुर कुसालसिघजी चापावत।

१ नीवाज ठाकुर सवाईसिघजी ऊदावत।

१ रीया ठाकुर सिवनाथसिघजी मेंडतीया।

१ भाद्राजण ठाकुर वखतावरसिघजी जोधा।

१ कुचामण ठाकुर रणजीतसिघजी मेडतीया।

१ आसोप ठाकुर सिवदानसिघजी[1] अेवज ठाकुर सिभूसिघजी कटाळियो खाप कूपावत, आसोप ठाकुर टावर तिण सू।[4]

१ रास ठाकुर भीवसिघजी ऊदावत।

—
८

५ अहलकार में —

१ धायभाई देवकरण, काम किलेदारी रौ पिण करै।

१ दिवाण सिघवी गभीररमलजी दिवाणगी करै।

---

१ ग कूपावत (अधिक)

---

1 पचो के परामर्श से होगा। 2. हम इसकी सूचना प्रधान-कार्यालय मे भेजेंगे।
3 लिख कर दी। 4 आसोप ठाकुर नावालिग था इस लिये उसके स्थान पर शभूसिंह को रखा।

१ वगसी सिंघवी फ़ौजराजजी।
१ ऊकील रावसा रिघमलजी।
१ जोसी परभूलालजी।

५

जमीदारा रा गाव लिखिजीया तिण री विगत रपोट मे छै[१]।

कर्नल सदरलेंड का अजमेर को रवाना होना —

जमीदारा रा गाव लिखिजीया पछै पो सुद १४ चौदस वडा साहव सदरलेन साहब वहादुर श्री हजूर सू सीख कर अजमेर नू रवानै हुवा। नै हजूर नै कयो— आप सिरकार कपनी का हुकम उठाया किला सू प दीया सो हम वहोत खुस हुवा। अब मै डाक मे लाट साहव वहादुर के पास कलकत्ते जाऊंगा आपकी सुपारस करके आप कू गढ सू पने का हुकम लेकर पीछा जलदी आपके पास आऊ गा।

अठै छोटा साहव लडलू साहव वहादुर नै अजंट राख गया सो सूरसागर डेरौ करायो। ऊकील रिघमलजी री जवान ऊपर राज रौ काम हुवै।

सदरलैन्ड का कलकत्ते से वापिस आकर किला सौंपना—

सदरलेण साहव वहादुर जोधपुर रौ किलौ पाछौ सू पण रो नै जैपुर वाळा मे खिरणी रा रुपीया ज्यादा चढता था सो अधखर छूट करण री नै आगा सू खिरणी कमती करण री लाठ साहव वहादुर सु दुवायती ले[1] पाछा डाक मे जैपुर आया। सो जैपुर वाळा नै खिरणी छूट मेल कर नै फागुण सुद-१२ वारस जोधपुर छड - वडा साय सू आया। नै फागुण सुद १५ पूनम गढ ऊपर सु अगरेजी थाणौ ऊठाय लीयौ। दोनू सायव वहादुर माथै जाय गोळ री घाटी हुय नै श्रीहजूर नै गढ दाखल किया[२]। सिलक हुई[2]। श्रीहजूर

१ ख मारवाड की कुल पैदास कितनी है, सायरा टकसाला हवाला चौतरा अदालता कचेडिया वगेरा की जमा कितनी है अर खरच किस किस जगह लगता है कुल हेसाव उतराय दो तरै साव रा केणा मुजब सारी इवारंत उतरायदी (अधिक)

२ ख ख्यात मे लिखा है कि महाराजा कई दिनो तक किले मे नही गये क्योंकि लिखमीनाथ और पिरागनाथ वाहर वैठे थे। तव लडलू साहव ने समझाया कि नाथो को हम राज-कार्य मे दखल नहीं करने देंगे यदि आप गढ मे नही जाते तो हम हमारी चौकी फिर से वैठा देंगे तव महाराज किले मे गये। (पृ 116 B)।

1. स्वीकृति लेकर। 2 तोपें छोडी गई

रंग पधरायौ। जनांनौ दरबार हुवौ। वडी खुसी हुई। ऊकील राव साहब रिधमलजी नै कडा, मोती कंठी, सिरपेच, सोने री साटा, पालखी नै रावराजा[1] बाहादुर रौ खिताब इनायत कीयौ। पछै वडा साहब बहादुर तौ तुरत ही पाछा डाक मैं अजमेर गया।

सिंघवी कुसलराजजी नै वुलावरण री सायब कनै दुवायती ले लीवी सु कितराक दिना पछै वुलाया नै ब्रगसीगिरी रा काम मुदे फौजराजजी री वुलावरण री दुवायती रिधमलजी पैला हीज ले आया हा।

राज रो कांम सारौ सूरसागर हूवै[2]। मुसायब कारदा सारा सूरसागर आवै। राज रा दफतर सारा सूरसागर रेवै। परदेसीया रौ हिसाव सिंघवी फौजराजजी नै जोसी परभूलालजी नूं भोळायो[3]। अदालत रौ काम सिंघवी मेगराजजी नै भडारी गोयनदासजी करै। सारा काम री फडद अजट साहब आयरण रा वचाय लेवै।

कप्तान लडलू का नाथों के प्रति कडा रुख—

पछै अजट साहब कह्यौ— जमीदारां गावा रौ तो फैसलो हुवौ। अब नाथा के नीचे जागीरी वोहोत है सो साढा च्यार लाख रुपीया री जागीरी तो राखौ बाकी री छुडाय लेवौ। नै कुचामरण, भादराजरण, रायपुर रै जागीरी ज्यादा है सो वधारा[1] रा गाव है सु छुडाय लौ। तरै इरणा रा केईक गाव वधारा रा छुडाया।

लिखमीनाथजी रौ कामेतौ जसरूपजी री तरफ सूं मुहता हिंदूमल रहतौ। जिरण नै फुरमावरणी हुवौ सो हिंदूमल जवाब दीयो कै साढा चार लाख तौ अेक महामिंदर रौ ही खरच सजे नही[2] सो जोगेस्वर तौ घरणा है।[3]

---

१ ख रावराजा शाहजी कामे रौ कुरब (अधिक) २ ख. स १८९६ रा वैसाख सुद सूरसागर दफतर दरोगे सिंघवी गिरधारीमल दफतर री बहिया जरूरत कांम रै मुद्दे री लेय सूरसागर डेरो कर दियो अर उकील रावराजा बादर शाह रिधमल रो डेरो पिरण सूरसागर हो सो रात दिन उठे हीज रहे, लडलू साब रा कैरणा सू। ३ ख. परभूलाल को साब ने कहा कि जितना वकाया हिसाब जिनानो, मुसदियो नाथो के मारफत है सो सही करो (पृ 119 A)

---

1 बाद मे बढाये हुए। 2 पूरा नही पडता। 3 नाथ तो बहुत हैं।

समत १८६६ रा जेठ सुद १३ लिखमीनाथजी रौ कामेती मुहता जसरूप लाडाण रै हवेली मे सरणै बैठो हो जठा सू माहामिदर गयो। सो अजट साहब बहादुर मरियायो तरै पूरा खिजिया[1] नै श्री हजुर मे पूरी तकरार री खलीतो हिन्दी मे लिखियौ— कै इसी वखत जसरूप कू तीस कोस बारै निकाळ दो नही तो दूसरी तजवीज हम करेंगे। तरै माहामिदर सू जसरूप चढ गयो।

ऊकील रिधमलजी रै नै दिवाण गभीरमलजी रै बणियौ नही।[2] तरै साहब बहादुर श्री हजूर नै कह्यौ के इस दिवाण से कुछ काम चलता नही। जद साहब बाहादुर श्री हजूर नै कयौ—दूसरा दिवाण करो। तरै सिघवी इदरमलजी नै दिवाण कीया।

नाथा रो पूरौ फैल। फुटकरिया[3] जोगेश्वर रोजीना घरणा देवै। श्री-हजूर जमा माह सू[4] छानै छानै रुपीया मगाय नाथां नै देवै। जाळोर रा परगना मे पिरागनाथजी ईंगेरै रो रैयत ऊपर जुलम कीया री अजट साहब सू इतला हुई। तरै तकरार रौ खलीतो असाढ सुद ६ रो आयौ।

समत १८६७ रा सावण वद १२ जालोर रा परगना री रैयत ऊपर नाथां जुलम कीयौ तिणा रा राजीनावा ऊकीला अजट साहब कनै पेस कीदा।

समत १८६७ रा आसोज मै सिवाणा रा परगना मे भीखा रा भाखर मे वारोटीया[5] भेळा हुवा नै धोकळसिंघ रै बेटा री फितूर ऊठायौ[1] तरै बगसी-सिघवी फौजराजजी फौज लेनै गया सो वारोटीया नास गया।

सवत १८६७ रा पोस सुद १२ री मिती रो खलीतो अजट साहब रौ आयो जिण मे लिखीयौ के बडा साहब बहादुर री चिठी आई जिसमे लिखा है के लिखमीनाथ का कामेती जसरूप कुं ३० तीस कोस उरली तरफ नही आणै देणा जिसकी पचा के नाव की केफियत हमारे पास आजावे तो अछा।

---

१ ग आसोतरा रो ठाकुर सगतसिंघजी करणोत रा बेटा रतनसिंघजी नू धोकलसिंह रो बेटो बणाय फितूर खडो कियो थो और नाथा रौ फितूर नै राज रा काम मे पूरो दखल जिण बाबत अजट रा खलीत दूजै तीजै हजूर मे जावै तरै पाछौ गोळ मोळ जवाब भुगतै पण नाथा रो दखल घटावै नही। तिण सू साब पूरो खफा वकील रिधमल ऊपर रोज तकरार करै (अधिक)।

---

1 नाराज हुए। 2 आपस मे मतभेद हो गया। 3 छोटे बड़े नाथ लोग। 4 जमा रकम में से। 5 उपद्रवी डाकू।

संमत १८५७ रा पोस सुद ११ श्री हजुर माड्वा रो अमवारो माहा-मिंदर पधारी अर अजंट साहब रै नावै खलीतो दीयौ कै थे अेक १ वार आ ो घणा दिन हुवा है मुलाकात कीगा नै मो नहि आवी तो म्हारो पधारणो था ग नै उठे हुसी[1] पाछो जवाब लिखजी। पाछौ खलीतो अजट साहब रो आया कै आप हमकु मुलाकात वासतै माहामिंदर बुलाया सो हम माहामिंदर नही आवेंगे। पोस सुद १२ वारस। जिणरै जवाब मे श्री हजूर री तरफ सु खलीतो अजंट साहब रै नावै गयौ नै ऊकील माथै मुख जवानी केवायौ कै जरूर-जरूर थे आवौ तो ठीक है। म्हारो गढ दाखल माहामिंदर सूं होण री पिण ताकीद है सो किताक काम अटकीयोडा है[2] सो आवौ तो वतळाय लेगा मे आवै।[3] मो मुलाकात री अर कामा रो मखसद हासल री खुसी हासल होवै। समत १८६७ रा पोस सुद १५।

जवाव मे पाछौ अजट सायव रो इण हीज मिती रो आयौ कै नाथा का दखल अब तक नही मिटा सु मुलाकात किया मे कुछ मखसद हासल नही होता। और आप गढ पर तसरीफ ले जावेगे अर कारदा का पुरा अखत्यार रहेगा तो आपकी मुलाकात की हमकू अेन खुसी है। अर नाथा का आदमी आपके पास नही रहेगा।

जिण रै जवाव मे श्री हजुर सायवा री तरफ सु अजट साहब रै नावै खलीतो दीयौ कै मुजराई लोक हाजर घणा क्यू हुवै ? सु तो सदा मद मुजब हैई[1] फेर पेख जोगेश्वर दोय चार रेवै है और दूसरो मखसद श्री लिखियो कै कारदा री दिल जमाई से काम आगे चलेगा सो कारदा री दिल जमाई तो कार-वार भोळायो जिण दिन सू इणा री दिलजमी ई है। दिल जमाई नही होती तो कार वार कैण मे सू पण मे आवै।[4] और थे आगे ऊकोल वा सेठ साथै केवायौ थो के आयसजी श्री लिखमीनाथजी माहाराज तो भलाई पधारो पिण जसरूप नही आवै सो लिखमीनाथजी माहाराज तो पधारीया है अर जसरूप अठै नही आयो है। सो इसा सोवा खडा हो जावै जरै सफाई जरूर कराय लेणी।[5] अठै तो आज ताई थारी सला माफक वरतण[6] राखी है अठो सू तो दोस्ती मे रतो भर फरक नही आवै जिमा मखसद दिल मे रेवै है।

---

१ ख ख्यात मे लिखा है कि लोग कान फडवा कर नित नये नाथ वनते थे और श्री हजूर उनकी खातरी पर खुब पैसा खरच करते। लडलो साहिव को यह बहुत बुरी बात लगी। (पृ 120 A)

---

1 मैं स्वय वहा आऊगा। 2 कई काम रुके हुए हैं। 3 विचार विमर्श हो जाय। 4 उन्हे कार्य क्यो सौपा जाता। 5 इस प्रकार की शका हो जाय जब उसका निवारण अवश्य करवा लेना चाहिए। 6 व्यहार, कार्य-पद्धति।

जिण रै जबाब मे साहब बहादुर लिखियौ कै आपकु और गुरु मुकरर करणा पडेगा। इण वगेरै तकरारी रौ समत १८६७ रा माहा वद २ दूज रो।

पाछौ खलीतो माह वद ६ री मीती रौ समत हाल[1] कै—थे अठा रा अजट हौ सो इण तरै कहौ कै फलाणा[2] काम नही होगा तौ हम चढ जावेगे[3] सो आ वात तौ सरवथा थानू नही करी जोईजे। थोडौ थमियो जोईजै।[4]

पछै श्री हजूर री असवारी हुई सो डेरा गाव वणाड हुवा। सो अजट लडलू साहब बहादुर सुणियौ जद ऊकील नू कह्यौ कै हम भी सफर करेंगे। यहा से चढ जायेगे। वगेरे तकरारी खरीतो लिखियो कै आप वणाड से अगाडो पधारोगे तो आपकू गुरु और[5] मुकरर करणा पडेगा इण वगेरे सखत लिखावट रौ। माहा वद ६ छट समत हाल[1] रो खलीतो दीयो।

जिण रै जवाव मे पाछौ रुकौ लिखियौ गयौ, गाव वणाड रा डेरा सु। के हकीकत रौ सारो अेहवाळ लिखियौ सो अठी कानी सू तो दोसती मे फरक नहि पडेला और समाचार मुतसदी आया लिखण मे आवसी। समत १८६७ रा माहा वद १०।

जिण रै जवाव मे माहा वदि ११ रौ लिखयौ आयौ तकरारी कै आप वणाड से पीछा जोधपुर नहि पधारोगे तो लिखमीनाथ का हक मै बुरा होगा। सो खलीतो लिख ऊकील नू सूपीयौ। अर घोडा ५ पाच सिरकारी साथै वणाड ताई दीया। कारण कै किणी सूवो घालीयो कै ऊकील नू पकड लेसी।[6]

जिण सू पछै श्री हजूर गाव वणाड सू पाछा पधारीया अर काम री मुकत्यारी ऊकील रावराजा बाहादुर सायव रिधमल री हुई। इण वात री सट-पट मे सेठ जोरावरमल पटवो पिण हाजर थौ।

नाथा रो फैल दिन दिन जादा वधियो, काम रौ किहु ई सालीको वेठै नहि।[7] अजट सायव ऊकील सू ताकीद कीवी तरै ऊकील कयौ मै क्या करू,

---

१ ग सवत १८६७ रा।

---

1 उसी सवत का। 2 अमुक। 3 यहा से विदा हो जाएँगे। 4 थोडा रुकना चाहिए। 5 दूसरा। 6 किसी ने यह सशय पैदा कर दिया कि वकील को गिरफ्तार कर लेंगे। 7 काम की कुछ भी व्यवस्था जमी नही।

दिवांण ईंदरमलजी गभीरमल का भाई गभीरमल से ही सुस्त बहोत है। तरै सायब दीवाण बदलण री ताकीद कीवी। तरैं भडारी लिखमीचदजी नैं दिवा-णगी समत १८६८ रा .... दीवाण कीयौ। पिण नाथा रा परवत्र री अरज करै[१] हरामखोरो कुण ओढै।[1] जिको ही दिवाण हुवै जिको श्री हजूर री मरजी ढावैं[2] नैं नाथा री मन राखै। सो लिखमीचदजी सु ही सालीको वधीयौ नही। नै भडारी लिखमीचद सालीका री अरज कीवी सु श्री-हजूर मजूर कीवी नही। तरैं फर साहब दीवाण बदलण री ताकीद कीवी। तरैं समत १८६८ रा चैत मैं मु हता बुधमलजो[२] रैं दीवाणगी हुई[3]।

समत १८६८ रा भादरवा मे वडा साहब सदरलेन सायत्र आबूजी मु पाली हुय जोधपुर आया तरै श्री हजूर गाव गुडै ताईं सामा[3] पधारीया[४]। नैं आसोज मे कूच कर वडा साहब बहादर अजमेर गया।

जैसलमेर व फलोधी की सीमा के गांव वाप के विवाद को सुलझाने का प्रयास—

समत १८६८ रा आसोज सुद मे अजट साहब बहादुर ऊकील रिधमनजी अर जैसलमेर रौ ऊकील पुरोहित सिरदारमल परगनै फलोधी रै नै जैसलमेर रौ गाव वाप रै काकड रौ झगडो झौड[4] घणा वरसा सू हौ सो निरधार करण[5] गया। सो निवडीयौ नही[५]। तरे पाछा आया। नैं पोकरजी रौ मेळो देखण साहब बाहादुर पोकरजी[6] गया सु नवे नगर पाली हुय पाछा आया।

---

१ ग नाथा री कलम पैला अटकै (अधिक)। २ ग सुरजमलोत (अधिक)। ३ ग. रिधमल री मारफत पण बुधमल काम मे समझै नही। फुरमावणो हूवै जिणरी समझ आवै नही। साव कनै जावै तो विना समझ री वाता करै। साव खफा (अ०) ४ ख साव रा डेरा सोजतिये दरवाजे वारे दिया। मुलाकात हुई सो मीठी मीठी वाता सू साव नै राजी कियौ। जाफती दीवी। चढती वखत हजूर नू एकत मे कयौ कै माराजा साव इन दिनो मे नाथो का दखल राज के काम मे पाछा सुरू हो गया है सो उनका दखल हरगिज नही रहेगा। और आपके व नाथो के हक मे वहुत बुरा होगा। ५ ख लडलू ने उस झगडे को निबटाने का प्रयास वाद मे भी किया था, पर रिधमल की जिद के कारण निबटा नही। (पृ 120 B)(पृ 121 B)

---

1. यह बदनामी कौन ले। 2 उनकी इच्छाओं को तुष्ट करे। 3 सामने। 4 विवाद। 5 निवटारा करने के लिये। 6 पुष्कर।

नाथो को केवल तीन लाख की जागीर देने का ऐजेण्ट का दबाव —

समत १८९८ रा पोस मे माहामिंदर अर उदैमिंदर वगैरे जोगेश्वरां रा पटा जब्त होय सेठ पूनमचंद तालके हुवा। सो जारायत[1] मे तो पूनमचद री तालको दी नै नै गाव आप आपरा जिणा रै नावे हा जिणा नू पोछीया जावै।[2]

और आयसजी श्री लिखमीनाथजी पिरागनाथजी, रुगनाथजी, वगैरे नै जोसी परभूलालजी, पटा नवेम पचोली धनरूपजी, पटवो प्रतापमलजी, माहामिंदर रौ कामेती व्यास गगाराम, मगली पावजी रौ कामेती दोढीदार प्रोहित त्रिरदोचद, वखतावरमल, सिघवी कुसलराजजी वगैरे घणा जिणांने साहब बहादूर रा कैणा सु सीख दीवी। फेर भडारी लिखमीचदजी, खीची ऊमेदजी, भाटी अनजी, जीवराजजी, पचौळी कालूरामजी वगेरा नू सीख दीवी।[1]

सवत १८९७ मे ठाकुर पोहोकरण वभूतसिंघजी नू परधानगी हुई। नै नीवाज रा ठाकुरा रै काका सिवनाथसिंघजी रै गाव आगेवो अर पाटवो लिखिजियो नै कुपावत करणसिंघ रै गाव कुचेरो लिखिजीयो। कुरब इनायत हुवो।

अजंट साहब श्री हजूर नै कयो कै इतरा दिन तो जोगेश्वरा नै साढा चार लाख रुपीया री जागीरी देण रो हुकम हो नै हमे तीन लाख री जागीरी जोगेश्वरा नू दिरावौ। थेट सदर सु नवी सत कराया मगाय देऊ। नही तो पीछै कुछ नही मिलेगा। सब जोगी निकाला जायगा। सो तीन लाख री जागीरी ही जोगेश्वरा मजूर कीवी नही।[2]

सिघवी सुखराजजी कटाळीये सू गोसे आया। हवेली मे रया नै खेवट कीवी सु श्रीहजुर रा फुरमावणा मुजब कितराक सिरदारा नै फाट नै मरजी बुजब रहण री अरजीया लिखाय लीवी। नै सिरदार जोधपुर सू सीखकर नै आप आप रै घरै परा गया।

---

१ ग घणा घणा नू साव रा केणा सू सीख दीवी सो जोधपुर सू ४०-५० कोस आघा काढ दिया। पछै ठाकुर पोकरण वभूतसिंह नीवाज शिवनाथसिंह कूपावत करणसिंह इणा लिखमीनाथजी सू ढव लगाये। (अधिक) २ ख सवत १८९८ मे महाराजा ने नाथजी के दर्शनो के लिये जालोर जाने की इच्छा प्रकट की परन्तु लडलू साहिब ने कहा कि फलोधी वाला झगडा अभी निवटा नही है सो आप नही जावे। तब नही गए। (पृ 121A)

---

1 प्रकट मे। 2 आमदनी फिर भी नाथो के पास पहुच जाती थी।

विगत—

१ आऊवो ठाकुर कुसालसिंघजी

१ रास ठाकुर भीवसिंघजी

१ खेजडलो ठाकुर हिमतसिंघजी

१ साथीण ठाकुर .... अै सीख करनै घरे गया।

पोहोकरण ठाकुर वभूतसिंघजी, नीवाज ठाकुर सवाईसिंघजी नै ठाकर रा काका सिवनाथसिंघजी, कुंपावत करणसिंघजी अै जोधपुर रया। सो अै तौ बारला सिरदारा मे[1] नै मरजी रा सिरदारा मे—

१ कुचामण ठाकुर रणजीतसिंघजी

१ भादराजण ठाकुर वखतावरसिंघजी

१ रायपुर ठाकुर माधोसिंघजी

१ लाडणू ठाकुर मगळसिंघजी

२ जूसरी ठाकुर सादूळसिंघजी

अै हाजर हा।

सेठ जोरावरमल रौ गुमासतो सेठ माणकचद गोलेचो जैपुर री दुकान ऊपर हो। जिण ऊपर लडलू साहब बहादुर मेहरबान हो सो माणकचद साहब बाहादुर मू मिळण मुदै आयौ। घणा दिन अठे रयौ। सो सिंघवी सुखराजजी माणकचद हस्तै खेवट कीवी।[2] सु माणकचद साहब बाहादूर नै कयौ— सिंघवी सुखराजजी अच्छा कारू दा है सो इण नू दिवाणगी दिरावौ तौ सब काम का सालीका लगाय देवै। तरै साहब बाहादुर हाकारो भरीयो।[3] सुखराजजी श्रीहजूर मे मालम कराई तरै श्रीहजूर गोसे साहब नै पूछायो, साहब बाहादूर दुवायती दीवी। तरै हवेली सु सुखराजजी नै आदमी मेल वुलायनै माहला बाग मे साहव बाहादुर रै रूबरू सुखराजजी नै दीवाणगी रो दुपटो दीयौ। समत १८९९ रा भादवा वद १२। सो मिगमर ताई तो सिंघवी सुखराजजी दिवाणगिरी रौ कांम आछी तरै सू कीयौ पिण नाथा वगेरै ने देण रौ खरच घणौ। सौ सेवट काम कठा ताई

1 महाराजा के कृपा पात्र नहीं। 2 प्रयत्न किया। 3 स्वीकृति दी।

चालै । ने लोका साहव बहादुर कनै नालस कीवी [1] कै आप नौ नाथा री परवव वांधौ हो नै श्री हजूर सुखराज कनै हजारा रुपीया मगाय नै नाथा नु देवें है सो साहव सुखराजजी री दीवाणगी मोकूव करण री केवायौ ।[१] सो मिगसर वद ८ अजट साहव वहादुर श्री हजूर कनै वाग आया तरै सुखराजजी दीवाणगिरी री मोहर श्री हजूर मै मेल दीवी । सो दीवाणगी खालसै हुई । मोहोर दोढी रही ।

श्री हजूर माहला वाग सु राईकै वाग डेरौ कीयौ । भडारी लिखमीचदजी हमतै रुपीया ठेहर ने ओहधा हूवा । दफतर री दरोगाई जोसी सावतराम रै रुपिया ५०००) पाच हजार ऊधार जमा रो परवाणो करायनै लीवी । इण ताछ कितराक ओहवा खिजमता हुवा ।

पोलीटीकल ऐजेण्ट का सिरोही जाना और पीछे कार्य मे अव्यवस्था —

अजट साहव वाहादुर सीरोही री तरफ[१] मुकदमा निवेडण नै गया था । मेडतीया दरवाजा बारै डेरौ दळ-वादळ खडो हुवौ थौ ।

रोजीना कान फडाय फडाय नवा नाथ हुवैं । नै सीरा पुडी खोर वगेरै मन-मानीया जीमण नाथा रै वासतै हुवै । नाथा री पूरी फैल । रोजीना रुपीया मागै नै गडण नै त्यारी हुवै ।[2] सो हजूर मूढा रै मागीया रुपीया देदे नै राखै । जोगीया री पचायती आगै राज रा काम नै वारी आवै नही ।[२] खरच री तगाई मूं रेख वाब रा रुपीया तीन चार लाख री भरोतीया कर खजाने जमा खरच कराय जमा पूरी करी । जागिया नै तथा बारै काढीया जिणा चाकरा वगेरै रुपीया वेछीज गया ।[3] कोठार वागर ना गादा हुवै ।

फागुण मे अजट साहव वाहादुर सीरोही सू पाछा आया नै पूरी ताकीद कीवी कै हम दोय महीनो से पीछा आया जितनै चार लाख री जमा थी[4] सु

१ ग रिधमल ऊकील ने सिरदारा वगेरां अजट साव ने केयौ के सुखराज सो महामिदर रा कामदार जसरूप रौ सगो है तरै दीवाणगी जवत कराई । २ ख. गाव भीखनवान गया । सवत १८९९ रा पोस मे, चढती वखत माराजा साव नै केयौ के हम दो महीनें के वास्ते जाते है हम पीछे आवें जब तक नाथो के निमत खरच नही मगावसी । आप फुरमायौ ठीक है । ३ ख इणी दिना पजाव मे जोगेसरा की जमात आई जिस पर खूब खर्च किया ।

1 शिकायत की । 2 रुपये न देने पर जमीन मे गडने को तैयार होते हैं । 3 रुपये बाट दिये गये । 4 ४ लाख रुपये जमा थे ।

माहाराजा साहब सब नाथा कू खिलाय दीवी। सु महाराज अपने हाथ से नाथा की जड उखेडतै है। रुपीया ऊधारा ले नै ओहधा दीया सु सारा जन्त करो। तरै ओहधा जबत कीया।[1]

दो नाथों को कैद कर अजमेर भेजना —

समत १८९९ रा चैत सुद १ अेकम मूहता निखमीचदजी[2] रै दीवाणगी हुई।[3] लिखमीनाथजी प्रागनाथजी वगेरे मोटोडा नाथ तौ बारै हा नै छोटोडा नाथा रौ पूरौ जुलम। जिण सू साहब बाहादुर पूरौ नाराज। सो अजमेर लिख नै सौ दोढ सौ घोडा मगाया। मिती वैसाख वद.. . सोझतीया दरवाजा बारै नव नाथ चौरासी सिध्धा रौ मिंदर गोरखपुर रा पीर मेहरनाथजी नै पकड लीया। नै चादपोळ दरवाजा बारै सीलनाथजी हुसीयारनाथजी रा चेला इणा दोना नै रात आधी रा पकड नै अजमेर पौचता कीया।[1] तिण री श्री हजूर मैं मालम हुई तरै ऊकीला नू बुलाय घणी ताकीद फुरमाई। तरै ऊकील साहब कनै गयौ सो साहब बाहादुर पूरौ खफा हो, सु कयौ कै अब तक क्या हुवा है हम सब नाथो कू पकड लेगे। नै ऊकील नू पाछौ हजूर कनै आवण दीयौ नही। वरज दीना, तरै ऊकील पाछौ नही आयौ।

तरै राईकाबाग रा डेरा सू श्रीहजूर असवारी कर नै सूरसागर पधारीया। सो मावडीया री घाटी ऊकील रिखमलजी सामौ आया नै अरज कीवी कै साहब बाहादुर पूरौ खफा है सो आप पधार सो तौ ही नाथा नूं तौ छौडै नही नै हळकी सवाय मे लागसी। तरै मावडीया री घाटी खासो बोल दीयौ।[2] सु ऊठै घडी चार तांई विराजीया रया[3]। भाव-भगती रा परताप सू श्री हजुर रा मन मे घणी ऊदासी नै नाराजगी। सो लाडणू रा जोधा परतापसिंघ नै फुरमायौ कै म्हे थानै सदा साम धरमी जाणा हा नै थे हमेसा अरज करावौ हौ कै काम पडीया बदगी कर देखावसा। सौ औ चाकरी रौ वखत है मर मार नै ही सरूपा नै[4] छोडाय लावौ। तरै रिखमलजो अरज कोवो कै, किण

---

१ ग मुथराजी रा नवा सेठा री दुकान तापडिया गणेसदास खेवट कर कराई (अधिक)
२ ख नीवाज री सला सू (अधिक)। ३ ग श्री हजूर रै मरजी उपरान (अधिक)।

---

1 अजमेर भेज दिये। 2 मना कर दिया। 3 सवारी वही ठहरा दी। 4. बैठे रहे। 5 नाथो को।

नै छोडाय आदमी नाथ तौ अजमेर रै आघेटै पुगा हुसी। नै सायव वाहादुर स्वाय मे खफा हौसी।[1] तौ फेर बाकी रा जोगेश्वरां नू तकलीफ होसी। तरै मावडीया री घाटी सू पाछा जोसीया री वगैची पधारीया। सारी रात उठै हीज वदीत[2] हुई। परभात हुतां गोळ री घाटी हुय गुलावसागर, री पाळ ऊपर अेक चातरो हौ जठै खासा सू ऊतर विराज गया। चातरा रै सहारै चाकरा चान्णी ताण दीवी[3] दोय दिन ऊठै विराजीया रह्या। अरोगीया नही[4]।

महाराजा का राज्यकार्य से विरक्त होकर विक्षिप्त होना—

समत १८९९ रा वैसाख वद ९ नम पोहर दिन चढिया छागाणी हरू पुसकरणो ब्रामण छूट मे हौ जिण नै फुरमायौ कै वभूत रौ गोळो लाव।[5] नै सा हरू प्याला मैं घाल वभूत लायौ। श्री हजूर साहवां आपरा हाथ सू वभूत लगाय लीवी।[6] नै खाखी दुपटो पधराया पगां उवराणा[7] वहीर हुवा। कितराक चाकरा वाभा ही पागा ऊतार फेटा १ वाघ साथे हुवा। नागोरी दरवाजै हुय मेडतीया दरवाजा वारै रांयणा रा चाकर कैसू गै वेटी पडदायत ही जिण रै करायोडी वावडी है, जिण ऊपर साळ[8] मे जाय विराजीया।

सेहर सारा मे वडी ऊदासी हुई। पछै पाछला दिन रा[9] ऊकील रिधमलजी सूरसागर सू श्री हजूर साहव विराजीया था जठै आयो। नै आवतां ही तकरार कीवी कै श्री खांवद तौ धणी परमेश्वर है सो भाव-भगती रै मुदै इतरी खेद फुरमाई[10] पिण चाकर हा जिणां नू औ फितूर करणो कांई काम।[11] साहव वाहादुर पूछसी तौ काई जवाव थे देसौ। जद डरता सारा जणा पागा वांद लीवी।[2] पछै अेक रात तौ श्रीहजुर साहव ऊणीज वावडी ऊपर रया नै

१ ग दुपटा।
२ ख सरदारों ने अेजण्ट से कहा कि नाथो को ऐसी स्थिति मे छोडदो तो ये खाना खालें परन्तु लडलो ने मना कर दिया [पृ 126B]

1 और नाराज होंगे। 2 व्यतीत। 3 चारो ओर कपडे की ओट करदी। 4 खाना नहीं खाया। 5 भस्मी का गोला वनाकर ला। 6 अपने हाथ से पूरे शरीर के भस्मी लगा ली। 7 नगे पैरों। 8 खुला लंवा कमरा। 9 दिन ढलते समय। 10 इतना कष्ट कर रहे हैं। 11 नौकरो को इनके देखा देख व्यवहार करने की क्या आवश्यकता थी।

दूजै दिन सेखावतजी रै तळाव ऊपर पधारीया। श्री हजुर साहब रै आडो चानणी तणाई। नै मरजी रा सिरदारा चाकरा ऊठै डेरा कीया।

ऊकील नू नै बारला सिरदारा नु अजट साहब बाहादुर पूछीयौ— अब क्या कीया चाहीयै। तरै इणा कयौ—मरजी हुवै तौ मे आपका नाव सू अरज करा, सो मान लेवै जद तौ ठीक नै नही मानै तौ श्री हजूर सायबा नै पीजस[1] मे पधराय गढ ऊपर ले आवा। बदोबस्त कर सब काम ढाळै लगाय देवा[2-1] तरै अजट साहब बाहादुर कह्यौ–अछा। जद साहब रौ चपरासी साथै ले पोहकरण रा नीवाज रा कामेती, ठाकुर रा काका सिवनाथसिंघजी, कूपावत करणसिंघजी खीवसर री कामेती करमसोत भानसिंघजी बहीर हुवा।[3]

सो आ हकीगत श्रीहजुर साहब नु मालम हुई सो श्री हजुर तो क्यु ही विचार आणीयौ नही नै मरजी रा सिरदार कुचामण, भादराजण, रायपुर वगेरे सारा सिरदार कमरा बांद गोसे त्यार हुवा। नै वीचारीयो के पीजस मैं विराजमान कर श्री हजुर साहबा नू जबरदस्ती सू गढ ऊपर दाखल करै तौ नही करण देणा। आ वात बारला सिरदारा सुणी तरै विचारीयौ—सावठा[4] आदमी ले न जावा जद तौ वेदो हुय[5] जावे। तरै सिरदार तौ नाजर दौलतराम री बावडी ऊपर बैठा रया नै ऊकील रिधमलजी साहब बाहादुर रा चपरासी नू साथै ले श्री हजुर कनै आया नै अरज करी कै साहब बाहादर कैवायौ है—इस तरैह नही करणा चाहियै। सु आप पोमाख पधरावौ[6] गढ दाखल हुवौ। काम री सलीको बाधौ[7] जोगस्वग नू सबर मे लावौ। अर वद मलाह देण वाळा नू सीख देवौ। तरै श्रीहजुर साहबा तौ पाछो क्यु ही जबाब दीयो नही नै आऊवा रा ऊकील सिरीमाळी विरामण तेजकरण रावराजा रिधमलजी नू कयौ कै हमे श्री हजुर साहबा मे दोस काढणो बाकी रयौ है,[8] आपा सारा चाकरा री सिरदारा रा दुख सु तौ आ नौबत हुई है। हमे श्री हजुर नै खेद क्यू देवौ हौ[9]। थारै तोन मे आवै जोई करौई हौ।[10]

---

१ ग बिले लगायदो

---

1 एक प्रकार की बन्द पालकी। 2 सब कार्य की व्यवस्था बैठा देंगे। 3 रवाना हुए। 4 बडी सख्या मे। 5 झगडा, फिसाद। 6 राजसी कपडे पहनो 7 राज्य-कार्य की व्यवस्था देखो। 8 अब महाराजा को दोष देना व्यर्थ है। 9 और कष्ट क्यो देते हो। 10 तुम्हारे मन मे आती है वैसा तो कर ही रहे हो।

पछै समत १८९९ रा वैसाख सुद १३ नै गांव पाल पधारीया। श्री जलंधर॰ नाथजी रा दरसण करण वास्तै जाळोर पधार नै उठा सू गिरनार जात्रण री मनमोवो थो[1] सो पाल रा तळाव मे वावळिया[2] रै चानणी तणाय विराजीया। अर वाकी रा सिरदार मुतसदी वगैरे डेरा खड़ा कराय रया।

श्री हजूर जोग धारण कियौ जिण मीनी सू[3] अन[4] रौ त्याग कर दीयौ थौ सो पईसा टका भर दई[5] नै अेक पेडो अरोगता। जोग धारण किया पछै किणो ने ही नाजीम कुरब दिरावता नही।[6] पाल रा डेरा हैजा री बीमारी फेली। तिण सू घणा आदमी मुवा।[7] भादराजण रा ठाकुर वखतावरसिंघजी तप[8] री मादगी सू पाल रा डेरा काळ कियौ।

पोलीटीकल ऐजेण्ट का पाल जाकर महाराज से मिलना—

पछै अजट साहव वाहादुर पाल रा डेरा श्री हजूर साहव कनै गया नै कयौ—आप यहा विराजे रहो।ा जद तौ आप विचारो वो ही आपके सरगवास करणै के वाद गादी-नसीन होगा। और आप राज छोड कर पधार जावोगे तो राज सुना रहैगा नही। धोकलसिंघ आवैगा।[9] तरै अजट साहव वाहादुर री समभास सू पाल सू आघा नही पधारीया[1]।

महाराजा का अपने उत्तराधिकारी के लिए ऐजेण्ट को अपनी इच्छा प्रकट करना—

समत १८९९ रा असाढ सुद ४ नू पाल सू पाछा राईके वाग पधारीया। श्री हजुर साहवा रा सरीर री चेसटा देख अजट साहव पूरी फिकर कीयी।[2] नै अरज कीवी कै आपकै स्वरगवास होणे के वाद राज का मालक किस कू करणे की आपकी मरजी है। तरै हजूर फुरमायौ—थै दोस्ती सू पूछी

---

१ ख २ महीना पाल विराजिया। २ ख ख्यात मे विस्तार के साथ लिखा है कि राजा की यह हालत देख कर सारे शहर मे बडा डरावना दृश्य हो गया सभी लोग दुखी थे। ऐजेण्ट ने कहा कि आप राज्य-काय को यो न छोडें तब मानसिंह ने कहा कि पूरे बाप जाते हैं तब छोडते हैं यो ही कौन छोडता है। (पृ 126 A B)

---

1 विचार था। 2 बबूल का पेड। 3 सन्यासाश्रम धारण किया उस दिन से। 4 अन्न। 5 दही। 6 राजसी औपचारिकता मे पेश नही आते थे। 7 बहुत आदमी मरे। 8 बुखार। 9 गद्दी का अधिकारी धौकलसिंह बनेगा।

हौ सो म्हे फुरमावोगे ज्यू करण री हामळ भरी[1] तौ म्है फुरमावा । तरै साहब बहादुर कही—आप फुरमावोगे ज्यू ही होगा । तरै हजूर फुरमायौ कै म्हारा वदखाहा होगा[2] सो तो फितूर[3] कू लाया चावेगा सो ये तो वात हरगिज नही होई चाहीये । और अेहमद नगर के राजा करणसिघजी के दोय वेटा पिरथीसिघ अर तखतसिघ है सो पिरथीसिघ तौ गुजर गया है नै छोटा वेटा तखतसिघ है । जिस ऊपर हमारी मरजी है वो हमारा कवर है, ऊनकु गादी-नसीन करणा ।[4] तरै अजट साहव वहादुर अरज करी—आप जमे खातर रखणा।[5] इसी तरै आपके हुकम मुजव होगा । इतरी वात इकत[6] मे हुई ।

माहाराज क्वार छतरसिघजी देवलोक हुवा तरै अठा रा चाकरा री तजवीज सू ईडर रा माहाराज छतरसिघजी रै खोळे आवण नु त्यार हुवा था । इण सवव सू ईडर वाळा सू वेमरजी थी । नै मोडा से माहाराज जाळोर रा घेरा मे जालमसिघजी मदत दीवी थी ।[7] जिण सवब सू माहाराज तखतसिघजी ने खोळै लावण रौ फुरमायौ ।

महाराजा का मंडोर प्रस्थान और वहीं मृत्यु होना—

समत १९०० रा सावण सुद ३ श्री हजूर साहव पीनस मे विराज नै राईकेवाग सू सेहर रे वारं-वारै हुय, मसुरिये कने हुय, सूरसागर कने हुय मडोर दाखल हुवा ।

ठाकुर वभूतसिघजी सीख कर पोहकरण गया ।

समत १९०० रा भादवा वद ७ नू श्री हजूर साहवा ने तप आयौ सो इकातरै तप सरु[8] हुवौ ।[१]

---

१ ख जनाने मेल मे विराजिया जोगेसरनाथ देसी परदेसी निसरमा भेळा होय घणा धापा करै । इणा रै समाधान हुया पछै आरोगे ।

---

1 स्वीकार करो । 2 मेरे विरुद्ध होंगे । 3 धौकलसिंह । 4 उसे गद्दी पर बैठाना । 5 आप पूरा विश्वास रखना । 6 एकांत । 7 भीवसिंहजी की फौज के द्वारा लगाये गये जालोर के किले के घेरे में मानसिंहजी की सहायता की थी । 8 एक दिन छोड़कर दूसरे दिन बुखार आता ।

समत १६०० रा भादवा सुद ११ सोमवार पाछली रात पोहर अेक रगां रा मडोवर रा वाग मैं धाम पधारीय। ।[1]

अजट साहव वहादुर नै खवर लागी तरै घोडे चढ असवार होय घडी दिन चढिया मडोवर आया । सारा नू खातर दिलासा कर पाछा सूरसागर गया ।

श्री हजूर साहव दैवलोक हूवा[2], देवलोक पधारीया री खवर गढ ऊपर आई तरै राणीजी श्री देवड़ीजी सती होण नै तयार हुवा । श्री हजूर जोग धारण कीया पछै जितरौ पेडो श्री हजूर साहव अरोगता जितरौ हो श्री देवडी जी साहिवा अरोगता । जिण सू सरीर निराट तज गयौ ।[3] गढ ऊपर सू केवायौ के हजूर नै दाग दैवण री ताकीद मत कीजौ,[4] सतिया आवै है ।

पछै देवडीजीसा तौ माहाडोळ मे विराजीया नै पडदायततिया, चाकर, पालखीया मे वैठा । देवडीजी साहिवा री सहेली राधा घोडै असवार होय फतैपोळ सू सिरै वजार होय[5] मडोवर पधारीया ।

सतीयां हुई तिण री विगत—

१ राणीजी श्री देवडीजी नाव अैजन कवर अखैसिंघजी री वेटी ।

४ पडदायतीया—१ फूलवेलजी, १ चनणरायजी, १ सुखवेलजी
१ रिधरायजी ।

१ रांणीजी श्री देवडीजी री वडारण राधा ।

—
६

---

1 स्वर्गवास हुआ । 2 मृत्यु होने के पश्चात् । 3 शरीर बहुत कमजोर हो गया । 4 दाहसंस्कार करने की शीघ्रता मत करना । 5 मुख्य बाजार के बीच से होकर ।

६ छव मतीया हुई । भादवा सुद १२ मगळवार मडोवर मे श्री हजूर री दाग हूवौ[1] । इति ॥

माहाराज श्री हजूर मानसिघजी देवलोक हूवा पछै गढ री पोळां मगळ रही[2] साथरवाडो[3] गिडदीकोट मे कीयौ । और खोळे श्रावण री क्रिणी री तेहकीक नही । कितराक फितूर पथी था जिणा मे बडा श्रादमी था जिणा मे तौ धौकलसिघजी कनै श्राप रा श्रादमी वहीर किया । श्रर छोटै दरजै रा हा सो निडा वहीर हुवा ।[4]

भादरवा सुद १३ बुधवार रौ तीयौ[5] हुवो । पाछला दिन रा श्रजट साहव बाहादुर मातम-पुरसी[6] करावण सारू गिरदीकोट मे श्राया । उमराव मुतसदी, खवास, पासवाना नू खातर कीवी ।[7] नै कयौ—रयासत का बदोबसत श्रछी तरै से रखौ । पछै साहव कयौ—हमनै सुणा है कै धौकळसिघ कू लेणे वासते मारवाड का ठाकुर लोग मुतसदी गये है । इसकी तम तहकीकान करकै सभावार[8] करौ । धौकळसिघ का हक जोधपुर के राज पर बिलकुल नही है । जो कोई धौकलसिघ का नाव लेगा जिसकू हम कैद कर कै चडाळगढ मे भेजेगे । तरै दीवाण मुहता लिखमीचदजी श्रजट साहब सू इनला करी कै तुवर सावतसिघ कै पटे गाव खेतासर है जठै फितूरपथी[9] भाटी परतापसिघ गाव मे श्राय श्रमल कर लीयौ है । तरै साहब कह्यौ—घोडा भेज कर परतापसिघ कू गिरफतार करौ । तरै दीवाण कह्यौ—राज रा ही घोडा मेला हा श्रर श्रापरा ही मेलौ । तरै साहब बाहादुर अगरेजी रसाला रा घोडा १०-१५ दस पनरै मेजीया । बाकी राज रा घोडा गया । तरै परतापसिघ गाव छोड भाग गयौ ।

श्रौर जोधपुर माह सु पचोली जीतकरण वगैरे धोकलसिघ रै सांमा गया तिण रो घर जवत कीयौ ।

---

1 दाह-सस्कार हुश्रा । 2 गढ के सभी दरवाजे बद रहे । 3 शोक व्यक्त करने की एक रश्म । 4 वे खुद रवाना हुए । 5 मृत्यु के तीसरे दिन किया जाने वाला सस्कार । 6 शोक व्यक्त करने की रश्म । 7 तसल्ली दी । 8 उन्हें दड दो । 9 धौंकलसिह के गिरोह का ।

पोलीटिकल ऐजेण्ट का गढ पर जाकर रानियों से गद्दी की हकदारी सम्बन्धी स्वीकृति लेना —

पछै अजटसाहब बहादुर गढ ऊपर जनांनी दौढी गया । नाजर साथै माजी माहवा नू ख तर कैवाई । नै पूछायौ— गोद बैठाणेका हक किसका है तरै माजी साहबा कैवायो कै श्री ······ जी साहवा गे फुरमायोडी है के माहरै पछाडी खोळै वसण रौ हक अजीतसिंघोत[1] मे अेहमद नगर वाळा रो है । सो जाणा हा इण वात सु थेई वाकब हूसो[2] इण वात रौ निगे राखजो[3] । तरै साहब पाछी कैवाई[4] कै वहोत अच्छा । श्री हजूर देवलोक हुवा पछै जोगेश्वरा नू अजमेर में कैद किया था तिणा नू छोड दिया । नै जोसी परभूलालजी, पचोळी पटानवेस- घनरूपजी, खीची ऊमेदजी वगेरा नू अठा सू अजट सायब सीख दिराय दीवी थी । जिणा नु पाछा आवण री साहब बहादुर दुवायती दीवी[5] । ऊमराव आप आपरै गावा मे हा जिके पिण सारा जोधपुर आया ।

हजूर साहवा रौ कारज[6] बारमे दिन पाच पकवान लाडूवा रौ गिरदी कोट मे हुवौ । खाड[7] मण ६००) छसौ मण खाड गळी ।

श्री माजी साहवां र नै कितराक मुतसदीया रै खवास पासवाना वगेरा रै माहाराज कवार जसवतसिंघजी नू खोळे लावण री सलाह ठेहरी थी पछै कितराक पोहोकरण वगेरे ऊमरावा रै नै दिवांण मु हता लिखमीचदजी वगेरै मुतसदीया रै महाराजा श्री तखतसिंघजी नू खोळै लावण री सलाह तुली[8] सो इणा श्री माजी साहावा सु खाच नै[9] अरज कराई कै महाराज कवार जसवत- सिघजी तौ वाळक है नै माहाराज श्री तखतसिंघजी वरस २४ चोईस मे है सो माह राज नु खोळे लेसा । सो आवता ही राज अबेरै ।[10] तरै श्री माजी साहबां रै नै ऊमराव मुतसदीया खवास पासवाना र माहाराज तखतसिंघजी नै महाराज कवार जसवतसिघजी सुधा[11] खोळै लेण री सलाह ठैहरी ।

पछ आसोज वद ७ सनीसर वार नै साहब बाहादुर ऊमरावा मुतसदीया खास पासवाना जनाना कामदारा सारा ने सूरसागर बुलाय नै कयौ— महाराजा

---

१ ग वाभा (अधिक) ।

---

1 महाराजा अजीतसिंह के वशज । 2 आप भी इस वात से शायद परिचित होंगे । 3 इसका पूरा खयाल रखना । 4 प्रत्युत्तर भेजा । 5 मजूरी दी । 6 मृत्यु भोज । 7 शक्कर । 8 तखतसिंह को गोद लाने की राय निश्चित हुई । 9 पूरा जोर दे कर । 10 राज्य कार्य सभाल लेंगे । 11 सहित ।

साहिब के खोळे किसकूं लेणा । तरै सारा जण। अरज करी कै माजीसा फुरमावे जिणां नूं लेणा । तरै साहब बाहादुर नै ऊमराव वगेरे सारा किले ऊपर आया। माजर साथै माजीया[1] नू पूछावौ[1]— के खोळै किण नै वैसाणणा । तरै माजीया फैवायौ कै अेहमदनगर रा राजा तखतसिंघजी नै माहाराज कवर जसवत-सिंघजी सुधा खोळे नेणा । तरै आ वात पकी ठेहरी ।

अहमद नगर से तखतसिंह को गद्दी-नशीन करने के लिये बुलाया —

तरै माहाराज नू लावण सारू दिवाण मुहता लिखमीचदजी रा बेटा मुकनचदजी नै सारा सिरदारा रा कामेती ने ठावा-ठावा[2] मुतसदीया रा भाई बेटा भतीजा कामेती खवास पासवान वगेरै आसोज सुद १ अेकम नू रवानै हुवा। खटलौ आदमी २००० हजार दोय आसरै ।[२]

जनाना माह सूं खास रुका लिखीजीया जिण री नकल —

लालजी छोरु श्री तखतसिंघजी मोती जसवतसिंघ सू म्हारा वारणा वाचजो । तथा श्री ·········· जी साहबा री फुरमावणी थानै खोळे लेण रौ हुवौ थी नै हमार म्हारी ही फुरमावणी हुवौ । नै सिरदारा ऊमरावा मुतस-दीया वगैरा रै पिण थानै खोळे लेण री ठेहरी है सो थे सताव आवसो ।[3] इण रुका रै नीचै छवा ही माजी साहबा रा लबर वार दसकत हुवा ।

अरजी —

स्वारूप श्री अनेक सकल सुभ ओपमा विराजमांना श्री राज राजेस्वर माहाराजाधिराज माहाराजाजी श्री श्री १०८ श्री तखतसिंघजी, माहाराजकवार

१. ग मासा नू किलै ऊपर अरज करी । २ ग. चढियो ।

1 पुछवाया । 2 मुख्य मुख्य । 3 शीघ्रता से आना ।

श्री जसवतसिंघजी री हजूर मे समसत[1] सिरदारा मुतमदिया खवास पासवांना री अरज मालूम हुवै। तथा खास रुका श्री माजी साहवा री लिखावट मुजव सारा जणा खोळे आप नू लेणा ठेहराया है सो वेगा पधारसी। इण अरजी नीचै सारा सिरदारा मुतसदीया खवास पासवाना रा लवर वार दसकत हुवा। नै श्री माजीया री खास रुको नै इण अरजी साथै अजट साहव वहादुर री खलीतो हिन्दी (मे) काती वद ७ नै दिवाण रा लिफाफा मै डाक मे अेहमद नगर नू वीडीया।[2]

खलीता री नकल —

स्वारूप[१] श्री सरव ओपमा विराजमान सकल गुण निध्यान राज राजेश्वर माहाराजाधिराज माहाराजाजी श्री तखतसिंघजी वाहादुर जोग्य कपतान ज्यान लडलू साहव वाहादुर लिखावत सिलाम वचावसी। अठा का समाचार भला है, आपका सदा भला चाहीजै। अपरच आपकू माहाराजा मानसिंघजी की गोद लेणे के वासतै सब सिरदार, उमराव, मुतसदी, खास पासवान, जनाना कामदार मिल कर कह्यौ—माहाराजा तखतसिंघजी कू गोद लेवेगे। सो हमकू भी मजूर है। सौ आप खुसी से जोधपुर पधारीयै। सो तखतसिंघजी तौ राज कै पाट वैठेगे।[3] अर कवर जसवतसिंघजी कू भी लार लेता आवणा। दोनू साहवा कू यहा पधरावणा। सो हम भी नवाव गवरनेर जेनरल साहव कू लिखेगे सो जरूर मजूर करेगे और आपकै मिजाज की खुसी कै समाचार लिखावसी। तारीख १४ अकतूवर सन् १८४३ ईसवी मुताबिक काती वद ६ समत १९०० ।

श्री हजूर देवलोक हुवा पछै राज रो काम दीवाण ऊमराव उकील तळेटी रा मेहला मे करता। साहव वाहादुर पिण कदे-कदे[4] तळैटी रा मेहला आवता।

---

१ ग स्वस्ति।

---

1 समस्त। 2 लिफाफे मे वद किया। 3 राज गद्दी पर वैठेंगे। 4 कभी कभी।

ईडर वालो की ओर से गद्दी का दावा प्रस्तुत करने के लिये उनके प्रतिनिधियो का पोलीटिकल एजेण्ट के पास आना —

काती वद ६ मगलवार ईडर रै राजाजी रा भला आदमी गाव मुडेटो रौ ठाकुर चवांण सूरजमलजी नै गुसाई लखापुरी आया। सूरसागर डेरौ कीयौ। ईडर रा माहाराजा रौ खलीतो साहब बाहादुर रै नावै नै सादडी री छावणी रा साहब री सुपारसी चीठी लाया। साहब बाहादुर सू मुलाकात हुई तरै सूरजमलजी अरज करी के ईडर पाट जायगा है सो जोधपुर खोळे आवण रौ हक ईडर रौ छै, अेहमदनगर सू माहाराज तखतसिंघजी नु म्है आवण देसा नही। कोई पिसाद खडो हुमी। तरै साहब बहादुर[1] कह्यो— इस वात का जवाब जोधपुर का सिरदार मुतसदी देसी। पछै दीवाण वखसी सिरदारा रा उकीला नू बुलाय साहब बाहादुर रूबरू मुकाबलौ करायो।[1] तरै ऊकील रिधमलजी जबाव दीयौ कै खोळा रा मुकदमा मे पाटवी पणा रौ कीही वटै नही।[2] पीढीया मे ईडर अेहमद नगर बराबर लागै है। नै माहाराजा श्री मानसिंघजी फुरमायौ नै श्री माजी साहबा नै सारा ऊमरावा मुतसदीया खास पासवाना राजी होय नै माहाराज श्री तखतसिंघजी नू खोळे लीया है सो रहसी। तरै ईडर वाळा फीटा पड[3] पाछा ईडर गया।

मुंहता मुकनचदजी नै सिरदारां रा उकील वगैरा अहमदनगर पोना काती वद सोमवार नै माहाराज श्री तखतसिंघ जी सफेद पाग पवराय[4] घोडै असवार होय मातमपुरमी करावण डेरै पधारीया। पछै तीजै पोहर रा मुकनचदजी वगैरे हजूर रै मुजरै गया।

---

१ ग लडन्नू साब (अधिक)।

---

1 वहम करवाई। 2 गोद के मामले मे पाटवी हो या न हो इसका कोई अर्थ नही होता। 3 उदास होकर, लज्जित होकर। 4 सपेद पगडी बाध कर।

तखतसिंह का अहमदनगर से जोधपुर आकर गद्दी पर बैठना—

काती वद १३ अेहमद नगर सू कूच हूवौ सो काती सुद ६ गाव सालावास दाखल हुआ। परधान ठाकुर बभूतसिंघजी पोहोकरण नै दूजा ऊमराव दिवाण वगसी वगेरै सारा सालावास सामा गया।[1] निजर निछरावळा हुई।[१] कातो सुद ७ अदीतवार सालावास सू जाभरकै कूच हुवौ। सो ब्या[न] रै तलाव वाबडी कनै डेरा खडा हुवा, जठै दाखल हुवा। अजट लडलू साहब बाहादुर पेसवाई मे आयौ। अद घडीक ताई सोखीया[2] वाता[२] डेरा मे हुई।

पछै साहब बाहादुर तौ उठा सू सूरसागर गया नै श्री हजूर हाथी री अंबाडी मे विराजीया। सफेद खिडकीया पाग वागो पधरायौ।[3] खवासो मे परधान ठाकुर बभूतसिंघजी पोहकरण छवर करण बैठा। दिन पौर दोढ चढीया राईकै बाग डेरा दाखल हुवा।

तीजै पोहर रा राईकैबाग सू हाथी रै हवदे विराजीया। खवासी मे परधान ठाकुर बभूतसिंघजी पोहकरण छवर करण बैठा। मेडतीये दरवाजै होय सिरै बजार होय फतैपोळ निमा साम रा पधारीया।[3] फतैपोल तोरन वान।[4] हाथी सू ऊतर खुलै खासै विराज गढ दाखल हुवा। फतैमैल मे वीराजीया। निजर निछरावल हुई। पछै सारा नूं सीख हुई।

काती सुद ८ सोमवार दोफार[5] रा जनाना मे श्रीमाजी साहबा सारा सू मुजरौ करण पधारीया।[४] पाछलै दिन रा खासै विराज सूरसागर अजट साहब बाहादुर कनै पधारीया।

---

१ ग सारा री ओळखाण दीवाण वगसी दोढी रै दरोगे कराई (अधिक)। २ ग मामूली वाता दस्तूर मुजब। ३ ग चौकोरो वाधियौ (अधिक)। ४ ग दस्तूर मुजब कायदे मुजब दुतरफी वाता हुई, सारै काम री भळावण दीवी।

---

1 सामने गये। 2 अनौपचारिक। 3 ठीक शाम के समय। 4 तोरन पर अदा की जाने वाली रश्म पूरी की। 5 दोपहर को।

हजूर माहाराजा श्री तखतसिंघजी राज-तिलक समत १९०० रा मिग सर सुद १० सुकरवार दिन घड़ी १४ चढ़िया, विराजीया।

महाराजा अजीतसिंह की शाखा का वृत्तांत—

माहाराज श्री अजीतसिंघजी रा कंवर रायसिंघजी अणदसिंघजी नै माहाराज श्री अभैसिंघजी आप रा मनसब माह सू ईडर रौ परगनो दीयौ थौ सो उठे जाय रया। अणदसिंघजी तौ रेवरा सू झगडौ हुवौ जठै काम आया। नै रायसिंघजी रै औलाद हूई नही।

१ माहाराज अणदसिंघजी।

२ सिवसिंघजी, इणा रै पाच वेटा हुवा

विगत—

१ भानसिंघजी, २ सगरांमसिंघजी, ३ जालमसिंघजी

४ अमरसिंघजी ५ ईद्रसिंघजी।
अे पाच वेटा सिवसिंघजी रा।

सगरामसिंघजी नै माहाराज सिवसिंघजी समत १८२८ मे अहमदनगर दीयौ सो उठे जाय रया। माहाराज सिवसिंघजी देवलोक हुवा पछै पनरमे दिन भानसिंघजी ही देवलोक हुय गया।[1] नै भानसिंघजी रै कवर गभीरसिंघजी बाळक हा सो गभीरसिंघजी नै खोळा मे लेय नै[2] जालमसिंघजी गादी बैठणै लागा सो ईडर रा सिरदारा चाकरा जालमसिंघजी नै बैठण दीया नही। नै गभीरसिंघजी नै गादी वैठाण दीया। तरै जालमसिंघजी अमरसिंघजी अेहमद नगर सगरामसिंघजी कनै परा गया। सो जालमसिंघजी तौ ईडर रा इलाका माय सू मोड़ासो दवाय लीयौ अमरसिंघजी वायड दवाय लीवी। ईद्रसिंघजी जनम रा आधा था जिणानू ईडर रै राज माह सु गाव 'सूर' दियौ।

---

1 स्वर्गवास हो गया। 2. गोद में लेकर।

ईडर गभीरसिंघजी रै जवानसिंघजी पाट वैठा नै जवानसिंघजी री गादी ईडर हमार केसरीसिंघजी है।

३ सगरामसिंघजी अैहमदनगर राजा हुवा। तिणां रै कंवर दोय—

१ करणसिंघजी।

१ परतापसिंघजी।

—
२

सो करणसिंघजी तौ अैहमद नगर गादी वैठा नै मोडासे जालमसिंघजी रै वाई[1] अेक हा सू तौ वासवाडै रावळ भगवानसिंघजी नू परणाया नै जालमसिंघजी रै कंवर हा नही[2] सो अैहमदनगर सू परतापसिंघजी नू मोडासै खोळै दीवा।

४. माहाराजा करणसिंघजी अैहमदनगर राजा हुवा तिणा रै कंवर दोय-

१ पिरथीसिंघजी।

१ तखतसिंघजी।

—
२

मोडासै महाराजा परतापसिंघजी रै संतान नही हूवौ। तरै पिरथीसिंघजी नै परतापसिंघजी रै खोळै थापीया। पछै माहाराज करणसिंघजी देवलोक हुय गया तरै माहाराज पिरथीसिंघजी अैहमदनगर गादी वैठा। मोडासो अैहमदनगर सामल कर लीयो। समत १८६६ रा मिगसर मे पिरथीसिंघजी देवलोक हुवा। नै राणी रै आसा हीसो जेठ रै महीनै कंवर बलवंतसिंघजी जनमीया। जिके महीना पनरै रा हुय चल गया। तरै माहाराज

---

1 लडकी। २. कुंवर नहीं था।

करणसिघजी री गादी माहाराज तखतसिघजी बैठा। पछै समत १६०० रा काती मे अैहमदनगर सू माहाराज तखतसिघजी माहाराज श्री मानसिंघजी रै खोळै पधारीया ।[1]

---

१ ग श्रा सिवनाथसिघजी रा ५ वेटा री विगत और हमे महाराजा मानसिंहजी रै राणिया कवरा बार्यां पडदायतिया वाभा गायणिया वगेरे री विगत —

१३ राणियां —

१ वडा भटियाणीजी खारिया रा भाटी सुरजमल भगवानदासोत री वेटी, जिणा रै कवर नै वाया हुवा सो कवर तो वालक थका चल गया नै वाया दोय —

१ वडा वाईजी सिरेकवरजी, जैपर रा महाराजा जगतसिहजी नुं परणाया १८७० रा भादवा मे रूपनगर रा डेरा ।

१ छोटा वाईजी सरूप कवर बूंदी रा राव राजा माहाराज रामसिघजी नुं परणाया १८८१ मे जान फागण मे ।

२

२ गांव माणसा रा छावड़ीजी तिणरै कवर छत्रसिघजी रो जनम १८५९ रा फागुण सुद ९ रो जनम, १८७३ रा वैसाख सुद ३ जुगराज पदवी आई नै १८७४ रा चैत वद ४ रामसरण हुवा ।

३ तुवरजी गाव लखासर इलाके वीकानेर वगतावरसिघजी री वेटी रै कवर-पिरथीसिघजी १८६५ से हुवा नै २ कवर फेर हुया सो छोटा थका चल गया ।

४ देवडीजी नींबज रा रै वाई एक हुई थी सो छोटा थका चल गया ।

५ कछवाईजी जैपर रा महाराजा श्री परतापसिघजी री वेटी रूपनगर समत १८७० मे रूपनगर जाय परणाया जैपर री गाव मरवा रा डेरा परणिया ।

६ छोटा देवडीजी मडार रा पेला चल गया ।

(निरतर पृष्ठ 239 तक)

५ माहाराजा श्री तखतसिंघजी—

धौंकलसिंह का दावा पेश करना और दावा निरस्त होना—

माहाराज श्री मानसिंघजी देवलोक हुवा तरै धौंकलसिंघजी जोधपुर रा दावा रो खत वडा साहब बहादुर नू दीयो जिण राज बाव री नकल —

तारीख २८ सितवर सन १८४३ ईसवी तथा अेक खत धौंकलसिंघ की तरफ से आया लिखा हुआ तारीख १४ सितवर सन १८४३ ईसवी मय महोर खिताब के। कै वो खिताब हक उसका नह था और कागजां समेत करनेल ज्यांन सदरलेन साहब अजट गवरनर जेनरल राजस्थांन पास पोहोचा। धौकलसिंघ ने इस ख्याल से कै मैं बेटा माहाराजा भीवसिंघ का हू दावा गादी बैठणे जोधपुर

(पृष्ठ 235 की पाठान्तर टिप्पणी....)

७ लाडी भटियाणीजी गाजू रा पैली चल गया।

८ तीजा भटियाणीजी जाखण रा गोयददासजी री बेटी लारै रया।

९ लखासर रा लाडी तुंवरजी पेला चल गया।

१० पाचमा भटियाणीजी जिणरै कुंवर सिंघानसिंहजी हुवा जिणा रो जनम-१८९४ रा वेसाख सुद ७ रा नै १८९५ रा वैसाख सुद ७ चलिया। १ वरस री उमर पाई।

११. सिहीर रा चौथा भटियांणीजी लारै रया।

१२ तीजा देवडीजी मडार रा पेला चल गया।

१३. चौथा देवडीजी अेजनकवर गाव सेलवा रा देवडा जवानसिंघजी अखैसिंघोत री बेटी पतवरता रो महाराज साथे १९०० रा भादवा सुद १२ मे मंडोवर सत कर वळिया।

विगत —

५ भटियाणियां, ४ देवडियां, २ तुंवरजी, १ चावडीजी १ कछवाईजी।

(निरतर.)

जोधपुर का कीया था। माहाराजा मांनसिंघ बहादुर नै ४० चालीस बरस तक उस दावे कू फेर दीया[1] अर धोकलसिंघ अपनी मुराद पर नही पोच्या। जिस वखत से के अमलदारी सिरकार कंपनी बाहादुर की हिंदुस्थान मे हुई ग्रौर अेहदनामा सिरकार कपनी से माहाराजा मानसिंघजी के हुवा सिरकार कपनी नै सिवाय माहाराजा मानसिंघ कै दूसरे के ताई रईस मारवाड का नही देखा। अर ना दूसरे के ताई दावीदार मसनंद - नमीनी रियासत मारवाड का जाणा। माफक लिखणै धोकलसिंघ कै सुण नै अतकाळ माहाराजा मानसिंघ बाहादुर का पाचमो तारीख इस महीने की कू अै वात बडे अपसोच[2] की है।

धोकलसिंघ माहाराजा मांनसिंघ इतकाल होणे की खबर सुणकर अपणे बैठणे की जगा ईलाके जजर से मये फौज रवानै होय विना इजाजत सिरकार कपनी के जैपुर के मुलक मे आया सो अै वात नादानी अर गैर वाजबी है।

(पृष्ठ 235 की पाठान्तर टिप्पणी..)

१२ पडदायतिया वडा अखाडा मे —

१ चनणरायजी

२ मायण रगरूपरायजी रै वाभा सरूपसिंघजी

३ चरूजी सिणगारदे बाई सो, वरस ३ हुय मुवा।

४ गायण सुखवेलजी

५ गायण वडा रूपजोतजी

६ वडी चपरायजी रै वाई रतनकवर बरस ७ हुय चली।

७ रिधरायजी रै वाभा हुया सो चलग्या।

८ हसतुरायजी रै वाभा सिवनाथसिंघजी

९ तुलछरायजी रै वाभा लालसिंघजी दूजा रतनसिंघजी

(निरतर ...)

---

1 उस दावे को दवा दियां। 2. अफसोस।

मुलतवी रह्या । इस सूरत में अजट गवरनर जनरल बाहादुर राजसथान का दावा धौकलसिंघ का नही गिणते ।

माफक दरखास्त धौकलसिंघ के नकल खत धौकलसिंघ की अर नकल खत जवाब की नजदीक नबाब गवरनर जेनरल साहब बाहादुर कै भेजी जावेगी । अेक नकल दोनू की साहब बहादुर अजट जोधपुर पास भेजी जावेगी ।

इस वखत मे सिरकार कंपनी अगरेज बाहादुर कै अेहलकार राणीयां अर सिरदारा अर कामदारां राज मारवाड से मुकरर करणं मसनद - नसीनी रियासत मारवाड के सलाह करेंगे वे पूछै रईसा राजवाडा के कै जिणा का नाम धौकळसिंघ नै लिखा है, इस वासते लिखा जाता है कै आणा गैरवाजब । धोकळसिंघ के सै बीच मुलक जैपुर अर ओरा रजवाडा कै फिसाद होगा । हुकम वास्तै खानगी फौज के हुवा है कै फौज वहा जाय कर फिसाद करणे वाळां कू सभा ओर नसियत करैगी ।

खत धौकळसिंघ का अगरैजी जबान मैं आया । जबाब उसका अगरेजी जवान मे हुवा । वासतै समभणै धौकळसिंघ के तरजुमा उसका फारसी अर हिंदी मे हुवा । "फकत"

—सपूरण समत १९२९ मिगसर वद १४ । इती महाराजा मानसिंह री ख्यात—

(पृष्ठ 235 की पाठान्तर टिप्पणी)

८. घुअरेखाजी

९ छोटा चनणरायजी

१० विचला सुदररायजी

११ किसनरायजी

१२ पनरायजी रै वाभा जवानसिंघजी वरस ६ रा हुय नै चलिया ।

विगत तपसीलवार —

१३ राणिया, १२ पड़दायतियां, १२ गायणियां ।

नामानुक्रमणिकाएं

[पुरुष एवं स्त्री]

अ

आ

इ

ई

उ

ऊ

ऐ

ओ

क

गो

ग

च

चा

चैं

चौ

छ

छा

छो

ज

पा

पि

पु

पो

फ

फौ

ब

बा

बि

बे

बो

भ

मा

मी

मु

वि

वी

वे

स

सा

सि

सी

सु

सू

से

सो

ह

हि

ही

हू

नामानुक्रमणिकाएं

[शहर - कस्बा - गांव]

न

ना

नी

ने

नो

प

पा

पी

मे

मो

रा

री

रू

रो

ल

ला

लू

लो

व

वा

नामानुक्रमणिकाएं

[विविध]

मंदिर देवी-देवता–

तीर्थस्थल –

जलाशय –

बाग बावड़ी –

किला, कोट हवेली –

पोळ अथवा दरवाजे –

अन्य नाम –

—※—

परिशिष्ट

कुछ समसामयिक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक पत्र

दाउदखां का पत्र सालमसिंह के नाम

[यह पत्र जोधपुर से दाउद खां ने पोकरन ठाकुर सालमसिंह को सवाईसिंह के मारे जाने के पश्चात् लिखा है। इस पत्र में उक्त ठाकुर को महाराजा मानसिंह की सेवा में उपस्थित होने के लिये आग्रह किया गया है]

"अपरञ्च राज री तरफ रा समाचार महे आछी तरे म्हेरम हुवा, आप तो वडा सिरदार हो आपरी समज इसी है जीसी मारवाड़ में कीणी री नही। ने जांणता हुसी मांनु कागद न देवो सु आप कु हमनैं कुछ सरदार न जाणा इस वासतै कागद न लिखीया। सिरदारगी तो आपरी मे जीस दिन ही न जांणी थी जिस दिन ठाकुर सवाईसिंघजी का सिर इया आया था। आप री सिरदारगी तो मेह जद जाणता ठाकुरां रो माथौ आयो जीण नुखतै[1] खावदा रे कदमा आय हाजर हुवा हुता तो मेह जाणता कै ठाकुर सवाईसिंघजी रा वेटा है। आप अठै आय नै श्री हजूर मे अरज कराई हुती-मारा वाप से तो माथो आयो नै, हु ई हाजर छु। खांवदा[2] री मरजी हुय तो मारो ई माथौ हाजर है, तो इण वात रो घणो फायदो पछाड़ी[3] नीजर आवतो। इतरी वात कीवी हुती तो मै ही राज नु जाणता कीणी वात लायक हो, अवै घर मे वैठा वैठा लोका ई कहे सीतग[4] दिल मे उपजे है सु इण सीतग रो जतन विचार जो न्हो तो पछै हो पिसतावोला[5]। मै तो आगै[6] ठाकुरां सवाईसिंघजी नु ही इण तरै सला लिखी थी। पीण होणहार आय दावीया[7] जोण सु कांई मानी नही नै अवै राज नु ही तावै दोसतो[8] री लिखी है। राज रा मन मैं आ हुवैला, मीरखाजी हम कु वचन दे पछै दगा कीया जीस तरे सारा हुवैला सो मीरखाजी तो भाई हमारा है हम उसके भाई हैं।

---

1 अवसर पर 2 मालिक (महाराजा मानसिंह) 3 वाद मे 4 असनुलित उग्र विचार 5 पश्चात्ताप करोगे 6. पहले, पूर्व मे 7. भवितव्यता ने आ दबाया 8. मित्रतावश

पीण महाराजा मानसिघजी तो हमारा भाई नही महाराजा तो तुमारा भाई है । ठाकुर सवाईसिंघजी रो तो नांम तुमारे उपर चले है । सालमसिंह हिम्मतसिंह दोय बेटे हैं पीण तुमारा नाव किस पर चलेगा नै दोय च्यार हजार वरस की आरबल[1] आपकी होय तो उवा हमकुं लिखीयो उस उमेद पर हम नचीते[2] हैं । नीयायत आपकी घर का मालक तो महाराज श्री बिजैसिघजी रा फरजद[3] होसी, ओ ठीकाणो जमी राज रे साथे चालण की न्ही आप दिल से इडवो विचारो ।

साठ हजार फौज दोय पसेवो खांवदां राखे है ने मुलक डड नै खुवावे है । सु ठीकाणा छुडावण री मंत्र मे हुई तो कीताक दिन ठेरसो[4] गढ कीला नै बेटी किसी का घर मैं अखी[5] न रही जीण रा भाग मे जीतरा दिन लिख्या होय जितरा ही दिन रहे है, आ निसचै जाणजो नै दिल मे सितग उठावो आ सला राज रै कदै ई फायदारी न है । इण थोडा लिखण मे घणो समजणो आ राज री अकलमदी हैं । राज नुं लिख्यो है सु जुठा लिख्यो है का फायदा री लिखी हैं सु सारी समज लेजो । आप मन मे जाणता इसो श्री दरबार मे कोई काम पडै तो उण बखत चाकरी मैं जाय हाजर हुवा सु चाकरी इती वडी हुई सु सारी मारवाड हरामखोरी[6] एक ठीकाणा उपर आई ने फेर हरामखोरी री ढाल हुवा बैठा हो सु अबै इण बात नु छोड आपरा दसतुर उपर मालक वेणो[7] । मांरी तरफ सुं तो आ ही राज नु सला[8] हैं सु लिखी है । फायदो जांणो तो करजो नै नही करसो तो इण जीदगी सु फेर कदे मीलसां जीस दिन आ बात याद करसो इसा बखत फेर राज नु नं आवेला"......... [9] ।

---

1 शक्ति, उम्र 2 निश्चित 3. औलाद, वशज 4 ठहरोगे 5. स्थायी, निरतर 6 बेईमानी 7 स्वधर्म से च्युत होना 8. परामर्श 9 पत्र का कुछ अतिम अश त्रुटित है ।

ठाकुर वभूतसिंह का पत्र शिवसिंह के नाम

[यह पत्र पोकरन ठाकुर वभूतसिंह ने सिरोही के राव शिवसिंह को लिखा है जिसमें जोधपुर महाराजा मानसिंह के कुशासन आदि का उल्लेख किया है।]

॥ श्रीरामजी ॥

ठाकुर वभुतसिंघजी ई ये मुजब कागद रावला सीवसिंघजी रे नाव लीखे जे रो मसोदो।

"अप्रंच राज आछी तरे सुं जांणो छां महाराज श्री मांनसिंघजी गादी विराजिया पछै मारवाड़ रो कुही वदोवसत कीयो नही सरब मुलक नाथा ने गुलामां नैं कलावंतां[1] वगेरे वाट दीयो ओर जां कदीम सुं[2] जो सीरदारा रा ठीकाणा छा सुं जवत कर लीया अर वात तो जगत मे परसिध छै 'रिड़मलों थापिया तीकै राजा' सो राव श्री जोधोजी सुं लगाय महाराजा भीवसिंघजी तांई तो मांहरे हाथ सु राज जोधपुर रो वदोवसत हो तो आवै है जीण ने सारा रजवाड़ा वा राज आछी तरे सुं जाणो हो जीण कवर रो हक व लायक गादी रे देखीयो तीण ने ही गादी वैसाणियो[3] सुं गादी रा मालक तो गादी वीराजै सो ही होता आवे है, परन्तु मुलक रो वंदोवसत वा सला ही अत वगेरे कमी रा मालक पांच राठोड़ सीरदार है। सुं पुसतो सु[4] कदीम करता आवे है। सु प्रथम तो अे महाराज श्री मानसिंघजी गादी वीराजिया सु वरखलिफ हकीयत[5] रै ववै तजवीज सारों सिरदारां री वीराजीया जिण नैं राज आछी तरे जांणे हो ओर आज तांई जो काम कीयो सो वरखीलीफ राज री तरै कीओ सु आज तांई कुही वदोवसत हुवो नही ओर मुलक मे के जाळी वा फीसाद हुवे है और सीरकार अंगरेजी रा मामले सवा फौज

1 कलाकार (सगीतज्ञ) 2. परम्परा से 3. गद्दी पर बैठाया 4. पीढियों से
5 हकूक, अधिकार

खरच रा रूपीया सो वढा चढ रहा है। सो मीरकार अग्रेजो वाजबी रे तावै रूपीया वा वाजे कलम तरे वासते तकीदी करै है, पण श्री महाराज साहब सु कीसी वात रो सीलीको[1] बधण रो मेळ नही। आखर सीरकार अंगरेजो रे मोमलत व फोज खरच वगेरे कलमात न हुवै जरा जोधपुर री रीयासत मे वा मुलक मे आपके तार बधोवसत करै तो इण वात ने म्हां पाचा सिरदारा री सरासर वादी कीस वासते। पेहली ता श्रीदरब* माहने वीगडीया[2] ने पछै सीरकार अग्रेजी म्हाने वीगाडे ता आ वात म्हारे हक मे दुरतरफी वेतीरी नही हुवै। और कदोम सु म्हारा पटा छा सुतो श्री महाराज साहब जबत किया तीमे ही फेर रेख मागे सु रेख देण रो म्हारे दसतुर नही। पण म्हे आ वात जाणी कीणी तरे सु रीयासत रो वा मुलक रो बदोवसत वधे[3] तो घणी आछी वात है जीण सु आगे रेख वी दोवी छै तो पीण महाराज साहब नाथा रे वा अंस-आराम रे खरच मे नाहक लगाय दीयो। मुलक रो कुही बदोवसत वधा नही अर हमार फेर रेख मागे है सु कीण तरे देण मे आवे मुलक रो वधोवस बधै तो मुजीका नही सु तो सू प ने मेडे दे ही नही फेर अबके वरस मे कीतीक वात वेदसतूर[4] री कीवी सु कदे हो पुसता मे हुई नही सु ईसी वात हुवो सु मेह कुण छो ईण मे आछो तरै समझ लेसी ने उपर कलमो लीखी है जीण सु नाहत[5] तग वा लाचार जरूरी होय कर अठे म्हे पाच सीरदार भेला हुवा नै मिला कीवो है। जोधपुर री रीयासत रो वा मुलक रो हर सूरत बदोवसत कीयो चाहीजै। जमे राज ही वणो रहे सु सारा सीरदार भेला होय ने चोपासणी जाय पहली तो श्री हजुर मे सारी कलमा रो बदोवसत करण वासते अरज करसा सु बी दरबार मतलब मुजब बदोवसत करसी तो घणी आछी वात है। नही तो म्है पाच सिरदार विचार नै जोधपुर री वसत रो वा मुलक रो बधोवसत करसां। ईण वासते राज ने लीखण मे आवै छै सु राज ही म्हारां मदद मे रहै, कदास राज आ कहे जोधपुर सु सिरकार अगरेजो रै अहनवो[6] है सु किण तरे म्हे मदत मे रहा जिण री आ सुरत है आगे वाज कलमो वासता सिरकार अगरेजी जोधपुर सु

1. व्यवस्था 2 बरवाद किया 3. व्यवस्था ठीक हो 4. विना कायदे की
5 निहायत 6 समझोता * श्रीदरबार

अहदनावो जाण वाचियो छो जद अहदनावो कठै रहे फेर राज जोधपुर कलमा मंजूर करी ने पांच लाख रूपीया फौज खरच रा देणा कबुल करया तिण वखत सिरकार अंगरेजी नीजर मेरबानी सुलाभ मोकुब[1] कीयो तो पण आज दीन तोई राज जोधपुर कु ही बन्दोवसत कीयो नही वा मांमले वा फौज खरच रा रूपीया अदा कीया नहीं अर सिरकार अंगरेजी मेहरबानी व नेक नीवसत कर लोभ मोकुफ कीयो तीण ने महाराज श्री मानसिघजी कु ही समझीया नहीं। ईण सुरत मे राज जोधपुर री तरफ सु साफ अहदनावो तुटो[2] मालम हुवे सु सिरकार अंगरेजी तो फकत मांमले व फोज खरचे रा रूपीया सु वा मुलक मे वदोवसत रेहण सु काम है तिण रो तो सालीका[3] मेहे लगाय देसा। न मुलक रा वा रीयासत रो अछी तरे सु वंदोवसत कर लेसा इण वासते राज ही म्होरी मदत मे रहो तो आछी वात है। सो ईण वासते राज श्री वड साहब बाहद्र ने लीख ने परवांनगी मंगाय लेसी। इण वासते अठे सु पण अजमेर ने घरवारो मेहल राव हींदुमलजी ने लीखावट कीवी छै सु जांणो छो वा पण वड साहब बाहद्र ने अहवाल[4] जाहर कीयो हुसी वा हमे कर देसी वा राज सब अहवाल लिखो मुजब वड साहब बाहदर सु जाहर कराय देसी और सिरकार अगरेजी मेहरबानी वा नेक नीयत रै सबब[5] सु देरी वा मीरतो रै उप्र वात करे है जीण ने महराज साहब मेहरबानी तो समझे न है अर और तरे हो समझे है। जीण सु घणी कठे ताई लीखो ई तो मे सारी समझ लेसा। वा कागद रो जुवाव जो साहब मोसुफ कहे सो जल्दी लीखावसो और अठे सारू काम काज हुवे सु लीखावसी राज रो घर छे।"

---

1 स्थगित 2. समझौता टूट गया 3. व्यवस्था, उपाय 4. सारांश, हालात
5 कारण

छोगालाल को पत्र बभूतसिंह के नाम

[यह पत्र छोगालाल ने अजमेर से जोधपुर बभूतसिंह (पोकरण ठाकुर) को लिखा है। इसमें विद्रोही दोस मोहमद खां का अंग्रेजी सरकार के आगे भुकने तथा अंग्रेजों एवं चीनियों के बीच युद्ध होने आदि समाचारो का उल्लेख हुआ है।]

......"अप्रंच प्रवानो आपको कासीद[1] लार अ यो समाचार बांच्या, कागज व्यासजी के नाव छो सो व्यासजी ने दीनो ओर आज वडा साहेब छावणी नसीराबाद की दाखल हुवा, ईसी खबर आई और केकड़ो का डेरा जोधपुर का अखबार नवीस की बदली जेसलमेर हुई अर जैसलमेर वाला की जोधपुर हुई खबर काबल कीदो। मोहमद खा तारीख २३ नोबर की ने रात का वडा मेध लाटण साहेब के डेरे अेक महमुद खान सरदार ने वीसटाळा[2] के वास्ते भेजो सो जार ईतला कराई जद साहेब बारे आया जद वे सीरदार कही-दोस मोहोमद खा आपके पास आया चाता है। जद साहेब कही कहा है ? जद वे कही-लैन के बाहर खडा है, आप सतरी को हुकम दीजे रोके नही। जद साहब कही-कोई नही रोकेगा आणे दो। आपका डेरा सु मैदान मे पाच सात आदमी दूजा खडा रहा, जी बखत साहब ने लोगा अरज करी गनीम आता है और आप अकेले खडे हैं। जब साहब कही कुछ अदेस्या[3] नही, हमकु मारके क्या करेगा सीरकार कपनी के हम सरीके बोहोत हैं। पछै दोस मोहमद खा आदमी दस पतरा सु साहेब कने पगा मे तरवार रख दी, अर कही मैने सीरकार सु मुकावला कीया सो ये सीपाई का धरम नही है, सो ओ दे हातु[4] अपणा घर पराये कु साप दे सीरकार मालक है। चावो सो करो।

1. पत्र वाहक-सुतर सवार   2. समझौता वार्ता   3. वहम, खतरा
4 आप अपने हाथो से

जद साहब कही—खां तुमारी तरबार तुमे मुबारक रहो अर तुमने लड़ाई बोहोत अछी करी ईसमें सीरकार कंपनी तुमारे उप्र बोहत राजी है। और बोहोत खातर करी अर डेरा खड़ा करा दीनी[1]। अब दोस मोमदखा नं हीदुसथान में १ पलटण तो गोरां की अर १ पलटन तीलंगां की साथ छै तोफा वल के नजीक जलालाबाद छै उठै तो आये पोहोच्या छै। अब चद रोज मैं हिंदुसथान में आ–जावसी अर हिंदुसथान में जागीर दोस मोमदखां ने दी जावसी।

और चीण वालां कै अर अंग्रेजां के लड़ाई हुई सो अंग्रेजा न्यांह जाय सु तोपां मारी सो तीन कीला[2] चीण वाला का ले लीना अब चीण वाला सुले करे छै जो खरच उसको हमे देवेगें अर बोपारिओ का नुकसान हुवा है वो हम देवेंगे अर अगाडी सुं दोसती बाद लोका उप्र उठा का मेघजी उमैं सु बोहत सामान गयो सो आज अंगरेजी तोपां लागी होसी।

मीती पोस सुद १ सुकर १८८७।"

---

1. ठहरने की समय से व्यवस्था कर दी 2. किले

जुझारसिंह का पत्र वभूतसिंह के नाम

[यह पत्र जयपुर से जुझारसिंह ने वभूतसिंह चांपावत (पोकरण) को लिखा है जिसमें अंग्रेज सरकार को घोड़े भेजने आदि समाचारों का उल्लेख हुआ है ।]

"अप्रेंच आगे कासीद मेल्यो छै तीण लार कागद दीयो छै तीण सु समाचार मालम हुसी । अठे दरबार रा घोडा रा रसालां री हाजर फीरगी रे उठे वाग होय छै तोमे छोटी रास[1] रो घोड़ो ने दीनां मे वडो[2] छै नीबळो छै[3] तीणा नै छाट दीया । तीण उपर रसालदारा साहब सु अरज करी-ये घोडा तो दरबार का छै, कीसा जागीरदार का छै सु ओर मोल ले लेसी । जीण उपर बोल्या-क्या दरबार का ने क्या जागीरदार का, जो आछा घोडा होयगा सु रहेगा । ईण ढब कही ने अब आसाढ सुद मे जागीरदारा रे घोडा री हाजरी होसी तीण में या ठेरी छै, घोडा घटसी तीण सु तो ठेठ री मीती सु घोडो १ दीठ पनरा रूपया रा महीना रे हीसाब सु तफावत रा रूपया जोड ने ले लेणा ने नीबळो घोडो ने छोटी रास रा होय ने दीना मे वडो होय तीणा ने छाट देणा । ने जागीर रा घोडा पूरा नही दीखावे तीण रे घोडा घटे जीतरा घोड़ा री जागीर खालसे कर लेणी । तीण सु अब ज्यारे घोडा घटे सु आप आपरा घोडा हाजरी हुवा पेली चैहरे कराय[4] ने सावक[5] घोड़ा री हाजरी रो ढब[6] करे छै । ने हाजरी हुवा पेली तो चेरा होय आयला । पछै चेरायो पन ही घोड़ा घटसी तीका घटता घोडा माफक जागीर खालसे करसी या वोली साहब बोल दीवी छै ।[7] सु अब आपणे बी अठे घोडा घटे छै ने कीताक छोटी रास छै दीना बडा छै सु घोड़ा २० वडी

---

1. कद मे छोटा 2. अधिक उम्र का 3 थका हुआ है 4 घोडे का हुलिया आदि दर्ज कराना 5. ठीक तरह से 6. व्यवस्था 7. ऐसे मौखिक आदेश प्रकट किये हैं ।

रास ने नवा ने चोखा देख,ने मीलावसी सु असाढ सुद मे अठे आया रहे ज्यु करावसी। सु घोडा रा चेरा हाजरी हुवा पेली कराय लेण मे आवै। हाजरी हुवा पछे चेरा करसी नही तीण सु घोड़ा जरूर सु मेलादसी और कासीद लार समाचार लीखया छै त्या रो जाव[1] लीखावाय कासीद ने सीख दीवी जसी, नही तो उण ने तुरंत सीख दीरावसी।

सं. १८९६ रा आसाढ वद ८।"

---

1. जवाब

राठोड़ भैरूंसिंह का पत्र बभूतसिंह के नाम

[यह पत्र राठोड़ भैरूंसिह ने जोधपुर से अजमेर (प्रवास) बभूतसिंह को लिखा है जिसमें कुचामण एवं भाद्राजून के ठाकुरों की राजनैतिक गतिविधियों का उल्लेख हुआ है।]

"उपरच कागद आपरो कासीद साथे सांवण सुद ६ रो लीखीयो स सुद ११ सीजीया रा आयो, समाचार वाचीया। कागदां सारा री पोच[1] लीखाई सो दुरस[2] और कुचामण रणजीतसिंघजी भादराजण वगतावरसिंघजी रा मेडते डेरा था जरै अगरेज बाहदर रा चीपरासी आया ने कयो-हमार डोढ लाख रूपीया देणा कीदा सो लावौ ने पचीस रूपीया रोजीना हमारी तलब रा लावो। सो एक दीन री तलब रा रूपीया पचीस देने सीजीया रा चडीया सो उठारा चडीया[3] डोगाडी आय डेरो कीदो। ने दुजे दीन सेर ने हवेली आया लारले दोय गडो दोन रयो जरे[4] रात रा तो हवेली रया नै दुजै दीन तीजै पोर रा गढ उपर गया, सीजीया रो मुजरो हुवो ने सदामद[5] कुरब दीरीजै जको तो दीराणो ने बाहपसाव री मालम कराई जरै श्री हुजूर फुरमायो-बांहपसाव रो कुरब तो ६ महीना पचै आवे जरै दीरीजे ने थाने तो दीन थोडा ई ज हुवा है जरे नीजर नीचरावल करण लागा। जरै श्री हुजूर सु फुरमायो थे कीसा गरै गया था चाकरी में ईज था सो नीजर नीचरावल कीवी नही, नै मुजरो कीदा पचै घडी चार अेकात रया[6] नै कयो माने तो नेडाई आवण दीना नही नै अंगरेज री फौज आवण री ताकीदी है, फुरमायो-फौज आवण री कयो हो सो तो मालम है पीण अगरेज बाहदर रा रूपीया देण री तजवीज करौ, जरे पाची अरज कीवी रूपीया ई खावदा सु होसी सो खांवद वीच ने

1, पहुंच 2 दुरुस्त 3 चढे 4. घडी भर दिन रहा तब 5 सदा की भांति
6 अेकांत मे बातचीत की.।

करसी जीऊं होय जासी । ईण माफक सुणो नै सीरदारा दोना रे लारै चीपड़ासी रूपीया रै तलवीया है ईसी केवे है और सीरदार आया तो फीकाईज है[1] । नै पेले चे उदास हे, सैर अफवा मैं ईण माफग वाता करे है सीरदार अठा सुं चढीया जरे ई उ कयो थो अगरेज वाहदर सु वात करने पाचा सैर मे आवसां नै वात कही हुई तो सैर आत्रां नही सो छाने[2] हवेलिया मे आय वैठा । राज तो सारो ईण खराव कीदो ने हमे फेर रयोखयो[3] ने सरई खराव करसी । सरसरा[4] मे तो ईण माफग वाता करे है ।

सं १८९६ रा सांवण सुद १२ ।"

---

1 निराश स्थिति में 2. चुपके से 3. शेष रहा हुआ 4. सामान्यत.

राठौड़ भैरूसिंह का पत्र बभूतसिंह के नाम

[यह पत्र राठौड़ भैरूसिंह ने जोधपुर से अजमेर (प्रवास) बभूतसिंह को लिखा है। इसमें नाथों के जोधपुर-परित्यागने आदि घटनाओं का विवरण दिया गया है।]

"उपरंच आयसजी अजमेर आवण ने तारी[1] हुवा था सो सांवण सुद १४ गढ उपर गया ने श्री हुजुर में मालम कीवी-मनै सीख[2] दीराई जै, हु अजमेर सीरदारा खनै जावसू। जरे श्री हुजूर फुरमायो-ईतरी ताकीदी कीउ करो, अंगरेज री फौज नेड़ी आवण दो। फौज नेड़ी आवे जरे गढ़ उपरा उरा आवजो। सो माने अवखाई[3] होसी तो थाने ई होसी। ईउ फुरमायो जरे पाछा महामींदर जाय ने[4]कबीला काडण री तारी कीवी[4]। सो आज रात रा कबीला तो जालोर परा जावसी ओर जसरूपजी पैला आवण री सला कीवी थी जीण रा समाचार ओळियां मे लिखियो सो ओरो जनानी जायगा मे बतायो है, फेर समाचार भुगतीयां[5] लीखण मे आवसी।

सं. १८६६ रा सांवण सुद १४ सीजीयारा।"

---

1. तैयार 2. विदाई की स्वीकृति 3. कष्ट 4-4. कुटुम्ब को वहा से निकालने की तैयारी की 5 ज्ञात होने पर

राठौड़ सांवतसिंह का पत्र वभूतसिंह के नाम

[यह पत्र राठौड़ सांवतसिंह एवं छोगालाल ने अजमेर से जोधपुर वभूतसिंह चांपावत (पोकरण ठाकुर) को लिखा है जिसमें नाथों के राज्य कार्य में हस्तक्षेप करने आदि समाचारो का उल्लेख हुआ है ।]

"अप्रंच आज सोमवार की सलाम ने बडा साहेब के गया हा, सो बड़े साहेब आप नै बोहोत सलम दी है अर मीजाज की खुशी पूछी है और बरतमान का समाचार ईण भांत है । साहेब कही हम सुणते है, नाथ राज के काम मे दखल करते हैं सो जो ये बात सच होगी तो अेरणपुर[1] सुं फौज जाकर नाथो कुं नीकाल देवेंगे । जद राजमलजी कही-साहब बाहदुर फौज का जाणा तो बोहोत है पण आपके फुरमाणे से नीकल जावेंगे । और उदैपुर का वुकील अरज करी महाराणा साहेव ने लीखी है सीवदानसिघजी राणाजी साहेव का बड़ा भाई की बेटी रतलाम का राजाजी ने परणी है सो उठा सुं पाच सात बार आणे[2] गये पिण मेली नही सो १ चीटी[3] आपकी उठा का अजट रै नांव लीखी जावै सो उदयपुर सुं आणो जावे जद बाई नै मेल देवै । जद साहेव हसीआ[4] ने सारा वुकील बैठा छा सो सारा ही हसीआ नै साहेव कही—इसमें तो राजे साहैव की कुसी की बात है चीटी का कुछ काम नही ।

और अवार लाठ साहैब[5] है जीण की बदली हुई नै दुसरो लाठ वीलायत सुं आवे है सो हीदुंसतान रा मुलक रो

---

1. मेरनपुरा 2. लिवालाने को 3. पत्र 4. हँसे 5. गवर्नर जनरल

काम वीलायत मे बादसाजी कनै भुगताय हाजीर कोई लाठ हुआ अर उमर बरस रा ४५ तथा ४६ मे है ने कलकते दीन १५ तथा २० मे दाखल होसी ।

और समाचार साबक दसतुर छै । ईणा दीना में कागद समाचार आया नही सो दीरावसी । अठे साहेब पूछै जोधपुर की कया खबर सो बीना वाकब[1] कीण तरे केवा में आवे ।

१८९८ रा मीती मीगसर सुद १४ ।"

1. बिना ज्ञात हुए ।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ सं.	पक्ति सं.	अशुद्ध	शुद्ध
३	१	रुघनाथ सघोता	रुघनाथसिंघोत
१८	१०	साथवचद	सायवचद
२०	२	वालाख	सवालाख
३१	६	जपुर	जैपुर
३२	१४	आथा	आया
३'७	७	छांगांवी	छांगांणी
३७	२३	घांघस	घांवल
३९	६	भुंणुभं	भुंभणु
३९	८	डीडवांय	डीडवाणा
४१	३	वूच	कूच
४१	१०	हुा	हुवा
५३	१३	फागुण सुद वेवचे	फागुण सुद···· ···
८५	४	४००००)	४००००१)
८८	२२	वीरगत	वोरगत
११०	१२	अखराजजी	अखैराजजी
१३३	१६	सालसै	खालसै
१३७	१	लाडण	लाडणूं ?
१३९	४	सिंघवो फतैराजजी भाटी, गजसिंघजी छांगांणी, कचरदासजी	सिंघवी फतेराजजी भाटी गजसिंघ, छांगांणी कचरदासजी
१९६	१६	साथीसोण	साथीण
२३७	१	जो पुर	—X—

✿—✿